रोमांचक उपन्यास

सोने की ढाल

लेखक

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९४२

षष्टम संस्करण १९७७

SONE KEE DHAL (Novel) Rahul Sankritayan

प्रकाशक—किताब महल, १५, थानहिल रोड, इलाहाबाद ।

प्रेस, ६ चक, इलाहाबाद ।

प्राक्कथन

१९२३-२५ ईस्वी मे दो वर्ष मुझे हजारीबाग जेल मे रहना पडा था। उस समय 'स्वान्त सुखाय' मैं कुछ काम करता रहता था। उसी मे तीन अंग्रेजी उपन्यासो के अनुवाद का काम भी था। "शैतान की आख" और "विस्मृति के गर्भ में" कुछ मास पहिले छप गये। अब "जादू का मुल्क" और 'सोने की ढाल" पाठको के सामने जा रहे है। *मुझे अफसोस है जिन ग्रथो के पिछले तीन अनुवाद है उनका* और उनके कर्त्ताओ का नाम मैंने नोट नही कर रखा, दूसरी तरफ से भी प्रयत्न करने पर मुझे नाम नही मालूम हो सके। अनुवाद मे बहुत अधिक स्वतन्त्रता से काम लिया गया है। अनुवाद सौर तिथि १६ ४ १९८१ को शुरू हुआ, और २५-४-१९८१ को समाप्त हुआ।

राहुल साकृत्यायन

अनुक्रम

वेडा

कप्तान प्रताप नारायण न पुल पर स कहा— शिव शिव।
'आया, बाबूजी'—शिवकुमार न तुरत उत्तर दिया।
शिवकुमार जहाज के डेक पर आरामकुर्सी पर बैठा हुआ था। गर्मी तेज थी, इसलिये उसके शरीर पर सिर्फ एक मलमल की कमीज और धोती थी। एक बन्दरिया उसके कन्धे पर बैठी थी। उसने खेल क तौर पर अपने हाथ को कन्धे की ओर बढ़ाया किन्तु बन्दरिया पीछे की ओर खिसकते खिसकते नीचे कूद पडी, और धीरे से पास के मेज पर बैठ कर दांत किटकिटाने और ओठ फरफराने लगी। वह वहा से आँखें बराबर मटका रही थी, और उसके दांत की बतीसी रह रहकर चमक उठती थी।
शिवकुमार की टोपी नीचे गिर गई थी। उसने जल्दी में उसे उठा कर सिर पर रखा और तुरन्त पुल की ओर अपने पिता के पास चल दिया। कप्तान ने प्रातःकालीन धुंधले समुद्र की ओर अँगुली का इशारा करके कहा—
वह क्या है देखो तो?
शिवकुमार ने अपने पिता के हाथ से दूरबीन को ले उस काले दाग की ओर लगाया, जो जहाज और समुद्र-तट के बीच में था। वह इतना क्षीण और पानी से मिला हुआ था, कि कुछ पता न लग सकता था किन्तु इतना अवश्य मालूम होता था कि समुद्रतल पर कोई चीज है, जो लहरों के बाने से ऊपर नीचे हो रही है। शिव ने यह कहते हुए दूरबीन को कप्तान के हाथ में दे दिया—
आपको क्या मालूम हो रहा है बाबू जी?
कप्तान प्रताप नारायण काश्यप—कुछ भी साफ नहीं शिव।
शिवकुमार—चट्टान तो नहीं?
कप्तान काश्यप—नक्शे में यहाँ कोई चट्टान नहीं दिखलाई गई है।
शिवकुमार—हम उसके करीब से निकलेंगे।
कप्तान—उतना करीब से नहीं जितना कि हम चाहते हैं वहा पहुँचने के लिये हम रास्ते से थोडा हटना होगा। लेकिन यह क्या है? दूरबीन को फिर आखो पर लगाकर 'यह नाव नहीं है इसमें मस्तूल का पता नहीं है। इसके ऊपर कुछ हिलती-डुलती चीज भी दिखाई नहीं दे रही है, तथापि यह चीज समुद्र के भीतर की ओर बढ़ रही है, लहरों के विरुद्ध आगे बढ़ रही है।

आश्चय से शिव ने कहा—'लहरो के विरुद्ध ?'

कप्तान—हा, जो कुछ थोडी बहुत लहर है, उसके विरुद्ध ।'

शिव—किसी भग्न नौका का टुकडा तो नही है, बाबू जी ?'

कप्तान—'नही ।'

शिव—शायद कोई मत ह्वेल हो ?'

कप्तान—'यह उतनी बडी नही है । और मृत ह्वेल यहा नही पाई जा सकती । हम लोग शिव ऐसे बृहत्काय सामुद्रिक जन्तुओ के बसेरे से दूर हैं, और सब से बढकर बात यह है, कि मृत ह्वेल तट की ओर जायगी, समुद्र के भीतर की ओर नही, तथा उसकी गन्ध भी हमे मालूम होती । नही ? बच्चा, इसका कोई और रहस्य है । किस दिशा मे हम चल रहे है दुर्गा ?

जहाज चलाने के चक्के पर बैठा हुआ आदमी बोला—'जरा-सा उत्तर की ओर झुके हुए उत्तर पश्चिम का कोना हु, महाशय ।'

कप्तान—और जरा उत्तर की ओर ले जाओ तो ।'

दुर्गादत्त—और उत्तर कर दिया महाशय ।'

वह लोग स्वेज की खाडी मे प्रवेश कर रह थे । रात ही मे उन्होंने 'शद्वान द्वीप' को पार कर लिया था अब वह जबल' के बराबर जा रहे थे, प्रात काल की धुध समुद्र जल के ऊपर छाई हुई थी । 'सीनाई प्रायद्वीप' का दक्षिणी छोर—रास-मुहम्मद का निचला सिरा दिखाई नहीं देता था, और न जब्लतूर की प्रकाड मगरवारे की श्रेणिया और समुद्र के बीच की बालुकामयी उपत्यकाय ही । पवत का पृष्ठ भाग धुध के ऊपर, उस प्रात काल की गुलाबी किरणो मे रत्न की भाति दिखलाई दे रहा था ।

कप्तान काश्यप न दूरबीन का शिवकुमार के हाथ म जल्दी से देकर कहा—'लो, शिव । शिव, अब देखो तो ।

शिवकुमार ने दूरबीन से देखते हुए कहा—'यह तो बेडा है बाबू जी ।'

कप्तान—'उसके ऊपर कोई है ।'

शिवकुमार—'बीच मे कुछ दिखाई पड रहा है, लपेटा हुआ और निश्चल—काई गटठर-सा जान पडता है नही, यह कोई सजीव पदाथ है ।'

कप्तान—क्या ? गटठर ?'

शिवकुमार—नही । बेडा, यदि यह बेडा है । इसमे पोछ भी है, जो बराबर हिल रही है । मैं दख रहा हूँ यह पानी, पीछे हटाता जा रहा है। ओहो ! बाबू जी—

पोछ नही, एक आदमी है, जो तैरता हुआ बेडे को आगे की ओर ढकेल रहा है, वह, वहाँ । मैं ठीक देख रहा हू ।'

कप्तान—'कैसे ?'

शिवकुमार— उसने अपने कधे को उठा कर सिर हिलाया, जान पडता है आखा और बालो से पानी झाडने के लिये ।'

कप्तान— हम जल्दी ही पता लग जाता है । वेडा ? इस मरुभूमि म लकडी कहाँ से मिली । जान पडता है किसी डूबते धो से बच कर वह तैर रहा है । धो ाडी हल्की नाव होती है, शिव जरा भी तोल कम-वेशी होते ही उलट जाती है । म इसे बचाना चाहिए । दुर्गा और जरा पश्चिम होते उत्तर लो ।

दुर्गादत्त भी इस मनोरजन वार्तालाप के सुनने और समय-समय पर उस काले ा की ओर देखने मे यस्त था । उसने कहा— पश्चिम होते उत्तर ही चल रहा हूँ, . शय ।'

पदा हट रहा था । सूय धु ध को पी रहे थे । पवत का गुलाबी रग अब नीलिमा लिये भूरे रग मे परिणत हो गया था । उस श्वेत रेखा के आगे, जहाँ समुद्र-तरग तट पर टकरा रही थी, सूक्ष्म श्वेत वालुका दूर तक दिखाई दे रही थी। जैसे जैसे सूय प्रकाश अधिक होता जा रहा था, जैसे जैसे जहाज नजदीक पहुँचता जा रहा था, वैसे ही वसे वेडा भी स्पष्ट होता जा रहा था ।

वह नाविक भी जो इस समय ड्यूटी पर न थे, असाधारण रीति से जहाज के मुखपरिवतन को देख कर दो टोलिया म होकर कुछ तो माँगे पर और कुछ ऊपर की छत पर स्टारबोड के कोने मे जमा हो गये थे । वह सभी वेडे की ओर देख रहे थे जो अब स्पष्ट मामूम हो रहा था और एक दूसरे की ओर मजाक से इशारा कर रहे थे । किन्तु थोडी ही देर मे उनके मजाक ने गम्भीरता का रूप धारण कर लिया क्योकि इसी समय धुध की आड से एक नाव निकल आई, उसका पाल बहुत भारी और हवा स भरा था, और कुछ बडे बडे डाँड अगल-बगल म चल रह थे । वह सीधी वेडे की ओर बढ रही थी ।

शिव अब भी दूरबीन को लगाये देख रहा था । कप्तान ने एक दूसरी कुछ कम शक्ति की दूरबीन उठा ली । दोनो ही नाव की ओर देखने लगे ।

कप्तान— अब उसे हमारी आवश्यकता न पडगी अब हम अपना रास्ता पकडना चाहिये ।'

शिव चिल्ला कर बोला— नही ! बाबू जी नही ।

कप्तान— क्यो मरे बच्चे ?'

शिव—'वह बचाने के लिये नही आ रहे है। वह उनसे डर रहा है। वह अभी अपने पीछे की ओर देख रहा था। उसने उन्हे देख लिया। देखो!'

कप्तान ने देखा, कि तैराक अपनी सारी शक्ति लगा कर बेडे को आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। उसने करवट बदली है और थक कर जब दूसरे हाथ से पानी हटा रहा है दाहिने हाथ से उसने बेडे को पकडा है। एक साथ अपने हाथो और परो से पानी को रुई के गोले का सा करके पीछे फेंक रहा है।

कप्तान—'यह हमारे दखल देने की बात नही है। शायद हम लोग भी मुश्किल मे पड जायें, और तथापि शिव, मैं नही चाहता कि इस समय बिना सहायता किये इस अभागे पुरुष को आफत मे पडने दू।'

शिव ने बडे जोर मे आकर कहा—'यह बडे कठोर दिल का काम है, बाबू! ओह बाबू जी, वह दो है दो!'

कप्तान—'दो?'

शिवकुमार—'हाँ। बेडे के ऊपर का गट्ठर भी आदमी ही है। वह बाध कर मुर्दे की भाति रखा हुआ है, किन्तु है जीवित। अभी उसने अपना शिर उठाया था। मैंने उसे देखा। एक बूढा है, दाढ़ी बडी लम्बी और सन की तरह सफेद है। वहाँ! आपने उसे देखा नही बाबू जी? वह! फिर शिर उठाया जान पडता है, तैरने वाले से कुछ बोलता है।

कप्तान—'तैरने वाले से बोलता है?'

शिव—यद्यपि मैंने उसकी आवाज न सुनी, और न ओठ हिलाते ही देखे, किन्तु उसके बोलने के साथ ही तैरने वाले ने फिर एकबार जान छोड कर तैरना शुरू किया। ओह! कितनी जल्दी वह नाव आ रही है। वह इन्हे पकड लेंगे बाबू जी पकड लेंगे, यदि हम उनके बीच मे नही पहुच जाते।'

कप्तान काश्यप को मालूम हुआ कि शिवकुमार की बात बहुत ठीक है। उनके सम्मुख एक सामुद्रिक भीषण काड होने जा रहा है, जिसे उसके रचयिताओ और 'कदम्ब' के बेबस यात्रियो के अतिरिक्त शायद कोई न जान सकेगा।

उन्होने नीचे इजीनियर सयद रहमान को सकेत किया, कि जहाज की चाल खूब तेज कर दें। उन्होने चालक (हेल्म्स मैन) के हाथ से पहिया लेकर उत्तर लिये पूर्व की ओर घुमा दिया, और फिर दुर्गा को दक्कर ऐसे ही चलाने के लिये कहा। अब वह इस बात के लिये बडे उत्सुक थे, कि किसी तरह बेडे को नाव वालो के हाथ मे न पडने दें।

शिव को अपने पिता के हुक्म और दिलचस्पी को देख कर बडी खुशी हुई। उसने अपने पिता के हाथ को पकड़ कर कहा—अब भी बाबू जी, हम उन्हें हरा

दुर्गादत्त ने इस पर उत्सुकता के साथ मुस्करा दिया।

उसके नीचे वाली दो टोलियाँ भी इस सारे दृश्य को बडी उत्सुकता के साथ देख रही थी। अब यह स्पष्ट था, कि नाव वाले पीछा कर रह है। दृश्य बडा करुणाजनक था, एक ओर तो विशाल पाल और दो बडे-बडे डाडो से चलाई जाने वाली नाव थी, और दूसरी ओर थक कर शिथिल हो जाने के करीब पहुँचा हुआ आदमी एक बेढगे बेडे को तैर कर खे रहा था। जब कदम्ब' और घूमा और उन्होने देखा, कि कप्तान बीच मे पडने जा रहे हैं, तो वह सब भी ऊपर पहुँच आये, दुर्गा ने एक सूखी हसी हँसी, और वह सब फिर उधर देखने लगे।

शिव और उसके पिता ने फिर अपनी दूरबीनो से देखना शुरू किया, वस्तुत-शिव ने तो दो चार सेकेन्ड ही के लिये उसे आखो से हटाया था। जब नाव और बेडा दोनो ही बहुत नजदीक थे। सयद रहमान जहाज के पेंदे मे थे, और बिल्कुल जान न रहे थे, कि ऊपर क्या हो रहा है और न यही जानते थे, कि जहाज का रुख बदल दिया गया है, तो यह समझ कर कि कोई आवश्यक काम आ पडा होगा, उन्होने तुरत कप्तान के सकेत को स्वीकार करके ब्यायलर और इजन मे जो कुछ भी भाप की शक्ति थी, उसे खोल दी, और और भी कोयला झोकने के लिये कहा। अब चिमनी से खूब घना धुआ निकलने लगा, सिलेण्डरो म भाप साय साय करने लगी, पिस्टन बडी जल्दी जल्दी काम करने लगे, प्रोपेलर मे अधिक जीवन दिखाई पडने लगा, और पहिया ने बडी शीघ्रता से नीलजल को चूर्ण करके श्वेत फेन के रूप मे पीछे फकना शुरू किया। 'कदम्ब अपनी शीघ्रतम चाल से आगे बढ रहा था।

शिव—'बाबू जी देखिये तैरने वाला बिल्कुल लडका है।'

कप्तान— तुम्हारी ही उम्र का, शिव।

शिव— अब हम पहुँचे दाखिल हे, सयद साहब ने बडी फुर्ती की है।

कप्तान—'बहुत अधिक।

'ओह! नरपिशाच!' शिव, दाँतो से ओठो को काटते हुए और घूस कर पीछा करने वालो की ओर तानकर एकदम चिल्ला उठा।

कप्तान— क्या है, अब बेटे?

शिव— अब वह गोली छोड रहे है।

कप्तान— कभी नही।'

शिव— हाँ दो आदमी माँग पर झुके निशाना बाँध रह हैं। मैं उनकी बन्दूको की नलो देख रहा हू, आप नही देख रहे हैं।'

कप्तान—'हाँ ठीक बाँध रहे हैं।'

नलिया नाव के माँगे पर टिकी हुई थी, वह बडी लम्बी थीं—शायद टोपी वाली बन्दूकें थी। दोनो आदमियो के सिर और कधे दिखलाई दे रहे थे।

जैसे ही कप्तान ने नलिया को देखा, वैसे ही उनमे से एक ने सफेद धुआँ उगला, और एक ही क्षण बाद दूसरी से भी। जरा ही देर मे गोली की धीमी आवाजें सुनाई दी। निशाना लगाने वाला का शिर अब आड मे छिप गया, शायद वह दूसरी बार बन्दूक भरने लगे होगे।

शिव ने गहरी साँस छोडते हुए कहा — मैंने एक ही आवाज सुनी बाबू जी।'

कप्तान —'वह तैरने वाले को न लगी।'

शिव — और दूसरे को ?'

कप्तान—'तैरने वाले को नही लगी, क्योंकि वह अब भी पानी काट रहा है, और दूसरी गोली अवश्य बेडे मे लगी होगी।

शिव — लेकिन आदमी का तो नही न बाबू जी ?'

कप्तान काश्यप ने इसका उत्तर न दिया, उन्होने सिर्फ इतना ही कहा— 'उनके दूसरी बार फैर करने से पहिले ही हम बीच म पहुँच जायेंगे।'

शिव —'भगवान करे।'

ठीक उसी समय 'कदम्ब' का माँगा दोनो के बीच मे पहुच गया, इसी वक्त दूसरी बार आवाज सुनाई दी। एक तो बहक गई और दूसरी गोली कदम्ब के मुँह के निचले तख्ते मे लगी। एक ही क्षण मे बेडा जहाज की आड म आ गया। नाविको ने करतल ध्वनि की, और उनमे से बहुत बेडे की ओर देखने के लिये दौड पडे। कप्तान काश्यप ने लगातार इजीनियर को सकेत किया। चाल आधी, फिर चौथाई, फिर धीमी, और फिर एकदम बन्द कर दी गई। तब दुर्गादत्त को हाथ से इशारा करके पहिये को ऐसे घुमाने के लिये कहा, कि जिसमे जहाज बेडे को इस तरह छाप ले, जैसे पक्षी डैने के अन्दर अपने बच्चो को छाप लेती है।

नाविको की करतल ध्वनि से नाव वालो ने अपनी असफलता भली प्रकार जान ली। पतवार घूम गया, पाल तिर्छी कर दी गई दाहिनी ओर के डाँड ने नाव का घुमा दिया, और जरा ही देर मे नाव दूर जाने लगी। बेडा उसके रक्षको के भरोसे छोड दिया गया।

शिव ने दूरबीन बक्स म रख दी। अब उसकी आवश्यकता न थी। बडा बिल्कुल नजदीक था। बूढा अपनी एक चद्दर म लपेटा, बेडे पर रख कर रस्सी से बाँधा हुआ था। उसका शिर कुछ उठा हुआ था। उसकी आखे सवथा बन्द थी, उसका चेहरा पीला था। उसकी लम्बी श्वेत दाढी उसकी पतली छाती पर पडी हुई धीरे-धीरे हिल रही थी। वह बिल्कुल शान्त—मृत्यु की भाँति शान्त था। शिव को सन्देह होने लगा, कि उसके शरीर मे प्राण ही नही है।

किन्तु उसका यह सन्देह एक दूसरी ओर आकृष्ट हो गया, उसने एक जोर की सिसकने की भी आवाज सुनी, और अब जब कि पीछा करने वाले हट गये थ, लड़के ने बेडे को हाथ से छोड दिया, और बिल्कुल शिथिल हो पानी म डूब गया।

कप्तान ने अपने आदमियों को पुकार कर कहा—'जल्दी प्राण-रक्षक नावों को नीचे गिराओ।' शिव ने और प्रतीक्षा न की, उसने टोपी अलग फेंकी, और झट कटघरे पर चढ कर पानी मे छलाँग मार दी।

वह एक अच्छा तैराक था। पानी शान्त और साफ था। उसके पिता ने कुछ पर्वाह न की। सिफ एक डर था, कि डूबने वाला कही घबराहट मे उसकी गदन न पकड ले, नही तो नाव पहुचने से पहिले ही दोनो नीचे चले जायेंगे। लडका डूब कर फिर मुह से पानी थूकते ऊपर आया। शिव कावा काट कर उसके पास पहुँचा, और पीछे से उसने उसके केशो को पकड लिया।

शिव—'शान्त? शान्त रहना ठीक होगा। छटपटाओ मत।'

वह ऐसे ही इतना थक गया था कि उसके लिए छटपटाना सम्भव न था किन्तु वहाँ तो उसे शिव की शिक्षा का भी कुछ पता न लग रहा था, उसके शब्द उसके लिये व्यथ के शब्दानुकरण थे तो भी स्वर स्नेह युक्त था, इसलिये लडके ने शिव की ओर मुह फेरा और मुस्करा दिया।

शिव—'ठीक! अब कोई डर नही।' अब बाल छोड कर उसने ठोडी के सहारे उसे ऊचा कर रखा। 'बेडा बहुत दूर नही गया है और नाव आ रही है, धीरज धरो!'

लडके ने उत्तर मे कुछ कहा, किन्तु शिव को उसम से कुछ भी न मालूम हो सका।

शिव—'मुह बन्द रक्खो, मैं तुम्हारी फारसी नही समझता। लेकिन ठीक! मैं तुमसे सहमत हू। यह बेडा है। शान्त—मैं तुम्हे मदद देता हूँ। वहा!' यह कह कर वह उसे ढकेलते हुए बेडे के पास पहुँचा।

तुरन्त लडका शिव के हाथ मे निकल कर बेडे के ऊपर चला गया। शिव उसकी ओर देखने लगा। उसने अपने हाथ वृद्ध के चेहरे पर फेरे, पहिले एक ओर फिर दूसरी ओर। और तब उसके ऊपर झुक कर उसने भौहो को चूम लिया। वह सुन रहा था, कि लडका वृद्ध से प्रेम और करुणा भरे स्वर मे कुछ कह रहा है, किन्तु उसे समझने म वह असमथ था। लेकिन वृद्ध की ओर से कोई भी उत्तर या समथन का लक्षण न दिखलाई पडता था। लडके का हृदय मारे शोक के भर गया, और उसके नेत्रो से अश्रुबिन्दुओ की धार बँध गई। उसे मालूम हुआ, वृद्ध के शरीर मे अब प्राण नही है।

नाव पास आ गई।

'अच्छा होगा, रामनन्दन बाबू जो आप उसे तक्लीफ न दें।' शिव ने चेहरे से लडके की ओर इशारा करते हुए नाव के मुखिया से कहा।

रामनन्दन सहाय ने भौंहो को ऊपर करते हुए कहा—'क्या यह उससे खराब है ?'

शिव—'मुझे ऐसा ही जान पडता है।'

रामनन्दन सहाय—बेडे को खीच ले चलते हैं, और देखें कप्तान क्या कहते है। तुम ऊपर आते हो न शिव ?

शिव—नही, मुझे खीचने वाली रस्सी पकडाओ यहाँ उसके बाधने के लिये कोई स्थान नही मैं एक हाथ से रस्सी और दूसरे से बेडे का पकडे हूँ, और आप रस्सी पकड कर खीचे।

लडका वृद्ध के ऊपर झुका हुआ वैसे ही सिसक रहा था। उसने इस कार्यवाही की ओर कुछ भी ध्यान न दिया।

कप्तान न रस्से वाली सीढी को नीचे लटकाने को कहा, और एक ही क्षण मे वह नाव म उतर गये। वहा से पाव रख कर फिर बेडे पर पहुँच गये। शिव की आँखो मे एक एसा भाव था, जिसे देखन के लिये कप्तान एक क्षण ठिठक गये और फिर आहिस्त से लडके क कन्धे पर उन्होने अपना हाथ रखा। लडके ने स्वप्न से जाग की भाति आखे ऊपर उठाई, और कप्तान के मुख की ओर आश्चय से देखना शुरू किया।

'आओ' कप्तान ने कहा किन्तु लडके ने मानो सुना ही नही।

तब कप्तान यह निश्चय करने के लिय झुक गये कि बूढा जीवित है या मृत, और उन्ह बडा सन्ताप हुआ, जब देखा कि उसकी सांस चल रही है। उन्होने उसकी छाती पर बँधी ढीली रस्सी को काट दिया हाथ को पकड कर उन्होने नब्ज देखी। वह अब भी चल रही थी यद्यपि बहुत क्षीण मन्द गति से। उसकी पलकें सिकुड गई थी किन्तु वह उन्ह उठा न सकता था। उसके ओठ नीले और सूख गये थे, वह बेहाश था, किन्तु सेवा सुश्रूषा से शायद अच्छा हो जाय।

जब उन्हाने रस्सी काटी, तो देखा कि ठीक कलेजे के ऊपर गोली लगन का छेद था, तो भी खून नहो आ रहा था। क्या पहिली दोनो गोलिया म से एक क्या यहाँ पहुँच गई। खून भीतर की आर तो नही बह रहा है ? वही तो इस मूर्छा का कारण नही है ? या पीछा करने और पकडने के भय ने वृद्ध के अत्यन्त जरा जीण शरीर पर प्रभाव डाला है ? अच्छी तरह परीक्षा करने पर ही यह मालूम हो सकता है। इसे जहाज पर ले चलना हागा।

'आओ'—कहकर कप्तान ने उँगली से नाव की ओर इशारा किया। शिव अब तक नाव पर बैठ गया था, उसने भी अपने पिता के शब्दो को दुहराते हुए लडके को अपने पास बुलाने का इशारा किया। लडके ने फिर बडी उत्सुकता भरी दृष्टि से वृद्ध के नीरव मुख की ओर देखा, और तब वह वहा से उठ कर नाव मे गया, और फिर वहाँ से शिव के साथ सीढी से जहाज पर।

दूसरी रस्सियाँ भी काट दी गईं, और कप्तान ने स्वय वद्ध को जहाज पर पहुचाने मे मदद की। उसे अपने कमरे मे ले गये, बेडे की लकडिया अलग-अलग करके ऊपर उठा ली गइ, नाव छत पर खीच कर जकड दी गई, और कदम्ब' अपने असली रास्ते पर आकर पश्चिम की ओर हट कर उत्तर-पश्चिम दिशा मे चलने लगा।

'यह कौन है, बाबू जी ?' यह शिव ने तब पूछा, जब कि भोजन और औषधि के जोर से वद्ध सचेत हो चुका था।

कप्तान— एक यहूदी है।'

शिव—'यहूदी ? और लडका ?'

इस छोटी अवस्था मे इतने भारी परिश्रम के कारण लडका बिल्कुल शक्ति-हीन हो गया था, वह खाने के बाद ही शिवकुमार के बिछौने पर सो गया। वह भी वद्ध के समान ही निश्चल था, किंतु श्वास नियमानुसार ले रहा था। उसे सिर्फ थकावट थी।

उसके पिता ने उत्तर दिया—'यहूदी।'

सिमियन बिन इज्रा

कप्तान प्रताप नारायण काश्यप न चेहरे ही स पहचान लिया कि वह यहूदी है। अभी उनमे स एक न भी इस बात को अपने मुह स न कहा था, खास कर लडका तो भाषा ही न समझ सकता था। हिन्दी उसके लिय एक अपरिचित भाषा थी, और वद्ध इतना निबल था कि कुछ बोलना उसके लिये कठिन था। किन्तु जिस जाति के वह थे, वह उनके चेहरे पर अकित थी।

यहूदी ! कैसे यह एक बेडे पर बहते स्वेज की खाडी म इतने पहुँचे और क्या वह बडी-बडी पालो वाली नाव जिस पर के आदमी

अरबा से मालूम होते थे इनका पीछा कर रही थी, और फिर बेडा बनाने के लिये इस पथरीले, रेतीले, निजन प्रायद्वीप म इह लकडी कहाँ से मिली ? यह जानन के लिये अभी प्रतीक्षा करनी होगी। वृद्ध यहूदी, जो टूटी-फूटी हिन्दी बोल सकता था, शायद स्वेज या इस्माईलिया या पोट सईद म उतरने स पूव इस पर प्रकाश डाले। कप्तान के मन म था, कि इन तीना बन्दरगाहो म से किसी पर उन्ह उतार देंगे।

सारे दिन भर लडका सोता रहा और वृद्ध सज्ञाहीन था। एक शक्ति प्राप्त कर रहा था और दूसरा अद्धशून्यता की आर बढ रहा था।

तीसरे पहर वाली तीनो घटियाँ भी बज गई किन्तु अब भी लडके म जागन का काई चिह्न न था। शिव न कई बार चुपके से बिना जरा भी शब्द किये कोठरी का दरवाजा खाल कर झाँका किन्तु बराबर लडके को उसी करवट और घोर निद्रा मे मग्न पाया। जब तीसरे पहर की घटी बजी तो शिव उधर गया, और देखा कि उसने धीरे से अपने हाथा को अपने मुह पर किये अगडाई और जम्हाई ली।

शिव—'जाग गये ?'

लडका उठ खडा हुआ, और ऊपर के तख्ते की चोट उसके शिर पर लगी, जिससे फिर आश्चर्यान्वित और व्यथित हो वह नीचे बैठ गया।

शिव— लकडी बडी सख्त है। शान्त हो लो, जसा कि पानी मे मैंने तुमसे कहा था। लकडी स टकरा कर अपनी चाद गजी न कर लो। मैं तुम्हारे लिये लालटेन जला देता हू, जला दू न ? या दूसरे कमरे से लैम्प ला द ।

लडके का उत्तर था, एक घबराहट भरी दृष्टि और लकडी से चोट खाए शिर के भाग को जोर जार से रगडना।

शिव ने दानो ही करना पसन्द किया। वह पहले बाहर वाले कमरे का लम्प ले आया और फिर कमरे की लालटेन को जला दिया। राशनी मे मालूम हुआ कि बन्दरिया बडे मेज से हट कर बिछौन पर लडके के पायताने बठी हुई है।

शिव—हाँ तुम चुडैल यहाँ ! उठो आओ वहाँ से !' उसने उसे पकडने की धमकी दी।

वह दाँत कटकटाती हुई वहा से बिछौने के ऊपर की ओर भागी और लडके के सिर और तकिये के बीच मे जा बठी।

शिव—'तुम मेरी बात सुन रही हो या नही ? वहाँ से आओ !' यह कह कर आगे बढा।

लडके ने हँस दिया, और बन्दरिया ने एक नये मित्र को देख बडी प्रसन्नता

प्रकट की। उसने अपने सिर को उसकी गर्दन से मिलाया। इस पर लड़के ने उसे अपने पास लेकर उसके सिर पर धीरे-धीरे हाथ फेरना आरम्भ किया। शिव भी पास आकर हँस पड़ा। बन्दरिया ने इस पर फिर ओठ हिलाया और दाँत दिखाया।

शिव—'कितनी देर से तुम यहाँ हो, तारा ?'

किन्तु बन्दरिया ने कुछ जवाब न दिया, उसने सिर्फ अपनी पलकें नीचे ऊपर की, और अविश्वासपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह शान्ति भजक है और वहाँ से इसे हटाना चाहता है, जहाँ कि उसका स्वार्थ अथवा हृदय है।

शिव—'अच्छा, यदि इसे—क्या नाम लेकर कहूँ, तुम जानती हो तारा ? यदि इसको विरोध नहीं है, तो मेरा भी इसके लिये कोई आग्रह नहीं, सिवाय इसके कि तारा यह मेरा बिस्तरा है, इस पर मेरा अधिकार है तुम अपने सोने के लिये कोई दूसरी जगह ढूँढ लो। यह यहा रसोइया जी हैं।' उसने भोजनागार मे रसोइया की खटपट सुन कर लड़के से कहाँ 'तुम बड़े बेवकूफ हो ? तुमने सारा दिन सोने में गँवा दिया, यही नहीं बल्कि नाश्ता भी आधा खोया, मध्याह्न का भोजन बिल्कुल ही चला गया, और चार बजे का जलपान भी न मिला। भला यह घटी कैसे पूरी कर सकोगे ?'

लड़का अब भी बन्दरिया के सिर पर हाथ फेर रहा था, उसके लिये शिव का सारा बड़बड़ाना अर्थहीन था। उसने उसमे से एक शब्द भी न समझा। उसके लिये बन्दरिया का कटकटाना और उसका बोलना यह दोनो एक सा ही था।

शिव ने अब संकेत द्वारा बात करना आरभ किया। उसने भोजनागार की ओर इशारा करके अगुली को कान पर लगाया। रसोइया जी के थाली परोसने की आवाज सुनी। उसने अपना मुह खोला, और फिर हाथ से ग्रास डालने की नकल बनाई, तब मुह चलाने और कूचने का अभिनय किया। उसने आखो और हाथा से एक साथ इशारा करते हुये कहा—'चलो चलें, भोजन तैयार है।'

लड़का बिस्तरे से उठ खड़ा हुआ, और उसने तारा को वहीं छोड दिया। मगर उसने अपने बन्दरिया-कोष के सारे शब्दो का व्यय करते हुए उसके इस असभ्यतापूर्ण व्यवहार का विरोध किया। जब लड़का को कमरे मे बाहर निकलने के लिय तैयार देखा, तो तारा भी बिछौने स नीचे कूद कर आगे-आगे भाग चली, भोजनागार का द्वार खुला देख कर उसमे घुस गई, फिर कमरे की विभाजक काष्ठ-भित्ति पर एक खूटी को हाथ मे पकड कर बैठ रही। यह उसका सोने का नि स्थान था।

जब सब लोग खाने के लिये बैठ गये तो शिव ने लड़के के पास

थाली रखते हुए अपने पिता से कहा—'बाबू जी, इसका कोई नाम नहीं, क्या मह कर बुलावें ?'

'नाथन कह कर पुकारो।' जिस वक्त कप्तान ने यह कहा, और लड़के ने अपना नाम सुना, तो उसने उधर देखा और मुस्करा दिया।

शिव—'आपको कैसे मालूम हुआ बाबू जी ?'

कप्तान—'इसके पितामह ने बतलाया था।'

शिव—तब तो वृद्ध इसके दादा होंगे ?'

कप्तान—'हाँ उन्होंने ऐसा ही कहा है। और उनको अपने पौत्र का बड़ा अभिमान है। मैंने चाहा था, कि इन्हें स्वेज पर उतार दूँ, किन्तु वृद्ध बहुत बीमार है। अब इन्हें स्वेज नहर तक अथवा उससे आगे तक ले चलना होगा, यदि उनकी तबियत अच्छी न हुई तो। यह बड़ी ही विचित्र घटना है, और मेरी लागबुक में बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ी जायगी। मैं मजबूर हूँ, क्योंकि इन रक्त-पिपासु अरबों के हाथों में इन्हें छोड़ नहीं सकता। कहिये सैयद भाई आपकी राय क्या है ?'

सैयद रहमान—'आपका ख्याल बिलकुल ठीक है महाशय। बूढ़े से उतरने के लिये, क्या इच्छा प्रकट की है ?'

कप्तान—'अभी तक उन्होंने बहुत कम बातचीत की है।'

रामनन्दन बाबू— आपको पूछ लेना चाहिये, नहीं तो उसकी जबान कहीं बन्द हो जाय।

सैयद—'यह बिलकुल सभव है। आपने जिस वक्त उसे ऊपर उठाया था, उसी समय मुझे सन्देह होने लगा था।'

कप्तान— मैं अभी निराश नहीं हूँ।'

इस वक्त कप्तान इन्जीनियर और रामनन्दन बाबू ने लड़के की ओर देखा, किन्तु वह एक शब्द भी न समझ सकता था।

शिव अब बराबर नाथन के साथ रहने लगा। उसका नाम बराबर उसकी जीभ पर रहता था, क्योंकि यही एक ऐसा शब्द था जिसे दोनो समझते थे। और बहुत जल्दी ही इसका सक्षेप नाथ भी बन गया। पहिले पहिल इस सक्षेपीकरण से नाथन हैरान हुआ किन्तु शिव ने इसका अर्थ उसे समझा दिया जैसे शिवकुमार का शिव हो गया है, वैसे ही नाथन का नाथ। इस सक्षेपीकरण के साथ ही दोनो की मित्रता भी बढ़ने लगी।

शिव ने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा— शिवकुमार—शिव।

नाथन ने हसते हुए दुहराया—'शीवकमर—शीव!'

'शिव— ठीव, इसे ख्याल कर लो। जरा-सा दीघ को ह्रस्व करने की आवश्यक्ता है। 'शीव।'

नाथन हस पडा— शीव।'

शिव ने अपनी ओर इशारा करके—'यह मैं।'

नाथन ने उसकी ओर ताकते हुए दुहराया—'यामे।'

शिव ने अस्वारस्य प्रकट करते हुए कहा— नही, यह ठीक नही।' फिर उसकी छाती पर हाथ रखकर—'नाथन नाथ। यह तुम।'

नाथन ने किसी प्रकार कुछ तात्पय समझ लिया, यद्यपि अब भी शिव की कितनी ही बातें उसे हैरान कर रही थी। उसने कहा— नाथन—नाथ। या तुम।'

तीनो ही आदमी इस मनोविनोद से बडे खुश हुए किन्तु उन्होने बडी चतुरता से इसे लडको ही के ऊपर छोड दिया।

नाथन अपने दादा के लिए बडा उत्सुक था। यद्यपि वह बोल न सकता था किन्तु जसे ही उसका पेट भर गया वह भोजनागार के चारो ओर देखने लगा और बीच बीच म उसकी नजर कप्तान के ऊपर भी आ पडती थी।

जब कप्तान ने ब्यालू समाप्त कर लिया तो वह नाथन का हाथ पकडे उसे अपने कमरे म ले गये जहाँ उसके दादा लेटे हुए थे। वद्ध की आखें आधी खुली थी किन्तु वह शून्य-निस्तेज थी। नाथन न अपने ओठो को उनकी भौहो पर रक्खा। वह जरा भी न हिले। कप्तान ने दोना को अकेला छोड कर धीरे से बाहर निकल दरवाजा लगा दिया।

आधी रात के समय कप्तान फिर उस कमरे मे आये उस समय नाथन पास एक स्टल पर बैठा ही बठा एक हाथ अपने वद्ध दादा की छाती पर, और सिर को बिछौने पर रख कर सो गया था। वद्ध की अवस्था मे कोई परिवतन न आया। कप्तान ने लडके को धीरे से जगाया, और अर्द्ध-सुप्त अवस्था मे ही उस लिये भोजनागार म होते शिव के कमरे म ल गये, और वहा शिव के बिछौने के नीचे वाले बिछौने पर सुला दिया।

अगले दिन स्वेज बन्दर पार कर वह नहर म घुसे। पराह्न म वह इस्माईलिया मे पहुँचे जहाँ पर दक्षिण ओर के आन वाले जहाजो की प्रतीक्षा एव पतली नहर द्वारा उत्तर की ओर—पोटसईद जाने की आज्ञा लेने के लिये उन्हे ठहर जाना पडा। आज वद्ध की अवस्था कुछ सुधरती जान पडी। उसकी आँखो की शून्यता जाती रही और उसम जलते प्रदीप का सा प्रकाश दिखाई पडने लगा। उन्होने आज भाजन

भी ग्रहण किया। नाथन सब मिलाकर दो या तीन घण्टा उनके पास रहा होगा। बाकी समय उसका शिवकुमार के साथ व्यतीत हुआ।

कप्तान प्रताप नारायण ने वद्ध को होश मे आये देख कर कहा—'आपकी अवस्था सुधरते देखकर मुझे बडा आनन्द हुआ। आपको कोई चीज की आवश्यक्ता है ? रोशनी चाहिये ?'

वृद्ध—'हा, एक रोशनी हो तो अच्छा, कप्तान साहब, मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हू।'

लैम्प को जला कर कप्तान ने कहा—'मैं आपकी सेवा के लिये तैयार हूँ।'

वद्ध—हम नही जा रहे है।'

कप्तान—'नही जा रहे है, तो क्या आपकी इच्छा इस्माईलिया मे उतरने की ह। किन्तु आपका शरीर इसके योग्य नही है।

वृद्ध—नही ! नही ! आप मेरा मतलब नही समझे। मेरा मतलव था, कि जहाज चलाया नही जा रहा है। इजन की सनसनाहट नही सुनाई देती है, जहाज का हिलना भी नही मालूम हो रहा है, जिससे जान पडता है कि हम खडे है।'

कप्तान—हा ! हम लाग प्रतीक्षा कर रहे हैं। दूसरे जहाज दक्षिण की आर आ रहे है, उन्ही के निकल जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

वद्ध—ओह ! तो हम थाडी देर मे यहाँ से रवाना होंगे। मैं आपका बडा कृतज्ञ हूँ, कप्तान, और बालक, कप्तान—शिव का भी। नाथन ने मुझसे सब कुछ कहा है। आपन हमार प्राण बचाय ह। मरे प्राणो की कोई बात नही, बूढा हूँ किन्तु उसके

कप्तान—'हम आपको इन नर पिशाच अरबो द्वारा लूटे और मारे जाते न देख सकते थे।'

वृद्ध—'लूटे और मारे जाते ! नही, दूसरा कोई होता, तो हम वसे ही छोड कर अपना रास्ता लेता, लेकिन आप वैसा नही कर सकते थे। क्योकि आप भारतवासी है, उस जाति के हैं, जिसने हजारो वर्ष पूर्व अभागी यहूदी जाति को प्राचीन म बडे प्रेम और सम्मानपूर्वक स्थान दिया। कब ? जब कि हमारी जन्मभूमि म हमारे लिय शरण न थी। आपके लिय यह कोई नई बात न थी। भगवान ने आपका यहा पहुँचाया और हमारे प्राणो और शरीर को आपके हवाले किया। मेरा जीवन—जब तक मैं स्वास ले रहा हू, और नाथन का जीवन आपके हाथ म है।

कप्तान चुप थे। वार्त्तालाप धीरे धीरे ऐसा रख पकड रहा था, जिसकी कि २ आशा न थी। वद्ध ने एक बार भी न पूछा कि तुम इस धरोहर को रखना

स्वीकार करोगे या नहीं। उन्होने पहिल ही अपने दिल मे पक्का कर लिया कि वह स्वीकार करगे। यह पोटसईद म भी जहाज से उतरने का इरादा न रखत थ।

वृद्ध—'आपको मरा नाम मालूम होना चाहिये।

कप्तान—'हाँ, मैं जानना चाहता हू जिसर द्वारा मैं आपको सम्बोधित कर सकू।

वृद्ध— सिमियन बिन इज्या मरा नाम है। अपनी जाति वाला म अपरिचित नही हूँ। मरा खान्दान सेफार्दिम है। किन्तु हम अभी इसस भी आवश्यक विषय पर वार्तालाप करना है।

कप्तान— हाँ मैं सुन रहा हूँ महाशय इज्या।

वद्ध ने बडी नम्रता से कहा— कप्तान, कृपा करके आप मुझे सिमियन कह इज्या मरे पिता का नाम था।'

कप्तान—'हाँ महाशय सिमियन मैंने समझ लिया कि आप मेर साथ अभी और आग तक जाना चाहत हैं।

वद्ध— मुसाफिर के तौर पर। मुझे आशा ह आप मुझ ग्रहण करगे। जान बचान के लिय—आपके पुत्र न नाथन के साथ जा कुछ किया है उसके लिए कोई सम्पत्ति नहीं, जिस दकर मैं उऋण हो सकूं। सर्वोत्तम वस्तुएँ अक्सर अनमोल होती ह। धन उसकी बराबरी नही कर सकता। उसक लिय रुपये पैसे की बातचीत करना यह अविनयशीलता और गुस्ताखी होगी। किन्तु यात्रा शुल्क मैं दे सकता हू। आप मुझे बताव कि वह कितना होगा, मैं उस दूगा।

कप्तान— आन पर यह न पूछा, कि तुम कहाँ जा रहे हो।

वद्ध— कहीं जा रहे हा आखिर तो भारतवष लौट कर जायग न ? और यह मैं जानता ही हू।'

कप्तान—'इधर नपल्स तक जाना है, वहाँ से फिर हम पीछे लौट आना होगा, कराची म फिर एक दिन ठहर कर बम्बई पहुचना होगा।'

वद्ध— आप हम कराची म उतार दीजिय।

कप्तान— बहुत अच्छा।

वद्ध— यह मरे लिय बहुत अच्छा होगा। और अब कप्तान साहेब आप देख रहे ह, मैं कितना बूढा हू, आग क्या हा इसका कुछ ठिकाना नही है। शायद करांची तक न पहुच सकू। नाथन मरे लिये बहुत ही प्रिय है। वह मेरे बेटे का बेटा है। सब कुछ उसी पर निभर है। उस उस रहस्य की रक्षा करनी चाहिय, जिस मैं और दो और आदमी जानते है और उसी के अनुसार जब काम का समय

आये, उसे काम करना चाहिय, उस रहस्य को मैं आपसे नही कह सकता। यह अन्य दोनों व्यक्तिया के समान ही मेरा अपना रहस्य है। मैं इसे नायन से भी नही कहूगा वह अभी बहुत बच्चा है। किन्तु यदि मैं करांची न पहुच सकूं, और भगवान की इच्छा यही हो, कि मुझे नायन का छोडना पडे, ता मैं इसे आपको सुपुर्द करना चाहता हू। और आपको मैं कुछ कागज-पत्र और एक पुरातन चिह्न—जो यद्यपि खडित है तो भी उस बहुमूल्य वस्तु को नायन को प्राणा की भांति रखना चाहिये—दूगा।'

कप्तान—यह वही धरोहर है जिनके बारे म आपने पहिले कहा है।'

वृद्ध—'हां, उसी से सम्ब ध रखता है।'

कप्तान काश्यप—तो क्या वह कागज नायन को रहस्य बता देंगे?'

सिमियन—नहीं, वह सिर्फ आगे के लिये रास्ता बतलावेंगे।

कप्तान—और वह पुरातन चिह्न?'

सिमियन—'यद्यपि स्वय इसका मूल्य भी कम नहीं है, लेकिन इसका असली मूल्य इसके सम्बन्धी स जाना जायगा।'

कप्तान प्रताप इन सारी सावधानतापूर्वक कही जाती बाता की ओर उतना ध्यान न दे रहे थ। वह सिमियन से और वृत्तान्त जानने के लिये उत्सुक थे। कि तु अब बात बीच मे आ पडी थी धरोहर की। क्या उस वह स्वीकार करे या नही। सिमियन ने स्वय इसके बारे मे कुछ न पूछा, उसने इसे सिद्धवत मान लिया।

किन्तु कप्तान प्रताप इसके लिये अभी तैयार न थ। उन्हान और स्पष्ट कुछ बातें जानना चाही। यह एक बडी दायित्वपूर्ण बात थी, और प्रताप एक दूसर ही गठन के आदमी थे। उन्होंने पूछा—यह बालक नायन आपके परिवार म अकेला ही है?'

सिमियन—एक ही जीवित और समीपतम सम्बन्धी।

कप्तान—'कोई मेरी अभिभावकता पर आपत्ति तो नही कर सकता'

सिमियन—'जहां तक मैं जानता हूं, कोई भी नही। पाच वर्ष म वह उन्नीस वर्ष का हो जायगा, और तब यदि आपकी इच्छा हो, और चिह्न और कागज पत्र के पढने के बाद वह भी उसे चाहेगा तो आप अपने दायित्व का उसे सौंप कर अपने आपको मुक्त कर सकते हैं।'

कप्तान—उसका जन्म दिन कब पडता है।

सिमियन—उसका जन्म दिन ठीक उसी दिन पडता है, जिस दिन हम लोगो का वर्ष आरम्भ होता है।'

कप्तान— मैं इस पर विचार करूँगा।

सिमियन—'आप उसके जन्म दिन पर विचार करेंगे? वह तो स्पष्ट है।'

कप्तान—'हाँ! जन्म दिन स्पष्ट है। लेकिन अभिभावकता के विषय में मुझे विचार करना है।'

वृद्ध ने जरा भी असन्तोष न प्रकट करते हुए कहा—बहुत अच्छा और मैं आपको वह चिह्न दिखलाता हूँ। वह मेरी छाती के ऊपर बँधा हुआ है। यदि वह न होता तो बड़े से आप मेरे शव को ही उठा पाते। गोली इसके भीतर नहीं घुस सकती थी, इसने सचमुच अपने आपको ढाल सिद्ध किया।'

कप्तान को गोली द्वारा कपड़े का छेद स्मरण हो आया वह बड़ी उत्सुकता से उसे देखने की प्रतीक्षा करने लगे। सिमियन ने अपने काँपते हाथ से अपना लम्बा चोगा अलग किया और फिर अपने सिर में से एक मुलायम चमड़े का फीता निकाला, जिसमें कि एक कोमल बकरी के चमड़े का थैला लटक रहा था। उन्होंने उस थैले को कप्तान प्रताप के हाथ में दिया। थैले के मुँह बाँधने के लिये कोई रस्सी या सूत नहीं इस्तेमाल किया गया था सिर्फ मुलायम ऊन उसके मुँह पर ठुँसा हुआ था।

कप्तान उसे लेकर लालटेन के पास गये। वह मामूली सा बहुत अधिक भारी था। उन्होंने उसके भीतर से उस चिह्न को बाहर निकाला, उसकी एक ओर ऊन से रोयें का बना हुआ एक मोटा कपड़ा लगा हुआ था और दूसरी ओर कुछ न था।

वह बड़े ही हताश हो उठे। उन्हें देखने में एक उन्नतोदर वाले चमड़े का टुकड़ा मालूम हो रहा था। उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि गोली इस चमड़े के भीतर क्यों न घुस गई क्या यह ऐसी हिकमत से सिझाया गया है कि कड़ाई में फौलाद के मुकाबिले का हो गया है। बल्कि इस पर गोली का नहीं निशान भी नहीं है। और फिर ध्यान किया कि इसका नतोदर भाग वृद्ध की छाती से बंधा था उन्होंने उसे उलटा और ऊँट वाले कपड़े को नीचे गिरने दिया।

तुरन्त ही उनकी निराशा दूर हो गई। जो कुछ उन्होंने देखा, उससे वह मारे आश्चर्य के स्तब्ध हो गए।

खडित ढाल

उस चीज का उनतोदर भाग शुद्ध सुवण की चद्दर थी, जो कि मजबूत काले चमडे पर चिपकी हुई थी। लैम्प के प्रकाश मे वह दपण की तरह चमक रही थी। कप्तान काश्यप उसकी चमक से एक बार चौंधिया गये।

चद्दर का वह भाग जो चमडे के किनारे पर लगा हुआ था, बडी सुदरता से तैयार किया गया था। इस बाहरी छोर पर एक इन्च चौडी किनारी थी। भीतर वाला भाग जान पडता था किसी भारी हथियार से पीटा गया है। चमडा इस तरह काटा गया था, कि सोने की चद्दर उस पर ठीक बैठ जाती थी।

यह सोना ही नही था जिसने कप्तान को आश्चय म डुबो दिया, बल्कि इस किनारी के किनारे किनारे तीन पातिया बहुमूल्य पत्थरो से जडी थी यह तीनो पातियाँ किसी वत्त की खड थी। सबसे भीतर वाले वत्त मे एक रेखा थी जिस पर नीलम जडे थे, यह रत्न दीपक के प्रकाश मे जगमगा रहे थे, और उनसे रक्त-नील-पीत वण की किरणें निकल रही थी।

सिमियन—'क्या गोली उसम है ?'

कप्तान—'मैं गाली का भूल ही गया था, यहा उसका निशान है। उनतोदर अश यहाँ पर पिचक सा गया है।

सिमियन—'थैले म देखे महाशय।'

उन्होंने थैले को देखा, और वहा ऊन के गुच्छे मे उन्हे एक चिपटी गोली मिली।

सिमियन के पास आकर कप्तान ने कहा—'मुझे नही मालूम होता है, यह क्या चीज है, शायद एक वडे घडे का टुकडा हो ?

सिमियन—'घडा दरियाई घोडे के चमडे का नही बना करता, कप्तान।

कप्तान—चमडे को यदि छोड दिया जाय, तो इसकी शकल सोन के घडे से बहुत भिन नही मालूम होती। तो यह क्या है, महाशय सिमियन ?'

सिमियन—'जब अरबा न मरे ऊपर गोली चलाई, ता यह मेरे लिये क्या थी ?'

कप्तान—'ढाल।'

सिमियन—'पर यही है—शाही ढाल का एक खड।'

कप्तान—'और इसके और भी टुकडे हैं ?'

सिमियन—'हाँ, और वह ठीक जुड जायगे। इसके दो टुकड़े और हैं, और

जब तीनो टुकड़े इकट्ठा हो जायगे, तो ढाल पूरी हो जायगी, लेकिन तो भी बीच भाग खाली रह जायगा ।'

कप्तान— ढाल की नाभि ।'

सिमियन— आप चाहे उसे जो कहते हो ।

कप्तान—'इस अलकार के सदश ही उनम भी अलकार होंगे ।'

सिमियन—'निश्चय, और नाभि तो अद्वितीय होगी ।

कप्तान— वह कहाँ है ?

सिमियन—'वह मुझे नही मालूम है उसका पता तभी मालूम हो सकता है, जब कि तीनो टुकड़े एकत्रित हो क्योकि तभी यह रेखायें पूर्ण होगी ।'

कप्तान—'कौन रेखायें ?

सिमियन—'यही, जिन्हे आप ढाल की पीठ पर देख रहे है । और फिर उसने चमड़े पर की हलके लाल रग की रेखाएँ दिखलाई ।

कप्तान ने उसकी ओर गौर से देखा किन्तु कुछ भी पता न लग सका । वह उनके लिये निरथक थी ।

कप्तान—'और ढाल की नाभि क्या चीज है ?

सिमियन— मै नही कह सकता नाथन इसे बतलायगा, यदि चम पत्र पर लिखी बातो पर चलगा ।'

कप्तान— इस गोल किनारे पर की नकाशी बडी सुदर है ।'

सिमियन—'बहुत पुरानी कारीगरी है । यह किसी कुमुदिनी की आकृति है, देखिये परस्पर गुम्फित कस पत्ते और डालियाँ बनी हुई है ।

कप्तान - 'मैं समझता हूँ, जब ढाल पूरी हो जायगी तो रत्नो क पूरे तीन वृत्त होग ?

सिमियन—'हाँ ! कप्तान पूरे तीन वृत्त ।

कप्तान— मैं देख रहा हू कि तीनो वृत्त एक दूसरे से बराबर दूर पर हैं और समकेन्द्र हैं, किन्तु यह नीलमो की छोटी रेखा क्या है ?'

सिमियन— छै रेखाओ म स एक का एक भाग ।

कप्तान इस अव्यक्त उत्तर को कुछ न समझ सके, और पूछ उठे— आपका तात्पय यह तो नही कि यह रेखा और लम्बी है ।'

वृद्ध— हाँ और लम्बी ।'

कप्तान—'और रेखायें किस तरह खीची गई हैं ?'

वृद्ध— विरुद्ध शिखर के दो त्रिकोणो से बना षटकोण और उसके बीच म क वृत्त ।'

कप्तान—'ठीक मैंने समझ लिया। ढाल का केंद्र षटकोण को लिये हुए वह नाभि होगी, बड़ी सुंदर रचना है। सुंदर रचना ही नहीं, इसका कोई तात्पर्य भी होगा। क्या तात्पर्य है ?'

सिमियन ने उत्तर न दिया, वह चुपचाप वस्तु के लौटाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कप्तान ने उसे फिर थैले में वैसे ही रख कर वृद्ध के हाथ में दे दिया।

सिमियन ने फिर उसको उसी जगह रख लिया, और वह चुपचाप पड़ रहा। उस समय कप्तान ने वृद्ध के चेहरे की ओर देखा। उससे शांति और तेज प्रकट हो रहा था। वह स्पेनी यहूदी थे, और फिर सेफार्दिम का उसके चेहरे से उसकी जाति का स्वाभाविक सौंदर्य लक्षित हो रहा था। वह निस्संदेह उसके सभी गुणों से विभूषित थे।

वह बहुत थक गया, इस बातचीत के श्रम का प्रभाव उस पर पड़ना शुरू हुआ। कप्तान ने फिर उसकी आंखें मुंदती देखीं, और समझ लिया कि और बातचीत करना हानिकर होगा।

कप्तान दर्वाजे पर हाथ रख कर बोले—'आपके इस विश्वास के लिये अनेक धन्यवाद। अब सो जायें। हम लोग फिर बात करेंगे, और मैं अपने निश्चय को भी उसी समय बताऊँगा।

वृद्ध—निश्चय ?

कप्तान—हां, नाथन के अभिभावक होने के विषय में।'

वृद्ध—उसके लिये मुझे कोई पर्वाह नहीं। मेरा पौत्र आपके हाथ में बहुत सुरक्षित रहेगा।

दूसरे दिन सवेरे पोर्टसईद पहुँचे और अभी वृद्ध सोया ही था, कि जहाज भूमध्य सागर में प्रविष्ट हुआ।

नाथन अपनी कठिन और जानमार स्वेज खाड़ी की तैराई की निर्बलता और थकावट से अब बिल्कुल स्वस्थ हो गया था। बीच-बीच में कुछ देर के लिये अपने दादा के पास जाने के अतिरिक्त वह बराबर शिव के साथ ही रहता था। दोनों की मैत्री धीरे धीरे घनिष्ट होती जा रही थी। शिव ने उसे बहुत सी चीजों के नाम बताये, और रटाते रटाते ऐसा कर दिया कि जिससे उच्चारण में बिल्कुल गलती न हो। उनका वार्तालाप बहुत परिमित था, किन्तु शिव स्वयं प्रश्न और उत्तर दोनों ही कर डालता था। बीच-बीच में दोनों शिर हिलाते और मुस्कराते थे। यह बड़ी विचित्र बात थी कि नाथन ने कुछ ही दिनों में बहुत से शब्द याद कर लिया।

तारा ने इस काम में उनकी बड़ी सहायता की। वह शिव की अपेक्षा नाथन से बहुत प्रेम करती थी, क्योंकि वह उसे उतना डराता न था। वह धीरे से पीठ पर

थपकी देते, अरबी में उससे बोलता था। यद्यपि वह भाषा न समझती थी किन्तु कहने का स्वर उसे बहुत पसन्द था। शिव बड़ा चंचल, हुक्म चलाने वाला और जोर से बोलने चालने वाला लड़का था। जब वह बड़े प्रेम और मजाक से खेलता रहता था, तब भी बेचारी तारा निश्चित नहीं रहती थी, कि दूसरे ही क्षण वह क्या करेगा। इसीलिये वह बराबर शिव को सदिग्ध दृष्टि से देखा करती थी।

नाथन को तारा के साथ अरबी में बोलते देख कर शिव ने कहा—

'क्या, वानर भाषा बोल रहे हो, नाथ ?'

'वानर—नाथ।' सारे वाक्य में नाथन को यही दो शब्द मालूम थे, इसलिये इन्हें ही उसने दुहराया।

वह नक्शा घर के बाहर डेक पर बैठे हुए थे।

शिव ने असन्तोष प्रकट करते हुए कहा—'यह बहुत बुरा है तुम्हें तीसरे के सामने रहस्य न कहना चाहिये। तारा ! चलो !'

वानरी अपना नाम जानती थी, उसने एक बार शिव के मुह की ओर देखा, किन्तु अलग होने की जगह नाथन के और पास सट कर बैठ गई।

नाथन—'थारा !'

शिव—'थारा नहीं—ता—तारा।'

नाथन—'तारा।'

शिव—'अब ठीक हुआ। अब हम अपने पाठ के विषय के तौर पर इसे इस्तमाल करेंगे, और जब तुम इसके भिन्न भिन्न अंगों को जान लोगे, तो बालोद्यान प्रणाली से मैं तुम्हें अन्य वस्तुओं को बताऊँगा। फिर हम नाथ, सज्ञा से क्रिया पर चलेंगे और क्रियाओं को देख कर तुम दांत तले अँगुली दबाओगे। तुम घोटा लगा डालना, हाँ, बाबू घोटा लगा डालना, तब न उस्ताद का भी नाम होगा। तैयार हो न ? अच्छा तो जैसे जैसे मैं कहता हूँ, वैसे ही तुम भी कहते जाओ—शिर !' उसने धीरे अपने हाथ को बन्दरी के शिर पर रक्खा।

नाथन—'शिर और तालु से उच्चारण करने में उसने शिव से भी अधिक सफाई दिखाई।

'आँख' और शिव ने तारा की ऊपर-नीची होती आँखों की ओर इशारा किया।

नाथन ने भी दुहराया—'आख।'

'नाक' लेकिन तारा के पास ऊपर उठी हुई नाक न थी, इसीलिये लाचार शिव ने अपनी नाक पकड़ी।

* नाथन—'नाक।'

पाठ चलता ही गया, यहा तक कि बन्दरी की पूँछ का नम्बर आया, और छूत समय उसे जरा दबाये बिना शिव का मन न माना। तारा ने इसे सहन न किया, और छलाँग मार कर नकशा घर के ऊपर जा बैठी।

शिव—'अब बालोद्यान का आरम्भ हुआ, चिपकना' और बन्दरी की ओर अँगुली का इशारा किया।

तारा अँगुली को अपनी ओर घूमते देखकर छत की आड मे चली गई।

चली गई, शिव ने जहा बन्दरी बैठी थी, उस स्थान की ओर दिखाते हुए कहा।

नाथन ने हँसते हुए दुहराया—'चली गई।'

शिव—'और यहा बस पाठ समाप्त।'

नाथन शायद ही कोई शब्द भूलता था, उसकी स्मरण- शक्ति बडी तीव्र थी, और जल्द ही वह शब्दो को ताड कर मिलान लग गया। शिव बेडे के बारे मे जानने के लिये बडा उत्सुक था। वह जानना चाहता था, कि क्यो नाथन और उसके दादा ने बेडे पर चढ कर समुद्र मे आने का साहस किया। और क्यो अरबों ने उनका पीछा किया। कितने ही प्रश्न शिव के दिमाग मे चक्कर लगा रहे थे। उसे इस सारे वत्तात की आड म कोई और अद्‌भुत और भयकर रहस्य की गध मिल रही थी। किन्तु नाथन की भाषा से अपरिचय इसके जानने म बडा बाधक था। यद्यपि नाथन जल्दी जल्दी तरक्की कर रहा था, तब भी इस कथा का जैसे-तैसे कहने भर की सामर्थ्य भी कई सप्ताहो बाद आ सकेगी और तब शिव की जिज्ञासा पूर्ण होगी।

शिव के पिता ने उसे और कुछ न बताया सिवाय इसके कि नाथन का दादा-सिमियन जिन इच्छा है वह स्पेनी यहूदी है और सेफार्दिम और अश्के- नाजिम मे क्या भेद है। किन्तु इसने शिव की जिज्ञासा को और भी बढा दिया। उसके पिता ने ढाल और कागज की बाते सब छिपा रखी। वस्तुत यह उनकी आपस की बात थी, और उन्होने वह भी चर्चा न की कि नाथन शायद मेरे पास ही रहे।

पिछले तीन दिनो म कई बार कप्तान न वृद्ध की ओर देखा। उन्होने इच्छा की कि वे नाथन की अभिभावकता के सम्बन्ध मे अपनी स्वीकारिता प्रकट करें। उन्होंने आशा की थी कि वह अभी और कुछ कहेगा। शिव के समान ही उनका भी यह जानने का कौतूहल था, कि वे कहा थे उन्होने बेडा कहा पाया, और किस लिये अरब उनके प्राणो के ग्राहक बने। सिमियन के परिवार के सम्बन्ध म भी कुछ जानना आवश्यक था। कागज पत्र जिनके विषय म वृद्धपुरुष ने कहा था, कहाँ हैं? उन्नीसवें वर्ष तक नाथन को किस प्रकार रखना चाहिये?

उन्होंने जब-जब उधर देखा, सिमियन को सोते हुए पाया। वह फिर अर्द्ध

मूर्छित अवस्था को प्राप्त हो गया। उसके अद्धमुकुलित नेत्र फिर शुय हो गये। वृद्ध ने बहुत कम भोजन ग्रहण किया, और जो ग्रहण करता भी था, उसे भी सीधे निगल जाता था।

पोटसईद छोडने के बाद तीसर दिन प्रात काल मसीना ब दर उन्ह दिखाई पडने लगा। कप्तान ने कमरे के द्वार पर थपकी दी, कि तु भीतर स उत्तर न मिलन पर पूववत् कदम आगे बढाया। सिमियन बिल्कुल निश्चल था। उसकी आँखे बिल्कुल खुली हुई थी किन्तु वह भी निश्चल और शून्य थी। उसके आठ खुल गये थे। वहाँ श्वास-प्रश्वास की जरा भी आहट न सुनाई पडती थी। सार वायुम डल और उस बिस्तरे मे भी गम्भीर नीरवता थी, गम्भीर मृत्यु की। निद्रा ही स वह उस निद्रा मे पहुँच गया, जिससे प्राणी फिर नही जागता।

कप्तान काश्यप ने उस चिन्तन चिह्न को उसके शरीर से ले लिया। मृत शरीर की बगल मे एक लम्बी गोल छोटी-सी पाटली मोमजाम मे बाँधी हुई मिली। उसके ऊपर फीता बाधा गया था, और जोड और गाँठो पर सभी जगह अच्छी तरह मुहर की हुई थी। उ होने समझ लिया कि यही 'चम पत्र' है। उ होन दोना ही वस्तुओ को लेकर आफिस के कमरे मे अपनी जहाजी पटी म सुरक्षित तौर से ब द कर दिया।

चोगा की जेब मे बहुत से कागज के टुकडे थे। इन सभी पर इब्रानी भाषा मे कुछ लिखा हुआ था, सिफ एक अ ग्रेजी मे था, और यह कराची के एक ब क के नाम कप्तान को दस हजार रुपया देने की चिट्ठी थी। कप्तान ने अनुमान किया, कि यह रुपया जहाज के किराया और नाथन के शिक्षादि के आवश्यक खच के लिय वृद्ध ने देना निश्चय किया है। दूसरे कागजा मे क्या है, इसका उ ह पता न लगा। उनके बारे मे सिफ उनको इतना अनुमान हो सका, कि चाहे जो कुछ भी उनम हो, उस पुरातन ढाल और 'कागज पत्र' स इनका कोई सम्ब ध नही है। उन्हाने उ ह अलग रखने की इस लिये आवश्यकता न समझी।

जब देखा कि हम मसीना के बिल्कुल पास हैं, उ होने राजकीय अफसरो का इसकी खबर देने और वृद्ध सिमियन को समाधिस्थ करने का निश्चय किया। अपन झण्डे को आधे मस्तूल पर करके 'कदम्ब ब दरगाह म प्रविष्ट हुआ। कप्तान काश्यप किनार पर गये, उस समय अँधेरा होने लगा था, जब कि इटालियन गवनमट के एक अफसर, एक डाक्टर और एक यहूदी धर्माचाय (रब्बी) के साथ वह जहाज पर लौटे। उ होंने शव की परीक्षा की। रब्बी न नाथन से बहुत सहानुतिपूण भाषण बालक की नीरवता बडी शोक पूण, किन्तु धैययुक्त थी। उसके हृदय म

से जितनी सहानुभूति और आदेश की आशा थी, उतनी अपने स्वजातीय रब्बी से भी न थी।

कराची के वक्त वाली चिट्ठी के अतिरिक्त सभी स्फुट कागज रब्बी के सम्मुख रक्खे गये, उन्होंने उन्हें सरसरी निगाह से देखा, और कहा कि इनमें नाथन और उसके वंश के सम्बन्ध में कितनी ही हिदायतें हैं। इन्हें सुरक्षित रखना चाहिये, नाथन के वयस्क होने पर यह काम देंगे।

अगले दिन प्रातः समाधि देन का सभी विधि व्यवहार बड़े शोकपूर्ण हृदय से अनुष्ठित हुआ।

शिव के प्रेम ने नाथन के हृदय को इस महान शोक के समय बड़ा ढाढस दिया। शिव ने अपने मित्र का हर तरह से प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया। इस बीच में नाथन की शिक्षा भी बराबर जारी रही। यद्यपि भाषा के अपरिचय से नाथन कप्तान काश्यप से कुछ बोल न सकता था, कि उसके दादा ने उसे क्या-क्या कहा है। किन्तु इस चुप्पी में भी कप्तान में उसके असीम विश्वास की झलक जान पड़े बिना बाकी न रहती थी। पात बड़ी प्रेममयी दृष्टि से वह कप्तान की ओर देखता था, और जरा भी उनकी ओर से कोई इशारा पाते वैसा करने के लिये तैयार हो जाता था।

कप्तान ने इस्माईलिया और पोर्टसईद दोनों जगहों से अपनी पत्नी और साले के नाम नाथन का जिक्र करते हुए पत्र लिख दिया था। और मसीना से लिखे जाने वाले पत्र में तो विशेषकर उन्होंने नाथन ही की बात लिखी थी, और अपनी पत्नी को यह भी लिखा था—'सीता, एक और शिव को भाग्य ने तुम्हारी गोद में डाला है।' चूंकि अपने सामुद्रिक कर्त्तव्य के कारण उनका एक जगह रहना असम्भव था, इसलिए अपने साले प्रोफेसर चन्द्रनाथ भारद्वाज को उन्होंने विशेष तौर से लिखा, कि उनको नाथन का भार मेरी ओर से ग्रहण करना होगा। अभी उन्हें नेपल्स' तक जाकर लौटना था, इसलिये उन्हें विश्वास था, कि इस बीच में जब तक उनकी पत्नी अपने भाई के साथ इस बात में अच्छी तरह निश्चय कर सकेगी, तब तक जहाज लौट कर कराची पहुंच जायगा।

यह प्रातःकाल का समय था। अभी थोड़ी ही देर पहिले कराँची बंदर की रोशनियां बुझी थी। आकाश पर सिन्दूरी धूलि का पर्दा पड़ कर धीरे-धीरे हट रहा था। सूर्य का सुनहरा थाल अब उस तरह हिल न रहा था। उसके रंग में भी बहुत परिवर्तन हो चला था, और इसके साथ ही साथ प्राच्य क्षितिज से वह कुछ ऊपर उठ गया था। शिव नाथन के साथ छत पर चढ़ गया था। आठ बजे का समय था, जब कि आगे की ओर देखते-देखते शिव चिल्ला उठा—

'ओहो ! यह अम्मा हैं'—वह अपने हाथो को ऊपर करके ... क विचारो
नाचते हुए कहा—'आ-हा ! अम्मा वहाँ आ गई।'

नाथन ने एक छोटी पक्षी-सी एक महिला को 'कदम्ब' की ओर देख... न जाने रूमाल हिलाते देखा। उसके पास एक और पुरुष था। जिसका शरीर एक लम्बे ओवर काट से ढका हुआ था। उसके सिर पर सफेद पगडी बधी हुई थी। प्रात कालीन शीतल वायु से उसकी दाढी हिल रही थी। अपने भाजे के आनन्द नृत्य को देखकर उसकी आँखें चमक रही थी। उसने शिव के उत्तर मे अपना हाथ को ऊपर उठा कर कहा—'कदम्ब, ओ हो !'

शिव ठठा कर हसते हुए—हो-हा ! मामा—ओ हो ! मेरे चन्दा मामा !'

नाथन ने भी धीरे से प्रतिध्वनि किया—'चन्दा मामा ।'

शिव—'हां चन्दा मावा—तुम नाथ इसे कह सकते हो ?'

नाथ ने फिर कहा—'चन्दा मामा ।'

शिव—'कमाल ! नाथ याद रक्खो, इन्ह चन्दा मामा कहो। वह बडी वेढब खोपडी है, न जाने कितनी भाषायें घोट पीस कर उसमे रक्खी हुई हैं। प्रोफेसर तुम्हे ठीक उच्चारण और शब्दो के अर्थ तुम्हारी ही भाषा म बतलावेंगे, चाह तुम्हारी भाषा आकाश पाताल की कही की क्या न हो। तारा की कटकटाहट उन्ह हैरान नहीं कर सकती। आ हा !' और जल्दी से दौड कर वह नीचे जाने वाली सीढी पर पहुँच गया, और एक ही क्षण मे पागलो की भाँति कूदते फाँदते नीचे पहुँच कर पटरा रखे जाने की प्रतीक्षा म खडा हो गया।

जल्दी मे एक छोटी सी नमस्ते के अतिरिक्त कप्तान ने और कुछ न किया, वह अपने आफिस के कारबार को जल्दी जल्दी देख रह थे। उन्हे न अपनी धर्मपत्नी और साले स बातचीत करने की फुसत थी, और न लडके की कूद फाद देखन ही की। नाथन भी छत से गायब हो गया।

जब 'कदम्ब' आहिस्ते से जाकर जेटी से लग गया तो कप्तान ने देखा कि पटरे के रास्ते से एक मूर्ति उडती जा रही है। एक ही क्षण बाद शिव अपनी माँ की गोद से लिपट गया।

कप्तान जब तक अपने काम से फुसत पाकर पुरा मे उतर रहे थे, तब तक शिव अपनी माँ और मामा को लिवाये जहाज पर आ रहा था।

कप्तान न बडी नम्रता और प्रेम के साथ अपनी पत्नी का स्वागत ...
फिर अपने साले प्रोफेसर के गले लगे। पत्नी के नेत्र अश्रुपूर्ण थे। ...
रहे थे। शिव ने अब अपने मामा के हाथो को पकडा। उनकी प्रकृति से

से जितनी सहानुभू

न थी।

रखे

कां से सब लोग नक्शा घर की ओर चले। एकाएक
अपने पति के आरक्त मुख पर गईं। पति ने पूछा—

जिसके विषय मे आपने लिखा था, वह बच्चा कहाँ

प्रोफेसर

जिस समय शिव नाथन को अकेला छोड कर गया, तो नाथन व्याकुल हृदय से वहा से भाग कर अपने बिस्तरे के पास घुटने टेक कर बैठ गया। एक क्षण मे ही उसका हृदय व्यथा से चूर चूर हो गया उसे मालूम हुआ, कि सचमुच ससार मे मेरा कोई नही है। पिता, माता की अमृतमयी करच्छाया से तो पहिले ही वह वंचित हो चुका था किस्मत ने उस अंतिम एक आश्रय को भी छीन लिया। रह रह कर यह सारे विचार उसके हृदयाकाश मे उठ रहे थे, और उनकी असह्य वेदना से कातर हो अपने मुख को दोनो हाथ से ढाँक कर अपार अश्रुधार बहाते हुए वह सिसक कर रो रहा था।

हिलती दाढी और हँसती आँखो वाला वह पुरुष जिसे शिव चन्दा मामा कहता, इसके लिये बिल्कुल अपरिचित था। वह छोटी दुबली पतली शरीर वाली स्त्री, जिसे शिव अम्मा अम्मा कह कर नाच रहा था, वह भी इसके लिए अपरिचित थी। शिव के लिए यह महोत्सव था। उस आनन्दातिरेक मे शिव को अपने उस आश्रयहीन मित्र का ख्याल न रहा।

कप्तान अपने कर्तव्य मे मग्न थे, सय्यद रहमान नीचे थे। बाबू रामनन्दन सहाल अपने आदमियो के झझट मे फँसे थे। आदमी भी जो अब तक नाथन के साथ बडे प्रेम और सहृदयता का व्यवहार करते थे बराबर शिर हिला और मुस्करा कर उसे उत्साहित करते थे। आज अपनी-अपनी धुन मे इतने मस्त थे, कि किसी को उस कारुणलीन उदासीन मूर्ति का कुछ भी ख्याल न रहा। सब अपने देश के भूभाग के दर्शन मात्र से आत्मविस्मृत अथवा सज्ञाहीन से हो गये थे।

आसपास के दृश्य भी नाथन को अद्भुत मालूम हो रहे थे। उसने इस प्रकार के हरे हरे बाग, जगह जगह वृक्षो के झुरमुट चौडी सडके आलीशान मकान कभी न देखे थे यद्यपि भारतीय आखो के लिये यह सभी चीजे उत्सवकर थी, किन्तु नाथन

के लिये उनमे कोई आवषक न था। वह उसके लिये अपरिचित, मम-भेदक विचारो को उभाडने वाली थी। उसने त्राण पाने के लिये, जहाजी जीवन को भी भूल जाने के लिये वह विस्तरे के पास बैठ गया। उसका कलेजा पानी पानी हो रहा था। वह सिसकता हुआ फिर मन ही मन अपने वृद्ध दादा के साथ उसी ऊजड मरु भूमि, उन्ही पत्र-पुष्प विहीन पहाडियो मे होने की इच्छा करन लगा।

'नाथन।'

यह एक नई आवाज थी, जो मन्द और मधुर थी। फिर उसके कधो पर एक कोमल हाथ रक्खा गया। उसने अपने शिर को ऊपर उठा कर आश्चय मे अपने चारो ओर नजर डाली और स्नेहपूण दो काली काली आँख देखी। यह आखें उसी देवी की थी, और सचमुच उनमे अलौकिक दिव्य प्रेम और प्रकाश दिखाई देता था, जिसे शिव ने 'अम्मा' कहा था। वह आगे बढी। उनके पीछे दरवाजे के पास कप्तान काश्यप खडे मुस्करा रहे थे। नाथन खडा हो गया और कुछ लज्जित सा होकर उनकी ओर देखने लगा। उन्होने मुझे कातर होकर घुटने टेके हुए देखा, उन्होने शायद मेरे सिसकने को भी देखा हो। देवी सीता ने एक क्षण उस बालक के अश्रु-प्रक्षालित और आरक्त मुखमडल की ओर देखा, और फिर दोनो हाथो से अपनी गोद मे लेकर उसके मुख को चूम लिया।

नाथन को एक ही क्षण पूव का अपार दुख बिल्कुल विस्मृत हो गया। उसकी जगह एक आनन्द की बाढ उसके हृदय मे आती दिखाई पडी। उसके साथ ही एक क्षीण ऊषा की स्वणमयी रेखा के समान सुन्दर और मधुर से मधुरत्तम एक स्मृति याद आई। यह स्मृति अत्यन्त बाल्यकाल की थी, जबकि वह आनन्दमयी माता के क्रोध से वचित न हुआ था। इसके साथ ही उसन उस सामने की निश्चल निर्निमेष मधुर दृष्टि स आप्लावित करती मूर्ति के मुख की ओर फिर उत्सुक्तापूण हृदय से देखा। उसको भ्रान्ति हो गई, कि कही वही ता दूसरे रूप म लौट कर नही चली आई, यद्यपि नाथन की मा का मरे आठ वष हो गये थ। उसने अपनी आखो से उसकी निश्चल और नीरव अरथी का समाधिस्थ होने के लिय जाते देखा था। सारी दुनिया विश्वास करती थी, कि अब वह इस लोक म नही है, किन्तु नाथन न कभी क्षण भर के लिये भी इस पर विश्वास न किया था। उस जान पडता था कि वह कही गई है। किसी काम से उसके आन म विलम्ब हो रहा ह, किन्तु वह अपन इकलौते और अनाथ बच्चे को—जिसे वह अपन हृदय का टुकडा कहा करती थी—कभी सदा के लिए छोड नही सकती।

आओ मेरे बच्चे।' इन मधुर शब्दो ने उसकी समाधि को भग कर दिया।

देवी सीता ने नावन के हाथ को अपने हाथ में लेकर यह कहा था। इन शब्दों का अर्थ नायन को मालूम होते जरा भी देर न लगी। उसने एक बार फिर अपने आपको छोटा दुधमुहाँ बच्चा पाया, और उस समय के अपरिचित संसार से परिचय कराने के लिये एक मातृमूर्ति भी।

शिव, जैसे ही सब लोग ड्राइंगरूम में पहुँचे, वैसे ही नायन के कन्धे पर हाथ रख कर बड़े दुखित हृदय से बोल उठा— *आह, मेरे ऐसा नन्हा कहीं न मिलेगा, मैं तुम्हें अकेले छोड़ कर भाग गया। मैं कितना स्वार्थी हो गया था।* नायन मेरे भाई, मेरे अपराध को क्षमा करो।

नायन ने इनमें से दो-एक शब्द जहाँ-तहाँ से समझ पाये। उसे वाक्य का अर्थ बिलकुल न समझ पड़ा। इसी समय प्रोफेसर महाशय ने ध्यान दिया और उन्होंने शिव की बात को अनूदित करके समझा दिया। इसका प्रभाव जादू का-सा था। नायन ने शिव को हाथ से लपेट लिया और प्रोफेसर के मुख की ओर ताकने लगा। उसके गौर मुख पर वेग से दौड़ते हुए खून की रक्तिमा उछल आई थी। उसकी आँखें अँधेरे घर में सूक्ष्म छिद्र से आई किरण में पड़े हीरे की भाँति चमक रही थीं। उसने मुँह खोल कर मन्द स्वर से किन्तु जल्दी-जल्दी प्रोफेसर से बात करनी आरम्भ की। शिव चकित और काश्यप दम्पति आनन्दपूर्ण हृदय से सब कुछ सुन रहे थे।

शिव— चुप्! मुँह बन्द करो। तुम यह न-न-न-न एक क्षण में एक हजार बार बक रहे हो। यह कह क्या रहा है, मामा।'

प्रोफेसर— तरह-तरह की बातें।'

शिव— पर इसे मालूम है कि नहीं, कि तुम चन्दा मामा हो?'

नायन ने दुहरा दिया— चन्दा मामा।

शिव ने पीठ पर थपकी देते हुए कहा— यही वह चन्दा मामा हैं।

'चन्दा मामा' दुहराते हुए नायन ने प्रोफेसर से इसका मतलब पूछा। जब उसे इसका अर्थ—यद्यपि इस शब्द की विशेषता को बिना समझाये, क्योंकि इससे सिर्फ गड़बड़ी पैदा हो जाती—*समझाया गया, तो बड़े आश्चर्य में आकर वह आँखें* फाड़ फाड़ कर देखने लगा। किन्तु शिव के चेहरे और प्रोफेसर की मसखरापनभरी नजर को देख वह एक बार खिलखिला कर हँस पड़ा, और उसी समय बाकी चारों ने भी सहयोग किया।

इस हँसी ने उसके हृदय को एकदम आनन्द से भर दिया। उसने उसे इस परिवार में प्रविष्ट करा दिया। अब वह आगन्तुक नहीं रह गया।

कप्तान को और भी अपने आफिस सम्बन्धी—कितने काम करने थे। उन्हें अभी यहाँ से बम्बई जाना था, जहाँ मुसाफिरों को उतारना था। इसलिये यह

आवश्यक मालूम हुआ, कि प्रोफेसर से कुछ देर बात कर लें। उन्होंने अपनी पत्नी से इसका संकेत किया, और फिर प्रोफेसर के साथ वहाँ से अपने प्राइवेट कमरे में चले गये।

कप्तान—'पत्र में सभी आवश्यक बातें न लिखी जा सकती थीं चन्द्र, और अब भी तुम लोगों की जिज्ञासा के अनुसार सभी बातें नहीं बताई जा सकती। बालक के दादा ने सोते ही सात प्राण त्याग दिया। उसने यह सिद्धवत् कर लिया था, कि उनके बाद मैं लड़के की देख रेख करूँगा। उसने इसे धरोहर कहा था, और मैं इसे अत्यन्त पवित्र धरोहर समझता हूँ।'

प्रोफेसर—आपने इसके लिये कोई वचन दिया है!'

कप्तान—नहीं! किन्तु इसका विश्वास करते हुए उसके दादा ने शरीर परित्याग किया।'

प्रोफेसर—'आप धरोहर को रखने के लिए तैयार हो चुके थे!'

कप्तान—'बिल्कुल, और मैं इसे स्वीकार करने जा रहा था, किन्तु वह होश में न था। अन्तिम बार जब मैं गया, तो वह संसार परित्याग कर चुका था।'

प्रोफेसर—तुम बालक को बम्बई नहीं ले जाना चाहते!'

कप्तान—नहीं! मैं चाहता हूँ, कि मेरी अनुपस्थिति में तुम मेरे कर्त्तव्य को पूरा करो। मुझे बम्बई से फुर्सत पाने में अठारह बीस दिन लगेंगे। 'कदम्ब' को मरम्मत की आवश्यकता है, इसीलिये यह तो वहीं डक में चला जायगा। कुछ कुछ सुनने में आ रहा है, कि मेरी बदली किसी दूसरे जहाज पर होने वाली है। जो कुछ भी हफ्ता की छुट्टी लेने वाला हूँ, और तब मैं चन्द्र, इस विषय में तुमसे अच्छी तरह बात कर सकूँगा। अब मुख्य बात यह है—क्या तुम मेरे कर्त्तव्य को अपने ऊपर लेने के लिये तैयार हो?'

प्रोफेसर—'बड़े शौक से।'

कप्तान—मुझे इसका विश्वास था।'

प्रोफेसर—'लेकिन सिमियन बिन इच्छा की भांति प्रताप तुमने इसे सिद्धवत न कर लिया।'

कप्तान—हाँ—ठीक, मैंने किया था। मैं जानता था, कि मुझे तुम पर निर्भर रहना होगा। यहाँ यह कुछ कागज हैं, मैं चाहता हूँ, कि तुम इन्हें अपने पास रक्खो। मुझे इनका कुछ मतलब नहीं मालूम होता, शायद तुम्हें मालूम हो। ससीना में रब्बी ने कहा था कि इनमें मायन के सम्बन्ध में कुछ लिखा है। इन्हें इस समय देखने की आवश्यकता नहीं, फुर्सत के वक्त देखना। और दोनों लड़कों पर नजर रखना—

तक मैं बम्बई से लौट आता हू । शिव को छुटि्टयो के खत्म होते ही स्कूल जाना चाहिये । उसने अब की छुट्टिया का बडा लुत्फ उठाया है, तुम देख रहे हो कि देखन मे वह कितना स्वस्थ मालूम होता है । और शायद नाथन के लिये भी उसके साथ जाने का प्रबन्ध हो सकता है । नाथन को कुछ ट्यूशन की आवश्यकता है—उस हिन्दी सिखान की आवश्यकता है, जिसमे बात समझने और बोलने लगे । यह काम तुम खुद अच्छी तरह कर सकते हो । वह पढने का बडा शौकीन है, और तुम्हारी पथ प्रदशकता मे वह बहुत जल्द अपने विचारो का प्रकट करने मे लायक हो जायगा ।

प्राफेसर—'मुझसे जितना हो सकता है, मैं सब करने के लिये तैयार हू । क्या यही सब कागज हैं ?'

कप्तान—'नही और भी है, किन्तु उनके सम्बन्ध म मैं इस समय कुछ नही कह सकता, और उन्ह मैं अपन साथ ले जाऊगा । तुम देख सकोग उन्ह—हाँ तुम मुहर दिय हुए उनके लिफाफे को देख सकोगे, जब मैं लौटूगा । मुझे उनके और अन्य चीजो तथा नायन के भविष्य के विषय म तुमसे सलाह लनी है । इस समय मेरे पास समय नही ।

प्रोफेसर—मैं इन बाता को सीता से कह सकता हू ?'

कप्तान—बडी खुशी से ।'

गत शीतकाल म शिव का स्वास्थ्य अच्छा न था । वह चौदह वष का हो चला था । वह लाहौर के दयानन्द एग्लो वदिक स्कूल म पढता है । वही उसके मामा दयानन्द कालिज म प्रोफेसर है । गर्मियो की छुट्टिया म दोना मामा भाजे सक्खर कप्तान के घर पर आये थे । कप्तान ने उसकी शारीरिक अवस्था का देख कर निश्चित किया, कि उसे नेपल्स तक की सर करा लावें, इतने म सामुद्रिक जलवायु का भी उसके स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पडेगा । और बालक लौटते समय तक बिल्कुल स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट, जसा कि उसकी अवस्था के लडके को होना चाहिये, हो जायगा । कराची स ही उन्होने शिव को लिया था, और फिर पूव की ओर वह बम्बई, कोलम्बो और सिंहापुर तक गये थे । सिंहापुर स रगून, मद्रास कोलम्बो और अदन होत जब स्वेज की खाडी मे पहुचे थे, तो उन्ह नाथन और उनके दादा का बेडा मिला था ।

जेटी पर से उन्हाने कप्तान काश्यप को अलविदा किया । और फिर वह लोग कस्टम के आग बढे । उन्होन शिव का सामान—बेचारे नायन के पास तो कोई सामान न था, हाँ, शिव ने अपने कपडा मे से एक जोडा धोती, दा कमीज एक काट,

एक जोडा जूता और एक टोपी दे दी थी—स्टेशन पर भेज दिया था। तारा नाथन की कोट के अन्दर छिप कर बैठी थी। जेटी के बाहर निकलते ही उन्होंने घोडागाडी की, और थोडी देर मे स्टेशन पर पहुच गये। डाकगाडी भी उस वक्त तयार मिली, और थोडी देर मे उनकी गाडी करांची शहर से निकल कर उत्तर की ओर सराट भर रही थी।

गाडी सक्खर स्टेशन पर रात का पहुँची थी, अत नाथन काश्यप परिवार के घर के आस पास को न देख सका। सडक के किनार ही शहर से बाहर की ओर तरह-तरह के वृक्षो और वागो की श्रेणियो के बीच ही मे काश्यपो का बगला थ। वह सादा कितु स्वच्छ वगला नाथन की दृष्टि म स्वग स कम न था।

अपन विश्राम के दिना को प्रोफेसर सदा सक्खर म ही इसी वगले म व्यतीत किया करते थे। वहा कुछ कमरे खास उनके लिए थे। कालिज के अतिरिक्त वही एक मात्र प्रोफेसर चन्द्रनाथ भारद्वाज का घर था। सुदीघ ग्रीष्मावकाश के अभी छ सप्ताह और वाकी थ। यद्यपि शिव का स्कूल कालज स कुछ पहिले ही खुलता था कितु प्रोफेसर ने उसके लिय छ सप्ताह की छुट्टी माग ली। शिव और नाथन दोना ही के लिए यह बडे सुन्दर सप्ताह थे। वह वडी दूर दूर तक घूमने फिरने जाया करते थे। कभी कभी उनके साथ प्राफेसर भी रहत थे, किन्तु अक्सर वह दाना अकेले ही हाते थे। नाथन ने हिन्दी सीखन म वडी ही आशातीत उन्नति कर ली थी इसम शिव और उनके मामा दोनो को बहुत श्रेय है। शिव की मुहावरेदार हिन्दी ने उसकी भापा को और भी स्वाभाविक रीति से सीखन म मदद की। वाज-वाज वक्त यद्यपि वह इन मुहावरो से हैरानी में पड जाता था।

कप्तान ने वम्बई स दा पत्र लिखे थे, जब उनका तार आया, कि मै परसा सायकाल तक तुम्हारे साथ होऊगा। उन्होने जब आकर नाथन की भापा का सुना ता उन्ह इस तरक्की पर वडा विस्मय हुआ। बीच बीच म एकाध शब्द ढँढने के लिए रुक जाना अथवा क्रियाआ के उलट पुलट हो जाने के अतिरिक्त उन्ह नाथन की भापा शिव की सी मालूम हाती थी। वह शायद नाथन से उसके और उसके दादा की पिछली अदभुत घटना के विषय मे पूछते, किन्तु उनका ख्याल हो गया कि इससे शायद उसके हृदय का उन पुरानी स्मतिया से दुख हा। नाथन अब बहुत प्रसन्न था। उसे भूत की घटनायें भूल गईं। और कप्तान ने प्रोफसर की भी सम्मति के अनुसार अभी किसी प्रकार की जल्दी करना उचित न समझा।

चन्द्रनाथ—'वह एक दिन अपने आप तुमसे कहगा, उसे जरा और सचेत और भापा म पटु हो लेने दो।'

कप्तान—'या शायद तुमसे कहे।'

प्रोफेसर—'हो सकता है। किन्तु शिव से वह अत्यन्त घनिष्ठ हो गया है। मुझसे या तुमसे एक शब्द कहने से पूर्व बहुत कुछ सम्भव है, वह शिव से उसे कहेगा।'

कप्तान काश्यप—'मुझे खूब मालूम है। तुम कब कालिज को लौटोगे? अगले सप्ताह के सोमवार को? मैंने ऐसा ही समझा था। अच्छा किया जो शिव को अपने साथ ही चलने के लिए रोक रक्खा। और नाथन के बारे में क्या होगा। उन दोनों को एक दूसरे से जुदा करना बड़ी निर्दयता होगी।'

प्रोफेसर—'इसकी आवश्यकता नहीं।'

कप्तान—किन्तु नाथन उसकी कक्षा में तो नहीं दाखिल हो सकता। उसे कहां रक्खोगे? उसे तो अभी हिन्दी ही सीखनी है।'

प्रोफेसर—वह मेरी अध्यापकता में रहेगा। उसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है। मैं समझता हूं, इस सत्र और अगले सत्र में मिलाकर उसकी बहुत-सी कमी पूरी हो जायगी। अपने कालिज जाने के वक्त उसे स्कूल की एक क्लास में कर दूंगा जहाँ और लड़कों के साथ मिलकर उसकी भाषा बहुत ठीक हो जायगी। ऐसे भी भाषा छोड़कर गणित आदि विषयों में नाथन का ज्ञान शिव से कम नहीं है। मैं समझता हूं, यदि दो वर्ष बीतते-बीतते वह शिवकुमार के बराबर हो जाय तो कोई ताज्जुब नहीं। यदि ऐसा हुआ तो दोनों एक साथ ही मैट्रिक पास करेंगे।'

कप्तान—'इस तरह शिव और नाथन को एक साथ रहने में कोई बाधा नहीं मालूम होनी।'

प्रोफेसर—कोई नहीं।'

कप्तान—लेकिन हेडमास्टर नाथन के विषय में अधिक जानना चाहेंगे, और उसे हम बताना नहीं चाहते।

प्रोफेसर—इसे मेरे ऊपर छोड़ दो।

'खर्च का इन्तिजाम हो चुका है।' यह कहते हुए कप्तान ने कराची के बैंक के नाम की चिट्ठी दिखलाई।

चन्द्रनाथ ने गौर से देखकर कहा—'तुम कब जा रहे हो इस दफे?'

कप्तान—'मुझे इसके लिये फुर्सत न मिल सकी। जब तुम और लड़के यहाँ से चले जाओगे तो मैं और सीता कराची जायगे। मैं वहाँ अपने एजेन्ट से यह भी मालूम करूंगा, कि किस जहाज पर मेरी बदली होने वाली है। अभी तक वह जहाज तैयार नहीं हो सका है सम्भव है, मुझे तीन मास तक घर में रहने की फुर्सत मिले।

'कदम्ब' पर मेरा काम खतम हो चुका है । अब फुरसत मे समय एक दिन करांची जाऊगा ।'

प्रोफसर—'शायद तब वक्त मे बाहर की बात हो।

कप्तान—'क्या, इस चिट्ठी के वहां पहुँचने म ?'

प्रोफेसर—'नही शायद वह इस चिट्ठी को न स्वीकार कर ?

कप्तान—'कोई परवाह नही, क्या नाथन हमारा लडका नही हो गया ? लेकिन मुझे यह पूरा विश्वास है कि इसमे वैसी सम्भावना नही। कुछ भी हो नाथन अब मेरा पुत्र है। हाँ, उन कागजो मे क्या था, जिन्हे मैंने तुम्हे दिया था ?'

प्रोफेसर—'वह नाथन के वश के सम्बन्ध मे हैं। उनम उसके सेफार्दिम वश का वक्ष दिया हुआ है, जो कई सौ वर्षो से दक्षिणी स्पेन म रहता आ रहा है। उनकी पदवी दशना है, शायद यह उस शहर का नाम हो, जहाँ यह बसते थे। इनम यह भी लिखा है, कि नाथन को बडा होकर अपने दादा के हुक्म पर चलना चाहिये। यह हुक्म क्या है, इसका उनम जिक्र नही।

कप्तान—'नाथन दशना। क्या वह स्कूल के रजिस्टर म हमारे नाम से—नाथक काश्यप के तौर पर नही लिखा जा सकता ? वह मेरा और सीता का दत्तक पुत्र है, इसलिये ऐसा लिखने मे तो कोई हर्ज नही। किन्तु जब हम जानते है, तो असली नाम को क्यो छिपायें ? सिवाय—।'

प्रोफेसर—'सिवाय क्या, प्रताप ?'

कप्तान—मुझे आशा है, कि यदि इसके दादा जीते रहते, और हम उनसे इस विषय मे राय लेते, तो वह अवश्य दशना ही को पसन्द करते। उन्होने मुझसे कभी यह नाम नही बतलाया। उन्होने नाथन को उन्नीसवे वर्ष दिन पर उसे देने के लिये मुझे एक मुहर किया हुआ 'चम पत्र' का लिफाफा, और एक विचित्र निशान चिह्न—जिसे तुम्हे देखने पर बडा आश्चर्य होगा—दिया है। वह म यह विश्वासघात करना न होगा, यदि उस पवित्र धरोहर की अच्छी प्रकार हिफाजत के लिए मैं उन्हे दिखा कर तुम्हारी योग्य सम्मति लूँ।'

प्रोफेसर—वह कहाँ हैं ?'

कप्तान—मेरे सामुद्रिक बक्स म।' और कप्तान वहाँ से उठ कर उस खाने म गये जहाँ उनके मजबूत सामुद्रिक बक्स के भीतर बाक्स खाने म यह चीजें बन्द थीं। उन्होने पहिले बाहर का मजबूत ताला खोला, फिर उसके अन्दर के खाने का ताला फिर पहिले मुहर किये हुए लिफाफे को लिया और तब चमडे के थैले को।

चन्द्रनाथ ने देखा कि लिफाफा खाली है। उन्होंने जब हाथ म लिया अँगुलियो म उसकी चिकनाहट लग गई। उन्होंने मोती से सजाई हुई उस

ध्यान से देखा। उन्होंने दाहिने हाथ की हथेली पर रखकर उसे तौला, और मालूम हुआ, कि भीतर कोई धातु की चीज हो सकती है।

चन्द्रनाथ—'क्या चर्म-पत्र इसके अन्दर है ?'

कप्तान—'यद्यपि सिमियन बिन इज्रा ने मुझसे नही बतलाया, किन्तु मेरा विश्वास है, कि इसी मे है, क्योंकि उन्होंने उसके बारे मे मुझसे जिक्र किया था, और मरने के बाद उनकी बगल मे मैंने इस पाया।'

चन्द्रनाथ—'और पुरातन चिह्न—क्या है ?'

'यह इस चमडे के थैले मे है।' यह कह कर कप्तान ने उसे प्रोफ़ेसर के हाथ मे दे दिया।

'यह तो बडा भारी मालूम होता है प्रताप।' चन्द्रनाथ ने जिस वक्त उसे थैले से निकाला तो ऊंट के बाला वाला कपडा नीचे गिर गया। और सोने की चमचमाहट से उनकी आखें चकाचौंध हो गई। उसकी रत्नजटित तीनो पक्तिया और नीलम की छोटी रेखा ने और भी उन्हे चकित कर दिया। वह बडी देर तक अगुली को उन पक्तियो पर घुमा कर देखते रहे। प्रताप उनकी बात सुनने की प्रतीक्षा मे चुपचाप रहे।

कप्तान ने कितनी ही देर तक प्रतीक्षा करने के बाद उस नीरवता का इस प्रकार भग किया—'तुम्हे मालूम है, यह क्या है ?'

प्रोफ़ेसर ने तुरन्त उत्तर दिया—'एक अत्यन्त मनोहर ढाल का टुकडा है।'

कप्तान—'तब तो चन्द्र तुम मुझसे चतुर निकले। मैंने पहिले पहल अनुमान किया था, किसी स्वर्ण कलश का खड है।'

चन्द्रनाथ—'नही प्रताप एक बादशाही ढाल है। लेकिन रत्नो की इस सजावट का अर्थ मुझे पूर्ण तौर पर समझ मे नही आता। यह ढाल पूरी थी तो यह रत्नो की तीनो पक्तियाँ तीन समकेन्द्रक वृत्तो के चाप या खड है। किन्तु नीलमो वाली रेखा का कुछ पता नही लगता। यह सबसे भीतर वाले वृत्त मे है। सिमियन ने क्या कुछ तुम्हे इनके बारे मे कहा था ?'

कप्तान ने जो कुछ वृद्ध के मुख से सुना था, उसे प्राय शब्दश कह सुनाया। चन्द्रनाथ ने बडे ध्यानपूर्वक सुना। जब प्रताप नारायण ने चमडे पर के चिह्नो के बारे मे कहा तो चन्द्रनाथ ने उन्हे पढने का प्रयत्न करना चाहा। किन्तु रेखायें इतनी कम और इतनी क्षीण थी, कि उनसे कोई अर्थ न निकलता था।

चन्द्रनाथ—'इसके अन्दर कोई रहस्य है प्रताप, किन्तु मैं तुमसे बिल्कुल सहमत हूँ।'

कप्तान—'तुम मुझसे बिल्कुल सहमत हो ? क्या ? किस तरह ?'

चन्द्रनाथ—चिट्ठी जरूर स्वीकारी जायगी। मुझे अब इसमे बिल्कुल सन्देह नही रहा, और जब नाथन उन्नीसवें वर्ष दिन पर पहुच जायगा, तो यह चीजें उसके हाथ मे सौंप दी जायँगी।'

कप्तान—'और तब तक ?'

चन्द्रनाथ—'तुम इन्हे उसी बैंक मे जमा कर दो, जहाँ से रुपया लेना है, और साथ ही इनकी रसीद ले लेना। तुम्हारे पास की अपेक्षा यह वहाँ सुरक्षित रहगी। इसके अन्दर कोई भारी रहस्य है, नाथन की उन्नीसवी वर्ष गाँठ के दिन हम इसे जान सकेंगे। नाथन तीनो म से एक है। और अन्य दोनो कहाँ है ? और जब ढाल पूरी हो जायगी, तो नाभि कैसे मिले ?'

कप्तान—'और वह नाभि क्या है ?'

चन्द्रनाथ—'हाँ ? सच—वह क्या है ? यह भी एक रहस्य है।'

नाथन की कहानी

नाथन की कहानी सुनने के लिये उन्हे बहुत प्रतीक्षा न करनी पडी।

जब यह निश्चित हो चुका, कि नाथन को भी शिव के साथ लाहौर जाना होगा तो प्रश्न उठा तारा को क्या करना चाहिये।

शिव—'इसे अपने साथ क्या नही ले चल सकते है मामा ?'

प्रोफेसर—'क्या ? बानर लेकर स्कूल को जाना ! नहीं। इस तरह के जानवरो को रखना लडको के लिये सख्त मना है। लडके वैसे ही बडे नटखट होते हैं, और बानर को लेकर, तो करैला नीम पर चढ जायगा। हम इसे अलग करना होगा। मैं तुमसे यही कहूँगा कि इसे बेच डालो।'

शिव—'बेच डालू ?'

प्रोफेसर—'यहा एक दूकान है, वहा तुम बेच सकते हो। उस दूकानवाले के पास एक अच्छी प्राणिशाला है। वह ऐसी चीजो को सदा खरीदने के लिए तयार रहता है, क्योकि फिर वह उन्हे अच्छे नफे पर दूसरे खरीदारो या चिडिया-खाना को बेच सकता है।'

शिव—'हमने उसके लिये लाल छीट की घँघरी बनवाई है, और नीले सर्ज की कमीज और टोपी। देखते नही मामा, वह कितनी अच्छी, तरह
है, लाठी कन्धे पर रखकर चलती है। नाचती है।'

प्रोफेसर—'खूब ! यह तो और फायदे की बात है, उसको खूब आग पहिना कर ले जाओ और दूकानदार के सामने करामात दिखाना, इसके लिये दो चार रुपये और मिल जायग। देखो सोमवार से पहिले तुम्हें इससे छुट्टी ले लेनी चाहिये।'

शिव—'और यहाँ घर पर छोड़ जाने मे क्या हर्ज है ? गंगा इसका देख भाल करेगी।'

प्रोफेसर—'गंगा ? वह खूब देख भाल करेगी ! वह इसम बहुत नाराज है। उस दिन जब वह रसोई-घर मे चली गयी थी, तो झाड़ू लेकर वह इसके पीछे दौड़ी थी। बेचारी वहाँ से भागते भागते तुम्हारी कोठरी म चारपाई के नीचे छिप गई, जब वहा भी जान बचने की उम्मीद न देखी, तो कूद कर तुम्हारी आल्मारी के ऊपर दबक गई। उसने गंगा की तीन चादरा को फाड़ डाला है। तुम्हे कभी आशा न करनी चाहिये, कि गंगा उसकी देख भाल करेगी। और यदि उपेक्षा हुई, तो उसके मरते भी देर न लगगी। तुम उस पर बड़ी दया कराग, यदि बेच डालोगे।'

अन्त मे वृद्ध का सारा दिन उन्होंने इसी के लिये देना चाहा। वह तारा को खूब कपड़-लत्ते से सजा कर दूकान की ओर चले। दोनो म से किसी ने भी न देखा, कि ऊपर वाले बगीचे म पड़ी हुई कुर्सियो मे से एक पर कोई आदमी बैठा हुआ उनको ओर बड़े ध्यान से देख रहा है। दोनो लड़के आपस मे बातचीत करते और तारा की ओर देखते चले जा रहे थे। नाथन की कोट का छोर उस आदमी के पैर मे छू भी गया, किन्तु तब भी उस आदमी की ओर उन्होंने न देखा। बहुत धीरे से उस आदमी ने उठ कर उनके पीछे हो लिया और देखा, कि वह जानवरों की दूकान पर गये है।

दूकान का द्वार पिंजड़ो से भरा हुआ था। मना तरह-तरह के तोते पहाड़ी-देशी, छोटे-बड़े, लाल हरे, काकातुआ बुलबुल, कोयल श्यामा, लाल, चकोर, सभी उनमे रखे चहचहा रहे थे। और उनके नीचे अलग अलग कटघरो म लगर ताल मुंहा, बनमानुष, चैम्पेंजी आदि तरह-तरह के बन्दर गाहको की ओर देखते या खाने की चीजो को खाते बैठे हुए थे। दूकान के भीतर और भी कई बहुमूल्य और दुर्लभ जन्तु पिंजड़ो क अन्दर बन्द थे।

दूकानदार एक गेहुँवा रंग का मोटा सा दाढ़ीवाला आदमी था। उसके हाथ पैर और कपड़े गंदे थे।

नाथन की कोट की आड़ से तारा को झाँकते देख कर दूकानदार ने कहा—'वाह ! आप बानर लाये हैं, बानरो से तो मेरी दूकान भरी पड़ी है। आजकल इन्हें नही पूछता, यह है कहाँ का ?'

शिव— स्याम की।'

दूकान०—'ओह! स्याम देश की बानरी है। अच्छा, तो इसका दाम ?'

शिव—'आप क्या देंगे ?'

दूकान०—'क्या पूछते है, दाम तो माँग पर मुनहसर है। देखिये न, सारी दूकान तो बानरो ही से भरी है, किन्तु उसका दाम कहिये ?'

शिव—'एक गिन्नी।'

दूकान०—क्या ? एक गिन्नी! पन्द्रह रुपये ?'

शिव—'यह साधारण बानरी नही है, यह कितने ही खेल दिखला सकती है।'

दूकान०—'हा, दिखला सकती होगी। कौन कौन खेल ? अच्छा होगा यदि आप मुझे इसके खेल दिखावे। किन्तु मैं आपको पहिले ही यह कह देना चाहता हू, कि दस रुपये तक मैं दे सकता हू, बानरो को कोई आजकल पूछने वाला नही है।

शिव—'अच्छा नाथ, फिर दिखाओ न।'

नाथन ने वानरी को जमीन पर रख दिया,और छोटी खिलौने वाली व दूक उसके हाथ मे दी। शिव के साथ वह कभी-कभी खेल दिखाने म रुक जाती थी किन्तु नाथन के साथ इतनी हिली मिली थी, कि वह जो कुछ कहता था, बिना आनाकानी के वह उसे कर दिखाती थी। अभी आधा ही खेल समाप्त हुआ था कि वह विदेशी पुरुष उनके पास आ खडा हुआ। नाथन ने फिर कर उसकी ओर देखा, और एकदम अवाक् हो गया। उसके चेहरे का रग फक हो गया। आगन्तुक उसकी ओर देख कर मुस्करा उठा।

दूकानदार ने उसकी ओर देख कर पूछा—'तुम क्या चाहते हो ?'

विदेशी—कुछ नही, मैं आया हूँ कि देखू बातचीत करू।'

अच्छा, तुम देख सकते हो, किन्तु अभी बात करने का अवसर नही, जरा ठहरो। आप अपना काम कीजिये।' उसने नाथन से कहा।

नाथन (दूकानदार से)—नही, अब सब खतम हो गया।' (फिर शिव की ओर धीरे से)—हम जल्दी चल देना चाहिये।'

शिव को बडा आश्चर्य हुआ, कि उस विदेशी को देखने मात्र से नाथन की ऐसी दशा क्या हो गई। विदेशी का रग भूरा था, और कानो मे छोटे छोटे कुडल थे। उसकी मुस्कराहट भयानक मालूम होती थी।

शिव—'मैं इसके दस रुपये लेने को तैयार हू।'

दूकानदार—दस रुपये! मैंने आपसे कहा न, कि आजकल बन्दरो का बाजार बहुत गिर गया है। लेकिन, आपकी बात भी रखना है, ... कहूँ

कर उसने अपने पाकिट से दस रुपये का नोट निकाल कर शिव के हाथ पर रख दिया। वह दूकानदार भीतर ही भीतर बड़ा खुश था।

अब दोनों तुरंत वहाँ से रवाना हो गये। सड़क के मोड़ पर जाकर नाथन ने एक बार पीछे की ओर देखा, और फिर शिव की ओर इशारा करके दौड़ने लगा। शिव उसकी पीठ पर था। वह लोग अब बहुत दूर निकल गये थे। तब शिव ने पूछा—'क्या बात है नाथ ?'

नाथन—'हमें किसी तरह उस राक्षस से पिंड छुड़ाना चाहिये। जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी यहां से दूर निकल जाना चाहिये।'

शिव—'यह तो हम कर चुके, अब वह आधा कोस पीछे छूट गया। मुझे भी उसकी आँख की ओर देखते ही मालूम हो गया था, कि वह बड़ा बदमाश आदमी है किन्तु तुम उसे कैसे जानते हो नाथ ?'

नाथन—'मैं उसे खूब जानता हूँ, क्योंकि उसने समुद्रों को पार कर, पहाड़ों को लांघ कर, नदियों, जंगलों और रेगिस्तानों के बीच भी हमारा पीछा करना न छोड़ा।'

शिव—'तुम्हारा, और तुम्हारे दादा दोनों का ?'

नाथन—'हां !'

शिव—'ओहो ! सचमुच बड़ा आश्चर्य और अब वह यहाँ शिकारपुर भी पहुँचा हुआ है। किन्तु तुम उससे डरते नहीं हो, नाथन ?'

नाथन—'नहीं ! इससे नहीं, किन्तु शायद इसके साथ और भी होंगे !'

बड़ी फुर्ती से दोनों जा कर एक गाड़ी पर बैठ गये, और दो बजते-बजते 'काश्यप भवन' में पहुंच गये।

कप्तान, प्रोफेसर और सीता देवी उन्हें इतनी जल्दी लौटते देख कर बड़े आश्चर्य में हो गये। उन्होंने समझा था कि आज दिन भर वह बाजार की सैर करेंगे, और रात को आवेंगे। यह उनका प्रश्नोत्तर करना ही था, जिसने नाथन की सारी कहानी कहलवा दी।

कप्तान ने पूछा—'बड़ी जल्दी सौदा बेच कर लौट आये, शिव ?'

शिव—'क्या करें बाबू जी, ठीक उसी समय जब कि तारा अपनी करामात दिखाने में सरगर्म थी, एक अभागा कोई विदेशी पहुंच आया, और काम चौपट हो गया, नहीं तो उस मक्खीचूस से पांच रुपये और बिना हाथ लगाये न छोड़ता। नाथ उसे जानता है और वह नाथ को। उसका रंग भूरा था, कानों में कुंडल थे, उसकी आँखें बाघ की तरह तेज और भयानक थीं। उसको देखते ही नाथन ने मुझसे ... से कहा, कि जल्द यहाँ से निकल भागना चाहिये। इसीलिये मैंने दूकानदार से

आखिरी कीमत कही, और उसने मेरे हवाले किया। फिर दौडत-भागते हम यहा पहुच गये।

कप्तान—'क्या उस विदेशी ने तुम्हारा पीछा किया ?'

शिव—'थोडी दूर तक ही तो हम उसके सामने रहे। दूसरे मोड पर पहुचते ही हम घूम कर एकदम सरपट दौड पडे।'

कप्तान—'तुमने उस आदमी को पहिले भी देखा है, नाथन ?'

नाथन—'कई बार, पिता जी।

कप्तान—'कहा-कहाँ ?'

नाथन—'सेविल्ले मे, और कदिज मे, और पोर्टसइद मे, और जाफा मे, अल्कुदस मे, और वादि उल्-अरबा मे, और सीनाई की पहाडियो मे। वह उसी धो मे था, और उसने हम पर गोली भी चलाई, जब कि मैं बेडे को तैरते हुए आगे बढा रहा था, और जब कि आपने हमारी रक्षा की।'

यह सुनने के साथ सभी सास लेना तक भूल गये।

प्रोफेसर—'सचमुच नाथन, तुम्ह इसमे जरा भी सन्देह नही है ? तुम्ह अच्छी तरह ख्याल है, कि वह इन स्थानो पर तुम्ह मिला था ?'

नाथन—'इसमे सन्देह की जरा भी गुजाइश नहीं, मामा।'

शिव—'और अब वही आदमी सक्खर की एक बन्दर वाली दूकान पर !' शिव ने इतनी जल्दी घबराहाट से इन शब्दो को कहा था, कि सब इस पर मुस्करा पडे।

लेकिन मामला बडा गम्भीर था, इस पर अधिक देर तक मुस्कराया न जा सकता था।

प्रोफेसर—'तुमने उसे सेविल्ले मे पहिले पहल देखा था ?'

नाथन—हाँ ! जब मैं बहुत छोटा था, तभी से सेविल्ले मे दादा के साथ रहता था मैं जब पाँच छै वष का था, तभी मेरी मा मर गई, और पिता का तो मैं जानता ही नही कि कब मरे। दादा ही मेरे सब कुछ थे। और मेटियो दादा के पास नौकर था।

शिव—'मेटियो—इस शैतान का नाम है क्या ?'

नाथन—'हाँ उसका नाम मेटियो है, और वह मेरे दादा के पास नौकर था। और मेरे दादा ने इसलिये उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया, कि जिन कामा से उसका कुछ सरोकार न था, उसने उनमे भी गालमाल करना शुरू किया। उसने कुछ कागज और अन्य चीजें भी चुराई थी, फिर जब मैं दस वष का था, ता हम लाग कदिज चले गये, और वहाँ रहने लगे। फिर वह भी कदिज मे चला आया, और बन्दर के पास ही एक छोटे से घर मे रहने लगा। दो वष के बाद, अकस्मात हमने कदिज

छोड दिया, और बर्सिलोना चले गये, फिर वहाँ से मार्सेल्स, जहाँ पर दादा के बहुत से स्नेही बन्धु थे। मर्सेल्स से जहाज पर हम दोनो मिश्र मे—पोटसईद मे जा उतरे, और पोटसईद मे हमारे पहुँचने से पूर्व ही मेटियो पहुँचा हुआ था।'

शिव—'तुम्हारी प्रतीक्षा म ?'

नाथन—'प्रतीक्षा मे नही, खोज म, वह जानता था, कि हम वहाँ मिलेंगे। हम वहा अपने आपको छिपा न सकते थे, क्योंकि वहाँ हमारी जाति के बहुत कम आदमी रहत थे। हम लोग तुरन्त वहाँ से जाफा को रवाना हो गये, और मेटियो उसी स्टीमर मे बैठा था। जाफा से हम लोग राम्ले गय, जहाँ हमारी जाति के बहुत से लोग बसत ह। हमने समझा था, कि अब फिर उससे मुलाकात न होगी, किन्तु नही, जैसे ही हम अल्कुद्स पहुचे—'

प्रोफेसर—'अल्कुदसुश्शरीफ ?'

शिव—'यह नक्शे मे है क्या ?'

नाथन—हमारा पवित्र तीथ, यरुशिलम।

शिव—ओह, तुम यरुशिलम को गये।'

नाथन—'और वहाँ हम अश्के-नाजिम मे ठहरे।'

शिव—'मैं उन्ह जानता हू, उस दिन पिता जी आपने मुझे बताया था। अच्छा—'

नाथन—'मेटियो वहा भी हमसे पहिले ही पहुचा हुआ था, जैसे कि पोट सईद म और पोट सईद स वह दो और आदमियो को अपने साथ लाया था, जिनमे से एक अरब और एक हिन्दुस्तानी था। वह दोनो स्टीमर पर भी थे, किन्तु उस समय हमे यह न मालूम था, कि वह उसके साथ जाफा से और आगे जायगे।'

कप्तान—'हिन्दुस्तानी ?'

नाथन—'हा! हिन्दुस्तानी, किन्तु आप और चन्दा मामा सा नही, पिता जी, बडा बदमाश हिन्दुस्तानी, उसकी आखें लाल थी और चेहरा बडा डरावना था। कभी हमने उस देखा और कभी अरब को, किन्तु यह मेटियो था, जिसे हम बराबर दखते रह। करीब एक वष तक हम अश्के नाजिम मे रह।'

शिव—'तब तो वह थक गये होंगे। अश्के नाजिम नही, मेटियो और उसके दोनो गुडे साथी।'

नाथन—'वह हम पर नजर रखने म कुछ ढिलाई करने लगे। एक दिन अधेरी रात मे हमने शहर छोड दिया, और पूर्व की ओर रवाना हो गये। फिर वहा से बहरे-लूत पहुँचे, और बहरे-लूत को पार करके दक्षिण की ओर पहाडी जगहो मे चले गये। हफ्तो हमने मेटियो को न देखा। हमने समझा, कि अब उससे मुलाकात न होगी।

प्रोफेसर—'लेकिन उन सुनसान पहाडी जगहो मे तुम्हारी जान कसे बची ? बहरे लूत के उस पार उन दक्षिणी पहाडियों मे सिफ अरबा के हाथ ही जान का खतरा नही है, बल्कि खाने के बिना भूखो मरने का भी डर है। तुम्ह वहा खाने के लिये क्या मिला ?'

नाथन—'हम अपने साथ खाना ले गये थे, और दादा ने अब्के-नाजिम और रास्ते के गाँवो म जहाँ-तहाँ रहने वाले जो थोडे से हमारी जाति वाले थे, उनके द्वारा भोजन और छिपने का भी प्रबन्ध कर लिया था। इन सारे सप्ताहो म हम बराबर खुली जगहा म न रहते थे। और अन्त मे हम एक ऐसे स्थान पर जा छिपे, जहा से पेत्रा नजदीक है। वहा हम कितने ही दिनो तक प्रतीक्षा करते रहे।'

कप्तान—'प्रतीक्षा करते रह ? क्यो ?'

नाथन—'दादा, हमारे दो और जाति-बन्धुओ के पत्रा के खजाना म मिलने वाले थे। वह लोग आपस मे छिप कर ही मिल सकते थे। होर पवत के अरबा पर भी बराबर ध्यान रक्खा गया था। और मुझे मालूम नही।

प्रोफेसर—'क्या तुम्ह मालूम नही ?'

नाथन—'उनकी मुलाकात का क्या मतलब था, इसके विषय मे मुझे मालूम नही। यह एक गुप्त मुलाकात थी, जिसका कोई सम्ब ध हमारी जाति वाला से था। दादा ने मुझसे कहा है, कि तुम्हें कप्तान महाशय की आज्ञा पर चलना होगा, जब तुम उन्नीसवी वष तिथि पर पहुँच जाओगे, तो इसका सारा रहस्य तुम्हे मालूम हो जायगा।

कप्तान—'कब तुम्हारे दादा ने यह बात तुमसे कही ?'

नाथन—'जहाज पर, जब हम नहर म जा रह थे। उन्होन मुझसे कहा, कि मैंने तुम्ह कप्तान को सौप दिया, तुम उनको अपना पिता समझना, और उनकी आज्ञा म तत्पर रहना। जब तुम उन्नीस वष के हो जाओगे, तो जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार काम करना।'

कप्तान—'कहाँ लिखा है ? इन्ही कागजो मे जिन्हे उन्होन तुम्ह दिया है ?'

नाथन—'उसमे लिखा है कि मैं नाथन दशना आपकी आज्ञानुसार चलू। उनम मेरी वशावली दी हुई है। और मेरे दादा ने कहा है, कि और भी चम पत्र मैंने उन्हे दिये हैं, जिनके अनुसार करना, दशना वश के एकमात्र उत्तराधिकारी तुम्हारा कत्त य है ?'

कप्तान—'चम-पत्रो के अतिरिक्त किसी और चीज के विषय म भी उन्होने कहा ?'

नाथन—'नही ! मुझे धैय रखना चाहिये।'

प्रोफेसर—'और अन्य दोनो व्यक्ति जो तुम्हारे दादा से खजाना मे मिले थे ?'

नाथन—'वह आय और चुपके से वहां मिले, और फिर अलग अलग अपना रास्ता लिये। मैंने उन्ह नही देखा। किन्तु मुलाकात के बाद हम दोनो अपने छिपने के स्थान को छोड कर वादि उल् अरबा के पहाड की ओर चले और फिर पाच दिन की यात्रा के बाद समुद्र के पास हमने मेटियो और अरब को देखा, लेकिन हिन्दुस्तानी अब उनके साथ न था।'

प्रोफेसर—'उन्होने तुम पर हमला न किया ?'

नाथन—नही हम अकाबा के पास थे, जहा हमारे सम्बन्धियो के मित्र हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हम एक सप्ताह तक उनके पास रहे। तब एक दिन तारा वाली रात मे सूयास्त के दो घन्टे बाद एक पथ प्रदशक के साथ तेज ऊँटा पर हम स्वेज खाडी के पच्छिमी तट पर पहुँच गये। तीन रात लगातार आग बढते रहे। यात्रा सिर्फ रात म करते थे, और दिन मे छिपे रहत थे। और तीसरी रात के बाद वाली सुबह को हमने ऊट वाले को उसका किराया चुकाया और पहाडा म चल गय।

कप्तान—बेडा कैसे बना ? उस प्रदेश म तो पत्थर और बालू के अतिरिक्त कुछ है ही नही ?'

नाथन—हा, जब हम वहा पहुचे, तो हमने भी उसे ऐसा ही देखा। किन्तु रास मुहम्मद के पच्छिम तरफ एक पोत टक्कर खा कर टूट गया था। हमारी जाति वाले इस बात को जानत थे और जब हम अकाबा मे ठहरे थे, उसी समय उनमे से कुछ आदमी नाव पर चढ कर वहा गये, और उन्होन उससे एक बडा बना दिया। वह तब तक तैयार हो चुका था। हमने अल्-तूर पवत की एक पहाडी को पार किया, और फिर चट्टानो की आड मे होकर बेडे के पास पहुँच गये। दूसरी रात को हम वही बालू पर सो रहे। दूसरे दिन सूर्योदय से पूव ही बेडे पर सवार हो गय—और, (एक लम्बी सास लेकर) बाकी आप जानते ही हैं।'

बैंक वाला सेठ

जब कप्तान और प्रोफेसर दोनो ही प्रोफेसर के कमर म रह गये, तो कप्तान प्रताप नारायण काश्यप ने पूछा—'यह पेत्रा का खजाना क्या बला है ?'

चन्द्रनाथ—'पत्थर का मन्दिर है, जो कि उस सुनसान रेगिस्तानी प्रदेश

के अनेक ध्वस्त इमारतो मे से एक है, और सबसे अधिक प्रसिद्ध है। अरब लोग इसे फरऊन का खजाना घर कहते है। क्या तुम उसका चित्र देखना चाहते हो?'

प्रताप—'चन्द्र! मजाक करते हो?'

चन्द्रनाथ—'नही, मैंने उसकी भूमि, ऊँचाई, अदभुत खम्भो, सूक्ष्म फलकारियो का भिन्न भिन्न खण्डो के नाप के साथ एक चित्र बनाया है।'

प्रताप—'तो, जरूर मैं उसे देखना चाहता हू।'

चन्द्रनाथ ने चित्र को निकालकर मेज पर फैलाया, और दोनो बहुत देर तक उसको देखते रहे। फिर कप्तान ने पूछा—'क्यो वह तीनो आदमी वहाँ पर मिले?'

चन्द्रनाथ—'ओह! क्यो! मैं सिर्फ अनुमान करता हूँ, और मुझे आशा है, कि वह बहुत कुछ सच होगा।'

कप्तान ने ख्याल किया—फरऊन का खजाना घर, तब तो यह खडित ढाल नही हो सकती।'

चन्द्रनाथ ने मुस्कराते हुए कहा—'फरऊन की ढाल का टुकडा तुम ख्याल कर रहे हो? नही! प्रताप! मुझे इस पर विश्वास नही। यह पहाडी मन्दिर फरऊन का बनवाया नही है। इसका ढग यवनी है, मिश्री नही। ढाल की बनावट भी मिश्री नही ह। हो सकती है, कि यवनी हो, किन्तु इस पर मुझे बहुत सन्देह है। तीनो आदमी जो वहा एकत्रित हुए थे, यहूदी थे।'

कप्तान—'वह अवश्य इस ढाल के सम्बन्ध ही मे वहा एकत्रित हुए थे, क्योकि सिमियन बिन इज्रा अपने हिस्से को अपने साथ लाये थे।'

प्रोफेसर—किन्तु यह तभी हो सकता है, जब कि यह टुकडा उनके पास पहिले से हो।'

कप्तान—मैंने इस पर ध्यान न दिया था। शायद! यह आदमी, मेटियो बडा ही चालाक मालूम होता है। उसने सिमियन बिन इज्रा के कागजो ही को न चुराया, बल्कि कुछ और चीजे भी। क्या उन और चीजो मे ढाल की नाभि भी तो नही है? मेटियो सभी बातो को हमसे अधिक जानता है, और वह नाथन पर बराबर अपनी नजर रखना चाहता है।

प्रोफेसर—'ढाल की नाभि? नही! मेटियो के पास वह नही हो सकती। ढाल की नाभि किसी चौथ आदमी के पास है। सिर्फ तीन ही खजाना म मिले। चौथा कहाँ है?' इसके बाद वह थोडी देर चुप रहे, और फिर बोले—लेकिन मेटियो—हमे इस भयकर शैतान के हाथ और प्रभाव से नाथन की रक्षा करनी होगी। यह हमारा पहला कर्त्तव्य है।

कप्तान—'तुम्हारी क्या सलाह है?'

प्रोफेसर—'यहाँ घर मे या बाग मे सोमवार तक नाथन को रखना बहुत कठिन नही है। मैं उसे और शिव को अपनी छोटी वर्कशाप, (लोहाखाना) मे ले जाऊँगा, और अपने खम्नी काम मे, जैसा कि तुम उसे कहते हो, उनसे सहायता लूँगा।'

कप्तान—'अपने वायुयान के आदर्श को बनाने म ? अच्छी बात ! उसम उनका भी मन लग जायगा।

प्रोफेसर—'वह अभी से बडे उत्सुक हैं।'

कप्तान—'सचमुच ! चन्द्र, कुछ उसम होने-हवान की उम्मीद भी है—मेरा मतलब है कि वह उडे-उडायेगा भी ?'

प्रोफेसर—'हमे इस बात को दूसरे समय के लिए छोड देना चाहिये प्रताप, क्योंकि यदि मैं वायुयान पर गया, तो फिर सब बात भूल जायगी, और उसी की बात छिछड जायगी। यहाँ प्रश्न है नाथन का।'

कप्तान—'और मेटियो का।'

प्रोफेसर—सामवार को तो हम चले ही जायगे। मेटियो शायद नाथन के बारे मे पता लगावे या न लगावे, उसका पीछा करे या न करे। इतने दिना से और उतनी दूर तक बराबर पीछा करते रहना बतला रहा है, कि मेटियो इससे किसी भारी लाभ की आशा रखता है।'

कप्तान—'यह निस्सदेह है।'

प्रोफेसर—'देखो प्रताप, देर न करना। जसे ही हम यहाँ स जाय, सीता को अपने साथ लेना, और बुध को ही करांची चले जाना। उन चीजो को भी अपने साथ ले जाना। देखना, कि बक का मनेजर किस तरह का आदमी है। तुम उमस बात करना, और जैसा हो वसा देख कर सलाह लेना। पहिले अपनी चिट्ठी देना, और फिर परिस्थिति के अनुसार जैसा उचित समझना वैसा करना।'

प्राफेसर न इधर कुछ वर्षों से किताब का कीडा बनना छोड दिया था। अब वह एक छोटे स वायुयान बनाने के प्रयत्न मे थे। वह गुब्बारे के विश्वासी न थे। उनका विश्वास था, कि हवा पर उससे भारी किसी मशीन द्वारा विजय पाना होगा। वह उडने क विषय म प्रयत्नशील थे। उनका कहना था कि गुब्बारे के ऊपर उडना उडना नही है बल्कि हवा के रुख बहना है। उनकी वर्कशाप बाग के एक कोने मे एक लम्बा टीन से छाया झोपडा था—जहा पर वह शान्तिपूर्वक कई घण्टे बिताया करते थे। जब वह वहाँ से जाते थे, तो बडी सावधानीपूर्वक उसमे ताला बन्द कर देते थे।

शिव न इस बडे गौरव की बात समझी, जो प्रोफेसर ने उसे वर्कशाप में चलने के लिए कहा, और नाथन के लिए तो यह कल्पनागार था। अगले तीन दिना

मे चद्रनाथ ने अपने वायुयान के नमूने के विषय मे उन्हे बहुत कुछ बताया, और उसके बनाने में सहायक होने के लिए कहा। वह दोनो बराबर उनके साथ पटरो को काटने और सिजिल करने, तारो को बाधने, कानविस को तानने, थापियो को ठीक करने मे इतने सलग्न थे, कि उन्हे दिन बीतते कुछ जान ही न पडा। उन्हे सोमवार को इतनी जल्दी चले आने से बडा अफसोस हुआ।

आखिर सोमवार आया, और प्रोफेसर दोनो को लेकर लाहौर के लिए रवाना हो गये। सितम्बर का अतिम सप्ताह था। वर्षाकाल व्यतीत हो चुका था, भिनसारे के वक्त एक चददर का जाडा पडने लगा था। यह सवेरे ही का समय था जब कि तीनो आदमी लाहौर स्टेशन पर पहुचे। स्टेशन से बाहर निकलते ही प्रोफेसर चद्रनाथ भारद्वाज ने डी० ए० वी० कालेज के लिए एक तागा किराये का किया। अब तीनो आदमी तागे पर सवार हो इस्लामिया कालेज, मोची दर्वाजे के बाहर से होते हुए लाहौरी दरवाजे के सामने वाले मोड पर पहुँचे। वहा से अनारकली आर्यसमाज और 'ए० पी० सी० के हाल के बीच से होते हुए गवर्नमेंट कालेज को बायें छोडते वह डी० ए० वी० कालिज होस्टल के पास प्रोफेसर महाशय के कमरे पर पहुँच गये। रास्ते मे प्रोफेसर महाशय ने नाथन का मार्ग की इमारतो और वस्तुओ के विषय मे कई बात बताई थी। दयानन्द कालेज और महर्षि दयानन्द के विषय मे तो उन्होने रास्ते ही मे बहुत कुछ बतला दिया था।

प्रोफेसर और लडको के जाने के बाद दूसरे ही दिन कप्तान काश्यप और सीता देवी कराची को रवाना हुए। उन्होंने ढाल और चर्म पत्र की पोटली बना कर सी दिया, और उस पर अपना नाम लिख कर खूब अच्छी तरह मुहर लगा दी। चद्रनाथ की सलाह का ख्याल रखते हुए वह बृहस्पतिवार के प्रातःकाल ही सीता देवी के साथ बैक मे पहुँचे गये। देखने मे यह एक छोटा सा बैंक जान पडा। सीता की बुद्धिमत्ता पर कप्तान का विश्वास था। उनका विश्वास था कि वह बैंक के मैनेजर की प्रकृति का जल्दी अध्ययन कर सकती हैं, और यह बतला सकती है, कि यह विश्वासपात्र है या नही।

यह सवा दस बजे का समय था, जब काश्यप दम्पती बैंक के भीतर गये। खजाची ने खिडकी के मुह से देखा, कि एक छोटा-सा कागज का टुकडा है जिस पर मुहर आदि कुछ नही है, सिर्फ कुछ चिह्न मिश्रित किया हुआ है और नीचे मिसियन क्रिन इच्छा बडे विचित्र तौर पर लिखा हुआ है। उसने कागज को हाथ मे ले लिया, और पास की एक मेज पर बैठ कर उसे भली भाति देखना शुरू किया। फिर वहा से लौट कर वह खिडकी पर आया और बडी-बडी मूछो वाले गोरे रग के नाविक और उसकी दुबली पतली स्त्री के चेहरे को देखने लगा।

फिर उसने कप्तान से कहा—'आप ही कप्तान काश्यप हैं ?'

कप्तान —'हाँ ! मेरा ही नाम प्रताप नारायण काश्यप है। मैं अभी कुछ ही दिनो पहले 'कदम्ब' का कप्तान रहा हूँ। यदि आपका इसकी आवश्यकता हो, तो मैं इसके लिये आप को प्रणाम द सकता हू। और जब तक आप को निश्चय न हो ले, आप मेरी चिट्ठी का बिना अदाय किये रख सकते हैं।'

खजाची ने मुस्कुराते हुए कहा—'आपको मैं इस तरह का कुछ भी करने के लिये तकलीफ दना नहीं चाहता। यह चिटठी कुछ असाधारण-सी है अत मैं जरा मन-जर का इसे दिखाना चाहता हू।

कप्तान— मुझे भी उनसे मिलना जरूरी है किन्तु मैंने सोचा था कि पहल चिट्ठी के काम से फुसत पा लू तो फिर मिलूगा। क्या उन्हे इस वक्त फुसत है ?'

खजाची —'मैं समझता हू है अच्छा जरा देर ठहरिये।' यह कह कर चिटठी लिये खजाची भीतर चला गया और थोडी देर बाद लौट कर बोला—'कृपया, इस रास्ते से पधारिये। और वह दोना व्यक्तिया का एक बगल वाले कमरे मे ले गया।

सेठ जी उस चिटठी को देख रहे थे। वह साठ वष से ऊपर की अवस्था के एक लम्बे मोटे-ताजे आदमी थे। चेहरे पर मूछ दाढी न थी रग बिल्कुल गोरा मुख-मण्डल पर भद्रता झलक रही थी।

उन्होंने अपने सुनहली कमानी के चश्मो के ऊपर से दोना आगन्तुका की ओर देखा, और वह उठ खड़े हुए।

सेठ— बन्देमातरम! कप्तान काश्यप और श्रीमती काश्यपी! मैं अनुमान करता हू—आपस मिल कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। अच्छा! आगे बढ कर उन्होने श्रीमती सीता दवी के लिये पहले एक कुर्सी दी और फिर कप्तान के लिये भी एक, 'यह चिटठी मेरे पुरान मित्र सिमियन बिन इज्रा ने लिखी है ?

कप्तान—'हा! लिखी थी।

सेठ— मैं उनके हस्ताक्षर को पहचानता हू। यह अवश्य पूरा किया जायगा' बताइये रुपये या नाट चाहिये ?'

कप्तान — नाट ही अच्छे होगे।

सेठ— खजाची इस पर मुहर कर देंगे फिर आपके हस्ताक्षर की आवश्यकता रह जायगी।' यह कह कर उन्होंने घटी बजाई।

खजाची ने सेठ के कथनानुसार दो-तीन मिनट ही म सब काम ठीक कर दिया।

कप्तान ने देखा कि उनकी पत्नी का विचार सेठ की ओर से बहुत अच्छा है। फिर सेठ से कहा— मैं चाहता हू कि इस पाटली को आपके पास अमानत रक्खू,

आप इस अपने बक की पेटी मे अच्छी तरह सुरक्षित रख सकते है।' यह कह कर उन्होंने पाटली को सेठ के हाथ मे दे दिया।

सेठ—'बडी प्रसन्नता से। मै आपको इसकी रसीद देता हू। यह कह कर उन्हान एक फाम भरा और उस पर हस्ताक्षर करके कप्तान के हवाले किया। अब, यदि आप को जल्दी न हो ता मुझे आशा है कि आप मेरी एक स्वाभाविक जिज्ञासा को पूर्ण करने की कृपा करेंगे। बहुत वष बीत गय जब से मैं अपने इस पुरान दोस्त से न मिल सका जिसकी चिट्ठी आज आप लाय ह और इसकी तारीख से मालूम होता ह कि यह करीब तीन मास की लिखी हुई है। वह कैसे है ? आप उनसे कहा मिले ? कब तक वह हिन्दुस्तान की ओर आने वाले ह ? बहुत समय से मने उनके बारे म कुछ नही सुना।'

कप्तान—इस चिट्ठी के लिखन के बाद ही, वह स्वगवासी हो गय महाशय !'

सेठ—स्वगवासी हो गय ! स्वगवासी दशना ! फिर धीम स्वर मे—मुझे बडा शाक है, उस स्वर्गीय आत्मा के लिए नहा बल्कि अपने लिए। मै भाग्यहीन हूँ। मेरा एक सच्चा मित्र मुझसे छिन गया।

श्रीमती सीता देवी न बडे मधुर स्वर से कहा—'एक ओर और दूसरी ओर एक सच्चा मित्र मिला।

सेठ—'धन्यवाद है देवि आपके स्मरण दिलाने के लिये। मै सचमुच उतना भाग्यहीन नही हू। तथापि मुझे बहुत अफसोस है। क्या अपने पीछे उन्हान कोई अपना उत्तराधिकारी छोडा है ?'

कप्तान—'एक पाता मेरी अभिभावकता म।

सेठ—ता आप लडके क अभिभावक के तौर पर काम कर रह ह ?

कप्तान—'उसके दादा की इच्छानुसार। वह दोनो 'कदम्ब के यात्री थ। वृद्ध मिमियन पूर्वी भूमध्यसागर म पचत्व को प्राप्त हुए और उनका शव मसीना म समाधिस्थ हुआ। लडका नाथन मेरे लडके शिवकुमार के साथ पढ़ने लाहौर स्कूल मे गया है। वहा मेरा साला दयानन्द एग्लो वदिक कालज म प्राफेसर है।

सेठ—मैं यह सुन कर बहुत ही खुश हुआ हू, कम स कम एक दशना अब भी ससार म है और वह अच्छे हाथो म पडा ह।

सीता देवी मुस्करा उठी, और कप्तान न कहा—'मेरी धमपत्नी मैं और चन्द्र तीनो ही उसके लिये, जो कुछ हमसे होता है, करने के लिये तयार ह।

सीता देवी—और शिव।'

सेठ—आपका लडका—और चन्द्र कौन ह ?'

सीता देवी—मेरा भाई।'

सेठ—'शायद मैं उन्हें जानता हूँ। वह वस्तुतः बहुत ही अच्छे हाथों में है। कप्तान महाशय! तो लड़का और उसके दादा आपके जहाज के यात्री थे?'

इस पर कप्तान ने बेड़े को बचाने से लेकर सभी किस्सा उनसे कह सुनाया। ढाल और चर्म पत्र के बारे में उन्होंने कुछ न कहा। इसके विषय में उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि यह पोटली नाथन की है, जो कि उसके दादा की इच्छानुसार उसकी उन्नीसवीं जन्म तिथि पर नाथन को दी जायगी। सेठ जी ने उस धरोहर के प्रति बड़ा सम्मान प्रदर्शित किया। उन्होंने पोटली के विषय में कुछ न पूछा और कप्तान को भी इसका कुछ पता न लगा कि वह कहाँ तक जानते हैं। यदि उन्हें जरा भी ख्याल करने का मौका पाया होता तो इसका पता लगाना आसान था क्योंकि सेठ ने कहा था कि कम से कम एक दुश्मन तो बाकी है। इसी से जान पड़ता था कि दशनावंश के विषय में वह बहुत जानते हैं।

कप्तान ने फिर शिव और नाथन के बदरा की दूकान पर जाने का जिक्र किया, और बतलाया कि कैसे वहाँ मेटियो से उनसे मुलाकात हुई, साथ ही नाथन की कही कहानी भी कह सुनाई, कि मटियो सिमियन बिन इज्रा के पास नौकर था। सेठ ने नाथन की सारी कहानी को बड़े ध्यानपूर्वक सुना, और फिर पूछा—मटियो की नखवर में उपस्थिति आपको खटकता है कि नहीं?

कप्तान—'जरूर।'

सेठ—क्या आप समझ सकते हैं, कि यह संयोग की बात थी?

कप्तान—नहीं! उसने पहिले ही उन्हें देख लिया था, और फिर पीछा करते करते वह दूकान तक पहुँच गया।'

सेठ—किस मतलब से?

कप्तान—दो मतलब से। एक तो नाथन के हृदय को आतंकित करने के लिए, और जिसमें कि वह कृतकार्य हुआ और दूसरे दूकान से पूछा परखी करके नाथन के रहने का पता लगाने के ख्याल से जिसमें उसे असफल होना पड़ा।'

सेठ—'आप निश्चय समझ रहे हैं कि वह असफल रहा?

कप्तान—हमने उसे एक बार भी न देखा।'

सेठ—यह सम्भव है। किन्तु वह केवल दत्तचित्त ही नहीं है, बल्कि एक एक छोटी छोटी बात के लिए भी बड़ा सावधान है इसीलिये और भी खतरनाक है। मैं इस पर जरा भी विश्वास नहीं करता, कि वह अपने दूसरे मतलब में असफल रहा। शायद उसे मालूम है कि नाथन कहाँ है और बल्कि मैं तो यह समझता हूँ, कि उसे यह भी पता है कि नाथन इस वक्त कहाँ है।'

सीता देवी ने बड़े आतंक में आकर और अपने पति को चुप देख कर पूछा—'आप कैसे यह ख्याल कर रहे हैं ?'

सेठ—उसकी कल्पना शक्ति को देख कर।'

कप्तान—'और मैंने जो बातें उसके विषय में आपको सुनाई हैं उनमें भी।'

सेठ—'बिल्कुल ठीक। आपको, कप्तान ! उसकी सक्खर की उपस्थिति का कुछ अभिप्राय समझना चाहिए। क्या वह अपने 'धो' पर से आपके जहाज का नाम पढ़ सकता था ?'

कप्तान—'हाँ ! धो बहुत करीब तक आ गई थी।

सेठ—और आप स्वेज नहर में हो कर गये। पोर्ट सईद का वह खूब जानता ही है। वह वहाँ पर 'कदम्ब' और उसके मालिकों का ठीक पता अच्छी तरह लगा सकता था। उसके लिये इतना ही काफी है इससे अधिक वह शायद पूछेगा भी नहीं क्योंकि फिर सन्देह उत्पन्न होने का भय है। आपकी यात्रा कहाँ से आरम्भ हुई और कहाँ अन्त होगी, इसकी उसे आज तक जरूरत न थी। उसे तो आपका नाम, जहाज के मालिकों के नाम और पता से काम था। सम्भवतः वह सीधा कराची आया और यहाँ सब पता ठिकाना लगाकर वह बम्बई गया, वहाँ उसने आपके जहाज 'कदम्ब' को सूखी जगह पर मरम्मत करने के लिये रखा हुआ भी देखा। फिर आपके घर का पता पाकर वह उधर ही जा रहा था। मेरी समझ में तो उसकी इन सारी ही चालों का यही एक मात्र तात्पर्य है।'

कप्तान—'यह तो बड़े ही चक्कर में डाल देने वाली चालाकी है।

सेठ—मेंटियो आफत का परकाला है महाशय। यह चालाकी मत समझिये। यह एक क्रमश: अनुमान शृंखलाओं की योजना है। वह इनमें किसी प्रकार सक्खर पहुँच गया।

सेठ की इन प्रतिभापूर्ण बातों से प्रभावित होकर कप्तान ने पूछा—'आप समझते हैं कि और दोनों भी उसके साथ हैं ?'

सेठ—कौन ? अरब और हिंदुस्तानी ? नहीं ! मैं समझता हूँ वह अकेला है। मेरा विचार है कि उसने हिंदुस्तानी को तो पर्शियन गल्फ ही में छोड़ दिया, और अरब को मिश्र में। अब उसे अब उनकी सहायता अपेक्षित नहीं है।

कप्तान—'और आप नाथन की भलाई के लिये क्या सलाह देते हैं ?

सेठ—'खबरदार रखिये नाथन को उसके प्रभाव में न पड़ने दीजिये। वह इसके लिये कोशिश करने से बाज न आयगा। सम्भव है, अब वह अपना नाम या रूप बदल दे किन्तु इसके बारे में अभी से भविष्यवाणी करना व्यर्थ है।

और यदि आपको मेरी आवश्यकता हो, तो निस्संकोच आत्मीय से

सूचित किये बिना न रहियेगा। अपने साले प्रोफेसर महाशय को इस बात की सूचना दे दीजिये, कि मैं सब तरह से सेवा के लिये तयार हू।

कप्तान—'वह आपके बडे कृतज्ञ होंगे और मैं भी महाशय आपकी इन उपयोगी सलाहों के लिये अत्यन्त कृतज्ञ हू।'

सेठ—'आप कब नये जहाज का चार्ज लेने जाते हैं, कप्तान साहब ?'

कप्तान—'दिसम्बर से पहिले नही। कल मैं मालिकों से मिलने जा रहा हू।'

सेठ—'उसका नाम क्या है ?'

कप्तान—सौदामिनी।

और जब वह विदा होने के लिये खडे हुए तो सेठ ने खडे हो कर वन्देमातरम् करने के बाद कहा—'सौदामिनी की यात्रा आपके लिये कल्याणकारी हो।

कप्तान काश्यप जब अपने मालिकों के पास गये तो अपनी धर्मपत्नी को अपने साथ न ले गये। जब वह उधर गये थे उसी समय श्रीमती सीता देवी कुछ चीजें खरीदने के लिये निकल पडी। यह अच्छा था, यदि कप्तान अपने साथ अपनी पत्नी को भी लिवाये गये होते, क्योंकि उन्हें तो अपने जहाज की बात छोड कर और किसी चीज का ख्याल न था। पानी मे तैराना परीक्षात्मक दौड प्रथम यात्रा का आरंभ, समुद्र मे कैसे काम देगी क्या वह मालिकों की इच्छा पूर्ण करेगी क्योंकि 'सौदामिनी' यही नही कि कम्पनी के जहाजी बेडे मे एक नया इजाफा थी, बल्कि वह सबसे बडी और सबसे शक्तिशाली थी वही सब ख्याल उनके दिल मे चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने यह न ख्याल किया कि एक पतला भूरा, कुण्डलधारी आदमी पास के एक दर्वाजे से उनकी ओर झाक रहा है जब कि वह कंपनी के आफिस मे घुस रहे थे, और जब बाहर निकले आ रहे थे तब भी वही आदमी एक दूसरी जहाजी कंपनी के दर्वाजे से झाक रहा था।

एक घंटे तक कप्तान आफिस मे बातचीत करते रहे किन्तु वह आदमी उस सडक से अन्यत्र न गया, और कप्तान चले गये तब भी बिल्ली की तरह लपक कर वहा खडा रहा। एक बजे के समय एक युवा क्लर्क कम्पनी के आफिस से सीटी बजाते हुए खाना खाने के लिये बाहर निकला। मेटियो—क्योंकि यही उस कुण्डलधारी का नाम था, उधर बढा जिधर से क्लर्क आ रहा था और जब वह नजदीक आ गया, तो मेटियो ने दूसरी ओर देखते हुए अनजाने से बन कर ऐसा धक्का दिया कि क्लर्क गिरते गिरते बचा।

मेटियो ने बडा ही शोक और नम्रता प्रकट करते हुए कहा—'माफ कीजिये, कप्तान साहब।'

युवक—'कोई पर्वाह् नही।' फिर जरा सुस्थ और प्रसन्न मुख हो कर—'आपने तो सारी सेब की गाडी को ही लुढका दिया था, किन्तु सौभाग्य से वह खाली थी।'

मेटियो (दुहराते हुए)—'खाली।'

युवक—'हा! सेब की गाडी! अपने पेट पर थपकी देते हुए युवक ने कहा।

मेटियो मुस्कराते हुए युवक के साथ आगे बढा, जब कि वह खाने के लिये जल्दी कर रहा था।

मेटियो—'मै समझता हूँ, कि मैं 'कदम्ब' के कप्तान से बात कर रहा हूँ।

युवक—पन्द्रह मिनट पहिले? बहुत कुछ सम्भव है, किन्तु अब वह 'कदम्ब' के कप्तान नही है, अब वह दूसरे एक नये जहाज की कमान अपने हाथ मे लेने जा रहे है।'

मेटियो—'नया जहाज।'

युवक—'हा! 'सौदामिनी, लेकिन अभी वह तैयार नही है। यह वह स्थान है, जहा गाडी फिर भरी जायगी।' यह कह कर युवक जहाज के भीतर चला गया, और मेटियो कुछ सोचते हुए आगे बढा।

जालिया भडारी

सारा सत्र बडे आनन्द से बीत गया, और मेटियो लाहौर मे कही दिखाई न पडा। शिव और नाथन दोनो ही अपने अध्ययन मे निर्विघ्नता पूर्वक सलग्न रहे। शिव स्कूल की नवम श्रेणी मे पढता था और नाथन भाषा को छोड गणित आदि कई विषयो मे उसके साथ पढता था और साथ ही प्रोफेसर चन्द्रनाथ भी उस पर अधिक परिश्रम कर रहे थे। यद्यपि अभी उसका नाम किसी क्लास मे न लिखा गया था, किन्तु यह निश्चित हुआ था कि जसे ही उसकी भाषा सम्बन्धी निर्बलता दूर हो जाय वैसे ही उसका नाम लिख लिया जायगा। दोनो लडके स्कूल के खेलो मे शामिल होते थे। यद्यपि नाथन की भाषा अपूर्ण और आकृति भी विभिन्न थी किन्तु लडको ने बहुत जल्दी ही देख लिया कि वह एक अच्छा खिलाडी है फिर क्या सभी लडके पहले उसकी बातो का मजाक उडाया करते थे, अब उसे आत्मीय समझने लगे।

दीवाली की छुटियो मे सब लोग फिर सक्खर अपने घर पर आये।

बीस वर्षों में कप्तान सिर्फ दो बार ही दीवाली के दिनों में घर पर आ सके थे। यह तीसरे वार का उत्सव उनके लिये सचमुच महोत्सव था।

'सौदामिनी' के तैयार होने पर उन्होंने जा कर उसे देखा उसे पानी में डाला उसकी गति परीक्षा की। जब इन्जीनियर ने उसके इन्जन की परीक्षा की, तो वह उस पर ही थे। बम्बई से प्रथम दिसम्बर को सौदामिनी पहिले-पहल यात्रियों को लेकर प्रस्थान करने वाली थी।

कप्तान और प्रोफेसर ने नाथन के विषय में आपस में बहुत-सा वार्तालाप किया। उन्होंने इस बात का निश्चय किया, कि यदि मेरी अनुपस्थिति में कोई काम आ पड़े तो तुम सेठ से सलाह लेना और जो दोनों की राय में ठीक जचे वह करना। 'सौदामिनी' का बयाना अर्जेन्टाइन का हुआ था वहां से वह होर्न अन्तरीप की प्रदक्षिणा करके तथा प्रशान्त महासागर को पार कर के चीन या जापान को जायगी, और ऐसी अवस्था में कप्तान कई महीने बाद घर लौट सकेंगे। वह नाथन के विषय में विशेष चिन्तित थे और एकाध बार उनके दिल में यह भी आया, कि क्या न उसे भी अपने साथ रक्खूं। लेकिन चन्द्रनाथ ने उनके इस विचार को अयुक्त सिद्ध कर दिया। क्योंकि इससे नाथन की शिक्षा न हो सकती थी।

कप्तान काश्यप ने जहाँ तक हो सका कदम्ब के कर्मचारियों को सौदामिनी पर बदलने का प्रयत्न किया। किन्तु 'सौदामिनी' के तयार होने से पूर्व ही 'कदम्ब' यात्रा के लिये तैयार हो चुका था। तो भी प्रधान इन्जीनियर सैयद रहमान एवं बाबू रामन दन सहाय को अपने पास रखने में वह समर्थ हुए। छोटे कर्मचारियों में उन्हें अपना पुराना भंडारी न मिल सका, और बहुत से नाविक भी।

कप्तान की स्वीकृति के अनुसार रामनन्दन बाबू को और आदमियों के भरती करने का भार दिया गया।

जिस वक्त सौदामिनी की परीक्षा हो रही थी, उस समय मटिया दर्शकों की भीड़ में मौजूद था, लेकिन कप्तान काश्यप उसे न पहचानते थे और न सैयद महाशय और न रामनन्दन बाबू में से ही कोई पहचानता था। अगर उनमें से किसी की नजर उस पर पड़ी भी हो तो भी वह उसका सम्बन्ध नाथन से कैसे जोड़ सकते थे? अब उसने एक नई पोशाक पहनी थी। उसने अपने रूप को इतना बदल डाला था कि कुंडलों को अलग करके मुंह पर मूछ भी जमा ली थी। तथापि यह परिवर्तन ऐसा न था, जिसे नाथन या शिव न पहिचान सकते, यद्यपि शिव ने एक ही बार उसे देखा था।

जब 'सौदामिनी' यात्रा के लिये तैयार होकर डक पर आई, तो मेटिया भी पर आने का प्रयत्न कर रहा था।

सलाम करते हुए मेटियो ने कहा—'मुझे भी ले लीजिये, महाशय !'

रामनदन बाबू ने रूखे स्वर से कहा—'तुम्हारा क्या काम है ?'

विदेशी—'मुझे भी जहाज पर ले लीजिये, महाशय ।'

रामनदन—'अरे ! काम भी बतलाओ—क्यो ?'

विदेशी—'भडारी, महाशय ।'

रामनदन—हमारा भडारी ही रसोइया भी होता है ।'

विदेशी—'मैं अच्छा रसोइया भी हूँ, महाशय ।'

रामनदन—तुम्हारा प्रशसा पत्र कहा है ?'

'मेरा'—मेटियो को थोडी देर तक कोई उत्तर न सूझ पडा ।

रामनदन—हा ! पिछले जहाज का तुम्हारा प्रमाण पत्र ।

विदेशी—मैं अच्छा रसोइया हूँ, महाशय ।'

रामनदन—'सो तो ठीक, किन्तु क्या तुम्हारी चाल-चलन भी अच्छी है ? तुम्हारे प्रमाण पत्र कहा हैं ? तुम्हारे पिछले कामो की कैफियत क्या है ? हम शायद ही कभी किसी विदेशी को भडारी की जगह देते हैं। हमे इस काम के लिए ऐसा आदमी चाहिये, जो हमारी बात अच्छी तरह समझ सकता हो, जो हमारे विश्वास के योग्य हो जो भडार मे से खर्च मितव्ययिता के साथ कर सकता हो। नही ! मेरी समझ मे तुम उसके योग्य नही हो ।' और वह लौट पडे ।

विदेशी ने बडे करुणाजनक स्वर मे कहा—'महाशय ! मैं भडार का इन्तजाम अच्छी तरह जानता हूँ। मैं आपको दिखा सकता हूँ । मैं जानता हूँ । और मैंने प्रमाण पत्रो के बारे मे लिखा है, वह आते होगे, एक दिन—शायद कल—'आप मेरी परीक्षा कर ले ।'

रामनदन—'तुम्हारा नाम क्या है ?'

विदेशी—'गाइडो माफा ।'

रामनदन—'मैं तुम्हे नही ले सकता ।'

मेटियो का चेहरा उदास हो गया । उसने एक बार सिर्फ बडी दुख भरी दृष्टि से देखा ।

रामनन्दन—शायद कप्तान साहब रख ले, यह बिल्कुल उनके हाथ की बात है । अपना सामान लिये जल्दी आओ, और आज-कौच बारो, देखे तुम कैसा काम करते हो ।'

'बहुत-बहुत धन्यवाद महाशय, मैं उम्मीद करता हूँ, कि कप्तान साहब मुझसे अप्रसन्न न होगे ।'

रामनदन बाबू ने मेटियो—या गाइडो जैसा उसने अपना नाम ।

कोई दाप न पाया और सैयद बाबू ने भी उनके विषय मे कुछ न कहा। कप्तान भी अनुपस्थित थे, और द्वितीय इंजीनियर और द्वितीय सरदार की अभी नियुक्त न हो सकी थी, अत आज खाने वाले दो ही आदमी थे। गाइडो ने भोजन बहुत अच्छा बनाया और परसा। सैयद महाशय को उसकी शक्ल जरा खटकती-सी थी, किन्तु उन्होने कुछ कहा नही। गाइडो ने भी सब चीजें ठीक तौर से परसी, और उनकी आवश्यकताओ को बड़े ध्यान से देखता रहा, किन्तु जबान उसने बन्द रक्खी। उसके प्रमाण पत्र अब भी न आये, और उसने उनका जिक्र भी न किया। सरदार के पूछने पर तो उत्तर उसके पास हाजिर ही था। उसने अपने काम के भरोसे पर ही अपनी बहाली की आशा रक्खी।

कम्पनी ने द्वितीय सरदार और द्वितीय इंजीनिजर भेज दिया। सभी कमचारी पूरे हो गये। प्रथम दिसम्बर को कप्तान भी 'सौदामिनी' पर पहुँच गये।

दोपहर के भोजन के समय कप्तान ने सरदार से पूछा—'कहा से आपने इस भडारी को लिया, रामनन्दन बाबू?'

उस समय भडारी बडी फुर्ती से सुन्दर रीति से पकाया हुआ भोजन लिए हुए बार बार हाजिर हो रहा था।

रामनन्दन—'यही से जनाब। उसने जहाज पर आकर नौकरी के लिए कहा। मैने उसे अभी नौकर नही रक्खा है। मने उसे कह दिया है कि यह आपके हाथ मे है। उसने अपना नाम गाइडो बताया है।'

माफा ने सशोधन करते हुए कहा—गाइडो माफा महाशय।

कप्तान—हमने कभी भी किसी विदेशी को भडारी नही रखा।'

रामनन्दन—मैने भी उसे अच्छी तरह बता दिया है कि आप भारतीय को ही भडारी रखना पसन्द करते है।'

कप्तान—हा! बिल्कुल ठीक! अच्छा, यह काम कैसा करता है?'

रामनन्दन—'काम तो बहुत अच्छी तरह करता है, और बडा सावधान रहता है, किन्तु यदि आपको पसन्द न हो, तो दो दिन की उसकी तनख्वाह दे कर अलग कर सकते हैं और दूसरा भडारी रख लिया जा सकता है।'

कप्तान काश्यप को कई बार भडारियो से बडी तकलीफ पहुच चुकी थी कितनी ही बार वह चोरी से अफीम और गाजा लाकर दूसरे बन्दरो पर बेचते थे, कितनी ही बार वह स्वय नशे मे बेहोश पडे मिले थे, उनमे से कितने ही बहुत गन्दे भी रहते थे। यद्यपि कुछ देर पहिले मालम हुआ होता अथवा उसके प्रमाण पत्रो के आने की बात मालूम हुई होती तो कप्तान कभी गाइडो को न रखते।

न्तु अब उसके काम की चतुरता और स्वच्छता को देख कर उन्होने देशी-विदेशी विचार को छोड दिया, और गाइडो का रखना पक्का हो गया।

गाइडो के अपने कामो ने अपने सारे कर्त्तव्य का ठीक समय और अच्छी रह पूरा करना, भडार का बडे इन्तिजाम से खर्च, भोजन पकाने की निपुणता सारे दमियो का सन्तुष्ट रखना—क्योकि कप्तान के पास उसकी कभी किसी ने कोई कायत न की—कप्तान के हृदय मे भी उसके प्रति सदभाव पैदा कर दिया।

कप्तान के प्राइवेट कमरे मे उनके डैक्स, उनकी सामुद्रिक पेटी, उनके ट्रक्क भी बराबर खोल कर देखे जाते रहे, किन्तु उन्हे यह मालूम न था, कि जब मैं ल पर या नकशा घर मे रहता हू, तो उस समय मेरे कागज पत्रो के साथ ऐसा लूक किया जाता है। कभी-कभी कार्यवश भडारी को कमरे के अन्दर जाने की ावश्यकता पडती थी, उसी समय बडी सावधानी और सफाई से गाइडो कप्तान के क्स, सन्दूक, कोट की जेबो मे रक्खे कागजो को निकाल निकाल कर देखता, और फर जहा का तहा रख देता था। उसे उसमे से कोई काम की चीज हाथ न लगी। ह बडे दबे पाव चलना जानता था, उसकी अगुलियाँ मदारी की तरह चलती ी। उसकी आखें बिल्ली से भी तेज थी। उसके कान जरा-सी आहट को सुन ते थे। वह यह सभी काम इतनी खूबी से करता रहा कि जब तक कप्तान दक्षिणी मेरिका के प्रसिद्ध बन्दर अजण्टाइन प्रजातन्त्र की राजधानी ब्युनस आयस जो कलकत्ता से भी भारी अर्थात सोलह लाख आबादी वाला शहर है।) मे न हुच गये।

आवश्यक कामो के कारण ब्युनस आयस मे कप्तान का अपना बहुत सा मय किनारो पर बिताना पडा था। मेटियो इसे पहले से जानता था, और उसने स समय से अच्छा लाभ उठाना चाहा। वह चाहता था कि किसी प्रकार सामुद्रिक टी की परताल करू, शायद उसमे उसके पुराने मालिक सिमियन बिन इच्चा के म पत्र और ढाल खड हो। वह चर्म पत्र को पढना चाहता था, चुराना नही, और ाल की शक्ल सूरत से पूर्ण परिचित होना चाहता था। सिमियन उस पर इतनी या और विश्वास रखते थे कि उन्होने इसे यहूदियो की पवित्र भाषा इब्रानी दिखाई ी। कुछ ही दिन और यदि वह अपने काम को चुपचाप करने पाता, तो उसे चर्म- त्र का सारा रहस्य मालूम हो जाता, और वह आसानी से ढाल के तीनो टुकडो और ायद नाभि को भी अपने कब्जे मे करने मे सफल होता।

उसने लाख यत्न किया, किन्तु सामुद्रिक पेटी न खुल सकी। उसने ताले को ोडना न चाहा, क्योकि इससे मामले के खुल जाने का भय था। वह चाहता था, िसी प्रकार ताले को खोले। डैक्सो और अन्य पेटियो के तालो को आसानी से वह

खोल-बन्द कर सका था, किन्तु उनमे कोई मतलब की चीज हाथ न आई। सभी चीजो को देखने के बाद ठीक पहले ही की भांति वह रख दिया करता था।

जब कप्तान जहाज पर आये, तो वह अपने साथ बहुत से ताजी डाक से आये पत्र लाये। इनमे कितने ही अपनी कम्पनी के थे, और कितने ही उनके सम्बन्धियो के। मटिया ने इन्हे भी पढा, किन्तु उनसे भी वह अपने लक्ष्य के समीप न पहुँच सका। यद्यपि उनसे उसे मालूम हुआ कि नाथन अब भी लाहौर मे ही है, और वही अभी रहेगा भी।

उसके चेहरे पर एक भयानक हँसी की रेखा दिखाई पडी और उसकी क्रूर आख चमक उठी जब कि उसने प्रोफेसर के दो पत्रो मे अपना नाम पढा। उसके विषय मे सिर्फ इतना ही लिखा था, कि मटिया यहा कालिज के आस पास कही दिखाई नही पडा। दूसरे पत्र मे जहा भी उसका नाम लिखा था, एक सेठ का नाम था किन्तु उसके बारे मे वह कुछ भी न सोच सका। इस पढ कर उसे बडी परेशानी हुई। उसने अपने दिमाग मे इस नाम को नोट कर लिया, कि प्रोफेसर के अगले पत्रो मे देखना है कि उसके बारे मे और क्या वह लिख रहे है।

इन चिट्ठियो के पढने के समय उसने एक गलती की। अपने हाथो को साफ करना वह भूल गया। कप्तान का यह कायदा था कि वह अपने प्रत्येक पत्र को दुबारा पढते थे। जवाब दे देने के बाद भी वह एक बार फिर पढते थे। उन्हे तुरन्त उनको फाड फेंकना अच्छा न लगता था क्योकि उनमे उन हृदयो के उद्गार होते थे, जो बहुत दूर समुद्र पार से प्रेम के प्यासे थे। जब वह हॉर्न अन्तरीप की परिक्रमा करके प्रशान्त महासागर मे बहुत दूर निकल गये तो फिर उन्होने अपने सारे पत्रो को एकत्रित करके पढना आरम्भ किया।

यह चन्द्रनाथ का द्वितीय पत्र था जिसने उनके हृदय मे सन्देह का बीज बोया। चन्द्रनाथ अपनी चिट्ठी के कागज के विषय मे बडे भिन्न रुचि के आदमी थे। वह सदा मक्खन की भाँति सफेद, चिकने और मोटे कागज का व्यवहार करते थे, जिसके कारण अक्सर उन्हे अधिक टिकट लगाने की आवश्यकता पड जाती थी। पर कागज ऐसा होता था जिस पर बारीक से बारीक धब्बा भी उग आता था। चन्द्रनाथ के इस दूसरे पत्र ही पर अगूठे का हल्का किन्तु स्पष्ट निशान बना हुआ था। जिस वक्त उन्होने पहले पत्र खोला था, उस समय वहाँ वह निशान हर्गिज न था। चन्द्रनाथ को सफाई का अत्यधिक ध्यान था, जरा भी धब्बा देखने पर वह उस चिट्ठी को फाड कर फेंक देते थे। क्या यह निशान कप्तान के अपने थे? नही! वह इस विषय मे निश्चिन्त थे कि यह मेरे नहीं।

और दूसरी चिट्ठियाँ? उन्होने बक्स को खोल कर उसमे से एक जोरदार

वहत्प्रदशक शीशा निकाला और एक के बाद एक एक करके सारी चिटठिया को देखना आरम्भ किया। वही निशान सभी चिटठयो म किन्तु क्रमश क्षीण, क्षीणतर क्षीणतम थे। अवश्य उन सभी को किसी ने पढा है। किसने ? कहाँ ? जहाज ही पर ? या ब्युनस् आयस के बन्दर पर ?

य चिटठयाँ फाड चीड कर समुद्र म न डाली गईं। अपने प्राइवेट पत्रा को इस प्रकार चुपके से पढे जाते देख कर बडे कुपित और शकित हृदय से कप्तान ने एक डेस्क मे उन्हे रख कर बन्द कर दिया। अब वह इस बात के पीछे पडे कि किसी प्रकार अपराधी का पकडा और दण्ड दिया जाय।

मली अँगुलिया के निशान बतला रहे थे कि अपराधी और कोई नही वही भडारी है। अन्य आदमियो—इजीनियर, साधारण नाविको की भी अगुलिया मली थी, किन्तु इनका निशान इतना हल्का न हो कर और गाढा होता और उनको कप्तान के प्राइवट कमर म आने का उतना मौका भी न मिला था। उन्हाने भण्डारी के ऊपर चुपके चुपके बडी कडी निगाह रक्खी। जान बूझ कर उन्होने कितने ही पत्र अपनी मेज पर छोड रक्खे, जबकि भडारी वहा झाडू देता या झाडता पोछता रहता था किन्तु कभी कोई चीज न छुई गई। भडारी बडा चतुर था, उसने कप्तान की मर्मभेद दृष्टि को भाप लिया था और इसीलिय वह अब बडा सावधान था। कप्तान ने इस विषय मे और अनुसधान बटेविया म करना निश्चय किया था। गाइडो अपने काम मे पूववत ही दत्तचित्त, हसमुख और तत्पर दिखाई पडता था, जिसके कारण कई बार कप्तान का सन्देह हो पडता था, कि मैं उस पर सन्देह करके गलती तो नही कर रहा हूँ।

चीफ इजीनियर सैयद रहमान का एक सहायक डकीमैन इतना बीमार हो गया कि बटेविया पहुँचते पहुँचते उसकी दशा बहुत सदिग्ध हो गई। अब एक नये आदमी की आवश्यकता हुई। उन्हाने अपने एजेण्ट के पास इसके विषय म सूचना दी, और वहा स एक लम्बा-चौडा हिन्दुस्तानी उनके पास भेजा गया, जिसकी नाक और आँखे लाल और मुह मे शराब की दुगन्ध आ रही थी। एजेण्ट न यह भी लिख भेजा था कि यदि आप इसे शराब से दूर रख सकेंगे तो यह बहुत अच्छी तरह काम देगा।

सैयद रहमान—यह खूब नौकर मिला दस लडको की तरह निगरानी भी करना और नौकर भी रखना।'

कप्तान—लेकिन, उस सौदामिनी' पर शराब मिलनी ही कहा स नहीं।'

सैयद रहमान—'आप वह 'सौदामिनी से बाहर स भी नही ला सकता क्योंकि हम बटेविया म है। हम लाग उनको होश हवास के साथ देश ले चलगे।

उसने मूसा के नाम से हस्ताक्षर किया और कप्तान तथा इन्जीनियर से बड़े मजाक के साथ कहा—'मेरी नसें ढीली पड़ रही हैं यदि काम लेना हो तो एक बोतल का इन्तजाम कर दें।

कप्तान ने उसे अनसुनी कर दी और चीफ इन्जीनियर से कहा—'एक बाल्टी में समुद्र का पानी भर कर उसमें सिर डुबा दो और देखो कितनी जल्दी तुम्हारी नसें चेतन हो जाती हैं। अगर तुम शराब के पास न जाओ, तो उन्हें ढील पड़ने की आवश्यकता ही न पड़ेगी। और हाय रे गजब! तुम्हारा ऐसा हट्टा-कट्टा मजबूत शरीर सिर्फ इसी शराब के पीछे ही तो बर्बाद हो गया है।

मूसा ने अपने दोनों हाथों को मिला कर सिर पर उठाया और अँगड़ाई के साथ जम्हाई ली। और तब उसने एक भयानक काम किया, जिसे वह कभी न करता यदि वह होश में होता। जैसे ही उसने कप्तान की ओर से मुँह फेरा कि उसने अपने सामने ही भंडारी को खाने के कटोरे-कटोरियों को एक परात में रख कर ले जाते देखा। थोड़ी देर तक मिट्टी की मूर्ति की तरह वह चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। और जब भंडारी ने भी उसकी ओर देखा और वह भी दूसरी मूर्ति बन कर निश्चल खड़ा हो गया।

'ओफ! शैतान की औलाद!' कह कर मूसा एकदम कूद कर भण्डारी पर जा पड़ा। बर्तन सब जमीन पर गिर कर चारों ओर फैल गये और भण्डारी जमीन पर आ पड़ा। मूसा उसकी छाती पर था।

कप्तान और सैयद रहमान दोनों ही स्तम्भित हो गये। मूसा के घूसों से वह बेकार हो जायगा यही उन्हें आशा थी। इन्जीनियर की तेज आँखों ने भण्डारी के हाथों में एक चाकू का चमकता फल देखा और उन्होंने कूद कर झट से हाथ पकड़ लिया, उसी समय कप्तान ने मूसा को हटाकर अलग किया।

कप्तान ने व्यंग्य से कहा— यह अत्यन्त सुन्दर आरम्भ है।

मूसा— मैं अपने को रोक नहीं सकता, जनाब यदि आप मुझे छोड़ दिये होते, तो देखते कि मैं उसकी कैसी खिचड़ी बनाता हूँ। उसने मुझे बड़ा धोखा दिया है।'

सैयद रहमान ने चाकू के फल की ओर देखते हुए कहा— या शायद वही तुम्हारा काम खतम कर चुका होता।'

मूसा—'यह सूअर छोड़ तो दीजिए जरा और देखिये कि कौन जीतता है।'

कप्तान—'नहीं मैं इसे नहीं होने दे सकता। क्या तुम्हें उसका नाम मालूम है।

'भटियो।'

मूसा

वडे आश्चय से कप्तान ने दुहराया—'मेटियो !'

मूसा—'हा ! मेटियो, यही उसका नाम है। इसे मै जानता हू । और आपको इसने क्या नाम दिया है, महाशय ?'

'गाइडो ।'

मूसा हस पडा और फिर बोला—'वह अपने मतलब के लिए कुछ भी बोल सकता है। मैं चाहता हू कि आप जरा देर के लिए मुझे छाड दे।'–मूसा ने दाँत पीसते हुए घूसा तान कर आग बढाया, और इसे एक और नया नाम दूगा—'चटनी ।'

कप्तान ने मजबूती से उसके हाथ का पकड कर कहा—नही ! मै स्वय इसका फैसला करने वाला हूँ। तुम्हारी तरह ही मरा भी एक पुराना बैर ह, लेकिन उसका वदला दूसरी तरह लेना होगा।'

मूसा—'आपका भी, महाशय ?'

कप्तान—'हा ! मेरा भी ।'

सैयद रहमान अब भी भडारी का हाथ पकडे हुए थे वह वडी उत्कठा से कप्तान की दृष्टि को देख रहे थे, जा सीधी मेटियो के चेहर पर पड रही थी ।

अव कप्तान को पता लग गया कि किसने उनके पत्रो को ढूढा था, और क्या ? वह शायद उसे न पकड पात, वह शायद अब भी उस पर यह अपराध न लगा सकत थे, कि उसन 'धा' पर से गाली चलाई थी। तथापि वह 'सौदामिनी' पर एक झूठा नाम देकर नौकर हुआ, और उसने मूसा पर चाकू चलाया यद्यपि आत्म रक्षा के लिए सो भी अत्यन्त भीषण उत्तजना के समय । कप्तान उसे बन्द रखने का पूरा अधिकार रखत थे। इतने बीच मे और गवाहिया भी हाथ आ जायगी। मूसा अपन हमने के विषय मे कुछ कहगा। और नाथन तब तक सुरक्षित नही है, जब तक मटियो स्वतन्त्र है।

कप्तान न पुकारा— रामनन्दा वाबू ।

हाँ, महाशय—कहते हुए रामनन्दन उधर दौडे, आर उन्हे जमीन पर बिखर हुए बतन, और दो आदमी अलग करके कप्तान और इन्जीनियर के हाथा म पकडे हुए दिखाई दिये। उन्हे इस पर सचमुच बडा आश्चय हुआ ।

कप्तान—उस आदमी को अपने जिम्मे लीजिय ।'

रामनन्दन—'गाइडा को, जनाव ?

कप्तान—मेटियो—यह उसका नाम है रामनन्दन बाबू। उसे एक खाली

कोठरी म ले जाइये, और ताला न्द कर एक नाविक को पहरे पर नियुक्त कर दीजिए। यदि वह कुछ गडवड करे, तो जो मदद चाहे, माँगिये और उसे हथकडी-वेडी दे दीजिए।'

मूसा—'खूब मजबूती से रखियेगा महाशय।'

रामनन्दन बाबू ने अरुचिपूर्ण दृष्टि से डकीमैन की ओर देखा।

कप्तान ने दृढतापूर्वक कहा—चुप रहो।'

रामनन्दन—'मैं वैसा ही कर रहा हू, जनाब। चलो भडारी।' और उन्होंने उसके कन्धे पर हाथ रक्खा।

कप्तान ने उन्हे सूचित किया—नही! रामनन्दन बाबू, अब वह आपका भडारी नही रहा, वह मुल्जिम है और आप हवालात मे ले जा रहे हैं। मै उसका विचार पीछे करूगा।'

मेटियो बाहर से अत्यन्त दीनता प्रदर्शित करते हुए वहाँ से रामनन्दन बाबू के साथ गया और मूसा का हाथ छोड दिया गया।

कप्तान—'एक बात तुमसे कहना है मूसा, अपनी जवान और मिजाज पर जरा काबू रखो। लडाई मत करना। मेटियो को अब मेरे हाथ म छोड दो। तुम्हरा विस्तरा मध्य-पोत मे है। सयद रहमान के पास तुम्हारा काम है। पहले पहरे तक तुम्हे काम म लगा रहना होगा। उसके वाद नक्शा घर मे मैं तुम्हे देखना चाहता हू।'

मूसा—'बहुत अच्छा महाशय, लेकिन—

कप्तान—बस, और कुछ नही, जाओ।'

इन्जीनियर के साथ जाते हुए मूसा ने कहा—मेरी जबान मेरे काबू म नही रहती महाशय रहमान, विशेष कर जबकि शराब मेरे भीतर रहती है। लेकिन मेटियो ऐसा वैसा आदमी नही है उसे हथकडी वेडी देनी चाहिये म होता तो ऐसा ही करता।'

सैयद रहमान भीतर से सहमत थे, किन्तु बाहर से उन्होने कुछ नही कहा। जब वह जहाज के बीच मे गये, जहा कि उनका और उनके सहायको का वासा था, तो उन्होने पास की एक कोठरी खोली और विस्तरा दिखा कर कहा—यह तुम्हारा वासा है, तुम्हारी शराब जरा देर म खतम हो जाती है, फिर तुम इसे बडा आरामदेह पाओगे।

कप्तान ने चाकू को मेज पर से उठा लिया, और वहा से नक्शा घर मे चले गये।

जब पहले पहरे की घटी बजी, तो मूसा हाथ-मुँह खूब धोकर होश मे आ एक भलेमानस की तरह नकशा घर के दरवाजे पर गया, और उस पर उसने थपकी दी।

कप्तान—'चले आओ।'

मूसा दरवाजा खोल कर अदर कप्तान के सम्मुख गया और बोला—'आपने कहा था कि जब तुम्हारी ड्यूटी पूरी हो जाय, तो मेरे पास आना।'

कप्तान—'हाँ ! मै तुमसे एक दो प्रश्न पूछना चाहता हूँ। तुम पहिले पहल मेटियो से कहाँ मिले ?'

मूसा—'पोटसईद म, महाशय।'

कप्तान—'कब ?'

मूसा—दो वप हुआ होगा या कुछ ही अधिक। मै इसमे भूल कर सकता हू महाशय। म उस वक्त शराब के मारे उल्लू बना रहता था।'

कप्तान—'ता मेटियो ने कैसे तुमसे परिचय किया ? तुम्हारे परिचय का आरम्भ कैसे हुआ ?'

मूसा—वह मेरी बडी खातिर करने लगा। मुझे खूब शराब पीने का देता था। वह अपने साथ एक अरब को लाया था, जिसका नाम अहमद था। वह दोनो भी मेरे पास बैठे रहते थे। म शराब पीता रहता था, लेकिन वह न पीते थे। उसने मुझसे कहा कि एक छोटा सा सफर और हल्की सी मेहनत म हमे बहुत-सा धन मिल जायेगा। उसमे हम तीनो का हिस्सा बराबर होगा।'

कप्तान—'हल्की सी मेहनत ! तुम एक बूढे यहूदी और उसके पोते को, जिन्होंने तुम्हारा कुछ भी नुकसान न किया था, लूट लेने और शायद हत्या तक कर डालने को हल्की-सी मेहनत कहते हो !'

मूसा न बडे आश्चय और आतङ्क मे आकर स्तब्ध हो सिफ 'जनाब' भर कहा।

कप्तान—मने स्पष्ट कह दिया।'

मूसा—लेकिन लूटना और हत्या करना यह बडा भयानक इल्जाम है, महाशय।

कप्तान ने व्यग्यपूण शब्दो मे कहा—सो म जानता हू। तथापि यह सच है। तो तुम उस छोटे सफर मे उनके साथी हुए ?

मूसा—मुझे धोखा दिया गया था, महाशय। उसने मुझसे यहूदी और उसके पोते के विषय मे कितनी झूठी-सच्ची बाते कही थीं।'

कप्तान—क्या झूठी-सच्ची बातें कही थी ?'

मूसा—यही कि, हम उसकी ताक मे है, हमे उसका पीछा करना होगा।

वह एक खजाने के पाने की फिक्र मे है, जिस पर कि उसका कोई अधिकार नही है अथवा उतना ही है जितना कि प्रत्येक मनुष्य का हो सकता है। यदि हम लोग उसके पीछे पीछे रहे और मौका आने पर खजाने के हस्तगत करने मे बाधक हा, तो हम बडे धनिक हो जायँगे। हमारे पास इतना धन हो जायगा, जा जिन्दगी भर भी खतम न हा सकेगा।'

कप्तान—'खजाने को कौन कहे,अब तक तुम्हारी जिन्दगी खतम,हो गई होती।'

मूसा—'हा! वह वैसा करने से भी बाज न आता।'

कप्तान—'और उस खजाने के बारे मे उन्होने तुम्हे कुछ बताया कि यह क्या था ?

मूसा—साने की कोई पुरानी चीज जिस पर जवाहिर जडे हुए ह।'

कप्तान—यह तो गोलमोल बात रही, मूसा।'

मूमा—'मुझे उसके जानने की बहुत चिन्ता भी न थी, मै तो हर वक्त शराब मे मस्त रहता था और मेटियो जो कुछ पसा कौडी लगता था, देने के लिये सदा तैयार रहता था।'

कप्तान—जब कि तुम सिमियन बिन इज्रा की प्रतीक्षा मे थे।'

हा!' मूसा ने बडी आश्चय भरी दष्टि से कप्तान के मुह की ओर देखा और मन मे ख्याल करना शुरू किया, कि वह सभी बातें जानते है, 'और उसके पौत्र की प्रतीक्षा म भी और तब हम उनका पीछा करते हुए जाफा तक गये।'

कप्तान—'और वहा से फिर यरूशिलम।'

मूसा—'जाफा मे हम उन्हे न पा सके।

कप्तान—किन्तु यरुशिलम मे फिर तुमने उन्ह खोज पाया। और तब बराबर एक वष तक तुम उन पर नजर रखे वहा बैठे रहे और तब वह फिर गुम हो गये।

मूसा—'हा! लेकिन आपको यह सभी बातें कैसे मालूम है महाशय ?'

कप्तान—और तब तुम्ह यरुशिलम ही म छोड दिया गया।'

मूसा—हा महाशय! मेटियो और अहमद ने मुझे वही छोड दिया, मेर पास एक पैसा भी उस वक्त न था। मैं तब भी शराब पीता रहा और अन्त मे मुझे सीरिया के एक जेल का मुख देखना पडा, जहा जाकर जरा सी मेरी अक्ल ठिकाने हुई। मेटियो के साथ ता मै चौबीसो घण्टे पागल रहता था। जेल से छूटने के बाद मैं वहा स जाफा गया और फिर जहाज पर काम करते हुए पोटसईद। मैंने उस बदमाश की पाटसईद अलक्जेण्डरिया, स्वेज और काहिरा म बडी खोज की, किन्तु वह मुझे न मिला और अन्त मे निराश होकर मैं वहाँ से यहा आया।

कप्तान—और वह तुम्ह यहाँ मिल गया।'

मूसा—'सयाग । मैं यहाँ उसकी तलाश मे न था ।'

कप्तान—'जब उसने तुमसे कहा, कि सिमियन बिन इज्रा और उसके पोत का उस खजाने पर कुछ अधिकार नहीं है, तो क्या सचमुच तुमने उस पर विश्वास किया ।'

मूसा—'वह एक ऐसा खजाना था, जिस पर कोई भी अधिकार कर सकता था ।'

कप्तान—'तुम उसकी बात पर विश्वास करत थे ?'

मूसा—'नहीं ! महाशय ।'

कप्तान—'मूसा तुम बडे दुष्ट थे ।'

मूसा—'मैं कभी लडके को कुछ हानि न पहुचाये होता महाशय मैं कभी बूढे को हानि न पहुँचाये होता ।

कप्तान—'जो कुछ भी मेटियो कहता तुम सब करते । तुम मेटियो के हाथ की कठपुतली थे । यह अपना सौभाग्य समझो, जो तुम यरुशिलम म छोड दिये गये ।

मूसा स्तब्ध होकर चिल्ला पडा—'क्यो महाशय, क्या हुआ ?'

कप्तान—'तुम्हे आश्चर्यचकित होने की कोई आवश्यकता नहीं, वह दोनो बच गय ।

मूसा—'मैं आपका बडा कृतज्ञ हूँ महाशय, मैं शराब के नशे मे मेटियो के हाथ की कठपुतली था, किन्तु होश म नहीं । आप जो कुछ कह रहे ह मैं उसे कबूल करता हूँ ।

कप्तान—'क्या तुम अब मेटियो का मुकाबला करने के लिये तैयार हो ?'

मूसा ने बडी उत्सुकता से कहा—'मुझे जरा अवसर तो दीजिये महाशय और फिर देखिये ।

कप्तान—उससे लडने के लिये नहीं यह मेरा अभिप्राय कदापि नहीं है, बल्कि यह इल्जाम मेरे सामने तुम उस पर लगाओ कि उसने तुमसे झूठ बोला, तुम्हे धोखा दिया और तुम उस पर विश्वास न करते थे, जब कि उसने कहा था, कि खजाना सिमियन बिन इज्रा का नहीं है ।'

उसने बडी सलज्ज और उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से कप्तान के मुँह की ओर देखते हुए कहा—क्या अब भी आप मुझ पर अविश्वास करते हैं ?'

कप्तान—हाँ !

मूसा—तो मैं आपको कैसे विश्वास दिला सकता हूँ ।'

कप्तान—बस, अपने हृदय को साफ कर डालो ।

मूसा—मैं अब वैसा ही हूँ महाशय, होश म होने पर मैं कभी पसन्द न करता था, किन्तु मेटियो मुझे सदा बदमस्त रखता था । मैं उस पर जरा भी ... न रखता था ।'

कप्तान—'तो तुम उससे साफ यह क्यों नहीं कहते ? तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया।'

मूसा ने बड़ी दृढ़तापूर्वक कहा—'आप बुलाइये जैसा आप चाहते हैं, मैं वैसा ही करूँगा।'

कप्तान ने बाबू रामनन्दन सहाय को बुला कर कहा कि भटियों को दो आदमियों के पहरे में ले आइये।

कितनी देर तक चुप रहने के बाद कप्तान ने कहा—'तुम कहते हो, कि मैं पहिले पहल उससे पाटसईद में मिला।

मूसा—'हां ! पाटसईद में महाशय।'

कप्तान—तुम जब पहिल-पहल उससे मिले तो वह क्या करता था ? वह कहाँ से आया था। उसे तीनों आदमियों के खर्च के लिये रुपया कहाँ से मिलता था ? उसके पूर्व जीवन के विषय में तुम्हें क्या मालूम है ?'

मूसा—'कुछ नहीं, महाशय मुझे कुछ नहीं मालूम है।'

कप्तान—'उसके किसी बातचीत या काम से भी तुम्हें इसके विषय में कुछ न मालूम हुआ ?

मूसा—'नहीं महाशय, कोई ऐसी बात नहीं सिवाय इसके कि।'

कप्तान—'सिवाय इसके क्या ?

मूसा—कि सिमियन बिन इच्छा उसे जानते थे और वह सिमियन बिन इच्छा को जानता था। उनका कोई सम्बन्ध अवश्य था किन्तु मुझे वह न मालूम हो सका, और मैं बड़ा लज्जित हूँ महाशय ! कि।'

'वह भाग गया महाशय।' महाशय रामनन्दन ने हाँफते हुए कहा।

कप्तान कुर्सी से खड़े होकर बोल उठे—क्या ? भाग गया !'

रामनन्दन—'हां महाशय, भाग गया।'

कप्तान—'आपने माँगे की ओर खोजा भी ?

रामनन्दन—'हां ! जनाब अच्छी तरह खोजा किन्तु उसका कहीं पता नहीं।'

कप्तान—'और वह आदमी क्या कहता है जिसे पहरा पर रक्खा गया था।'

रामनन्दन—'कुछ नहीं महाशय, वह तो हक्का बक्का सा हो गया है।

कप्तान—मुझे स्वयं इसे देखना होगा। लाखों रुपये के लिये भी मैं ऐसा होना न पसन्द करता। भाग गया ! दिन ही में, जब कि चारों ओर आदमी थे, और दरवाजे पर पहरा पड़ रहा था।'

मूसा—'मैंने आपको कहा नहीं था, महाशय कि उसे हथकड़ी बेड़ी डाल रखिये।

फिर बाबू रामनन्दन सहाय ने घूरते हुए उसकी ओर देखा, किन्तु अबकी बार कप्तान ने उसे बोलने से न रोका।

कप्तान—'अच्छा, रामनन्दन बाबू, चलिये जहाज को रत्ती रत्ती ढूढा जाय।'

मूसा—'और बहुत जल्दी-जल्दी महाशय, नहीं तो चूहे की तरह वह खिसक कर पानी मे चला जायगा।'

उन्होने हरचन्द खोजा, किन्तु कही उसका पता न लगा। वह अवश्य अब तक पानी मे धीरे से उतर कर तैरते हुए किनारे पर पहुंच गया होगा। पहरे पर जो आदमी तैनात था, उसने भागने के विषय मे कुछ न कहा। कोठरी के भीतर एक दो बार उसने किर किर की आवाज सुनी थी। अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ, कि फर्श का एक तख्ता उखडा हुआ था। अवश्य मटियो इसी रास्ते से नीचे के तल पर चला गया होगा। वहाँ से समुद्र मे पहुचना उसके लिए बिल्कुल आसान था। कप्तान को इस असावधानी के लिये बडा अफसोस हुआ। उन्होने चाकू और चिट्ठियां अपने पास रक्खी।

उस वक्त जहाज पर सिर्फ एक ही ऐसा आदमी था, जो कि मटियो की खोज निकालने मे समर्थ होता, और वह था मूसा। उसे मालूम था, कि मेटियो बटविया मे कैसी जगह पर छिप सकता है। किन्तु मूसा को छोडा नही जा सकता था। साथी के लिए उसकी बडी आवश्यकता थी। इजन पर काम करने के लिये भी उसकी आवश्यकता थी। उसका किनारे पर भेजना किसी प्रकार भी उचित न मालूम होता था। खास कर वहाँ उसका सबसे बडा शत्रु शराब भी उसकी ताक मे बैठा हुआ था। मेटियो को देख कर उसका खून खौले बिना न रह सकता था, और फिर वह मारे बिना भी न रह सकता था। इन्ही सब विचारो से कप्तान ने उसे उसकी खोज मे न भेजा, और जब माल लद गया, तो एक दूसरे भंडारी को रख कर उन्होंने वहाँ से देश की ओर कूच कर दिया। यद्यपि उनकी और उनके साथी अफसरो की बडी इच्छा थी कि प्राचीन भारत के गौरव के स्मारक दारी बन्दर को देखे, किन्तु इस बीच के झझट ने उन्हें कुछ न करने दिया।

इसी यात्रा मे मूसा मे अनेक परिवर्तन हो गये। उसका काम हल्का था, भोजन भी पुष्टिकारक था, स्वच्छ स्वास्थ्यवर्द्धक हवा ऊपर से मिल रही थी, और तिस पर शराब वहाँ मिल न सकती थी। जहाज ने कोलबो मे आकर कोयला पानी लिया, और वहाँ जब तक जहाज खडा रहा, सैयद रहमान ने उसे काम मे लगाये रक्खा, जरा भी छुट्टी न दी और बराबर उस पर निगाह रक्खी, जिसमे कि शराब उसे न मिलने पावे। महाशय रामनन्दन सहाय का ख्याल भी अब उसके प्रति लगा, किन्तु अब भी उसकी बदजबानी उन्हें खटकती थी। वह बडा

हुई, जो मूसा को रामनन्दन बाबू म काम न पड़ता था, यद्यपि वह इञ्जीनियर का आदमी था।

सैयद रहमान को इसका सारा श्रेय है—जो उन्होंने उसके साथ ऐसा औचित्यपूर्ण व्यवहार किया कि मूसा को अब आत्म-सम्मान का ख्याल पलटने लगा। इस सारी यात्रा म कप्तान ने उस न अपने पास बुलाया और न उसको मक्खियों की बात सुनाई। किन्तु वह उस पर बराबर कड़ी दृष्टि रखते थे तथा उसके सुधारने की मन मे अत्यन्त कामना रखते थे। अब उसकी बोली म परिवर्तन आने लगा था, उसके नेत्रों की लाली और भयानकता छूट गई थी, उसके शरीर का रग कुछ स्वास्थ्ययुक्त हो चला था, उसकी अब वह शराबियों वाली नाक भी न थी, अर्थात् अब वह अधिक स्वस्थ और समझदार आदमी सा दिखलाई पड़ता था। इतनी मुद्दत के बाद अब अपनी मातृभूमि को देखने के निये वह एक नया ही आदमी था।

कप्तान और सैयद रहमान दोनों म से किसी ने भी उसे इस बात का ख्याल न कराया। किन्तु मूसा इन अपने दोनों देशबन्धुओं के इस उपकार को न भूल सकता था। उन्होंने उस हीन दशा म—जब कि उसे परे रखना भी उपयुक्त नहीं कहा जा सकता था—अपनाया था, उस एक बार सुधारने का अवसर दिया था। सचमुच, उनके उपकार के भार से वह अपने को दबा पाता था।

जहाज बम्बई के पास पहुँच रहा था, सैयद रहमान ने कहा—'मुझे उम्मीद है मूसा, तुम जहाज को न छोड़ोगे?'

मूसा—कैसे, महाशय? किनारे पर न जाऊँ? मुझे अवश्य जाना होगा।'

सैयद रहमान—'मेरा यह मतलब नहीं, उसके लिये अब मैं तुम पर विश्वास करने के लिए तैयार हूँ। मेरा अभिप्राय था कि यात्रा की समाप्ति के बाद तुम 'सौदामिनी' को न छोड़ोगे। हम सब की तरह तुम्हें भी अच्छी तनख्वाह मिलेगी और तुम उसम से खर्च-वर्च काट कर कुछ बचा भी सकते हो। उसे बर्बाद न करना, मूसा! मुझे तुम पर विश्वास है। मेरा हाथ पकड़ो तो मूसा। मूसा ने बड़ी कृतज्ञता-पूर्वक उसे अपने हाथ मे ले लिया 'तुम किनारे पर जाओगे। मैं यह उम्मीद नहीं रखता कि तुम बराबर जहाज ही पर वास करो। किन्तु जब दूसरी यात्रा का समय आवे तो जरूर तुम दस्तखत करना।'

मूसा न उत्तर दिया—'अवश्य मैं बहुत पसन्द करता हूँ?'

स० रहमान—मैं तुमसे अधिक कुछ पूछना नहीं चाहता, और तुम्हें भी इसके कहने की आवश्यकता नहीं कि तुम अब डकीमन से कुछ बढ़ कर हो। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि दूसरी बार तुम कुछ और हो जाओगे। मैं तुम्हें इञ्जीनियर बना दूगा मूसा।'

मूसा—'मैं आपकी इस कृपा के लिये चिरकृतज्ञ रहूगा, और इसके लिये मुझे बहुत अभिमान है।'

सैं० रहमान—किनारे पर पहुच कर मैं तुम पर निगाह नही रख सकता। करांची पहुचते ही मुझे दूसरी ही फिक्र मे पडना होगा। पजाव मे एक बेटे बच्चो वाली औरत बाट जोहती होगी, मुझे उसके पास पहुचना है। अब तुम आदमी हो मूसा तुम्हे अपनी हिफाजत आप करनी होगी। बुरी सगत मे फिर कदम न रखना।'

मूसा—'मैं भी घर जा रहा हूँ, इजीनियर महाशय।'

सैं० रहमान—'ऐं! सच? यह वडी खुशी की बात है, और मैं आशा करता हू, वहा तुम्हारा शाही स्वागत होगा।'

मूसा—'दस वर्ष हो गया जब कि मैंने घर छोडा था। अब वहाँ न जाने कितने परिवर्तन हो गये होगे।

सैं० रहमान—'दस वर्ष? बहुत ठीक मूसा, किन्तु जैसा परिवर्तन आगन्तुक मे हुआ है, प्रतीक्षको मे भी वैसा न हुआ होगा।'

मूसा—'किन्तु वह मेरी प्रतीक्षा न करते होगे महाशय।'

सैं० रहमान—'मैं इसे निश्चित नही कह सकता। वाह! यह बडी अच्छी बात तुमने सुनाई मूसा। मैं तुम्हे बराबर ख्याल रखूगा। और हम फिर दूसरी यात्रा के लिए मिलेंगे। नैन्सी न 'सौदामिनी' कैसा अच्छा जहाज है?'

मूसा—'मैं इससे अच्छे की चाह भी नही रखता, और मेरे लिए थार लोगा से अच्छे अफसर भी नही मिल सकते।'

वायुयानो का अड्डा

कप्तान ने अपने टेलिविया और बोनस्वा ... मूसा दोनो मे से किसी का जिक्र न किया था। ... चन्द्रनाथ से बहुत कुछ बात करनी थी। ... शिवकुमार और नायन भी छुट्टी का ... उनके दिल से बिल्कुल भूल गया था। ... आस-पास की सैर करने मे ... करने के लिये तैयार थे, ... जाने के लिये कहना।

अब प्रोफेसर का नाथन की उन्नति के विषय म कुछ कहने की आवश्यकता न थी। कप्तान स्वय इसे देख सकते थे। नाथन अब नवी श्रेणी मे प्रविष्ट हो गया था। उसके साथी लडके भी उसकी उम्र के ही थे। यद्यपि भाषा के विषय म अभी वह बहुत कमजोर था, किन्तु साथ ही और विषयो मे बहुत तेज था, अत यह समझा गया कि अगले वष विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा देने के वक्त तक वह काफी उन्नति कर जायगा। नाथन को इससे सबसे अधिक प्रसन्नता हुई, क्योकि अब वह शिव की ही कक्षा मे था।

चन्द्रनाथ—'मैने ब्युनस आयस के पते पर तुम्ह लिखा था कि मेटिया ने इन दिनो मे कोई कष्ट न दिया। नाथन न उसे न देखा, न उसकी बात ही कही। मै बराबर इस ताक मे रहा, कि कोइ उस हुलिये का आदमी कालज के आस पास तो नही आया।'

कप्तान—'तुम्हारे पास कहा से आता चन्द्र, वह तो मरे पास था।

चन्द्रनाथ—'क्या ? यात्रा मे सौदामिनी' पर ?'

कप्तान—'हा ! बटेविया तक, जहाँ उसकी पहिचान हुई, लेकिन वह भाग गया।'

चन्द्रनाथ—'भाग गया ?'

कप्तान—'हा ! मै तो उसे उसके असली स्थान जेल म भेजना चाहता था किन्तु वया कर भाग गया। यह देखो तुम्हारा ब्युनस आयस वाला पत्र है।'

चन्द्रनाथ न पत्र को हाथ मे लेकर देखत हुए कहा 'यह अँगुली का निशान कहा से आया ? किसने इसे खराब कर दिया, प्रताप ?'

कप्तान—'मेटिया ने।'

चन्द्रनाथ—'हाँ ! अब मुझे मालूम हा गया कि वह किस मतलब से तुम्हार पास था। वह वडा ही धूत ह प्रताप, और साथ ही उक्तान वाला नही है। हम उससे बहुत सजग रहना होगा। अच्छा यह तो बताओ कैसे वह तुम्हारे साथ हुआ और तुमने उसे पहचाना ?

कप्तान ने दूसरे पत्र भी प्रोफेसर के हाथ मे रख दिये और तब सारा वृत्तान्त कह सुनाया।

चन्द्रनाथ—'अच्छा, इन्ह सुरक्षित रखना चाहिये, इनकी आगे सबूत के लिये आवश्यकता पडेगी।'

कप्तान—'इसी लिय तो मैंन फाडकर समुद्र के हवाले न किया।

चन्द्रनाथ—'और यह मूसा तुम्हारे साथ अभी रहेगा न ?'

कप्तान—'सयद रहमान ने मुझसे ऐसा ही कहा है, वह उनके ही विभाग म है। उस आदमी म हमने उस समय से जब कि पहले-पहल वह हमारे सम्मुख आया

था, बहुत भिन्नता पाई। सैयद महाशय का उस पर बडा विश्वास है। लेकिन रामनन्दन बाबू का ख्याल वैसा नही है।'

चन्द्रनाथ—'वह अविश्वास रखते है?'

कप्तान—'अविश्वास नही, वह उससे घृणा करते है।'

चन्द्रनाथ—'और तुम प्रताप?'

कप्तान—'म उसे सुधारने के लिये अवकाश देना चाहता हू।'

चन्द्रनाथ—'तुम उस पर अविश्वास या घृणा नही करत?'

कप्तान—'नही, आदमी अच्छा है और यदि शराब से उसे अलग रक्खा जाय तो बहुत ही होशियार मनुष्य है।'

चन्द्रनाथ—'तुम्हारा ख्याल बिल्कुल युक्तियुक्त मालूम होता है और यदि तुम साथ रक्खागे तो मटियो से तुम्हारी बडी रक्षा होगी।'

कप्तान—'क्या तुम्हे अब भी उससे आशका है?'

चन्द्रनाथ—'हा! निश्चय।'

कप्तान—'वह फिर यहाँ आयेगा?'

चन्द्रनाथ—'जल्दी या देर से और नाथन के उन्नीसवी वर्ष गाँठ तक पहुचते-पहुँचते वह अवश्य पहुचेगा। मेटियो की ख्वाहिश है, इस सारी [illegible] हाथ लगाने की। इसको हस्तगत करने म वह कोई बात उठा न रक्खेगा, [illegible] से ज्यादा खबरदार रहने की आवश्यकता है। नाथन और दूसर [illegible] वचित न होने पावें, इसके लिये यह बहुत अच्छा होगा कि [illegible] दिमाग से सही और दुरुस्त तुम्हारे पास रह।'

कप्तान सिर्फ दस रोज के लिये घर आये थ, [illegible] जाना था। वहा उनका जहाज खडा था।

कप्तान—'मै अपने साथ सीना को भी [illegible]। [illegible] म हम माल लादना है। जान पडता है अबकी फिर [illegible] जाना होगा और इस प्रकार फिर एक पृथ्वी-परिक्रमा [illegible]।'

चन्द्रनाथ—'बहुत अच्छा, मैं [illegible] के बदले पर ले जाना चाहता हूँ, किन्तु अभी इसका [illegible] है।'

कप्तान—'यह तुम्हारी [illegible]।'

चन्द्रनाथ—'बिल्कुल नहीं, [illegible] दिलचस्पी लेते हैं। मैं चाहता हू कि [illegible] है कि उह बडा सन्तोष होगा।

कप्तान—'सन्तोष! [illegible], किन्तु [illegible]

चाहो—क्योंकि वहाँ तुम्हारे अनेक वैमानिक मित्र मिलेंगे, जिनके साथ तुम्हें बहुत-सा वार्तालाप करना होगा—तो मैं सीता के साथ उन्हें भी ले जा सकता हूँ, बम्बई से सीता लौट आयेंगे।'

चन्द्रनाथ—'नहीं ! जब तक कि लडके इसे उससे अच्छा न समझें।'

कप्तान—'उनकी राय लेने की आवश्यकता नहीं है। यह तो स्वयं सिद्ध बात है, कि वह वायुयान के तमाशे के सामने समुद्रयान की ओर दृष्टि भी नहीं डाल सकते, इसलिये वह तुम्हारे साथ ही रहें।'

चन्द्रनाथ—'और यह बहुत अच्छा होगा, प्रताप। इससे उन्हें इस छुट्टी का एक अच्छा आनन्द मिल जायगा।

कप्तान—'और यदि तुम आकाश में चढे—?'

चन्द्रनाथ—'तो फिर उतर आऊंगा।'

कप्तान—'हाँ ! किन्तु, फिर लडके ?'

चन्द्रनाथ—'वह नीचे रहेंगे।

कप्तान 'तुम उन्हें अपने साथ न ले जाओगे ?'

चन्द्रनाथ—'नहीं ! जब तक कि तुम्हारी आज्ञा न हो।'

कप्तान—'शिव बडा अधीर लडका है, और नाथन—।'

चन्द्रनाथ—'तुम दोनो ही के लिये चढना पसन्द नहीं करते ?'

कप्तान—'हाँ ! यही मेरी सम्मति है, चन्द्र।'

चन्द्रनाथ—'मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे एक नये एकहरे पखवाले विमान की परीक्षा भी करनी है, जिसमे मेरी हवा मे स्तम्भित करने वाली मशीन भी लगी हुई है। मैं उडने से पूर्व विमान मैदान मे उन्हें किसी के साथ सुरक्षित कर दूंगा।'

जब यह बात लडको से कही गई कि चन्द्रा मामा अड्डे पर जा रहे है, वह दो-तीन दिन तक कराची मे ही रहेंगे, तो लडके मारे आनन्द के नाचने लगे।'

शिव ने बडी उत्सुकता से कहा—'हम भी जायेंगे बाबू जी, क्यो जायें न ?'

कप्तान—'तुम लोग जानो, और तुम्हारी मा ?'

'ओह ! वह जरूर कह देंगी।' शिव ने यह बात बडे विश्वास के साथ कही।

नाथन की आखें भी चमकने लगी, किन्तु वह चुप रहा।

सीता देवी—'हाँ ! लेकिन भैया, कुछ शर्त रखते हैं, यदि उन्हें तुम लोग मानने के लिये तैयार हो तो और मेरी भी एक शर्त है।'

शिव—'वह क्या है, अम्मा ?'

सीता—'कि तुम दोनो उडने का आग्रह न करोगे।'

'लेकिन—अम्मा—'शिव ने बडे उदास मुह से कहा ।

चन्द्रा मामा—'यह मेरी पहिली शर्त है।'

नाथन—'मैं इसे स्वीकार करता हू, मामा।'

शिव ने नाथन की ओर आँखें गुरेर कर कहा—'तो, मैं भी इसे मानता हू, लेकिन चन्द्रा मामा, अन्य शर्तें क्या हैं ?'

चन्द्रनाथ—'एक यही यदि तुम्हारे माता पिता स्वीकार करे।

शिव—'वह तो हो ही गई ।'

चन्द्रनाथ—'और यही कि तुम मेरी आज्ञा मानोगे।'

शिव—'यह आपने लाजवाब कही। जान पडता है, अब तक हम चन्द्रा मामा की आज्ञा ही नही मानते थे। यह तो पहले ही से पूरी हुई धरी है, क्या नाथ ?'

नाथन ने धीरे से कहा—'मैं आज्ञा मानूगा।'

शिव ने लम्बी सास छोडकर कहा - 'और मैं भी।'

वह ठीक समय पर कराची के वैमानिक अडडे पर पहुच गये। चन्द्रा मामा के साथ उन्होंने बहुत से विमानो का निरीक्षण किया। अधिकाश उडाके चन्द्रा मामा को खूब जानते थे। वह उन्हे अधिकतर भारद्वाज के नाम से पुकारते थे। लडको ने उन्हे विमान के सम्बन्ध मे बहुत कुछ बातचीत करते सुना और उन्होने प्रोफेसर की पहली शिक्षा के लिये अपना अहोभाग्य समझा, जिसके कारण उन्हे उनके—वायु पखा, पख, पुछ, पह्ली, वायुगति सूचक, उच्छाय सूचक, चक्कर सूचक, साप्ताहिक घडी, दिग्दशक, एकहरा पह्ल विमान, दुहरा पह्ल विमान, अग्रपह्ला, पश्चात पह्ला, वायु-थैला, उत्तरङ्ग, अवतरङ्ग, वायुपद्रव इत्यादि अनेक पारिभाषिक शब्द मालूम थे। नाथन बडा लज्जालु लडका था, इसलिये जब दूसरो को सुन लेना सम्भव होता था, तो वह धीरे से शिव से अपनी राय जाहिर करता था। किन्तु शिव को इसकी कोई पर्वाह न थी, तो भी अपने से अधिक जानने वालो का अदब करता था।

यह दूसरा दिन था, जब कि एक भद्र पुरुष ने प्रोफेसर को सम्बोधित करके कहा—'वाह! भारद्वाज, मुझे यह सुन कर बडी प्रसन्नता हुई कि तुम अपने स्तम्भक यन्त्र की गोडन-विमान पर परीक्षा करने जा रहे हो।'

चन्द्रनाथ—'हा! और यदि वह परीक्षा मे ठीक उतरा, तो दूसरी बार मधु, मैं तुम्हे भी ले चलूगा।'

शिव ने नाथन से कहा—'मुझे उम्मीद है कि तब नाथ, हमे भी मौका मिलेगा।'

मधुसूदन—'और पहिली बार, भारद्वाज ?'

चन्द्रनाथ—'मैं अकेला ही जाऊँगा।'

मधुसूदन—'तुम तो भारद्वाज बुद्धि के अवतार हो। अच्छा तो यह तुम्हारा स्तम्भक किसी प्रकार के भी एकहरे पंखे वाले विमान में लगाया जा सकता है?'

चन्द्रनाथ—'हां! हो सकता है किन्तु मैं पहले उसकी परीक्षा गोडन पर करना चाहता हूं।'

मधुसूदन—'मुझे भी गोडन बहुत पसन्द आता, यदि उसके पङ्ख जरा और पीछे पूँछ वाली पक्षियों की ओर होते।

शिव ने नाथन से कहा—'डेपडसिन के समान, क्या?'

नाथन—'बिल्कुल ठीक—या मोशियो ब्लेरियट के विमानों सा।'

चन्द्रनाथ—'गोडन बिल्कुल फौलाद का है मधु।'

मधु—'हां! वह बहुत उपयोगी और मजबूत मशीन है, लेकिन मैं उसे बहुत पसन्द नहीं करता, शायद अब तुम्हारी इस नई योजना से पसन्द आने लगे, तो आने लगे। यदि तुम डेपडसिन या ब्लेरियट में जोड़े होते, तो मैं बड़े आनन्द के साथ दूसरी बार तुम्हारे साथ होता जैसा कि

चन्द्रनाथ—'तो तुम्हें स्वीकार नहीं है।'

मधु—'सधन्यवाद। पिछले सप्ताह चन्द्र, मुझे हमारा वह मित्र—इसहाक सासून मिला था। वह तुम्हारे विषय में भी पूछता था। बड़ा अच्छा होता जो हम भी उसे मिल पाये होते।

चन्द्रनाथ—'इसहाक सासून! अरे! मैंने तो समझ लिया था कि वह गया।'

मधु—'हाँ! गया, लेकिन हमेशा के लिये नहीं, वह फिर लौट आया। अब उसका शरीर उतना मोटा नहीं है।

चन्द्र—'तो—?

मधु—'वही।

चन्द्र—'फिर तुमने उसे यहाँ आने और उड़ने के लिये नहीं कहा?'

मधु—'हाँ! किन्तु उसने कहा कि कुछ काम है।'

चन्द्र—'तो फिर शायद मैं उसे देख सकूँगा।'

मधु—'यह नहीं सम्भव है। वह फिर निकलने वाला है, कहाँ, यह मुझे नहीं मालूम। तुम जानते ही हो। नारद बाबा की तरह उसके पैर में भी चक्कर बँधा हुआ है।'

चन्द्र—'उसके भाग्य में जरा भी विश्राम लेना नहीं बदा है।'

मधु—'हाँ! लेकिन वह बड़ा तन्दुरुस्त है भारद्वाज, यह बड़ी विशेषता है।

उसके रग-रूप सब मे स्वास्थ्य का चिह्न है। मुझे उम्मीद है, तुम्हारी स्तम्भन योजना सफल होगी।' मधुसूधन चले गये।

शिव—'गोडन म किस प्रकार का इ जन लगा है, मामा ?'

च द्रा—'ग्नोमी।'

शिव—'ओह ! घरघराने वाला, भनभनाने वाला नही।'

शिव के इस बीच के वार्तालाप ने इसहाक सासून की बात ही ख्याल से हटा दी। अब च द्रनाथ अपने नवीन यन्त्र की परीक्षा मे लगे। उसके विषय मे उ ह पूरी आशा थी, कि वह गोडन को हवा म रोक कर खडा रख सकेगा।

लडको का दिल धडकने लगा, जब च द्रनाथ वैमानिक पोशाक, कनटोप और झापदार चश्मे को लगाये ऊपर जा बैठे, उनकी दाढी हवा के झोके म जरा-जरा हिल रही थी, और वह चालक चक्र को इस प्रकार हाथ मे लिए हुए थे कि जान पडता था, कि ग्नोमी उनका पुराना मित्र है। लडके उनकी ओर देख कर मुस्कराये बिना न रहे।

'वह गये !' शिव एकदम बोल उठा, जब गोडन थाडी दूर तक अपने पुच्छ-पद और दोनो रबर टायर वाली पहियो के सहारे आग दौडकर हवा म उठा।

गोडन जिस समय ऊपर उठत हुए अडडे के ऊपर चक्कर काट रहा था, ता उसकी घरघराहट बराबर सुनाई दे रही थी, और आकृति एक प्रकाड जोलाहा—फतिङ्गे की भाति थी। ऊपर चढते चढते उसका आकार छाटे कबूतर सा दिखाई पडन लगा और घरघराहट भी बहुत म द सुनाई देने लगी। आवाज अब अत्य त क्षीण हो गई, और शिव तथा नाथन टोपी हाथ मे लेकर ठीक अपने सिर पर उसे देख रहे थे।

अब विमान बहुत ऊचे पर पहुच गया, उसकी आवाज बहुत ध्यान देन पर अत्यन्त धीमी सी सुनाई देती थी। उसकी आकृति बहुत छोटी थी। जान पडता था एक छाटी चिडिया पर फैलाकर आकाश मे चुप चाप एक जगह खडी है। यह बडी कठिन, परीक्षा का समय था। कितने ही मिनट बीत गये और विमाग अब भी निश्चल खडा था अब तक दानो उधर ही देखन मे तल्लीन थे, इसी समय दशको की करतल ध्वनि न उ ह आकृष्ट किया। अब विमान हिला धवा जब धीरे धीरे बढने लगा, ग्नोमी का घरघराना भी कुछ ऊचा हो चला था, और गोडन कावा काटती हुई पृथ्वी की आर आने लगा। उसने बडी सफाई के साथ चील्ह की भाति भूमि को स्पश किया—यह च द्रा मामा के दूसरे यन्त्र की परीक्षा थी—फिर जरा-सा आगे चलकर खडा हो गया।

लोग च द्रनाथ को चारा ओर से घेर हुए उ ह इस सफलता पर बधाइ द रहे थे, और शिव तथा नाथन अपने मामा के बगल मे बडे अभिमानपूवक खडे थे।

दोनो लडका मे से किसी ने भी न कहा, यद्यपि दोना के चेहरे और आँखा से उनकी हार्दिक लालसा खूब स्पष्ट हो रही थी।

चन्द्रनाथ न उनके हृदय की बात को समझ लिया और कहा—'जरा और सब्र करो थोडा और बडे हो लो, फिर मैं अपने निज के विमान पर लेकर तुम्हे उडूगा।'

इस स्पष्ट अभिवचन से दोनो ही अत्यन्त सन्तुष्ट हुए।

दूसरा आरोहण पहिले से भी बढ कर रहा, क्योकि अबकी बार सचालन का भार एक सिद्ध हस्त के हाथ मे देकर चन्द्रनाथ एक आरोही की भाँति चढे थे। वह फिर तीसरी बार न उडे। उन्होने अपने यन्त्रा को विमान मे लगा ही छोड दिया, जिससे सारे उडाके अच्छी तरह देख सकें, और फिर वैमानिक वेष को उतार कर वह लडको से आ मिले।

अगले दिन जब कि वह रेल म घर की यात्रा कर रहे थे, शिव ने पूछा—'गोडन की भाँति आपकी मशीन क्या अब फौलाद ही की होगी मामा ?'

चन्द्र—पुच्छ भाग और ढाचा जहाँ कही भी वह उपयोगी जान पडेगा। मैं चाहता हू कि कुछ स्थानो पर आलमोनियम का भी उपयोग करूँ, क्योकि वह बहुत हल्का होता है, और दोना पख रेशम तन्तु मिश्रित कानवास के हो। मैं अपनी—हम लोगा की—मशीन के बारे म बहुत कुछ सोच रहा हूँ, और तुम्हे भी उसके निर्माण मे मदद देनी होगी।

शिव—'और उसमे म्नोमी लगाओगे ?'

चन्द्र—इस पर हम पीछे विचार करेंगे। मेरी समझ म अजनी बडा सीधा-साधा इजन है। तुमने अजनी नही देखा है ?'

शिव—'नही ?'

चन्द्रनाथ—तो मैं उसकी बात तुम लोगा को बताऊँगा। जैसे ही नमूना तैयार हो जायगा, मैं यन्त्र निमाताओ को दिखाकर पूरे नाप—तौल के साथ उसे बनवा लूगा, और फिर हम उसे बोलेंगे '

शिव—क्या मामा ? भारद्वाज ?'

चन्द्रनाथ—मैंने दूसरा ही नाम विचारा है।'

नाथन—काश्यप ?'

चन्द्रनाथ—'नही मेरी राय है उसका नाम हो 'दशना'।'

नाथन के मुख पर मारे आनन्द के उष्ण रक्त जल्दी जल्दी दौडने लगा, जिससे वह अरुण वर्ण हो आया, और इसकी मात्रा और भी बढ गई जब कि शिव ने कहा—खूब ! बहुत अच्छा।'

लडको को अब सीता से कई बाते कहनी थी, जिनमे केवल अडडे का दृश्य ही न था, बल्कि नये विमान—जिसमे उनका भी हाथ मामा के बराबर ही था—की योजना भी। सायकाल के समय जाकर सीता ने अपने भाई से बात करने का अच्छी तरह मौका पाया।

सीता—'कप्तान ने तुमसे भैया कुछ कहने के लिये कहा है। वह तुम्हे बडा दिलचस्प और आनन्दप्रद मालूम होगा। मैंने मूसा को अपनी आखो से देखा है।'

चन्द्र—'उसने फिर उसी जहाज मे नौकरी की है।'

सीता—'हाँ! लेकिन, वह मूसा नही है।'

चन्द्र—'ओह! तो फिर वह कौन है?

सीता—'इसहाक सासून।'

चन्द्र—'सीता! सचमुच? मधु ने मुझसे बताया था कि मैंने हाल ही मे उसे देखा ह, किन्तु उस बिचारे को यह नही मालूम कि वह एक कल्पित नाम से कोयला झाकू का काम कर रहा है।'

सीता—'लेकिन अब वह नही है भैया। उसने अबकी अपने असली नाम से दस्तखत किया है। मैंने उसे देखने के साथ ही पहिचान लिया, किन्तु उसने पहले ही हस्ताक्षर कर दिया था।'

चन्द्र—'तब तुमने उससे बात भी की?'

सीता—और न फिर?'

चन्द्र—हा! सो तो मुझे आशा ही थी और जब कि उसका अपना उफ भी खुल गया था। किन्तु—इसहाक! अच्छा—मैं बहुत प्रसन्न हूँ, कि वह प्रताप के साथ है।'

सीता—'और सैयद रहमान।'

चन्द्र—'हा! और मुझे उम्मीद है कि सैयद रहमान उसकी तरक्की मे सहायक होगे—और वह अपने को उसके योग्य साबित करेगा। एक ही बात का अन्देशा ह—

सीता—'लेकिन 'सौदामिनी' पर भैया उसे मदिरा नही मिल सकती।'

चन्द्र—इसके लिये भगवान् को सहस्र-सहस्र धन्यवाद।'

दोनो लडको मे से किसी ने भी न कहा, यद्यपि दोनो के चेहरे और आँखो मे उनकी हार्दिक लालसा खूब स्पष्ट हो रही थी।

चन्द्रनाथ न उनके हृदय की बात को समझ लिया और कहा—'जरा और सब्र करो, थोडा और बडे हो लो, फिर मैं अपने निज के विमान पर लेकर तुम्हे उडूगा।'

इस स्पष्ट अभिवचन से दानो ही अत्यन्त सन्तुष्ट हुए।

दूसरा आरोहण पहिले से भी बढ कर रहा, क्योकि अबकी बार सचालन का भार एक सिद्ध हस्त के हाथ मे देकर चन्द्रनाथ एक आरोही की भाति चढे थे। वह फिर तीसरी बार न उडे। उन्हाने अपने यन्त्र को विमान मे लगा ही छोड दिया, जिससे सारे उडाके अच्छी तरह देख सकें, और फिर वैमानिक वेष को उतार कर वह लडको से आ मिले।

अगले दिन जब कि वह रेल म घर की यात्रा कर रहे थे, शिव ने पूछा—'गोडन की भाति आपकी मशीन क्या अब फौलाद ही की होगी मामा ?'

चन्द्र—'पुच्छ भाग और ढाँचा जहाँ कही भी वह उपयोगी जान पडेगा। मै चाहता हू कि कुछ स्थानो पर आलमोनियम का भी उपयोग करूँ, क्योकि वह बहुत हल्का होता है, और दोनो पख रेशम ततु मिश्रित कानवास के हो। मैं अपनी—हम लोगो की—मशीन के बारे म बहुत कुछ सोच रहा हूँ, और तुम्हे भी उसके निर्माण मे मदद देनी होगी।'

शिव—'और उसमे ग्नोमी लगाओगे ?'

चन्द्र—'इस पर हम पीछे विचार करेंगे। मेरी समझ म अजनी बडा सीधा-साधा इन्जन है। तुमने अजनी नही देखा है ?'

शिव—'नही ?'

चन्द्रनाथ—'तो मैं उसकी बात तुम लोगो को बताऊगा। जैसे ही नमूना तैयार हो जायगा मैं यन्त्र निर्माताओ को दिखाकर पूरे नाप—तौल के साथ उसे बनवा लूगा, और फिर हम उसे बोलेगे '

शिव—'क्या मामा ? भारद्वाज ?'

चन्द्रनाथ—'मैंने दूसरा ही नाम विचारा है।'

नायन—'काश्यप ?'

चन्द्रनाथ—'नही मेरी राय है, उसका नाम हो 'दशना'।'

नायन के मुख पर मारे आनन्द के उष्ण रक्त जल्दी जल्दी दौडने लगा जिससे वह अरुण वर्ण हो आया और इसकी मात्रा और भी बढ गई, जब कि शिव ने कहा—'खूब ! बहुत अच्छा।'

लडको को अब सीता से कई बात कहनी थी, जिनम केवल अडडे का दृश्य ही न था, बल्कि नय विमान—जिसमे उनका भी हाथ मामा के बराबर ही था—की योजना भी। सायकाल के समय जाकर सीता ने अपने भाई से बात करने का अच्छी तरह मौका पाया।

सीता—'कप्तान ने तुमसे भैया कुछ कहने के लिये कहा है। वह तुम्ह बडा दिलचस्प और आनन्दप्रद मालूम होगा। मैंने मूसा को अपनी आँखो से देखा है।'

चद्र—'उसने फिर उसी जहाज मे नौकरी की है!'

सीता—हा! लेकिन, वह मूसा नही है।'

चद्र—'ओह! तो फिर वह कौन है?

सीता—'इसहाक सासून।'

चद्र—'सीता! सचमुच? मधु ने मुझसे बताया था कि मैंने हाल ही मे उसे देखा है, कितु उस विचारे को यह नही मालूम कि वह एक कल्पित नाम से कोयला झोकू का काम कर रहा है।'

सीता—'लेकिन अब वह नही है भैया। उसन अवकी अपने असली नाम से दस्तखत किया है। मैंने उसे देखने के साथ ही पहिचान लिया, किन्तु उसने पहले ही हस्ताक्षर कर दिया था।'

चद्र—'तब तुमने उससे बात भी की?'

सीता—और न फिर?'

चद्र—हा! सो तो मुझे आशा ही थी और जब कि उसका अपना उफ भी खुल गया था। कितु—इसहाक! अच्छा—मैं बहुत प्रसन्न हूँ, कि वह प्रताप के साथ है।'

सीता—'और सैयद रहमान।'

चद्र—हा! और मुझे उम्मीद है कि सैयद रहमान उसकी तरक्की में सहायक होगे—और वह अपने को उसके योग्य सावित करेगा। एक ही बात का अन्दशा ह—

सीता—'लेकिन सौदामिनी' पर भैया उसे मदिरा नही मिल सकती।'

चद्र—इसके लिये भगवान् को सहस्र सहस्र धयवाद।'

नाथन गायब

दूसरी यात्रा में रामनन्दन बाबू को कप्तान का प्रमाण-पत्र मिल गया था, इसलिये वह एक अलग जहाज पर कप्तान हो गये। इसहाक को इसके लिये जरा भी शोक न हुआ, क्योंकि वे नाम बदलने और इतना परिवर्तन हो जाने पर भी उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे और जब-तब मूसा के नाम से पुकारते थे। यह इसहाक को बड़ा असह्य मालूम होता था, क्योंकि वह चाहता था, कि किसी प्रकार उस पूर्व जीवन को भूल जाये।

कप्तान को अपनी स्त्री द्वारा इसहाक का परिचय, उसका सम्बन्ध, उसका अध्ययन, उसकी चन्द्रनाथ से मित्रता सब मालूम हो गयी, और उन्होंने इसे अपने दिल में रख लिया। किन्तु कायदे से वह इसके लिये बाध्य थे, कि इसहाक के साथ उसके पद के अनुसार बर्ताव करें। तथापि कप्तान का बर्ताव रामनन्दन बाबू की अपेक्षा कहीं सुंदर और समुचित था। उन्होंने जरा भी कभी उसे सन्दिग्ध दृष्टि से न देखा। उन्होंने कभी उस पर पुराने उस को लेकर उसे न पुकारा। वह चुपचाप बड़ी सहानुभूतिपूर्वक इसहाक को अपने खोये हुए स्थान की प्राप्ति के लिये घोर प्रयत्न करते देख रहे थे। उन्होंने इसहाक के मार्ग में जरा भी बाधा न रक्खी, और इसहाक कप्तान पर अत्यन्त श्रद्धा रखते थे, क्योंकि वह जान रहा था कि कप्तान के मन में क्या है।

रामनन्दन बाबू के स्थान-परिवर्तन से इसहाक को बड़ा सन्तोष हुआ और उसी के कारण सैयद रहमान को भी। अब भी सैयद महाशय इसहाक की उन्नति के अत्यन्त इच्छुक थे। कप्तान ने इसहाक के रहस्य को चीफ इञ्जीनियर से कहा। उन्होंने इस बात को इसहाक ही पर छोड़ दिया, कि वह उसे सब बतावे। धीरे धीरे इसहाक ने सैयद रहमान पर अपना पूरा विश्वास जमा लिया, और तब कप्तान को सब बात कहने का अवसर मिला, और उसे भी उन्होंने इसहाक की अनुपस्थिति में कहा।

दो और यात्राय करनी पड़ी, इसके बाद इसहाक ने अपनी योग्यता से ततीय इन्जीनियर का स्थान पाया। चौथी यात्रा में उसने और भी उन्नति की और वह आवश्यक परीक्षा में उत्तीर्ण हो द्वितीय इन्जीनियर हो गये। उनके चीफ इञ्जीनियर सैयद रहमान इसके लिए बड़े खुश थे, और कप्तान भी पूरे आनन्दित थे कि इसहाक अब जहाज के प्रामाणिक अफसर थे। तीसरे वर्ष के अन्त तक पहुँचते पहुचते इसहाक 'सौदामिनी' पर चीफ इञ्जीनियर हो गये, और सैयद रहमान एक दूसरे ही जहाज पर १ दिये गये।

लडके अब अठारह वर्ष के करीब के हो रहे थे, दोनो मैट्रिक पास करके कालेज के द्वितीय वर्ष का भी इम्तिहान दे चुके थे। बीच मे ऐसी कोई बात न हुई थी, जिसके लिये चन्द्रनाथ को कप्तान के पास कुछ लिखना होता। वह बीच बीच में कई बार घर आ भी चुके थे। परीक्षा के बाद शिव और नाथन गर्मियो मे घर आये थे। अब शिव कुमार को तो जहाजी काम मे जाना था और नाथन को उस चर्म पत्र का अध्ययन करना था, जिसे कप्तान ने कराँची के सेठ के पास जमा किया था।

मेटियो या उसकी तरह का कोई भी आदमी घर या डी॰ ए॰ वी॰ कालेज के आस पास दिखाई न पडा। सीता देवी को तो यह ख्याल हो चला कि अब फिर उसकी बात सुनने मे न आयेगी। चन्द्रा मामा बडे सावधान थे, किन्तु उन्हे भी कुछ दिखाई न पडा। इन चार वर्षों की सगति से नाथन सब का अत्यन्त प्रेमपात्र हो गया था।

चन्द्रनाथ के सामने अब प्रश्न कालेज की नौकरी छोडने का था, क्योकि उन्हें अपने विमान को पूरा करने के लिए बहुत समय की आवश्यकता थी। लेकिन नाथन और शिव की शिक्षा के कारण इन चार वर्षों मे अनेक बार यह ख्याल आने पर भी वह उसे कार्यरूप मे परिणत न कर सके। प्रताप नारायण का उन पर उतना विश्वास और नाथन के प्रति दायित्व ने भी उन्हे ऐसा करने से बहुत रोका।

नये विमान का नमूना तैयार हो गया। इसके एक एक पुर्जे के विषय में उन्होने लडको की सम्मति ली। सिर्फ छुट्टी के दिनो ही मे वह उसे बनाते रहे। कालेज मे रहते वक्त वहाँ अपनी वर्कशाप रखने का उन्हे सुभीता न था। यह नमूना चन्द्रा मामा के उसी टीन के झापडे मे तैयार किया गया था। उन लोगो ने इसके लिये जरा भी जल्दी न की। कई बार उन्हे कुछ तैयार कर लेने पर भी जब कोई नया सुधार सूझा, तो झट उन्होने उसे बिगाड कर उसके अनुसार बनाया। तीनो की सम्मति के अनुसार इस नमूने मे बहुत से नये सुधार किये गये थे।

शिव कुमार को बडा अफसोस हुआ। जब कि उसने सुना कि यन्त्रकार विमान को बनाकर तब देगा, जब कि मैं कराची जहाजी आफिस मे नौकरी के लिये चला गया रहूँगा। नाथन को अपने चर्म पत्रो के लिए बडी उत्सुकता थी। बेचारे शिव ने आखिर यह कह कर सन्तोष किया कि नाथन को ही उसे पहिले देखने का अधिकार है, क्योकि उसका नाम जो 'दर्शना' है। जब वह कराची के लिये रवाना हुआ तो उस समय कई कारीगर, बढई, बगल से पश्चिम वाले मैदान मे विमान शाला बनाने में लगे हुए थे।

वह युवक क्लर्क, जिससे मेटियो ने कप्तान का पहले पता लगाया था, अब भी उसी होटल मे जलपान करने जाया करता था। अब उसकी तनख्वाह बढ़ गई थी,

और साथ ही दर्जा भी, किन्तु अभी उसकी राय मे वह इतनी न थी कि वह उन थर्ड क्लास होटल से हट कर किसी अच्छे होटल मे अपना प्रब ध करे।

शिव कुमार के आफिस म पहुचने के एक सप्ताह बाद, जब कि क्लक मज पर भोजन के इ तजार मे बैठा हुआ था, उसी समय एक नया भोजन करने वाला आया, और उसने ठीक उसके सामने वाली खाली बेंच को अपने बैठने के लिये पस द किया।

आग तुक ने एक सूखी हसी हँसते तथा दूध की भाति श्वेत द तपक्तियो को दिखाते हुए कहा—'कसे हो कप्तान!'

उसने बडे आश्चय के साथ वक्ता के मुख की ओर देखा और फिर पूछा—क्या मैंने आपको कही देखा है?'

मेटियो—बाहर तो।

उसके चेहरे म बहुत कम परिवतन हुआ था, गालो पर कुछ रेखाए और जरा गहरी हो चली थी। बालो मे दो-एक श्वेत भी होते दिखाई पड रहे थे। मूछ दाढी पहिले ही की तरह *अब भी साफ थी, और कानो म फिर वही दाना सोने के कुडल थे।*

युवक बाहर? बाहर तो निस्सीम है, क्या कृपा करके आप मुझे अक्षाश और देशान्तर तथा साथ ही उत्तर दक्षिण भी बतलाइयेगा।

मेटियो—मने कदम्ब के कप्तान के विषय म पूछा था जब कि आपने कहा था कि वह 'सौदामिनी नामक नवीन जहाज पर चले गये।

युवक—ओ हो! कप्तान काश्यप? तुम भी युग युगान्तर की बात ले बैठे।

मेटियो—चार वष।

युवक—ओह! ठीक! अब मुझे मालूम हुआ। हम दोना ही आँख मूद कर आ रहे थे, और अन्त म एक दूसरे से भिड गये। युग बीत गये और मै अब भी उसी होटल मे आता हूँ। अच्छा देखो किशुन जल्दी मेरा खाना लाओ तो। और देखो यह महाशय—'

मेटियो माफ़ा कप्तान।

युवक—महाशय माफ़ा बैठे हैं इनके लिये भी थाली लाओ। देखो किशुन एक कटोरी मे पाव भर खीर और थोडी सी पकौडिया भी लाना।

किशुन—और आपको महाशय?

मेटियो—'जो कुछ भी तुम्हारी इच्छा हो।

इस पर दोनो ही के लिये लडके ने एक-सी ही चीजें ला रक्खी।

युवक—क्या आप कप्तान काश्यप को जानते हैं?

मेटियो—जरा-सा—बहुत थोडा सा, क्या वह अब भी 'सौदामिनी पर हैं?'

युवक—'हाँ, और आगे भी रहने की उम्मीद है।'

मेटियो—'सौनामिनी' आजकल कहाँ है ?'

युवक—'बहुत दूर, दूसरे गोलार्द्ध में।'

मेटियो—'बहुत दूर ?'

युवक—हाँ !' और फिर वह चुपचाप खाने लगा।

मेटियो ने देखा कि क्लर्क का बर्ताव कुछ रूखा-सा है, वह प्रश्नों का उत्तर पूरा देना नहीं चाहता।

दूसरी बार फिर खाना परसा गया दोनों ने चुपचाप खाना खतम किया।

मामा बोला—'मैं ही दाम दे देता हूँ कप्तान। और उसने हाथ में दो रुपये निकाल लिये।

'क्या ? युवक ने बड़े रूखे तौर पर पूछा।

मेटियो—'यही, कि मैं ही दे देता हूँ।'

युवक—'नहीं ! आपको इसके लिये धन्यवाद है लेकिन मैं इतना गरीब नहीं हूँ। क्षमा करें।

मेटियो—'आपको बुरा तो नहीं मालूम हुआ ?

युवक—'नहीं ! बुरा लगने की कोई जरूरत नहीं मैं स्वयं अपना दाम चुकाऊंगा' अपनी जगह से उठते हुए, 'यदि आप कप्तान काश्यप के विषय में अधिक जानना चाहते हैं, तो उनके लड़के से पूछिये, वह आफिस में है।'

मेटियो—'उनका लड़का आफिस में है ? क्या शिव ?'

युवक—'हाँ ! शिव कुमार काश्यप।'

मेटियो—'ओ ओ ह ! और वह यहीं रुक गया, क्योंकि युवक क्लर्क अब वहाँ से निकल गया था। तो भी उसने दो बातें बता ही दी थी, पहली तो यह कि कप्तान बहुत दूर कहीं अपने जहाज को लिये हैं, और दूसरे इस समय शिव और नाथन अलग-अलग हैं।

तीन दिन बाद दोपहर को शिव को एकाएक सूचना मिली कि कोई भद्रपुरुष तुमसे मिलना चाहते हैं। मन में तर्क वितर्क करता हुआ शिवकुमार अपनी कुर्सी से उठा, और मुलाकात वाले कमरे में गया, देखा तो वहाँ चन्द्रा मामा बैठे थे।

'आहो ! चन्द्रा मामा।' उसने हँसते हुए आरम्भ किया, किन्तु देखा कि चन्द्रनाथ के चेहरे की आकृति गम्भीर है, इस पर कुछ हृदय में आशंकित होकर उसने पूछा—'क्या बात है ?'

चन्द्रा—'बहुत मुश्किल है !'

शिव—'क्या मुश्किल है, मामा !'

चन्द्र—'नाथन का पता नही है, ?'

शिव—'पता नही ! नाथन ! कब से ? कैसे ? कहा से ? खोलकर बताओ मामा !' उसका हृदय आतक से पूर्ण हो गया था।

चन्द्र—'मैं इतना ही बता सकता हूँ कि कब से। कल रात को वह ब्यालू के समय नही आया। मैं और सीता कितनी देर तक प्रतीक्षा करते रहे, फिर खाना खाने के बाद मै उसके कमरे मे गया। किवाड खुले थे, और वह वहाँ न था। मैं मकान के चारो ओर घूम घूम कर पुकारने लगा—'नाथ ! नाथ होइत ! किन्तु मेरी अपनी प्रतिध्वनि के अतिरिक्त वहा कोई उत्तर न था।'

'और नाथ का नही।' शिव अब अगली बातो के सुनने के लिये अधीर हो गया।

चन्द्र—'नही ! नाथन का कुछ उत्तर न मिला। गगा ने बताया, कि तीन बजे जलपान के बाद वह मैदान की ओर गया, और तब से मैं निश्चय जानती हू वह न लौटा। तब मैं एक गैस वाली लालटेन लेकर चारो ओर ढूढने लगा। घर के आस पास विमानशाला का कोना-कोना और सारा मैदान ढढ डाला, किन्तु कही उसका पता नही। बहुत पुकारा किन्तु कोई उत्तर नही।'

शिव—'उसका कोई चिह्न भी न मिला ?'

चन्द्र—'बिल्कुल नही।'

शिव—'किसी प्रकार का भी शब्द न सुनाई पडा, मामा ?'

चन्द्र—'जगल के ऊपरी हिस्से की ओर सिफ उल्लू की आवाज सुनाई दी। यह वही हू-हू थी, शिव। फिर मैं घर की ओर लौटा और बाग, वकशाप, मकान के सारे कमरे आदि सभी ढूढ मारे, लेकिन फजूल, कही कुछ पता नही। तीन बजे रात को मैंने सीता को सोने के लिये कहा, किन्तु गगा और सीता दोनो म से किसी को भी नीद न आई ! दर्वाजा खोले हुए मैं चुपचाप बैठा रहा, कि अब नाथन लौटता है, किन्तु वह नही लौटा।'

शिव—'फिर, आज आपने उसकी खोज की ?'

चन्द्र—'हाँ ! बाग मे, वकशाप मे, मैदान म और विमानशाला मे। जब वह काम करने के लिये आये तो मैंने बढइयो से भी पूछा। उनमे से चार तो सुनकर हक्के बक्के हो गय। और एक की अवस्था कुछ विचित्र-सी थी, वह कहता था, कि मैंने कल से ही उसे नही देखा।

शिव—'लगटू ?'

चन्द्र—'हाँ ! वही।'

शिव—'मैं उस पर जरा भी विश्वास नही करता मामा।'

चन्द्र—'मैंने तो उसकी बकवाद को उसका वैसा ही स्वभाव समझा।'

शिव—'मेरा उस पर जरा भी विश्वास नही है।

चन्द्र—'लेकिन उसे इससे फायदा ? उसे नाथन के गुम होने की बात को छिपाने से क्या हाथ लगेगा ?'

शिव—'वह सीधा आदमी नही है मामा, बडा धूर्त है। लगटू परले दर्जे का शैतान है। इस बात को नाथन भी जानता है ?'

चन्द्र—'क्या जानते हो ?'

शिव—'वह सबसे पीछे बसूला हाथ मे लेता है, और सबसे पहले रख देता है। वह दूसरो से भी काम करने म देरी करवाता है। काम करने मे जी चुराता है, किन्तु तनखाह बटने वाले दिन को तो आँख फाड कर देखता रहता है। हमने उसे एक दिन जान बूझकर दूसरे की रखानी खराब करते पकडा था। उसने जसे ही हमे देखा, बन्द कर दिया। उस आदमी को फिर उस पर धार रखते देर लगी थी। मुझे बडा आश्चर्य है कि रघुनाथ मिस्त्री क्या उसे रखे हुए है। उसने हम दोनो से पाच रुपये अफीम के खेल मे लगाने के लिये बडा अनुरोध किया था, उसने कहा था कि पाच के पचास धरे हुए है।

'और—?'

शिव—'ओह ! हमने उसे उससे भी अधिक रुपये दिये।

चन्द्र—'मैं समझता हूँ, तुम्हें यह बात मुझसे कहनी चाहिये थी।'

शिव—'लेकिन उसके बाद फिर हम उसके पजे म न पडे। नाथ और मैं दोनो ही फिर उसके चगुल मे न फसे।'

चन्द्र—'यह तुम्हे मुझसे कहना चाहिये था ?'

शिव 'क्यो ?'

चन्द्र—'फिर मैं नाथन के गुम होने के विषय मे और जोर से पूछ सकता था और यहाँ आते वक्त उस पर देख भाल रखने के लिए कह आया होता। पहले सजग कर लेना बहुत अच्छा होता है, शायद यह सम्बन्ध रखता है—'

शिव—'किससे मामा ?

चन्द्र 'मैंने समझा था कि नाथन शायद तुम्हारे पास चला आया हो, उसका मन वहा अकेला न लगा हो। किन्तु यहाँ उसका कोई पता नही, अब जहाँ तक हो सके, जल्दी नाथन के पाने का प्रत्यन करना होगा, उस समय मुझे लगटू पर सन्देह न हुआ। अब मुझे उस पर और दूसरे पर पूरा सन्देह हो गया।'

शिव—'दूसरा कौन, मामा ?'

चन्द—'मेटियो ।

शिव—'मेटियो ? वही जिससे बन्दरवाली दूकान पर नाथन डर गया था। यह वह नही हो सकता मामा। यहाँ भी उसी तरह का एक आदमी दिखाई पडा था। कृपासिह अपने होटल मे उसे मिला था, वह कहता था कि वह पिता जी के बारे मे बहुत पूछ-ताँछ करता था।'

चन्द्र—'कृपासिंह ? कौन है, कृपासिंह ?'

शिव—'हमारे आफिस का असिस्टेट क्लर्क। उसकी मेज मेरी ही बगल मे है।'

चन्द्र—'वह कब मेटियो से मिला था ?'

शिव—'सोमवार को और चार वर्ष पहिले भी एक बार वह मिला था। किन्तु उसे मेटियो के नाम से नही जानता, बल्कि वह माफ्रा कहता है।

चन्द्र—'माफ्रा ! वह मेटियो ही है शिव ! हमे उसी के पकडने की बडी आवश्यकता है। बडा अच्छा हुआ जो उसका पता लग गया। क्या कृपासिंह इस वक्त मिल सकता है ?

शिव—'यदि आप चाहे तो मैं उसे बुला लाता हूँ, अब आफिस बन्द होने का समय भी आ गया।'

चन्द्र—जाओ, जल्दी बुला लाओ। यह सबसे जरूरी बात है।'

शिव जाकर कृपासिंह को बुला लाया, और उसने चन्द्रनाथ से परिचय कराया।

कृपा ने हाथ जोड कर बन्देमातरम् करते हुए कहा—मुझे आपके दर्शन से बडा आनन्द हुआ।

चन्द्र—'किन्तु मुझसे अधिक नही। शिव ने अभी मुझसे कहा है कि आपने माफ्रा नाम के किसी आदमी को देखा है।

कृपासिंह—'हा जनाब।

चन्द्र—'उसकी शकल कैसी है !'

कृपा—एक पतला और मझोले कद का आदमी है, रग श्वेत, बाल काले और आँखें खुमार मे सी। पलकें ही जनाब निद्रित-सी मालूम होती हैं स्वय आखें नही, उसके कानो मे कुण्डल है। वह 'सौदामिनी के विषय मे पूछता था।

चन्द्र—'यही मेटियो है !'

कृपा—क्या !'

चन्द्र—'मैं उसे मेटियो के नाम से जानता हू। क्या आप मुझे बतला सकते हैं कि वह आपसे कहाँ पर मिला ? उसने आपसे क्या क्या पूछा, और आपस उसने क्या-क्या कहा—कृपया, कृपासिंह जी इसे जहाँ तक स्मरण हो, विस्तारपूर्वक कहे।'

१
क
ारे
ार
रल
मरे
का
में
मुख
। है।
ार से

माना,
ा है कि
जानना
। आरको
ा तो हो

शिव—'दूसरा कौन, मामा ?

चद—'मेटियो ।'

शिव—'मेटियो ? वही जिससे ब दरवाली दूकान पर नाथन डर ग यह वह नही हो सकता मामा । यहा भी उसी तरह का एक आदमी दि था । कृपासिह अपने होटल म उसे मिला था, वह कहता था कि वह पित बारे मे बहुत पूछ-ताछ करता था ।'

च द्र—'कृपासिह ? कौन है, कृपासिह ?'

शिव—'हमारे आफिस का असिस्टेंट क्लर्क । उसकी मज मेरी ही बगल

चद्र—'वह कब मटियो से मिला था ?

शिव—'सामवार को और चार वष पहिले भी एक बार वह मिला किन्तु उसे मेटियो के नाम से नही जानता, बल्कि वह माफा कहता है ।

चद्र—'माफा ! वह मटियो ही है शिव ! हमे उसी के पकडने की आवश्यकता है । बडा अच्छा हुआ जो उसका पता लग गया । क्या कृपासिह इस मिल सकता है ?

शिव—'यदि आप चाहे तो मैं उसे बुला लाता हूँ, अब आफिस ब द होने समय भी आ गया ।'

च द्र—'जाओ, जल्दी बुला लाओ । यह सबसे जरूरी बात है ।'

शिव जाकर कृपासिह को बुला लाया, और उसने च द्रनाथ से परिचय कराय

कृपा ने हाथ जोड कर ब ेमातरम् करते हुए कहा—मुझे आपके दशन बडा आन द हुआ ।

चद्र—किन्तु मुझसे अधिक नही । शिव ने अभी मुझसे कहा है कि आप माफा नाम के किसी आदमी को देखा है ।

कृपासिह—'हा, जनाब ।

चद्र—'उसकी शक्ल कैसी है !

कृपा—एक पतला और मझोले कद का आदमी है, रग श्वेत, बाल काले और आँखें खुमार मे सी । पलकें ही जनाब निद्रित-सी मालूम होती हैं, स्वय आँखें नही, उसके कानो मे कुण्डल हैं । वह 'सौदामिनी' के विषय मे पूछता था ।'

चद्र—'यही मटियो है !'

कृपा—क्या !'

चद्र—'मैं उसे मेटियो के नाम से जानता हू । क्या आप मुझे बतला सकते हैं कि वह आपसे कहाँ पर मिला ? उसने आपसे क्या क्या पूछा, और आपसे उसने क्या-क्या कहा—कृपया, कृपासिह जी इसे जहाँ तक स्मरण हो, विस्तारपूर्वक कहे ।'

कृपा—'बडी प्रसन्नता से जनाब ।'

तब कृपासिह ने सारी बात आद्योपान्त अक्षरश कह डाली । प्रोफेसर चन्द्रनाथ भारद्वाज ने सारी बात को बडे ध्यान से सुना, और उन्हे निश्चय हो गया कि सारी हरकतें मटिया के सिवाय दूसरा कोई नहीं हो सकती।

अत मे चन्द्रनाथ ने कहा—'अच्छा तो आज जलपान हमें साथ ही करना है, और यदि कृपासिह जी आप और शिव का कोई उज्र न हो, तो मैं साथ ही एक मित्र से मिलने जाना चाहता हू । मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी यह बातें उन्हे भी मालूम हो जायें । चलियेगा न ?'

कृपा—'अवश्य जनाब, मुझे कोई काम नही है, और यदि कोई काम भी होता, तो भी मैं आपके वास्ते उसे छोडे देने को तैयार हू । बहुत अच्छा, मैं चलता हू ।'

सम्मति

सबेरे ही प्रोफेसर ने सेठ जी के पास फोन कर दिया था, और उन्हे उसका जवाब भी मिल गया था । सात बजे रात्रि मे सेठ जी के घर पर बैठक मे ही मिलने की बात तै पाई थी ।

चाय पी लेने के बाद तीनो आदमी सेठ जी के मकान की ओर चले । सेठ जी को युवकों के आने की खबर न थी । यह चन्द्रनाथ की भी पहली मुलाकात थी । इसलिये जब तीनो आदमी सामने पहुँचे तो सेठ को सन्देह हो पडा कि कोई भूल हुई है । यह अवश्य दूसरे आदमी हैं । कप्तान काश्यप के साले नही हो सकते ।

प्रोफेसर के मुलाकाती कार्ड को जिसे उन्होंने पहले भेज दिया था, पढे होने से सेठ ने कहा 'महाशय भारद्वाज ?'

हाथ बढाते हुए प्रोफेसर ने कहा 'हाँ ! और आप सेठ दाऊद ?'

सेठ ने बडी गर्मागर्मी से हाथ हिलाया, और 'वन्देमातरम्' कहा । उन्होंने चन्द्रनाथ और कप्तान की धर्मपत्नी के चेहरे के सादृश्य को देखा, तथापि उन्होंने पहले किसी और ही को समझ लिया था।

सन्देह से आकर कप्तान साले दर दर जान पर खेद प्रकट करते हुए सेठ ने कहा—'माफ कीजिये, मुझे पहले आपकी मुलाकात का सौभाग्य न प्राप्त हुआ था, और मैंने समझा था कि आप कप्तान ही आ रहे हैं ?'

बस पर चन्द्रनाथ ने शिव की ओर सकेत करके कहा—'यह मेरा भाजा शिव है।'

सेठ—'ओह! हा—मैंने इनके विषय मे सुना है, और यह—अच्छी तरह देखकर, नही यह नाथन दशना नही हो सकता।'

शिव को बडा आश्चय हुआ। कैसे यह वृद्ध सेठ जानता है कि कृपासिंह नाथन नही है? और क्यो नाथन का नाम इसके मुह से अत्यन्त परिचित के तौर पर निकला।

चन्द्र—'नही! यह महाशय कृपासिंह हैं, यह उसी जहाजी आफिस मे क्लक है, जिसमे कि शिव अभी गया है। पिछले सोमवार को ही शिव ने काय आरम्भ किया है। मैं दोनो को आपके पास लाया हू कि वह जो कहते है, उसे आप भी सुनें। क्योंकि दुर्भाग्य से नाथन गुम हो गया।

सेठ—'गुम हो गया?'

चन्द्र—'कल छै बजे सायकाल से। आप पहले मेरी बात सुनें फिर शिव की और फिर कृपासिंह की। तीनो की बातो को सुनने के बाद आपको सारी घटना मालूम हो जायगी। उसके बाद आपस मे राय लेकर हम नाथन को शीघ्र खोज निकालने म शायद कामयाब हो सकें।'

अब चारो ही कुर्सियो पर बैठ गये। सबने अपनी-अपनी कथा कह सुनाई, और सेठ ने तब तक अपनी जबान जरा भी न हिलाई, जब तक कि तीनो ने अपनी अपनी कथा समाप्त न कर ली।

कृपासिंह की बात समाप्त होने के बाद सेठ ने कहा—'जान पडता है, महाशय कृपासिंह जी मेटियो के सिमियन बिन इज्रा और उनके पौत्र के पीछा करने के बार मे कुछ नही जानत हैं।'

चन्द्र—'हाँ! यह तो ठीक है।'

कृपा—'मुझे उसके बारे मे कुछ भी मालूम नही है, जनाब।'

सेठ—'लेकिन इन्ह भी उसका जानना आवश्यक है, क्योकि अब इन्हे भी इसमे सम्मिलित करना पडेगा। क्या शिवकुमार चम-पत्र और ढाल के विषय म कुछ जानते है?'

अपने मामा के उत्तर की प्रतीक्षा न करके शिव ने कहा—'बहुत थोडा सा, अधिक नही। मैं जानता हू कि एक ढाल और कुछ चम पत्र हैं, जिन्हें नाथन अपन उन्नीसवें जन्म दिन पर पाने वाला है, किन्तु मैं यह नही जानता कि वह कहाँ है।'

सेठ—'तुमने, नाथन की कथा सुनी है।

शिव—'अक्षर, अक्षर।'

सेठ—'तुमने मेटियो को देखा है ?'

शिव—'हाँ ! एक बार जब कि हम बन्दर बेचने गये थे।'

सेठ—'मैं इसे अच्छा समझता हूँ कि तुम इन सभी बातोंको कृपासिंह से कह दो—अभी नहीं, पीछे। अब हमें नाथन की खोज के विषय में विचारना है। मेरा विचार है कि मेटियो ही नाथन को पकड़ ले गया है।'

शिव—'लेकिन महाशय, मेटियो तो कराची में था।'

सेठजी ने बड़ी शान्तिपूर्वक कहा—'सोमवार को न ?' सोमवार से कल तक उसे काफी समय था, उतने में वह यहाँ से सक्खर गया, उसने विमान शाला देखी, लगटू से घनिष्ठता प्राप्त कर ली, उसे रिश्वत देकर अपनी मुट्ठी में कर लिया, और उसकी सहायता से वह नाथन को पकड़ ले गया, अब चाहे कहीं उसे छिपा रक्खा गया है या बाहर भगा ले जाने के प्रयत्न में है।'

शिव भौंचक्का-सा हो गया। कृपासिंह इस अदभुत कथा के भिन्न भिन्न अंशों को मिलाकर एक करने लगा।

शिव—'वह क्यों उसे भगायेगा ?'

सेठ—'इसीलिये कि धमकी, चिट्ठी पत्री द्वारा किसी प्रकार चर्म पत्र और ढाल पर अपना अधिकार जमावे। आपकी क्या राय है महाशय भारद्वाज ?'

चन्द्र—'मेरा भी ख्याल आपका ही सा है, सेठ जी। मुझे आशंका हो रही है कि जब तक उसे छुड़ा नहीं लाया जाता, नाथन के साथ वह बुरा बर्ताव करेगा।'

शिव—'हमें इस विषय में बहुत जल्दी करनी चाहिये।'

सेठ—'वह और कुछ न करेगा, उसे यह अच्छी तरह मालूम है कि मैं नाथन ही के द्वारा किसी प्रकार उन चीजों को हस्तगत कर सकता हूँ। उसे यह भी अच्छी तरह मालूम है कि अब छः महीने में नाथन को ढाल और चर्म पत्र मिल जायेंगे। मुझे इसका पूरा विश्वास था कि जितना ही समय नजदीक आ रहा है, उतना ही मेटियो के हस्तक्षेप की भी अधिक आशंका बढ़ती जाती है। तो भी इस वक्त मुझे इसका कुछ ख्याल न था। हमें नाथन को छुड़ाने के प्रयत्न में तुरन्त लग जाना चाहिए। कप्तान काश्यप कब घर आ रहे हैं ?'

चन्द्र—'दिसम्बर से पहले नहीं। मुझे इतने समय में सिर्फ एक ही पत्र के पहुँचने की आशा है। यदि आवश्यकता हो तो मैं उनके पास तार दे दूँ।'

सेठ—'इस पर हम फिर विचार करेंगे। अवशिष्ट यात्रा में विघ्न डालना अच्छा न होगा। पत्र लिखने से सिर्फ तरद्दुद बढ़ेगा और तार से सारी बात मालूम होने से रही। हमारा पत्र या तार भेजना फजूल है। उनके पाने और आने में महीनों

लग जाएगें। अत वर्तमान समय मे पत्र हमे कुछ भी मदद नही पहुचा सकते । और नाथन को दिसम्बर से पूर्व ही छुड़ा लेना चाहिये ।

शिव—'उससे भी पहले कि अभी उसे तीन मास रहते हैं ।

चन्द्र—'और आपकी क्या सलाह है ?

सेठ—शिवकुमार को आप साथ ले जाय, मैं समझता हू आफिस द्वारा इसमे कोई बाधा न होगी ?'

चन्द्र—'इस परिस्थिति मे ? अवश्य । मैं अवश्य ऐसा करूगा, यदि आपकी राय मे शिव द्वारा इस काम मे कुछ मदद मिल सकती हो ।

सेठ जी ने उत्तर दिया—'अवश्य इसमे मुझे जरा भी सन्देह नहीं है ।'

और मैं भी चलने के लिये तैयार हू । यह कृपा ने इस विचित्र घटना की एक एक बात को भली प्रकार मन मे बैठा कर कहा ।

सेठ—हम आफिस वालो को अत्यधिक तरददुद मे नही डाल सकते । मेरी तरह तुम्हारा कर्त्तव्य भी कृपासिंह जी यही है । यदि हम दोनो भी प्रोफेसर के साथ सक्खर गये तो इससे कुछ लाभ न होगा, बल्कि गुत्थी और उलझ जायगी । अभी ही इसकी उलझ कम नही है । अभी हमे यह काम प्रोफेसर भारद्वाज और शिवकुमार के हाथ मे छोड देना चाहिये । यह लगटू को अच्छी तरह जानते हैं और लगटू को पहले पकडना होगा ।'

चन्द्र—यही मेरी भी राय है ।

सेठ—आप लगटू द्वारा ही मेटियो को पायेंगे, जरा भी हिचकिचाहट न दिखाइयेगा । यदि लगटू न माने तो पुलिस को बुलाये बिना न रहना । मेटियो बुज-दिल नही है—वह धूर्त हो सकता है किन्तु कायर हर्गिज नही । लेकिन लगटू दोनो है । जैसे चाहिये वैसे उसके साथ बर्त्ताव कीजियेगा किन्तु खबरदार ! मेटियो का पीछा करते वक्त बहुत सावधान ।

चन्द्र—बहुत ठीक ।

सेठ—और आप सब बातो की खबर मुझे देते रहे । मैं चाहता हू कि जहाँ भी अपना कदम आप बढाना चाहे पहले मुझे उसकी खबर अवश्य दे दें । और तुम्हे कृपा यह सभी बातें बडी आश्चर्यकर मालूम होती होगी ।'

कृपा—'उतनी नहीं, जितनी कि पहले जान पडी थी ।

सेठ—तुम इन सभी बातो के जानने के योग्य हो । तुम्हारी इस अमूल्य सूचना के लिये अनेक धन्यवाद । मैं और प्रोफेसर भारद्वाज दो एक और बातें करने वाले है, अत तुम दोनो को हम अकेला छोड देते है । शिवकुमार तुम्हे बतावेंगे कि नाथन कौन

है, वह कैसे हमे मिला और क्यो हमे उसे मेटियो जैसे नर पिशाच के हाथ से मुक्त करना चाहिये।'

सेठ इब्राहीम दाऊद और प्रोफेसर चन्द्रनाथ भारद्वाज वहा से उठ कर दूसरे कमरे मे चले गये।

सेठजी ने आरम्भ किया—'आप बहुत थके से मालूम होते हैं, प्रोफेसर महाशय।'

प्रोफेसर ने स्वीकार किया—'मैं कल रात भर न घर पर सोया और न रेल ही मे। मैं इतना चिंतित था कि नीद आई ही नही। नाथन के गुम होने से मेरे हृदय मे बडी भारी घबराहट ही नही पैदा कर दी बल्कि मुझे अपने दायित्व का बहुत ख्याल हो गया है। कप्तान काश्यप को क्या उत्तर दूगा महाशय दाऊद, यदि मैं नाथन को न लौटा पाया? मुझे इसकी बहुत चिन्ता है।' उनका खिला हुआ मुख चिन्ता के मारे मुर्झा गया था।

सेठ—'यह बिल्कुल स्वाभाविक है, किन्तु इसमे आपका जरा भी दोष नही है। आप बहुत थके मांदे हैं, किन्तु तो भी मैं देख रहा हू कि रात की लाहौरवाली डाक से आपको लौट जाना होगा।'

प्रोफेसर—'यह बहुत जरूरी है।'

सेठ—'क्या आप अपनी लौटती यात्रा मे सो सकते है?

प्रोफेसर—'अवश्य मैं फस्ट क्लास का टिकट ले लूगा।'

सेठ—'आपको इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। खूब निश्चिन्त होकर सोना शिव से कह देना कि नीद मे कोई खलल न डाले। क्या नाथन को इतना पता है कि ढाल और चम पत्र बक मे जमा है?'

प्रोफेसर—'नही!'

सेठ—मुझे भी यही जान पडता था, किन्तु इसे मैं और स्पष्ट करके जानना चाहता था। मेटियो इस पते के लिये उस पर जबदस्ती नही कर सकता। आपको उम्मीद है कि मेटियो इस पते को जानता है।'

प्रोफेसर—नही! यदि उसने बक की रसीद कप्तान के पास देख ली हो, तो यह सम्भव है।'

सेठ—किन्तु यह असम्भव है।

प्रोफेसर—'बिल्कुल नहीं।' उन्होंने वह सारी कथा कह सुनाई कि कैसे मेटियो मामा बनकर सौदामिनी' का भडारी बन गया या और कैसे कप्तान के सब कागज-पत्र टटोले और अन्त मे कैसे बटेविया मे नये कोयला झोकू ने उसका सारा पर्दाफाश

कर दिया। सेठ जी ने इसे पहल ही पहल सुना था इसीलिय वह बडे सावधान चित्त रह।

सेठ—'और यह पदाफाश करन वाला आदमी आपके ख्याल म वही हिन्दुस्तानी है जोकि मटियो के साथ यरुशिलम तक गया था ?

प्रोफेसर—'हाँ। वही आदमी। उसने पहले एक झूठे नाम—मूसा के साथ हस्ताक्षर किया था। किन्तु अन्त म वह बिल्कुल एक दूसरी ही श्रेणी का आदमी निकला। कई वर्ष पहल वह मेरा एक अत्यन्त घनिष्ठ मित्र था। शराबखोरी न उसे बिल्कुल पतित कर दिया, वह गिर कर पाताल तक पहुच गया। मुझ अपन एक परम स्नेही की ऐसी दशा सुन कर बडा दुख होता था। किन्तु शुक्र है और साथ ही चीफ इजीनियर सैयद रहमान और कप्तान प्रताप को भी धन्यवाद है कि अब वह फिर अपने पुराने स्थान पर पहुचने का प्रयत्न कर रहा है बल्कि बहुत हद तक वह अपने प्रयत्न म सफल भी हुआ है। अब वह उसी जहाज म चीफ इजीनियर है, जिसकी कि मुझे बहुत कम उम्मीद थी।

सेठ—चीफ इजीनियर। सौदामिनी पर ?

प्रोफेसर—हाँ। वह अब भी कप्तान काश्यप के साथ है।

सेठ—और उसका असली नाम क्या है ?

प्रोफेसर—'इसहाक सासून।

इसहाक ? आगे और न कह कर सेठ का चेहरा एकदम पीला हो गया वह हक्के-बक्के स होकर प्रोफेसर के चेहरे की ओर देखने लगे। फिर मैं—मैं' और जान पडा उन्होंने अपने नेत्रों के सम्मुख जोर स आते हुए किसी दृश्य को हटा दिया है। बहुत प्रयत्न के साथ थोडी ही देर मे वह प्रकृतिस्थ हो गये और फिर अपनी स्वाभाविक शान्ति के साथ बोले—लेकिन यह बिल्कुल सम्भव है कि मटियो को रसीद दिखाई पडी हो। वह बहुत भयानक है। क्या आप समझते हैं कि उसने रसीद देख ली है ?'

प्रोफेसर—यह बिल्कुल असम्भव नही है मेरा कहना बस इतना ही है। प्रताप ने अपने अन्य निजी पत्रो के साथ इसे भी अपनी सामुद्रिक पेटी मे रखा होगा और जहाँ तक प्रताप को मालूम है मटियो उस पेटी का ताला न खोल सका था, किन्तु उसने प्रयत्न अवश्य किया होगा। बहुत कुछ सम्भव है कि उसने अनुमान किया होगा कि ढाल और चर्म-पत्र उसी म है।

सेठ—'सम्भवत। हमे इस बात का निश्चय दिसम्बर म होगा यदि बीच मे—

प्रोफेसर—बीच मे क्या ?'

सेठ—'नाथन यदि चला आवे।'

प्रोफेसर—'ओफ! वह अवश्य लौट आवेगा, उसके बिना मैं प्रताप को मुह कैसे दिखाऊगा।'

सेठ—'वह अवश्य लौट आयेगा, यदि आपने पूरा प्रयत्न किया।'

प्रोफेसर—'अवश्य कैसे?'

सेठ—क्योकि मेटियो कप्तान से पत्र व्यवहार करेगा, यदि उसे मालूम होगा कि वह चीजें कप्तान के पास है और यदि उसने रसीद देख ली है, तो मेर साथ।'

प्रोफेसर—'हमारे साथ खेल खेलेगा?'

सेठ—हा! लेकिन वह बडा धूत है, वह स्वय पर्दे की आड ही मे रहेगा!'

प्रोफेसर—'लेकिन हम दिसम्बर तक प्रतीक्षा नही कर सकते। नाथन को उससे बहुत पहले छुडा लेना होगा।'

सेठ—मुझे आशा है कि ऐसा ही होगा। जितनी आवश्यकता हो बेधडक खच कीजिये। रुपये की जरा भी कमी नही है। आप नि सकोच खच कीजियेगा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस अवस्था मे सिमियन बिन इज्रा क्या करता। आप खच बक से ले सकते है।'

प्रोफेसर—'नही! दोष मेरा है—यद्यपि आपने नाथन के गुम होने मे मेरा जरा भी दोष नही बताया है—किन्तु मैं अच्छी तरह जानता हू कि यह मेरी असाव धानी का फल है, इसलिये सारा खच मुझे अपने ऊपर लेना होगा तभी तो आगे के लिये मुझे होश भी आयेगा।'

सेठ—'आप बहुत थके और चिन्तित है मेरे प्यारे मित्र! आओ! लडको के पास चलें। वह बडी चिन्ता मे होगे कि क्या हम इतनी देरी कर रहे है। मैंने चन्द ही मिनटो के लिए कहा था और आप इसहाक—इसहाक के विषय मे कहने लगे। शिव ने अपनी कथा कभी समाप्त कर दी होगी। आपको अब कुछ भोजन कर लेना चाहिये और तब तक मोटर आ जाती है। आप लाहौर मेल के खुलने के पन्द्रह मिनट पूव ही स्टेशन पर पहुच जायेंगे—गाडी ग्यारह बजे खुलती है।

चन्द्रनाथ ने इसके लिये धन्यवाद दिया।

गाडी पर चढते ही टिकट तो उन्होने शिव के हाथ मे दिया और आप एक बेंच पर खूब पैर फैला कर लेट गये और जल्द ही घोर निद्रा मे चले गये। पूरे चार घण्टे तक वह उसी प्रकार सोते रहे, तीन बजे का वक्त था जब कि उनकी नीद सर्द हवा के लगने से खुली। गाडी खडी थी। गाडी की खिडकियो के बाहर रोशनी दिखलाई पड रही थी। आदमी इधर-उधर टहल रहे थे। गाडी खुलने की घण्टी टनन् टनन हुई।

प्रोफ़ेसर ने आँखें मलते हुए शिव से पूछा—'हम कहाँ है शिव ?'

शिव—'हैदराबाद ।'

चन्द्र—'ओह ! मैं बहुत सोया । लेकिन इससे मुझे बड़ा फायदा हुआ ।'

शिव—'तुम अब बहुत अच्छे दिखाई पड रहे हो मामा । सिर्फ थोडी-सी कसर है । यदि नींद आवे तो एक डुबकी और ले लो, मैं तब तक बैठा हू ।'

चन्द्र—'तुम नहीं सोये ?'

शिव—'बिल्कुल नहीं ।'

चन्द्र—'तो अब यह तुम्हारी बारी है । यह सारा ही डब्बा तो हमारा है । सो जाओ शिव ! पैर फैलाकर पड जाओ और कुछ देर अपने शरीर और दिमाग को विश्राम दो । तुम्हे कल इनकी आवश्यकता पडेगी ।'

शिव ने कहने का अभिप्राय समझ लिया और तुरन्त लेट गया । गाडी चलने के मन्द धक्के मे उसे भी सोते देर न लगी ।

चन्द्रनाथ को एक-एक करके सेठ के साथ का सारा ही वार्तालाप याद आने लगा । उन्होंने खुल कर ढाल और चर्म-पत्र के विषय मे कहा, किन्तु प्रताप ने उन्हे थैली के अन्दर रख कर सिर्फ थाती के तौर पर रक्खा है । उन्होंने उनके बारे मे और कुछ नही कहा, सिवाय इसके कि यह चीज नाथन की है और उसे उन्नीसवें जन्म दिन पर मिलेगी । लेकिन सेठ इसे भली भाँति जानते हैं कि उस थैली मे क्या है । उन्होंने मुहरें न तोडी होंगी, क्योंकि यह विश्वासघात होगा । चन्द्रनाथ का इस बात का ख्याल उस समय न आया था । अन्त मे सब बातो पर विचार करके उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सेठ को थैली के भीतर की चीजों का ही हाल नही मालूम है, बल्कि सिमियन बिना इज्रा और दशना-परिवार के रहस्य को भी वह बहुत-कुछ जानते है । नाथन के विषय मे उन्हे भी उतना ही ख्याल है, जितना कि प्रताप को । वह चाहते हैं कि नाथन अपने दादा की वसीयत से वंचित न होने पावे और उसके कर्तव्य के पूरा करने मे भटियो बाधा न डाल सके ।

लेकिन सेठ इब्राहीम और इसहाक स क्या सम्बन्ध है ? इसहाक के नाम लेने मात्र से वह इतना घबरा गये । उन्होंने इसके विषय म कुछ न कहा । उन्होने अपनी घबराहट को बडे प्रयत्न के साथ दबा दिया और जरा ही देर मे फिर पूर्ववत शान्त और गम्भीर हो गये । एक बार फिर इसहाक का नाम लेने म उन्होने हिचकिचाहट प्रकट की और उसे किसी बड़े हार्दिक भाव के साथ लिया । चन्द्रनाथ को इसका मतलब कुछ न लगा ।

उन्होने इस विचार-तरग को छोड दिया और मेटियो और लगटू का ख्याल करना आरम्भ किया। उन्हे समय और मार्ग के स्टेशनो का कुछ भी ख्याल न रहा। शिव बराबर सोता ही रहा। छ बज गया था, जबकि चन्द्रनाथ ने कहा—'उठो शिव अब गाडी सक्खर ही मे खडी होगी।'

तहखाना

सीता देवी ने जैसे ही शिव की आवाज सुनी, वह दौडी बाहर निकल आई। अकस्मात शिव के आ जाने से नाथन की अनुपस्थिति की उदासीनता कुछ घट गई। शौच स्नान के बाद जलपान के लिये बैठे तो प्रोफेसर ने शिव के लौट आने और सेठ इब्राहीम के सारे परामर्श को सविस्तार कह सुनाया। अब बढइयो के आने का समय भी हो गया था, इसलिये दोनो मामा भाजे फाटक पर खडे हो गये कि आते ही लगटू को पकडकर उससे सब बातो का पता लगावें।

लगटू औरो की अपेक्षा दस मिनट पीछे आया। जब उसने वहा शिव का भी खडा देखा तो उसे बडा विस्मय हुआ।

चन्द्रनाथ ने कहा—'मैं तुमसे दो एक बात करना चाहता हूँ, लगटू।'

लगटू—'तो इतने समय का वेतन मुझे कौन देगा? मैं तो एक घटा इसी मे फसा रहूँगा।'

चन्द्रनाथ—'मैं इसे पीछे देखूगा और यदि तुममे अकल है, तो मेरे साथ उस घर म चलो, वही बात होगी। विमान शाला मे दूसरो के सम्मुख कुछ कहना तुम्हारे लिये अच्छा न होगा।'

लगटू—'यदि मुझमे अक्ल है?'

चन्द्र—'हाँ होशियार लगटू और यदि अधिक स्पष्ट कराना चाहते हो, तो अपने प्राणो के लिए—क्यो?' यह कहते हुए उन्होने निश्चल दृष्टि से लगटू की ओर देखा।

लगटू ने कोमल स्वर मे कहा—'आप उस घर के विषय मे कहते हैं महाशय?

चन्द्र—'हाँ! मैंने घर ही के बारे मे कहा तो भी यदि तुम इसे पसन्द करो—और मैं जानता हूँ कि तुम्हारा इस सारे काय म हाथ है। अच्छा, तो बँगले के पीछे वाले लोहारखाने मे वहाँ हमारे बात चीत म कोई बाधा न होगी।'

लगटू ने घृणा की दृष्टि से शिव की ओर देखते हुए कहा—और यह छोकरा?

चन्द्रनाथ ने बड़ी शान्तिपूर्वक कहा—'मेरा भांजा शिवकुमार काश्यप हमारे साथ चलेगा।'

लगटू—'एक के ऊपर दो—क्या यह उचित है महाशय ?'

चन्द्र—'बिल्कुल उचित—उससे कहीं अधिक उचित जो बुध के दिन एक छोकरे पर दो आदमी लगे।'

लगटू का मन इस सीधे वार से कुछ विचलित होने लगा। उसकी आँखों आतंक प्रकट हो रहा था।

लगटू—'मेरा एक पहर नुकसान हो जायेगा महाशय ! और यदि यहीं, जहाँ काम होता है, हम बात करें तो ?'

चन्द्र—'यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। आओ।'

तीनों आदमी लोहारखाने की ओर चले। लगटू का चेहरा उड़ा हुआ था, उसकी आँखें बिल्कुल घबड़ाई हुई थीं।

'अच्छा तो महाशय—'लगटू बोल उठा, क्योंकि बोलने से चुप रहना उसे अधिक मर्मभेदी मालूम होता था।'

चन्द्र ने कहा—'नाथन कहाँ है ?'

लगटू—'मैं कैसे जान सकता हूँ ?'

चन्द्र—'नाथन कहाँ है ?'

लगटू—'मैंने आपसे कहा नहीं था कि बुध ही से मैंने नाथन को नहीं देखा।'

चन्द्र—'हाँ ! तुमने कहा था। और अब मैं तुमसे तीसरी बार कहता हूँ, नाथन कहाँ है ?'

लगटू—'सब से पिछली बार !'

चन्द्र—'बुध को किस समय तुमने उसे देखा ?'

लगटू—'किस समय ? जरा मुझे याद कर लेने दीजिए ! हाँ करीब तीन बजे शाम को आपके साथ विमान शाला में।'

शिव—'झूठ बोल रहा है, मामा।'

लगटू ने शिव की ओर घूर कर ताकते हुए कहा—मैंने देखा।'

चन्द्र—लेकिन मैं पूछता हूँ कि लगटू तुमने सबसे पिछली बार—तीन बजे के बाद—बल्कि छ बजे के बाद जब कि काम छोड़कर सब लोग अपने घरों को लौटे—कब उसे देखा ?'

लगटू—'मैं भी सबके साथ ही चला गया।'

चन्द्र—'और माफ़ा के साथ लौट आये ?'

लगटू—'माफ़ा के साथ ? माफ़ा कौन है ?'

शिव—'वही शैतान, जिसके साथ तुम लौट कर आये।'

अब की बार भी लगटू ने आँखो से घृणा प्रकट की, किन्तु मुह से कुछ न कहा।

चद्र—'आओ लगटू, बात खुल गई, अब तुम्हारा पानी पीटना फजूल है। तुम माफ़ा के हाथ के खिलौने थे। उसने अपने मतलब के लिए तुम्ह चगुल मे फसाया। उसने तुम्हारी मुठ्ठी भी गम की।'

लगटू घबराहट मे बिना समझे बूझे ही बोल उठा—'उसने नही।'

चद्रनाथ ने बडी शान्तिपूवक कहा—'सुनो, अभी मेरी बात खतम नही हुई। उसनें तुम्हारी मुट्ठी गम कर दी या कर देने का वचन दिया, किन्तु ख्याल रक्खो यह खून का रुपया होगा।'

लगटू ने अपराधी की तरह कहना आरम्भ किया—'मैंने नही, बीच ही मे वह ठिठक गया, उसके मुख की अजब दशा थी।

चद्र—'क्या मैंने नही?'

लगटू—मैंने लडके को मारा नही।'

शिव—'तो क्या माफ़ा ने?'

लगटू चुप था।

चद्रनाथ ने अत्यन्त गम्भीर होकर कहा—'अब एक बात हमारी सुनो, मैं तुम्हें एक बार और मौका देना चाहता हूँ। यदि तुम तब भी न बताओग—और ठीक-ठीक, क्योकि उसे हम कसौटी पर कसेंगे, तो मैं फिर तुम्हे पुलिस के हवाले कर दूगा। वह कहा है?'

लगटू—'खलीलपुर मे।'

चद्र—'और खलीलपुर मे कहा?'

लगटू—'मेरे ही घर के तहखानें मे।'

चद्र—'और तमने उसे बुध ही से नही देखा?'

लगटू—'मैंने आज ही प्रात काल को दखा है।'

चद्र—'लगटू।'

लगटू—'आप ही ने कहा कि बात खुल गई।'

चद्र—'क्या माफ़ा उसके साथ था?'

लगटू—'वह उसके पास ही ऊपर वाली कोठरी म था।'

चद्र—'हम खलीलपुर चलेंगे।'

लगटू चकित-सा हो उठा—'और मैं भी।'

चन्द्र—'हा ! हमारे साथ की बात कहाँ तक सत्य है।'

लगटू—'लेकिन आप मुझे पुलिस से पकड़ायेंगे तो नही ?'

चन्द्र—'नही यदि बात ठीक उतरी।'

लगटू—'तो पहर भर ही नही, अब मैं दिन भर के लिए पकडा गया।'

शिव—'और नही तो हजरत एक वर्ष से कम नही।'

लगटू—'क्या नही तो ?'

शिव—'जबदस्ती पकड ले जाने के लिये और यदि तुमने कोई और शैतानी खेली है तो और भी ! तुम और वह गोरा दोनो।

उन्होंने तुरन्त एक तांगा खलीलपुर के लिए भाड़ें पर किया और लगटू को लिये उस पर सवार हो गये। सडक कच्ची किन्तु अच्छी थी। एक दो घन्टे मे वह लोग उस कस्बे मे पहुंच गये।

लगटू कई गलियो को घुमा कर एक ऊंचे पुराने गढ के टीले पर चढा। कुछ दूर आगे चढने पर उन्हें सीढी से कुछ नीचे उतरना पडा। यह एक तरह का आंगन-सा था, इसमे दाहिनें-बायें दोनो ओर दो घर थे और सामने भी एक घर था।

वह सामने वाले दरवाजे की ओर चला, लेकिन बराण्डे के फर्श पर पहुँच कर खास तरह से पैर को धमधमाते चला। दरवाजे को खोलने से पहले उसने दो बार कुण्डे को खटखटाया। फिर भीतर घुसा। यह एक छोटी सी कोठरी थी, जिसके पीछे की ओर एक छोटा सा जंगला था, जहां से दूर का एक जंगल दिखाई पडता था। दीवारें यद्यपि इंटो की थी, किन्तु फर्श कच्चा था अथवा नीचे ईंट देकर ऊपर से मिट्टी डाली गई होगी। उसकी एक ओर दो चार तिपाइयां और दो तीन चटाइयां बिछी हुई थी। जँगल की ओर मुंह किये हुए एक ३५ ३६ वर्ष की स्त्री खडी थी, किन्तु जैसे ही चन्द्रनाथ और शिवकुमार लगटू के पीछे पीछे अन्दर आये, वैसे ही उसने बडी तीखी नजर से उनकी ओर देखा।

लगटू ने सीधे से पूछा—'मेहमान कहा है ?'

स्त्री ने झगडालू स्वर मे उत्तर दिया—'चिडियो का शिकार करने गये।'

लगटू—'और लडका कहाँ है ?'

स्त्री—'वह भी साथ ही गया है, जंगले की ओर मुंह करके, 'मैं अभी देख रही थी वह उस—वह दूर—के नाले के पास जा रहे थे, एक बार उन्होंने अपनी छोटी हवाई बन्दूक चलाई भी थी।

शिव बडी उत्सुकता के साथ झट जँगले पर पहुँच गया, और उधर देखने लगा। उसने वहाँ कोई नाला न देख कर पूछा—'कहाँ जा रहे थे ?

स्त्री—'अभी वह दक्षिण की ओर फिर गये है, वह उन झाडियो की आड म छिप गये हैं।'

शिव का चेहरा उदास हो गया, और वह अपने मामा क पास चला गया। चन्द्रनाथ स्त्री की सारी बाता और हरकता का बडे घ्यान से सुन-देख रहे थे।

चन्द्र—'क्या यह तहखाना यहीं नीचे है, लगटू ?'

लगटू—'हाँ ! साहब, नीचे।'

चन्द्र—'मैं नीचे जाना चाहता हूँ।

औरत ने जगला छोड दिया, और झट तहखाने के छोट जीने को रोक कर वह बडे कडाके के साथ बोली—'नही, हरगिज नही। तुम कौन हो जो दूसरे क घर मे इस तरह तलाशी लना चाहते हो ? मेरे घर से तुरन्त बाहर निकल जाओ, नहीं तो मुझे जबदस्ती बाहर निकालना होगा।' उसने यह कहते हुए द्वार की ओर इशारा किया, और आप वही रास्ता रोके जमी रही।

चन्द्र – तुम्हारा पति मुझे यहाँ लाया है। यह उसकी इच्छा पर है, चाहे मुझे पसन्द करे या पुलिस को। मैं समझता हू पुलिस ही यहा ठीक हागी। यह कह कर वे दर्वाजे की ओर लौट पडे।

लगटू न बडी नर्मी से कहा—नही ! महाशय पुलिस नही। आप तहखाना और भी जो कुछ देखना चाहते हैं देख सकते हैं, किन्तु आपने सुना कि वह दोनो ही शिकार खेलने गये है।

चन्द्र—पुलिस ही तहखाने की तलाशी लेगी, क्योकि तुम्हे भलमन्सी पसन्द नही है।'

लगटू—'नहीं— ! नही महाशय ! हट जा सोना ! मुझे इन महाशय को तहखाना दिखाने दे।'

चन्द्रनाथ न कुछ फिर भी इन्कार सा किया, किन्तु इन्हे यह मालूम था, कि पुलिस म इस काम म और भी देरी होगी। साथ ही वह यह भी समझ रह थे, कि लगटू और उसकी औरत दोनो चाल चल रह थे। उन्हे यह भी आशा न थी कि मैं कोई मुकद्दमा उस पर करके सफल हो सकता हूँ। उनका इरादा था, जल्दी से जल्दी नाथन का उद्धार करना। इसीलिये वह लौटकर सीढी की ओर आये।

पहले लगटू उतरा फिर प्रोफेसर और तब शिव। स्त्री ऊपर ही रही। तहखाना बहुत लम्बा चौडा था, जान पडता था, दूसरे कमरा और आगन के नीचे तक था। यहाँ चारो ओर अधेरा ही अधेरा था। धीरे धीरे जब उनको अधेरे का अभ्यास हो गया, तो आस पास कुछ-कुछ दिखाई पडने लगा।

फश पर चूने की गच थी। लेकिन यह कही कही टूटी थी, और एक कोने मे कुछ इटें और पत्थर के टुकडे जमा किये हुए थे। इस ढेर के पास ही एक दर्वाजा था।

चन्द्रनाथ ने इस दर्वाजे को धक्का देकर खोल दिया और तुरन्त ही तहखाने मे प्रकाश की धार वह चली। लेकिन उससे सिफ यही जान पडा कि वह बिल्कुल खाली है। भीतर भी देखा किन्तु वहा भी मेटियो का कही कुछ पता नही।

लगटू—'देखो महाशय, वे यहा नही हैं जैसा कि मेरी स्त्री ने कहा, वे शिकार खेलन के लिये गये है।'

चन्द्र—अच्छा, ता आओ शिव चलें!' यह कह कर वह निकल पडे।

लगटू—'अब मैं दर्वाजा बन्द कर दू महाशय?'

चन्द्र—हा! लेकिन अब तुम्हे हमारे साथ आने की जरूरत नही है, अब तुम अपना काम देखो।'

लगटू—'और मेरे इतने समय की अनुपस्थिति के बारे मे क्या होगा, बाबू?' चन्द्र—उससे तुम्हारी मजदूरी म कोई बाधा नही। देखो, अब दस बजकर पन्द्रह मिनट हुये हैं। यदि तुम डेढ बजे तक काम पर पहुच जाओ तो तम्हे पूरे दिन की मजदूरी मिलेगी—लेकिन एक शत पर।'

लगटू—वह क्या है?'

चन्द्र—'यदि तुम्हारी स्त्री की बात सच्ची साबित हो।'

जसे ही मामा भाजे आगे बढे दवाजा बन्द हो गया और भीतर से कुडा लगान की आवाज सुनाई पडी। वह लोग धीरे से कोट के नीचे की ओर उतर गये। शिव बडा सुस्त था और चन्द्रनाथ विचार मे मग्न थे। दानो ही खूब छेकाये गय।

शिव ने नीरवता भग करत हुए कहा—'आपको इसका विश्वास नही है कि वह जङ्गल की ओर शिकार खेलने गये है।

चन्द्रनाथ—बिल्कुल नही, और इसे हम आसानी से जान सकत हैं। यदि मेटिया और नायन के रङ्ग के कोई दो आदमी इधर से गय होंगे, तो इन किसाना से पता लग बिना न रहगा। वह ऐसे आदमी नही है कि पहचान न जायें। उन्ह देखन मात्र से कौतूहलवश किसान निहारन लगगे।

शिव—बड आश्चय मे हाकर देखने लगेंगे मामा।

चन्द्र—क्या?'

शिव—यदि नायन और आदमियो को देखेगा, तो क्या भेड की भाँति चुपके से मटिया के साथ जायगा। वह भागने, चिल्लान की काशिश करेगा।

चन्द्र—हाँ! वह जरूर करेगा।'

शिव—'बड़ी ऐय्यारी है, मामा ?'

चन्द्र—'इसमे क्या शक ?'

पता लगाने से मालूम हुआ कि वैसा कोई आदमी उधर से नही गया। जो तीन आदमी शिकार के लिये गये भी, वे खलीलपुर के ही प्रसिद्ध वाशिन्दे थे। इसमे भी शक नही कि वह नाले से दक्खिन की ओर घूमे हैं। चन्द्रनाथ ने साफ-साफ सब बातें इसलिये न पूछी कि इससे लोगो को तरह तरह के प्रश्न करने का मौका मिलेगा। यदि जरा भी बात वैसी निकली, तो राई का पहाड बनाना उनके बायें हाथ का खेल होगा। उन्होने अच्छी तरह समझ लिया कि लड्डू और उसकी स्त्री हमे धोखा दे रहे है। हमे बडी सावधानी से कदम आगे रखना चाहिये। नायन कही उनके नजदीक ही है। उसे तुरन्त कही दूसरी जगह चुपके से हटा दिया गया है। लड्डू का पैर धमकाना और दर्वाजा खोलने से पूर्व जंजीर का खटखटाना याद आ गया। अवश्य यह उस स्त्री को सजग करने के लिये था। उसने जाने वाले आदमियो को देखकर झट एक बहाना भी बना लिया। इस सब का तात्पर्य यही था कि जिसमे मामा-भाजे जरा सा वहा से हटे, और उन्हे नायन को किसी सुरक्षित स्थान पर भेजने का अवसर मिल जाय।

उस दिन लड्डू विमानशाला पर न आ सका। अगले दिन शनिवार को बारह बजे वह अपनी तनख्वाह लेने आया। वह पहले दिन के आधे दिन की मजदूरी के विषय मे कुछ न बोला। यह उसका अन्तिम बार काम पर आना था। उसके बाद वह फिर न आया, और उसके ऐसे आदमी की अनुपस्थिति से किसी को कुछ भी अफसोस न हुआ।

चन्द्रनाथ के कथनानुसार कान्स्टेबिल ने लड्डू को गिरफ्तार किया, और पुलिस के दरोगा और कुछ सिपाहियो ने जाकर खलीलपुर में लड्डू के घर के कोने कोने की तलाशी ली, लेकिन वहा कुछ हाथ न लगा। स्त्री ने वही कहानी फिर कह सुनाई, और बताया कि तब से वे दोनो जगल से न लौटे।

अगले बुध को जब अदालत ने बयान लिया तो लड्डू का बयान बहुत सीधा-सादा था। शपथ लेने के बाद उसने कहा—'पिछले बुधवार को गराज में विमान-शाला के काम से छुट्टी पाने पर मैं एक घण्टा दालीबाग में बैठ गया—माली ने भी इसके लिये अपनी गवाही दी, और फिर मैं खलीलपुर को रवाना हुआ। [illegible] उसी मैदान से होकर जाता था, जिसमे कि [illegible] है। मैदान में मैंने दो आदमियो को देखा, जिनमे से एक के हाथ में [illegible] था, और दूसरा [illegible] दोनो मेरी ओर आ रहे थे, और जब वह करीब आ गये तो नायन ने कहा 'वन्देमातरम लड्डू।' मैंने भी उत्तर में कहा—'वन्देमातरम नायन'

कहा—'यह हमारे दोस्त महाशय माफ़ा हैं ।' इसके बाद दोना हसते हँसते बात करते आगे बढे । तब महाशय माफ़ा ने मुझसे कहा कि आप हमारे लिये एक डेरे का इन्तिजाम कर दीजिये । इस पर मैंने कहा कि मेरा अपना ही घर हाजिर है ।'

जब जिरह मे उससे पूछा गया कि तुमने पहले क्यो प्रोफेसर भारद्वाज से कहा कि मैंने बुधवार के बाद ही से नाथन को नही देखा, और फिर क्या कहा कि मैंने आज ही देखा है, वह मेरे घर मे है । इस पर उसने कहा कि नाथन ने मुझे इस बात को गुप्त रखने के लिये कहा था । किन्तु प्रोफेसर ने धमकी देकर उस बात को पूछ निकाला । 'कैसी धमकी ?' कि मैं तुम्हे पुलिस के हवाले कर दूगा । मैं इज्जतदार आदमी हूँ, पुलिस और अदालत के सामने पश होने की परेशानी से बच जाऊँ इसी से मैंने उस गुप्त बात को भी प्रकट कर दिया ।

चन्द्र—तुम्हारे लिए रास्ता खुला हुआ है ।

लड्डू—'वह क्या ?'

चन्द्र—'मुझ पर अन्यायपूवक रोक रखने और झूठा इल्जाम लगाने के लिये अपनी आर्थिक और मानसिक हानि का दावा करो यदि तुम इसे साबित कर सको ।'

लड्डू—'मैं देखूगा ।'

यद्यपि उसकी बात सिफ झूठ पर खडी थी, लेकिन उस झुठाई को सिद्ध करने के लिए वहा कोई मजबूत गवाही न थी । इसीलिए मुकदमे से लड्डू बरी हो गया ।

उसी शाम को जब कि मुकदमे के परिणाम पर प्रोफेसर विचारमग्न थे, और सीता देवी तथा शिव उदास थे नाथन को गुम हुए एक हफ्ता बीत गया था । मोन्ते वाइदो (दक्षिणी अमेरिका) से उन्ह एक तार मिला । सीता देवी ने उसे खोला, और चन्द्रनाथ तथा शिव नजदीक होकर पढने लगे । वहाँ था 'घर को—प्रताप ।'

आधी यात्रा

ऐसे तार की कोई आशा न थी क्योकि प्रतापनारायण ने पहले पत्र मे लिखा था कि मोन्ते वाइदो से 'सौदामिनी फिर होन अन्तरीप की परिक्रमा करके प्रशान्त महासागर पार करेगी और जापान चीन के रास्त लौटना होगा । जहाजी आफिस के एक पोस्टकाड से भी तार का समथन हो गया ।

वह लोग तरह तरह का अनुमान करने लग, किन्तु तार इतना सक्षिप्त था कि उस पर प्रतिना हेतु उदाहरण उपनय निगमन-पूवक कोई ठीक अनुमान करना

असम्भव था। पोस्टकार्ड मे भी विशेष कुछ न था, सिर्फ यही कि 'सौदामिनी' दक्षिणी अमेरिका से भारत आ रही है। तार भेजने के साथ ही तो कप्तान चल भी पडे थे, अत उनका कोई पत्र पाच सप्ताह से पहले आ सकता था और जब पत्र आयेगा, उसी समय वह स्वय भी पहुँचेंगे।

पहले पहल तार के पाने से सब के हृदय मे आनन्द हुआ और तब चन्द्रनाथ के हृदय मे विफलता और लज्जा चोट पहुचाने लगी। यदि नाथन तब तक न लौट आया तो कैसे मैं मुह दिखा सकूगा ? इस भारी प्रमाद के लिये वह क्या कहेंगे ? यह उनकी पवित्र थाती थी जो मुझे सावधानतापूर्वक रखने के लिये दी गई थी। प्रताप मुझे फटकारेंगे। मैं बिल्कुल इसके योग्य हू। किन्तु चाहे जितना भी वह फटकारेंगे, वह आत्म फटकार से अधिक न होगी जो कि इस सारे क्षण म प्रोफेसर के हृदय को आरपार कर रही थी।

उन्होने खलीलपुर मे लड्डू के घर पर चुपके चुपके पहरा बैठा रक्खा, किन्तु उससे कुछ फल न निकला। स्त्री घर पर ही थी और जान पडता था, वहाँ वही अकेली रह गई। लट्टू वही चला गया। पुलिस के हाथ से मुक्त होते ही वह खलील पुर की ओर गया और तभी से गुम है। चन्द्रनाथ के आदमी ने उसको तब से देखा ही नही और न उसे मेटियो और नाथन जैसे किसी आदमी का कोई चिह्न तक खलील पुर म मिला।

चन्द्रनाथ को आशा थी कि लड्डू उन पर शायद अपनी क्षतिपूर्ति के लिये कोई अभियोग कर, जो कि उनके हक म बहुत अच्छा होता, लेकिन लड्डू ने ऐसा कुछ न किया। उसे पूरा डर था कि एक ही बार जो अदालत की आख मे धूल झोक कर मैं छूट आया हू वही बहुत है, आग कही भडा फूट गया तो आफत आई। उसको उसी मे छूटने की आशा न थी और छूटने के बाद उसकी स्त्री ने भी इसे चुपचाप छोड देने की सलाह दी।

अगले पाच सप्ताहो मे चन्द्रनाथ दो बार कराची गये, इन यात्राओ का तात्पर्य था, सेठ इब्राहीम को सब बातो की खबर देना और शिव को घर पर रखने के लिए आफिस से छुट्टी लेना। इस बीच मे विमानशाला भी वायुयान रखने के लिये तैयार हो गई, लेकिन इस विषय का उनका सारा उत्साह नाथन के आभाव मे पट पड गया था। नाथन की खोज म भेजे हुए अपने आदमी को उन्होने हटा दिया, लेकिन समाचार पत्रो मे अब भी विज्ञापन छप रहा था। पर कही से कुछ उत्तर नही आया। उनकी दाढी मारे शोक के बहुत सी सफेद हो गई, उनकी आखें कुछ अधिक गहरी हो गईं मुह का रग पीला हो गया, ललाट की रेखाए भी अधिक गहरी चली। यह पाच सप्ताह उनके लिये पाच युग या पाच कल्प थे।

सठ इब्राहीम ने वहा—'मेरे दोस्त, तुम बड़े चिन्तित हो।'

चन्द्र—'लेकिन मैं इससे बच कैसे सकता हू ?'

सेठ—'तो भी इससे काई लाभ नहीं। मैं भी नाथन के लौट आने के लिये तुम्हार ही लिये इतना उत्सुक हूँ, लेकिन मैं खूब जानता हूँ कि मेटियो नाथन का अनिष्ट न करेगा।'

चन्द्र—'मैं कैसे इस पर विश्वास करू ?'

सेठ—इसी स कि वैसा करन स मटियो का चिरन्तन मनोरथ भग हो जायगा। उसका अभिप्राय किसी तरह उन चीजो का हाथ लगाना है। इसम सन्देह नही कि उनके पता लगान के लिय वह नाथन पर अत्याचार करन से बाज न आयगा। इसम भी सन्देह नही कि वह अपने मनोरथ की सिद्धि क लिय सब कुछ कर सकता है। इसमे मेटियो के कृतज्ञ होने की आवश्यकता नहीं ह। वह नाथन का अत्वहित नही करगा। हम उसके उस लोभ ही स यह आशा है कि वह नाथन को बहुत कष्ट भी न देगा।

चन्द्र—मुझे भी एसी आशा है।'

सेठ—'तुम मेरी बात का सोलहो आन ठीक समझो। सिफ नाथन का कष्ट न देकर सिफ उसी के द्वारा वह ढाल और चम पत्र की आशा कर सकता है। तभी वह उसके लिये लिखा पढी कर सकता है।'

चन्द्र—क्या सचमुच वह लिखा-पढी करगा ?'

सेठ—कप्तान काश्यप को जरा आने दो।

चन्द्र—प्रताप के आने ही से तो मैं और उद्विग्न हो उठा हूँ। यह कहकर उन्होने मह का हाथो स ढाक लिया।

सेठ—'लकिन यह बात मुझे बडी विचित्र मालूम होती है कि तुम अपने परम स्नेही क आगमन पर खिन्नमनस्क हो।

चन्द्र—क्यो ?'

सेठ—क्योकि कोई मनुष्य तुम्हार हृदय का समझ कर समवदना का दावा कर सकता है, तो वह कप्तान काश्यप ही है। तुम झूठ मूठ अपन दिल मे इतना तरददुद उठा रह हो। तुमने अपने मारे भावो का सीता जी पर प्रकट किया कि नही ?

'अभी नहीं' चन्द्रनाथ ने यह उस समय कहा जब कि उन्ह जरा जरा आशा की किरणें दिखलाई देने लगी थी।

सेठ—आप अवश्य उनसे कहे। यदि मै भूल नही करता तो सीता जी साधारण स्त्री नही है। वह आपके इस मानसिक कष्ट के समय बडी सहायक सिद्ध होगी।

जरा देर के बाद चन्द्रनाथ ने ध्यानपूर्वक 'वन्देमातरम' कहा, और बहुत कुछ दिल के बोझ को हल्का करके वहा से विदा हुए।

'सौदामिनी' पर उरुगाय देश का मुलायम ऊन बम्बई के लिये लादा गया था। रास्ते मे रुकने के लिये कोयला पानी छोड़कर और कोइ आवश्यकता न थी, इसीलिए वह बम्बई मे अपेक्षाकृत जल्दी पहुच गइ। और एकाएक जब एक दिन काश्यप भवन मे पहुँच गये ता उन्हे बडा आश्चय हुआ। सीता देवी अपने पति की आवाज सुनते ही बाहर निकल आई और दोनो की नमस्ते हुई। फिर शिव दौड आया और बाल उठा—'आहो ! यह कैसे ? मैन तो समझा था कि अभी— और तब चन्द्र नाथ के उदास मुख का देख कर बीच ही म चुप हो गया।

कप्तान ने चन्द्रनाथ के मुह की ओर देखकर कहा— क्या बात है, क्या तुम बीमार रह हो चन्द्र ? तुम्हारे बाला से ता मालूम हाता है, तुम्हे छोडे मुझे दस वष हा गये है।

चन्द्र—'बीमार नही, किन्तु बडा चिन्तित।'

किसलिये' फिर कप्तान न तीनो के मुख को बारी बारी से दखा। 'नायन कहा है ?' लेकिन अब चन्द्रनाथ के मुख की उदासी उनके चेहरे पर भी प्रतिबिम्बित हो रही थी। वह क्यो नही मेरे पास दौड आया ?'

सीता— आओ, भोजनागार मे चलें, फिर हम सारी कथा सुनावेगे।'

सीताजी न कथा आरम्भ की किन्तु बीच ही मे उसे चन्द्रनाथ ने ले लिया और बीच बीच म शिव भी टिप्पणी करता गया। कप्तान ने बातो को स्पष्ट करने के लिये दा एक प्रश्न किये। सब कथा सुनकर उन्होने कहा—'मुझे अत्यन्त खेद है।'

चन्द्र—'किन्तु मैं खिन्न से भी अधिक—अत्यन्त लज्जित हू प्रताप।

प्रताप— लज्जित ! किसलिए चन्द्र ?'

चन्द्र—'कत्तव्य पालन म असावधानी के लिये।

प्रताप— छि ! तुमसे जो कुछ हो सकता था वह तुमन किया।'

चन्द्र— किन्तु उसका कुछ भी फल न निकला।'

प्रताप— सो तो मुझसे या तुम्हारे स्थान पर होने वाले किसी आदमी से भी हो सकता था। तुम इसके लिए झूठ-मूठ मुझमे आशकित हुए। क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे भाव को नही समझता ? प्रताप ने समझ लिया कि चन्द्र की चिन्ता का कारण सिर्फ नायन का गुम होना ही न था, बल्कि खोजन के प्रयत्न म असफलता और उससे भी बढ कर असावधानी।

प्रताप ने फिर कहा—'इसमे तुम्हारे वश मे और क्या था ? तुम मेटिया की चाला को कैसे पहले से जान सकते थे ? मुझसे तुमने सुना था कि उसे हमने सुदूर

यव द्वीप मे छोडा है। और नाथन, तुम उसे बाध कर नही रख सकते थे, न दिन रात चौबीसो घटे उसके साथ रहना ही सम्भव था। हम उसे जरूर पावेंगे, इसका मुझे पूरा विश्वास है। अपने को दोषी मत ठहराओ चन्द्र, मैं इसमे तुम्हारा जरा भी दोष नही समझता।' उन्होने बडे जोश के साथ कहा—हम अवश्य पावेंगे क्योकि मैं भी कुछ तुम्हे सुनाने जा रहा हू। तुम्ह मेरे तार को पढ कर आश्चय हुआ होगा, कि क्यो म मोते वाइदो से ही लौट पडा, जबकि पहले पत्र मे आग जान को लिख चुका था। इससे और भी निश्चय होता है कि हम अवश्य ही नाथन को पा लेंग। मैंने एक स्वप्न देखा और उसी पर मन आग के प्रस्थान को परिवतन कर सीधा घर का रास्ता लिया।'

तीना ही बडे आश्चय म हो गये, जिसमे चन्द्रनाथ तो और भी अधिक क्योकि वह खूब जानते थे कि प्रताप का ऐसे ऐसे स्थानो पर कैसा विश्वास है। इस ख्याल ने चन्द्रनाथ को और भी चिन्ता के गहरे गडहे म डाल दिया, जिससे कि निकलने के लिये प्रताप प्रयत्न कर रहे थे।

सीता—'स्वप्न ?'

कप्तान ने बहुत शान्तिपूवक कहा—'हा ! नागासाकी (जापान) की यात्रा बिल्कुल ठीक हो गई थी। अगले दिन ही मैं माल लादने वाला था, किन्तु जानत हो तुम उरुगाय के गम प्रदेश मे 'सीस्ता या मध्याह्न शयन कितना प्रचलित है ?—मैं भी उस दोपहार को अपने केबिन मे सो गया था और उसी समय स्वप्न हुआ। सिमियन बिन इज्रा मेरे सामने खडे थे। मुझे उनके देखने मे कोई आश्चय न हुआ। जान पडा उनका वहा होना स्वाभाविक ही है। और इसके बाद क्या हुआ, वही अत्यन्त विचित्र है। वह एक दैवी सन्देश का सा था। कसे भी हो वह वहा खडे थे और उन्होने अपनी करुणापूण दष्टि को मेरी ओर डाला।

मैंने कहा—'आप महाशय सिमियन, यहा ?

उन्होने मुस्कराते हुए कहा—'हाँ ! और आगे का प्रस्थान बन्द होगा।'

मैंने पूछा—किसलिये ?'

सिमियन—'घर पर तुम्हारी इस समय बडी जरूरत है।'

मैं—सचमुच ? किसके लिये ?

सिमियन—'नाथन के लिये।'

इतने ही मे दरवाजे पर धक्का सुनाई दिया और मैं आख मलता उठ खडा हुआ। भडारी ने आकर मुझे सूचित किया कि सौदागर आपको देखना चाहता है और आफिस के कमरे मे बैठा है। मैं वैसे ही वहाँ से उठ कर चला गया, अब भी मेरी

पलकें निद्रा के बोझ से दबी थी। सौदागर ने कहा कि मैं नागासाकी की जगह बम्बई को माल लादना चाहता हू।

'मने जो कुछ स्वप्न मे देखा। उससे तो मुझे वही मान लेना चाहिए था, किन्तु यह मेरे अधिकार से बाहर की बात थी। नागासाकी का बयाना त हो चुका था इसीलिये यह मालिका के अधिकार की बात थी कि यात्रा म परिवतन किया जाय या नहीं। मैंने महाजन स कह दिया कि मैं आपके पक्ष मे हू और यदि आप तार का खच स्वीकार करें तो मैं मालिका से इस विषय म पूछ-ताछ करके ठीक करन का प्रयत्न करता हू। कुछ ही घटो मे सब बात तै हो गई। दूसरे दिन ऊन की गाठें जहाज पर लदना शुरू हुईं और उसी दिन मैंन वह तार तुम्हारे पास भेजा।'

सीता—'यह बडी विचित्र कथा है मेरे प्रियतम!'

कप्तान—'और अभी ही समाप्त नही हुई। मैं यहाँ सिमियन बिन इच्छा द्वारा भेजा गया हू कि नाथन के छुडाने मे मदद करू। मुझे इसका अथ नही मालूम हाता, तुम कह सकत हो चद्र?'

चद्र—'नही? जैसा कि तुमने कहा अभी यह समाप्त नही हुई, इससे मुझे बडा सहारा मिला है प्रताप!'

शिव—हम सभी को?

और सहारा इतनी जल्दी आया कि जिसकी उन्ह उम्मीद भी न थी।'

सायकाल को कप्तान काश्यप कुछ काम से कराची गये और दूसरे दिन दोपहर को फिर घर लौट आये।

सायकाल की डाक से एक रजिस्ट्री चिट्ठी उन्ह मिली। जिस पर शिकारपुर की मुहर थी। पता लिखन मे अक्षरो की बडी अशुद्धि तथा लिखावट बडी फूहड थी। मुहरवाली लाख काली हो गई थी, जान पडता था मोमबत्ती के ऊपर उसे उस वक्त पिघलाया गया था जब कि वह अधिक धुआ दे रही थी। लाख भी बहुत अधिक और अधिक स्थाना पर चिपकाई गई थी, और कडे अँगूठे से दबाई गई थी। जब कप्तान अपने कमरे मे बैठे थे, उसी समय गङ्गा चिट्ठी और पीली रसीद को उनके पास लाई।

कप्तान न हस्ताक्षर करके रसीद तो लौटा दी और चाकू के फल से लिफाफे को खोला। उन्होने बहुत जल्दी-जल्दी सारे पत्र को पढ डाला और फिर उसे दुहरा कर पढा और अन्त मे आवश मे आकर वह कुर्सी से उठ खडे हुए।

दर्वाजा खोलते हुये वह चिल्ला उठे—चद्र!'

हाँ! और तुरत ही चद्रनाथ बाहर निकल आये।

कप्तान—'दरवाजा बन्द कर दो और इसे पढो, अभी ही मैंने इसे पाया है।'

चन्द्रनाथ ने हिचकते हुए अगूठे और तजनी के बीच म दबा कर चिट्ठी ले ली क्योकि उसमे तम्बाकू की ग ध आ रही थी—और पढा—

कप्तान का पसतूमको यह खबर देने को लिखते है हम सुने कि तुम सक्कर में हो इसे रजिस्टरी से भेजते हैं जिससे जरूर मीले हम तुमको सिकारपूर को वखत देना चाहते हैं नथन दरसाना भले है हम आज रात मे ऊसे तुमका देंगे अगर दा चीज हमे तुम दो एस चमडे के थैला म कुछ और दुसर गोल चागा जेसा जीसकू समीन दरसाना ने नाव से जहाज पर तुमको दीया हम उलूवा वन मे रहग जा तुम जानत हा सक्कर से खलीलपूर जान की सडक पर पडता है तुम केले १४ कि रात म पोन वारा वजे मैंल वाले पाथर से पच्चीम सो हुथ पर आओ साथ कीसिकू म्त लावो चीज लाना ओ हम नाथन का लावगे खियाल से भूलो मत रात पौन वारा।

कप्तान की तरह ही प्रासफेर भी पहिली वार की पढाई मे पत्र के केवल साराश को समझ सके थे। उन्हान दूसरी वार ध्यानपूवक उसे पढा। उनकी आखें चमक उठी। वह बराबर उस पर सोच रहे थ। चेहरे के रग क्षण क्षण के परिवतन से कप्तान उनके हार्दिक भाव का अनुमान कर रहे थे।

जब प्रोफेसर न पढकर पत्र को वापस दे दिया तो कप्तान के व्यग स कहा—'यह एक बहुमूल्य पत्र है, चन्द्र!'

लेकिन प्रोफेसर के उत्तर के व्यग का नाम न था। उन्होने कहा—'यह इसके परिणाम पर निभर है। सेठ इब्राहीम का अनुमान बिल्कुल ठीक निकला। उन्होने यह बात पहले ही कही थी। उन्होने कहा था कि मेटियो चाहे तो कप्तान से या मुझ से पत्र व्यवहार करेगा।'

कप्तान—अब वह दो है।'

'लगटू और मेटियो। यह' और चन्द्रनाथ न पत्र की ओर इशारा किया 'लगटू की कारस्तानी है। तुम्हे वह मिलेंगे प्रताप?

कप्तान—'जरूर।'

चन्द्र—'किन्तु अकेले नही।'

कप्तान— लेकिन देखने मे जैसा अकेला ही-सा मालूम हो।'

चन्द्र—तुम्हारा क्या इरादा है?'

कप्तान—'पहले मैं थाने मे जाता हू और दरोगा स कहता हू कि नौ बजे से पहले चार कान्स्टेबिलो को उलुवा जगल मे खूब अच्छी तरह जाकर छिप जाने के लिये कह दें। मैं बता दूगा कि मील के पत्थर से थोडा-सा आगे बढ कर दाहिनी ओर

रह। तुम चन्द्र पत्थर से इधर ही झाडी मे छिप रहना और शिव—मैं चाहता हू वह इस बात को जाने और इस काम में हाथ बटावे—तुमसे कुछ और पश्चिमी झाडी और तलाई के बीच मे रहे।'

चन्द्र—किस समय ?'

कप्तान—'साढे नौ बजे से पहले नही या उसी समय जब कि कान्स्टेबिल। उस वक्त अंधेरा भी खूब रहेगा। चन्द्रमा उस दिन सवा ग्यारह बजे तक न उदय होंगे। मैं बारह बजे के कुछ मिनट के बाद एक पुलिन्दा हाथ मे लेकर निश्चित स्थान पर उन्हे मिलने जाऊँगा।'

चन्द्र— हाँ ? यह तो बहुत ठीक है लेकिन—'

कप्तान—तुम देख रहे हो न चन्द्र, मुझे छोड कर और सभी को मेटियो और लगटू के आने से पूर्व ही वहाँ छिपा रहना होगा। मैं जब उनसे झगडने लग पडूं तो तुम लोग समझ लेना कि अब प्रकट होने का अवसर है। हमे उनके सभी नाके बन्द रखने होंगे, जिससे वह कहीं से न भाग सकें।'

चन्द्र—'मैं तुम्हारी बात मानता हू लेकिन—'

कप्तान—'सबको साँस बन्द कर चुपचाप पडा रहना होगा जरा-सी भी आहट हुई कि सारा काम बिगड जायगा। क्योंकि वह सभी बातो को बडी सदिग्ध दृष्टि से देखेंगे। मेरे पास देने के लिए चीज तो रहेगी नही फिर वह नाथन को लौटा लेना चाहेंगे और उस समय मुझे झगडने का मौका मिलेगा और फिर तुम लोग चारो ओर से कूद पडना।'

चन्द्र—लेकिन तुम्हे पहले शिकारपुर जाना और जितनी जल्दी हो सके वहा से लौट आना चाहिए।'

कप्तान—'शिकारपुर ! लौटने की कोई ट्रेन नही है। और यह सारा प्रबन्ध कैसे होगा ?'

चन्द्र—मेटियो ने इस बात को सोच लिया है। उनकी धूर्तता पर ख्याल करो ! और सब प्रबन्ध मेरे ऊपर छोडो। मेटियो ने आज की रात निश्चित की है और उसने या लगटू ने इसके लिए पत्र में लिखा है कि तुम्हे शिकारपुर के लिये अवसर देने हैं वह शायद समझते है कि ढाल और चम पत्र शिकारपुर ही मे कहीं जमा है। उन्होंने जान बूझ कर बहुत थोडा समय तुम्हे दिया है जिसमे तुम कुछ और प्रबंध न कर सको। यदि तुम शिकारपुर न जाओगे प्रताप तो आज रात को वह तुमसे उलुवा बन मे मिलने ही न आवेंगे।'

कप्तान—क्यो ?

चन्द्र—'क्योंकि मेटियो और लगटू शिकारपुर में बराबर तुम्हारी ताक में रहेंगे। तुम न देख सकोगे और वह तुम्हें देख लेंगे और यदि उन्होंने तुम्हें जाते न देखा तो समझ लो वह कभी तुमसे मिलने के लिये निर्दिष्ट स्थान में न आयेंगे।'

कप्तान— लेकिन वह फिर यहाँ कैसे पहुँचेंगे, धाई ट्रेन तो है ही नहीं ?'

चन्द्र— इनके लिये और उपाय हैं। मटियो ने इसके बारे में सब सोच रक्खा है। वह ट्रेन से दूर ही रहना चाहता है और तुमको भी चाहिये कि उसे दिखाओ कि तुम उसके हाथ की कठपुतली की तरह काम कर रहे हो। तुम रेल से तो सीधे शिकारपुर जाओ। और फिर वहाँ से सीधे चेलाराम की कोठी में चले जाना, वहाँ भीतर ही कुछ कागजों को कपडे-लपडे में लपेट कर दो उसी तरह के बना लेना और फिर एक मोटर टैक्सी सक्खर के लिये भाडे पर करके सीधे यहाँ चले आना। टैक्सी बल्कि पहले ही कर लेना और यदि न मिल सके तो स्वयं चेलाराम की मोटर ले लेना, वह बडी खुशी से तुम्हें दे देंगे। अपने आने जाने को जरा भी छिपाने का प्रयत्न न करना। अपने ऊपर पडती हुई नजरों का जरा भी ख्याल न रखना। इस तरह तुम नौ बजे से पहले यहां चले आओगे।

थोडी देर के सोच विचार के बाद कप्तान ने कहा— मैं जरूर जाऊँगा और बाकी प्रबन्ध तुम्हारे ऊपर।

चमकती आखों और प्रकाशमान मुख से चन्द्र ने कहा—'हाँ! वह सब मैं ठीक कर रक्खूंगा। तुम निश्चिन्त रहो।'

दोनों आदमी उसी समय दो तरफ रवाना हुए और साढे आठ बजे—अनुमान से आधा घंटा पहले ही दोनों आदमी फिर मिले। टेक्सी ड्राइवर को निश्चित भाडे के अतिरिक्त इनाम भी देकर विदा कर दिया गया।

कप्तान ने पूछा— सब ठीक है न चन्द्र ?'

चन्द्र— बिल्कुल ठीक।'

कप्तान— सिपाही वहां मौजूद रहेंगे न ?'

चन्द्र—'पांच सिपाही।'

कप्तान—'और तुम और शिव मिलकर सात और मैं आठवां। हम उन दोनों का रगड धरेंगे कि।'

चन्द्र—'तुमने उन्हें देखा ?'

कप्तान— नहीं! मैंने तुम्हारी सम्मति के अनुसार अपने को खूब उन्हें देखने का अवसर दिया।'

भोजनागार से शिव चिल्लाया— ब्याल तैयार!'

था। मेटियो को गिरफ्तार करके मुकदमा चला, जेल में भेज देना आवश्यक था। नौ बजने म अब दो-चार मिनटो ही की देरी थी, इसलिए पुलिस उसके स्थान पर पहुँचना चाहती थी।

वह थोडी देर तक भोजनागार म बैठे प्रतीक्षा करते रहे फिर सीता देवी नाथन के हाथ को पकडे वहाँ पहुची।

कप्तान काश्यप ने बडे कोमल स्वर मे कहा—'नाथन मेरे बेटे, हम इस समय यह नही जानना चाहते कि तुम कैसे यहाँ पहुच आये, यह तुम फिर कहना, लेकिन हमे यह जानना बहुत जरूरी है कि मेटियो और लगटू को तुम्हारे भागने की खबर है ?'

नाथन—'अभी नही।'

कप्तान—'तुम शिकारपुर से आये—?'

नाथन—'नही ! खलीलपुर से।'

कप्तान—'बस इतना ही हमको चाहिये था, हम इस वक्त तुम्ह और तकलीफ न देंगे।'

सीता देवी ने मातृ वात्सल्य से प्रेरित हो, गम्भीरता से कहा—'मैं इस समय और कुछ कहने सुनने को तुम्ह अनुमति भी नही दे सकती ! अभी देखते नही हो, बेटे का मुह कैसा सूख गया है। आ बेटा चल।' और वह नाथन को लेकर अपने कमरे मे चली गइ।

भोजन तुरन्त परसा गया और चन्द्रनाथ और शिव ने बहुत जल्दी-जल्दी खाना खतम किया, क्योकि साढे नौ बजे तक अपनी जगह पर उलुवा वन मे पहुच जाना था। कप्तान पीछे रह गय। नाथन को अब गम जल से स्नान और फिर मुलायम बिस्तरा अपेक्षित था क्योकि यद्यपि वह भोजन कर चुका था, किन्तु शरीर का मैलापन और हद दर्जे की थकावट इसके लिये मजबूर कर रही थी। कप्तान के घर से निकलने के समय वह सब कुछ भूल कर गम्भीर निद्रा म मग्न था।

बारह बजने मे पाँच मिनट की देर थी जब कि कप्तान उलुवा वन के किनारे पर पहुचे। रात्रि का आकाश बिल्कुल स्वच्छ था, नीले आकाश के छोटे छोटे श्वेत पुष्प चारो ओर बिखरे हुए थे चन्द्रदेव ऊँचे पर आरूढ होकर बडे वैभव क साथ अपनी छटा को चारो ओर फैला रहे थे। हवा निस्तब्ध थी एक पत्ती भी न हिलती थी, उनके अपन पैरो की आहट स्पष्ट उनके कानो मे आ रही थी।

मील वाले पत्थर से होकर पच्छिम तरफ बहुत आगे बढ गये लेकिन अब भी उन आखो को न देख सके जो झाडियो की आड से उन्ह टकटकी लगाकर देख रही थी। इसी समय उन्ह उल्लू की आवाज जो असल मे नकल थी सुनाई दी। सुनने के

साथ ही वह खड़े हो गये। उसी समय झाडी के अन्दर से एक आदमी प्रकाशमान् चाँदनी म निकल आया।

उन्होंने देखा कि वह मेटियो न था। वह मेटियो से अधिक लम्बा और मोटा था। उसकी गदन जरा आग को थकी हुई थी। कप्तान ने लगटू को कभी न देखा लेकिन उन्होने अनुमान कर लिया कि यह वही है।

अब वह फिर आगे बढे—क्योकि आदमी चुपचाप अपनी जगह खडा था और जब बहुत नजदीक पहुच गये तो बोले—'मेटियो कहाँ है ?'

लगटू—'मेटियो ? आपका मतलब माफ्रा स है।'

कप्तान—हा। माफ्रा।'

उसने वडे वडे स्वर म कहा—'तुम्ह उसके लिये चिल्लाने की आवश्यकता नही है। याद रक्खो, तुम यहा 'पुल पर नही हा लगटू के कहने का ढग इतना बुरा था कि कप्तान का मन उसे धक्का देकर जमीन पर गिरा देने का हुआ 'माफ्रा यहा कप्तान है और मुझे द्वितीय अफसर समझो ?'

लगटू के मह से निकलन वाली शराब की गध उस वन के स्वच्छ शीतल वायु को कलुषित कर रही थी। कप्तान ने देखा कि मुझे एक ऐसे आदमी से मुकाबिला करना है जिसे मेटियो ने जान बूझ कर शराब पिला मतवाला कर रक्खा है। लेकिन मेटियो कहा है। वह उसी से मिलन के लिये आये थे इस शराबी उल्लू से नही। कप्तान का धय धीरे धीरे टूटने लगा। उन्होने दृढतापूवक कहा—'नही ! म नही समझता ! लेकिन यहा उसकी कोई जरूरत नही। मैं तुमसे कुछ नही कहुगा मुझे माफ्रा से मिलना है।'

लगटू—'वाह ! आप जरूर मिलेंगे ? लेकिन मामला वेढब है कप्तान, तुम्हे मुझसे ही निपटना होगा।' हा, तो वह—वह कहा है, ची—ज।'

कप्तान—लडना कहा है ?' वह बडे धैर्यपूवक मेटियो के देखने की इच्छा से हसते हुए कह रह थे।

लगटू—दरसना ? ओहो ! ठीक वह सुरक्षित जगह पर है तुम उस चीज को पहले दा और मै उसे तुम्हारे हवाले करता हू।'

'कप्तान—कब ?'

लगटू—कल।'

कप्तान—'इधर सुनो, लगटू।'

लगटू न हाथ आगे की आर तान कर कहा—'दत्त ! कौन कहता है कि मैं

था। मेटियो को गिरफ्तार करके मुकदमा चला, जेल मे भेज देना आवश्यक था। नौ बजने मे अब दो चार मिनटो ही की देरी थी, इसलिए पुलिस उसके स्थान पर पहुँचना चाहती थी।

वह थोडी देर तक भोजनागार मे बैठे प्रतीक्षा करते रहे फिर सीता देवी नाथन के हाथ को पकडे वहाँ पहुची।

कप्तान काश्यप ने बडे कोमल स्वर म कहा—'नाथन मेरे बेटे, हम इस समय यह नही जानना चाहते कि तुम कैसे यहाँ पहुच आये, यह तुम फिर कहना, लेकिन हम यह जानना बहुत जरूरी है कि मेटियो और लगटू को तुम्हारे भागने की खबर है?'

नाथन—'अभी नही।'

कप्तान—'तुम शिकारपुर से आये—?'

नाथन—'नही! खलीलपुर से।'

कप्तान—बस इतना ही हमको चाहिये था, हम इस वक्त तुम्ह और तकलीफ न देंगे।'

सीता देवी ने मातृ वात्सल्य से प्रेरित हो, गम्भीरता से कहा—'मैं इस समय और कुछ कहने सुनने को तुम्ह अनुमति भी नही दे सकती! अभी देखते नही हो, बेटे का मुह कैसा सूख गया है। आ बेटा चल।' और वह नाथन को लेकर अपने कमरे मे चली गईं।

भोजन तुरन्त परसा गया और चन्द्रनाथ और शिव ने बहुत जल्दी-जल्दी खाना खतम किया, क्योकि साढे नौ बजे तक अपनी जगह पर उलुवा बन मे पहुच जाना था। कप्तान पीछे रह गये। नाथन को अब गम जल से स्नान और फिर मुलायम बिस्तरा अपेक्षित था क्योकि यद्यपि वह भोजन कर चुका था, किन्तु शरीर का मैलापन और हद दर्जे की थकावट इसके लिये मजबूर कर रही थी। कप्तान के घर से निकलने के समय वह सब-कुछ भूल कर गम्भीर निद्रा मे मग्न था।

बारह बजने म पाच मिनट की देर थी जब कि कप्तान उलुवा बन के किनारे पर पहुचे। रात्रि का आकाश बिल्कुल स्वच्छ था, नीले आकाश के छोटे छोटे श्वेत पुष्प चारो ओर बिखरे हुए थे चन्द्रदेव ऊँचे पर आरूढ होकर बडे वैभव के साथ अपनी छटा को चारो ओर फैला रहे थे। हवा निस्तब्ध थी एक पत्ती भी न हिलती थी, उनके अपने पैरो की आहट स्पष्ट उनके कानो मे आ रही थी।

मील वाले पत्थर से होकर पश्चिम तरफ बहुत आगे बढ गये लेकिन अब भी उन आखो को न देख सके जो झाडियो की आड से उन्ह टकटकी लगाकर देख रही थी। इसी समय उन्हे उल्लू की आवाज जो असल मे नकल थी सुनाई दी। सुनने के

साथ ही वह खड़े हो गये। उसी समय झाड़ी के अन्दर से एक आदमी प्रकाशमान् चाँदनी में निकल आया।

उन्होंने देखा कि वह मेटियो न था। वह मेटियो से अधिक लम्बा और मोटा था। उसकी गर्दन जरा आगे को झुकी हुई थी। कप्तान ने लगटू को कभी न देखा लेकिन उन्होंने अनुमान कर लिया कि यह वही है।

अब वह फिर आगे बढ़े—क्योंकि आदमी चुपचाप अपनी जगह खड़ा था और जब बहुत नजदीक पहुँच गये तो बोले—'मेटियो कहाँ है ?'

लगटू—'मेटियो ? आपका मतलब माफ़ो से है।'

कप्तान—'हाँ। माफ़ो।'

उसने बड़े कड़े स्वर में कहा—'तुम्हें उसके लिये चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। याद रक्खो, तुम यहाँ 'पुन' पर नहीं हो, लगटू के कहने का ढंग इतना बुरा था कि कप्तान का मन उसे धक्का देकर जमीन पर गिरा देने का हुआ 'माफ़ो यहाँ कप्तान है और मुझे द्वितीय अफसर समझो ?'

लगटू के मुँह से निकलने वाली शराब की गंध उस वन के स्वच्छ शीतल वायु को कलुषित कर रही थी। कप्तान ने देखा कि मुझे एक ऐसे आदमी से मुकाबिला करना है, जिसे मेटियो ने जान बूझ कर शराब पिला मतवाला कर रक्खा है। लेकिन मेटियो कहाँ है। वह उसी से मिलने के लिये आये थे, इस शराबी उल्लू से नहीं। कप्तान का धैर्य धीरे धीरे टूटने लगा। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा—'नहीं ! मैं नहीं समझता ! लेकिन यहाँ उसकी कोई जरूरत नहीं। मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगा, मुझे माफ़ो से मिलना है।'

लगटू—'वाह ! आप जरूर मिलेंगे ? लेकिन मामला बेढब है कप्तान, तुम्हें मुझसे ही निबटना होगा।' हाँ, तो वह—वह कहाँ है, चीज।'

कप्तान—'लड़ना कहाँ है ?' वह बड़े धैर्यपूर्वक मेटियो के देखने की इच्छा से हँसते हुए कह रहे थे।

लगटू—'दरसना ? ओहो ! ठीक वह सुरक्षित जगह पर है, तुम उस चीज को पहले दो और मैं उसे तुम्हारे हवाले करता हूँ।'

'कप्तान—'कब ?'

लगटू—'कल।'

कप्तान—'इधर सुनो लगटू।'

लगटू ने हाथ आगे की ओर तान कर कहा—'दत्त् ! कौन कहता है कि मैं

स—लगटू हूँ । और मैं हू भी, तो भी तुम्हारे इस तरह जोर से बोलने से यहाँ कोई फायदा नहीं—नहीं होगा । मैं तुम्हें जि—बिल्कुल मना करता हूँ ।'

कप्तान ने और भी ऊँचे स्वर से कहना शुरू किया—'मैं तुमसे बिल्कुल बात करना नहीं चाहता, मेरा काम मोसा से है । 'यह कह कर वह उस ढेले पर आगे बढ़े ।

तभी उल्लू की आवाज 'हू हू हू । फिर उस निस्तब्ध रात्रि में सुनाई पड़ी । लगटू मुड़ कर उसके पीछे झपटा, जैसे ही कप्तान अगली झाड़ी के पास पहुंच, रिवाल्वर की स्पष्ट आवाज सुनाई पड़ी और गोली भनभनी हुई उनके कान के पास निकल गई । वह उससे बाल-बाल बच गये । इसी समय वन में आदमियों का हल्ला और दौड़-धूप सुनाई देने लगी । चन्द्रनाथ कूद कर दौड़ते हुए कप्तान की ओर दौड़े । शिव आड़ से निकल कर तलाई के किनारे किनारे आगे दौड़ा । पहिली आवाज के स्थान से आगे जाकर एक और आवाज सुनाई दी और साथ ही आदमी के कराह कर गिर पड़ने की आवाज भी आई ।'

जैसे ही शिव आगे दौड़ रहा था उसी समय एक मूर्ति घबरा लगने के डर से पहले तो बगल हो गई और जरा ही देर में भय के मारे आँख मूद कर आगे दौड़ी। *शिव ने पहचान लिया कि यह लगटू है और वह लौट कर उसे पकड़ने के लिए दौड़ा।* लगटू सड़क की ओर जाना चाहता था, लेकिन शिव ने आगे से बढ़ कर घेर लिया, जरा ही आगे दौड़ा था कि वह तलाई में जा पड़ा ।

वह कीचड़ में फँस गया । वह निकलना चाहता था लेकिन नीचे के कीचड़ ने उसे इतने जोर से पकड़ लिया था, जितना कि शिव भी नहीं पकड़ सकता था । जहाँ वह एक पैर ऊपर उठाना चाहता था, वहा दूसरा और नीचे जाने लगता था । उसने उठने के लिये बहुत हाथ पर मारा, लेकिन सब निष्फल । पानी बहुत ज्यादा न था, वह तो सिर्फ घुटठी ही भर था, लेकिन कीचड़ ज्यादा गहरा था, यद्यपि अब उसका पैर दृढ़ भूमि पर टिका था, लेकिन छाती से ऊपर का भाग ही उसका ऊपर बच रहा था ।

शिव का अब सिर्फ उस पर निगाह रखने का काम था । उसके पीछे की ललकार पैरों का धबधबाना भी अब बन्द हो गया । उसने ही रिवाल्वर की एक तीसरी आवाज भी सुनी किन्तु कोई भी न आया ।

'शिव ।

अपने पिता की आवाज को सुन कर उसे बड़ा ही आनन्द आया । दूसरी रिवाल्वर की आवाज के साथ की कराहट को सुन कर उसका हृदय बड़ा शंकित हो

गया था। उसको यह देख कर अपार खुशी हुई कि उसके पिता को काई चोट नही आई।

उसने उत्तर दिया—'हाँ।'

कप्तान—'तुम अच्छी तरह हो न ?

शिव—'बिल्कुल अच्छी तरह और मैंने उस पूरा घेर रक्खा है।

'फ सा रक्खा है। लगटू बडबडा उठा।

अब आग जल्दी-जल्दी बढत हुए कप्तान न पूछा—दोनो म स किसका ?

शिव—बढई का।

कप्तान न बडे निराशाजनक स्वर मे कहा—'मैंने तो समझा था मेटियो ह।'

शिव—'आपने उसे नही पकडा बाबू जी ?

कप्तान—नही। मैंने, बल्कि पुलिस वाला न भी उसे भागत सुना। वह जगल के बीच स खिसक गया।'

शिव—'साप की तरह सरक गया।'

कप्तान—हा! साप की तरह और सिर्फ एक बार शिर पीछे की ओर फरा, यह उस समय जब कि एक सिपाही उसको पकडना ही चाहता था।'

शिव—'सिपाही पर बाबू जी ?

कप्तान—'हा! सिपाही की जाघ म उसन गाली मारी।'

शिव—'और पहली आवाज ?'

कप्तान—उससे तो मैं बाल बाल बचा।'

शिव—उसने आप पर गोली चलाई थी।'

कप्तान—हा, झाडी की आड से जस ही मै उसके पास पहुचा। आर तब वह भीतर की ओर भागा और सिपाही उसके पास पहुच गया जिस पर उसन फिर गाली चलाई।'

शिव—और चन्द्रा मामा कहा ह ?'

कप्तान—घायल सिपाही के पास।

शिव—आर दूसरे ?

कप्तान—मटियो की तलाश मे। लेकिन मुझे विश्वास है कि यह व्यर्थ का और खतरनाक प्रयास ह। सारे वन को छान डालन के लिए यहा पर्याप्त आदमी नहीं ह। सूर्योदय से पूर्व ही वह यहाँ स निकल जायगा और किसी ऐसी जगह जा छिपेगा। जहा उसका मिलना असम्भव है। फिर जैसे ही उसे मौका मिलेगा वह देश से बाहर निकल जायगा।'

शिव—'वर्रा ?'

कप्तान—'इसी दूसरे फैर से। उसने घायल पुलिस मैन की कराहट जरूर सुनी होगी। घाव खतरनाक है या नहीं, इस बात का पता पाने का तो उसे मौका न था, लेकिन उसे यह स्पष्ट मालूम होगा कि जब सरकारी नौकर को चोट लगी है तो मेरा यहाँ रह कर बच रहना असम्भव है।'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद शिव ने कहा—'मुझे उम्मीद है कि वह उसे पकड़ लेंगे। यह बहुत अच्छा होगा, किन्तु यदि ऐसा न भी हुआ तो भी अब उससे पिण्ड छूटा। नाथन के लिये भी यह अच्छी बात होगी।'

कप्तान—'शायद। मैं तो उस समय पकड़ सकता था, क्योंकि मुझे अच्छी तरह मालूम हो रहा था कि वह कहाँ है। मैं उसे उसी तरह देख रहा था जैसे इस समय हम लङ्गटू को देख रहे हैं।

लगटू अब अपनी अवस्था से अधीर हो चला था, उसके शरीर में अब सर्दी भी लगने लगी थी। वह अपने पैरों को हिला नहीं सकता था। वह बीच ही में अधीर होकर बड़े विनम्र स्वर में बोल उठा—'आप मुझे बाहर न निकालेंगे?'

कप्तान—'कांसटेबिल निकालेंगे?'

लगटू—'मैं बड़ा रोगी आदमी हूँ, जरा भी और ठहरा कि गठिया मेरी जान लेकर छोड़ेगी। दया करके मुझे बाहर निकालिये।'

कप्तान ने बगल से एक सूखी लम्बी सी लकड़ी उठा ली और उसे आगे बढ़ाया—'जोर से इसे पकड़ो।' फिर उन्होंने खींच कर उसे दृढ़ भूमि पर किया। जरा ही देर में वह कीचड़ और पानी से बाहर सूखी जमीन पर चला आया। जिस वक्त वह कदम आगे बढ़ाना चाहता था उसी समय कप्तान ने कहा—'बस। आगे नहीं।'

लगटू—'लेकिन गठिया मेरे लिये काल है कप्तान साहब।'

कप्तान—'नहीं! तुम्हारी मृत्यु इस प्रकार आसानी से नहीं हो सकती। तुम लगटू, यहाँ हमारे साथ चुपचाप खड़े रहो जब तक कि सिपाही नहीं आते।'

लगटू—'मैं तुमको ठीक जगह पर ले चलूँगा! कप्तान साहब—'

कप्तान—'बस रहने दो, तुम्हारी भलमनसाहत देख ली है।

लगटू—'नहीं! अब की जरूर। मैं आपको उसी जगह ले चलूँगा जहाँ नाथन है और मैं तुम्हें उसे दे दूँगा। मैं आपसे कुछ नहीं चाहता फिर मुझे छोड़ दीजियेगा, जब मैं नाथन को तुम्हारे हाथ में दे दूँ।'

कप्तान—'और यह कुछ है ही नहीं? तुमको छोड़ देना यह भारी भूल होगी? बस! तुम चुप रहो बातों की जरूरत नहीं!'

'लेकिन—नाथन— और लङ्गटू ने चाहा कि कप्तान को डिगा दें।

'नाथन के लिये भी मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता,' कप्तान ने बड़ी कड़ाई से उत्तर दिया, जिस पर लङ्गटू निराश हो गया।

लङ्गटू—'ओफ! माफ़ा ने मुझे धोखा दिया।

कप्तान—'वह कैसे तुम्हें धोखा दे सकता था, लङ्गटू, यदि तुम स्वयं न उसके हाथ का खिलाना बनना चाहते। तुम खूब जान रहे थे कि उसका हृदय और मतलब बहुत खराब था। लो यह सिपाही भी आ गये।

लगटू के हाथ में हथकड़ी पड़ गई और वह दो सिपाहियों के बीच में सक्खर की ओर चला। दो सिपाहियों ने घायल सिपाही को उठा लिया। दरोगा साहब घर में सोये थे, लेकिन खबर पाते ही वह थाने में चले आये। घाव के मामूली होने का निश्चय होते ही कप्तान, प्रोफ़ेसर और शिव घर को लौट आये।

सीता देवी बड़े शंकित हृदय से उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। नाथन अब भी सोया ही था, वह जरा सा कुनमुनाया भी नहीं। उन्होंने सीता से सारी घटना कह सुनाई। सीता ने भी मटियों के भाग जाने के लिये अफसोस जाहिर किया और आशा प्रकट की वह अवश्य गिरफ्तार होकर अपने किये का फल पायेगा।

जब वह लोग सबेरे नाश्ता के लिए बैठे, तो नाथन वहां न था। अब भी वह निद्रा देवी की गोद में खर्राटे ले रहा था। सीता देवी का सख्त हुक्म था कि कोई उससे कुछ न कहे। वह बराबर सोता ही रहा, जसे ही उसने आठ खोली घंटी बजने लगी। उसने मन ही मन गिना—एक, दो तीन।

'कदापि नहीं!' जोर से कह कर वह उठ बैठा। चारों ओर दिन का पूरा प्रकाश था और पश्चिम ओर के झुके हुए सूर्य की धूप एक रोशनदान से कमरे में आ रही थी।

नहीं ठीक है,' कह कर शिव ने कमरे के बाहर से उसे विश्वास दिलाया। उसने नाथन का अभिप्राय ठीक समझ लिया।

'भीतर आओ' नाथन ने कहा, और हँसते हुए शिव ने जब अन्दर कदम रक्खा तो उसने कहा—'शिव, तुमने क्यों नहीं मुझे जगाया?

शिव—'मुझे साहस न हुआ, और यदि होता भी तो अम्मा वहाँ क्षमा करने देती। लेकिन—नाथन—पूरे सोलह घंटे। मुझे तो मालूम होता था तुम आधुनिक कुम्भकर्ण होने की तैयारी में हो। सचमुच यह उचित भी है, क्योंकि आधुनिक भीम, आधुनिक अर्जुन सभी देखे गये, लेकिन आधुनिक कुम्भकर्ण अब तक कहीं नहीं सुनाई पड़े थे।'

नाथन—'रावण का छोटा भैया ? ठीक ! तब तो तुम्हे भी आधुनिक कुछ बनना पडेगा ।'

शिव—'मुझे बडी खुशी हुई, भला तुम्हारा मुह तो खुला ।'

नाथन—'ओह ! मुझे अपने को यहां देख कर बडा आनन्द आ रहा है। यदि मैं वहा जागता, यह काप उठा । लेकिन शुक्र है जो वह भीषण स्वप्न बीत गया । और मैं निश्चिन्त हो तुम्हारे कहन के अनुसार पूरे सोलह घटे सोया । मुझे ठीक नही मालूम मैं किस समय लेटा था ।'

शिव—'साढे दस बजे अम्मा ने बताया । इस प्रकार मैंने बल्कि आध घण्टा तुम्हारे लिए छोड भी दिया, और साबित घण्टो ही को गिना ।'

नाथन—'मेरे लिए फिर तो यह सोलह सेकड मे बहुत कुछ हो गया ।'

शिव—'और तिस पर भी तुम्हारे इस सोलह सेकड मे बहुत-कुछ हो गया ।'

नाथन—'सच ! क्या ?

शिव—अभी ठहरो नाथ, मैं जरा दौड कर अम्मा से कह आऊँ कि कुम्भकर्ण भैया जाग गया है । सोलह सेकड से उसन कुछ नही खाया उसकी पट पूजा का जल्दी इतजाम होना चाहिये। और तुम उठ कर जरा मुह हाथ धोकर ठीक हो जाओ । फिर उधर तुम खाने लगा, और इधर मैं तुम्हे सारा महाभारत सुनाता हूँ ।'

शिव ने बडे विस्तारपूर्वक रात की सारी घटना शुरु की । नाथन न बडे एकात मन स सबको सुना और जब सारी कथा समाप्त हो गई तो उसन रात की घटना का कारण पूछा । जिस पर शिव ने गुम होने की शाम से लेकर सारी ही बातें वह सुनाईं, खोजन के लिए कसे कैसे प्रयत्न हुए, कैसे कप्तान काश्यप घर पर आये, इत्यादि ।

सारी कथा मे नाथन क ऊपर उतना प्रभाव किसी बात ने न डाला जितना कि स्वप्न मे सिमियन बिन इस्त्रा का दिखाई देना । अपने आवेश का छिपाने के लिए नाथन ने अपना मुह सामने से जरा फेर लिया ।

अभी जब वह बातो म ही मशगूल थे कप्तान और प्रोफेसर आ गय । वह थाने म घायल सिपाही को देखने गये थ ।

गगा न जलपान करने के लिए कहा और जब सब लोग एकत्रित हुए तब वह नाथन की बात सुनने के लिए उत्सुक हो उठे।

चन्द्रनाथ न उदघाटन करते हुए कहा—'अच्छा नाथन तुम शाम को विमान शाला म गये।

नाथन—'हाँ। जलपान करन के बहुत देर बाद करीब छ बजे मैं वह देखना चाहता था कि छत यहाँ तक तैयार हो चुकी। यद्यपि बाहर अभी प्रकाश था लेकिन अधकार हो चला था। मैं अच्छी तरह देख न सकता था। शायद मैं वहाँ एक घटा रहा हूँगा। अब लौटने का विचार कर रहा था, उसी समय जिस कोने म अधिक अधकार था वहाँ किसी को हिलते देखा।'

मैंने पूछा—'कौन।'

लड्डू—'मैं।'

मैं—'तुम वहाँ क्या कर रहे हो?'

लगटू—मैं लौट आया, तारपीन की शीशी के लिए, मैं उसे यही भूल गया था। जानते है न, मुझे गठिया बहुत तकलीफ देती है। लेकिन वह मिल नहीं रही है।'

इस पर मैं उसके पास उसकी सहायता के लिए चला गया। मैंने उसस कहा कि यहाँ अधकार बहुत है, रोशनी की जरूरत है। उसने कहा, मैं टटोलकर ढूँढ़ लूगा।

मैंने कहा—यही तुम्हारा ठीहा है? उसने हाँ कहा और मैं भी झुककर टटोलने लगा।

'अकस्मात मुझे मालूम हुआ कि तारपीन से भिन्न किसी दूसरी चीज की मीठी लेकिन अरुचिकर गध आ रही है। उसी समय लगटू न मेरे मुह और नाक पर एक भीगा हुआ लत्ता रख कर मुझे जमीन पर दबा लिया। मैंने बहुत हाथ पैर मारे लेकिन बेसूद। मैंने चिल्लाना चाहा लेकिन गध न मुझे बेबस कर दिया। उसके बाद मैं अचेत हो गया, और कई घटा तक जहाँ तक मुझे स्मरण आता है होश म नहीं आया।

चन्द्रनाथ—बाबाराम।

नाथन—'जब मुझे होश हुआ, तो लगा कि मैं गुफा जैसे म हूँ। लेकिन चारों ओर अधेरा था और हाथ पैर रस्सी-डोरा की सहायता से नहीं। मुझे मालूम न हुई। अब भी मेरी मानसिक घबराहट हटी न थी। मैं जमीन पर पड़ा था और मेरी पीठ

पर एक वृक्ष था जिसके सहारे मैं एक रस्से से बँधा हुआ था। मैंने वहाँ आस-पास और भी वृक्ष देखे जान पड़ा कोई वन है। मैंने समझा लगटू पकड़ कर मुझे यहाँ लाया है।'

चन्द्रनाथ--'उलुवा वन।'

नाथन--'हाँ! उलुवा वन। कमजोरी और अँधेरे के कारण कुछ न देख सकने पर मैंने अपने पास उल्लू की आवाज सुनी फिर मैंने देखा कि यह मेटिया था, जो अपने दोनों हाथों को मिला कर दोनों अँगूठों के बीच में मुँह से सीटी बजा रहा था। उसने मेरी ओर देख कर व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसी लगटू ने, जो कि उसके पास ही बैठा था मेरे मुँह की ओर झुक कर पूछा मैं कैसा हूँ। मैंने कुछ उत्तर न दिया।'

हम चलना चाहिये।' यह लगटू ने मुझसे नहीं, बल्कि मेटियो से कहा, और मेटिया ने फिर एक बार सीटी बजाई जो कि ठीक उल्लू की तरह थी।

'फिर लगटू झुक कर मेरे मुँह की ओर देखते हुए बोला--क्या तुम चल सकते हो? मैंने फिर कुछ उत्तर न दिया, लेकिन मेरे चेहरे से उसने मेरी कमजोरी अवश्य जान ली होगी।'

'मेटिया ने एक हाथ गर्दन में और दूसरा काँख में लगा कर मुझे खड़ा कर दिया, किन्तु जैसे ही उसने अपना हाथ हटाया, मैं फिर गिर गया! मेरी नसों और हाथ-पैरों में अपने को सँभाल रखने की ताकत न थी। मुझे मालूम हुआ कि मैं फिर कहीं ले जाया जा रहा हूँ। उस समय जान पड़ता है फिर कुछ देर के लिए मैं अचेत हो गया था। क्योंकि पहली बात जो मुझे जान पड़ी वह मुँह पर ठंडी-ठंडी हवा थी। उन्होंने मेरे मुँह पर थोड़ा पानी छिड़का।'

लगटू ने कहा--हमें इसे ढाकर ले चलना पड़ेगा।

मेटियो--और कितनी दूर?'

लगटू--'करीब तीन या चार मील--सड़क के रास्ते नहीं खेतों के रास्ते से, वहीं सुरक्षित होगा। गाँव के बाहर कोट के नीचे मेरी स्त्री भी हाथ बँटाने के लिए तैयार मिलेगी।

चन्द्रनाथ--'इस प्रकार वह तुम्हें खलीलपुर ले गये।

नाथन--अधिकतर लगटू ही मुझे ले गया, मेटियो बीच बीच में उसे जरा सा सहारा दे देता था। मैं इस प्रकार एक चहारदीवारी पर बैठाया गया और फिर उस पर से मुझे किसी ने उतारा। मुझे ख्याल है उस वक्त मैं कुछ ऊपर चढ़ रहा था। वहाँ की हवा अधिक स्वच्छ थी। जहाँ तहाँ एकाध चिराग जलते दिखाई पड़ते थे। उसी समय एक औरत आई वह लगटू की स्त्री थी, उसने मेटियो को छुड़ा दिया, ` के बीच में अपने को डाल कर वह आगे ले चली। कुछ सीढ़ियाँ उतर कर

मैं एक आगन मे पहुँचाया गया ।' स्त्री ने एक दवाजा खोला और फिर में एक छोटी कोठरी मे पहुँचाया गया ।

'एक धुधला-सा चिराग जलाया गया । हवा बहुत खराब थी । मैं वहा चुपचाप बठा । मुझसे किसी ने कुछ न कहा । तब उस स्त्री ने कुछ रोटिया और तरकारी पकाई । जब खाना तयार हो गया, तो उसने थाली मे परस कर उसे मेरे सामने ला रक्खा । लकिन मने सिर हिला कर खाने से इन्कार कर दिया । मेरी तबियत और मुह का स्वाद इतना खराब था कि खाने की ओर नजर उठा कर देखने की भी मेरी तबियत न थी ।'

'फिर उसन उन दोनो से पूछा—'इसे कहा रक्खा जायेगा ?

लगटू ने भारी आवाज मे कहा—तहखाने मे ।'

मेटिया—बडे दर्वाजे बन्द है न ?' और उसने मेरी ओर घूर कर देखा ।

इस पर औरत ने कहा—हम सदा उन्ह बन्द रखते है, और इससे डरने की आवश्यकता भी नही । इसमे भागने की ताकत नही मैं इसे नीचे ले जाऊँ ?

लगटू ने रोटी भरे हुए मुह से जल्दी मे कहा—इसी वक्त ।'

फिर वह मुझे थाम कर नीचे के तहखाने मे ले गई । चारो ओर घना अन्धकार था हवा बहुत दूषित थी और साथ ही सर्दी अधिक थी । वह मुझे तहखान के सबसे पिछल भाग पर पहुँचा आई ।

मैंने अपने कोट के बटन लगा लिये और नगे फर्श पर लेट गया । मैं उनकी बातचीत सुन रहा था । लेकिन लगटू का छोड कर बाकी दोनो की बात का एक शब्द भी न समझ सकता था, क्योकि वह बहुत धीरे धीरे बात कर रहे थे । मैं सामने की ओर उस दर्वाजे को देख रहा था, जिसके विषय मे मेटिया ने पूछा था । उसकी दरारो से तारे टिमटिमाते दिखलाई पड रहे थे ।

यहा कुछ पहिले से अच्छा मालूम होता था । वायु भी यहा की कुछ स्वच्छ थी । और थोडी ही देर मे मैं सो गया । उस समय मैंने एक भयकर स्वप्न देखा । मैं एक अतल गड्ढे मे गिर रहा हूँ । बराबर गिरता ही जा रहा हूँ । मेरे ऊपर मेटिया का भयानक हँसी हँसता क्रूर मुख है । मेरी नीद बीच मे जरा खुल गई-सी मालूम हुई, लेकिन फिर मै निद्रित हो गया और फिर वही भयानक स्वप्न—उसी अतल गड्ढे मे गिर रहा हूँ और ऊपर वही वीभत्स मुख । फिर स्वप्न खतम हो गया और मैं शान्त सो गया । जब मेरी नीद खुली तो मेटियो को अपनी बगल मे सोता पाया ।

वह एक दम सो गया और इस तरह सोया था कि मेरे जरा भी हिलने से जाग उठता । उसका सिर मेरे सिर के बगल मे ही था, इसीलिए उस अधकार मे मैं उसे पहिचान सका । मैं चुपचाप उषा के इन्तजार मे वही पडा रहा ।

प्रभात होते ही लङ्गटू और उसने हम दोनो के चेहरे की ओर देखा, फिर धीरे से बिना कुछ बोले ही वह लौट गया ।

मेटियो जगा और मुझे लेकर ऊपर कमर मे गया । दिन भर हम वही रह । खाना बनाने खिलाने का काम वही औरत करती रही । मेटियो शायद ही कभी मुझसे बोलता था । लेकिन उसी स्त्री ने कई बार मुझे बात म लगाना चाहा । मुझे बिलकुल इच्छा न थी । मेरा मस्तिष्क भागने की कल्पना मे लग्न था । मटिया न मेरी जेबा को टटाला और उनम जा था निकाल लिया । सायकाल के आते ही फिर मुझे उसी तहखान मे ले गया । तह खाने के एक कोने म कुछ इट और कुछ पत्थर रक्खे हुए थे ।'

चन्द्र—'वही शिव जिन्ह हमने देखा था ।

नाथन— मेटियो उनम से छ बडे-बडे पत्थर वहाँ ले गया, जहाँ रात को हम सोये थे । उसने मेरी कमर मे रस्सा बाँध कर उसके दोनो छोरो पर दो पत्थर बाँध दिया । दो को मेरी बधी हुई कलाई मे खूब कस कर बाँध लिया और बाकी दो पैरो मे ।'

शिव— तुमने उससे झगडा न किया नाथ ?'

नाथन— उसने अचानक ही मुझे पकड लिया और दूसरे मैं अत्यन्त निबल भी था । मैंने बहुत उछल-कूद की जिससे मैं और भी निबल हो गया । और अन्त मे मुझे चुप हो जाना पडा । उस रात को मैं बहुत कम सोया ।'

सीता देवी ने बडे करुणापूर्ण स्वर मे कहा—'कैसे नीद आती बेटा राक्षस ने इतना जकड के बाध कर जमीन पर गिरा दिया था ।'

नाथन—'जब वह लौट कर आया तो उसने रस्सी को कुछ ढीला कर दिया लेकिन तो भी मैं सुख से न सो सका । पिछली रात की तरह ही वह फिर मेरे पास सो गया । मैं जगा हुआ था और निश्चल भाव से दरवाजे की फाको की ओर देख रहा था । मेरे दिल मे यही ख्याल था कि इन्ही के द्वारा मैं अपनी मुक्ति पा सकूगा ।

'लगटू दूसरे दिन सवेरे फिर आया और मेटियो उससे मिलने के लिए उठा । वह मुझमे कुछ दूर हट गये, जिसमे मै उनकी बात को न सुन सकूँ और दरवाजे की बगल वाले उस ढेर के पास जा बात करने लगे । लङ्गटू जब चला गया तो मेटियो मेरे पास आया और हाथो के बधन को उसने मजबूत कर दिया लेकिन कमर वाले का खोल दिया, फिर वह ऊपर वाली कोठरी म चला गया । मैने कोशिश की कि हाथ के बधन खोल दूं लेकिन रस्सी टस से मस न होती थी । अन्त म मैंने दात से खोलना चाहा आधा ढीला मैं कर चुका था और शायद मैं खोल भी सकता यद्यपि कई जगह चमडा छिल गया था लेकिन इसी समय वह स्त्री खाना लेकर मेरे पास आइ । उसने मेरा हाथ खोल दिया, जिससे मैं खाना खा सकू ।

'करीब एक घंटे के बाद वह फिर लौटकर आई, लेकिन बतन ले जाते समय हाथों को बाधना भूल गई या जान बूझ कर उसने खुला छोड दिया। मेरा हृदय आशा से भर गया। बस अब चन्द मिनटों का आवश्यकता थी, फिर मेरे पैर भी खुल जाते। फिर मुझे दरवाजे के पीछे जोर से कसा हुआ डंडा निकालने की देर थी। जरा सा उसे हटा कर जहा दरवाजे म सिर जाने भर की फाक कर पाया कि बस कैदखाने से बाहर। फिर तो जान छोड कर भागने की ताकत मैं न जाने कहा से पैदा कर लेता। और जिस किसी से भी मिलता, उसी से मेटियो से अपनी रक्षा के विषय म कहता।

'लेकिन हाय! जिस वक्त मैं अपने पैरों को अभी खोलने ही लगा था, उसी समय मेल्यिा दौडा हुआ आया। वह चुपचाप दबे पांव चीते की तरह आया। उसने मुझे दबा दिया और मेरे मुह मे कपडा ठूस दिया, फिर वहा से ईंटो-पत्थरो के ढेर के पास ले गया। वह दो बार दौड दौड कर उन छहो पत्थरो को लेने के लिये गया। उसने उन्हे बहुत धीरे से जिसमे जरा भी शब्द न हो उसी ढेर पर रख दिया। फिर उसने अपनी सारी शक्ति लगा कर एक पटरे को उठाया। यह पटरा उस ढेर के नीचे ही था। उसने उसे इतना ही उठाया जिसमे नीचे वाले गडढे मे मुझे ढकेल सके। उसने पहले मुझे ढकेल दिया और फिर आप भी मेरे ऊपर आ पडा, फिर उसने दोनो हाथो से मेरे मुह को दबा रक्खा। मुझे इसका कुछ मतलब न मालूम हुआ। पहले तो मैंने समझा था कि वह मुझे हमेशा के लिए इस गडढे में समाधिस्थ करना चाहता है—मुझे वही मार डालना चाहता है।'

शिव ने बडे आश्चर्य से कहा—'ओह! जब मैं और मामा वहा गये थे, तो तुम वही थे?'

नाथन—'हा! जब मेटियो ने मुझे गड्ढे मे ढकेला न था, तभी मैंने ऊपर के कमरे मे आवाज और पैर की आहट होते सुना था। मैंने चिल्लाने का प्रयत्न किया, लेकिन मेरे मुह मे कपडा ठूसा हुआ था और मैं बोल न सकता था। जब मुझे नीचे गिरा कर मेटियो भी मेरे ऊपर आ गया, तो मुझे जान पडा कि वह मुझे मारना नही चाहता बल्कि चुप रखना चाहता है। मैं डरा न था स्वप्न ने इससे कही अधिक मुझे भयभीत किया था, लेकिन मैं बेबस था। मैंने फिर चिल्लाने और उसे धक्का देकर हटाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसने मेरे कान मे कहा कि यदि मैं जरा भी हिला, तो फिर मेरा होश-हवास गुम कर दिया जायगा। उसने एक हाथ मेरे मुंह से हटा कर मेरे गले मे लगाया।

शिव—मामा! हम बिल्कुल करीब थे।'

चन्द्र—'लगटू का पैर धमकाना और कुण्डे का खटकाना सजग करने ही के

के लिये था। औरऔरत रास्ता रोक कर खडी हो गई थी, क्यो? यदिहम लोगउसी वक्त सीधे तहखाने म चले गये होते, तो बहुत अच्छा होता यदि तहखाने मे बाहर की ओर से पहुचे हाते। लेकिन हमे घर की स्थिति न मालूम थी। हम लोग लगटू के हाथ में थे और इतनी देर मे मेटिया को सब बन्दोवस्त कर लेने का मौका मिल गया। मैंने इटा पत्थरा की ढेरी को देखा, लेकिन यह ख्याल न आया कि उसके नीचे गड्हा है।'

शिव—'और मुझे भी ख्याल न आया। तुमने हमारी आवाज सुनी थी नाथ?'

नाथन— मैने पैरा की आहट सुनी और मैने यह भी सुना कि लगटू किसी के विषय मे शिकार खेलने गये कहता था। मने दरवाजे के खुलने की आवाज को भी सुना तथा अस्पष्ट रूप से मामा की आवाज को भी। लेकिन क्या करता मैं बिल्कुल असमर्थ था, और—और मने देखा कि मेरी आख से आसू बह रहा है।'

सीता ने उसके कापते हाथ को अपने हाथो मे लेकर कहा—इसमे लज्जित होने कोई बात नही है मेरे लाल। आश्चर्य तब होता यदि वैसा न होता।

कप्तान काश्यप ने पूछा—'और तब नाथ?

नाथन ने सभल कर फिर कहना शुरू किया—'फिर लगटू ने पत्थरा को हटा दिया कितनी देर बाद? उसका मुझे पता नही, और हम ऊपर वाले कमरे मे गये, जहा कि वह औरत थी। उन्होने मेरे मुह से कपडे को निकाला, जिसे मेटियो ने बडे जोर से ठूस दिया था। स्त्री रस्सी खोल रही थी, लेकिन मेटियो ने रोक दिया। मुझे जान पडा कि वह मुझसे अलग होकर परिस्थिति पर कुछ विचार करना चाहते है। औरत ने बताया कि इसे बन्द करने के लिए पीछे वाला झोपडा अच्छा होगा। झोपडा हाल ही मे बना था। उन्होने पहले खूब ताक झाक कर देख लिया और फिर मेरे हाथ-पैर बाध कर वहा ले गये। मैं दिन भर वही रहा। औरत मेरे लिये दो बार खाना को लाई।

'जैसे ही अँधेरा हुआ, वैसे ही मेटियो आया और उसने मेरे बन्धना का खोला लगटू तथा वह मुझे वहा से बस्ती के बाहर ले चले। थोडी दूर जाकर एक खडहर मे हम थम गये और लगटू आगे गया। थोडी देर बाद लौट कर उसने कहा, रास्ता साफ है। फिर हम प्राय रात भर चलते रहे। हमारा चलना अधिकतर पगडन्डी रास्ते से होता था। मैं थक कर अधमरा हो गया था, लेकिन वह मुझे आगे चलने के लिए बाध्य कर रहे थे। मैं स्वप्न मे चल रहा था, एक तरह की बीमारी मुझे घेर हुए थी। मेरा मस्तिष्क इतना अस्थिर हो चला था कि मैं किसी एक बात को लेकर एक मिनट भी न सोच सकता था। जरा ही देर म मेरा शरीर आग मे झुलसने लगता था और फिर तुरन्त ही पाला पडता-सा मालूम होता था। मुझे अत्यन्त क्षीण-सा स्मरण आता

है, कि मैंने नाव पर होकर एक नदी पार किया था। फिर कितनी ही सीढिया उन्होन ढकेल कर मुझसे पार कराया। मैंने लगटू को एक आदमी से कहते सुना 'शराबी!' फिर एक छोटी-सी कोठरी मे वह मुझे ले गये, उसमे बडा क्षीण सा प्रकाश था।

'उसके बाद के चार हफ्ता की बात मुझे बहुत कम याद है। मेटियो मेर साथ था। लेकिन लगटू की उपस्थिति का मुझे ख्याल नहीं, वह अधिकतर यहा न दिखाई पडता था। मुझे बडे जोर का बुखार लगा रहता था और अधिकतर मै बेहोश और सन्निपात मे रहता था। मेटियो मेरे साथ क्रूरता का व्यवहार न करता था। वह मरी सारी आवश्यक्ताओ को पूरा करता था। लेकिन उसकी परछाइ देख मेरा हृदय घृणा से भर जाता था। वह बहुधा उस पर्दे की आड मे छिपा रहता था जिसने कमरे को दो भागा मे विभक्त किया था।

मालूम होता है उसने किसी डाक्टर को भी बुलाया था, क्योकि मुझे जरा-जरा स्मरण आता है, एक अपरिचित किन्तु भद्र पुरुष था। उसने मेरी ओर बडे गौर से देखा और फिर मेटियो ने दवाई का गिलास मेरे मुह मे लगाया। मैने शायद उस व्यक्ति से कुछ कहा भी था, शायद यही कि मैं यहा नही रहना चाहता, मुझे घर भेज दीजिये। लेकिन उस अवस्था मे मेरी बात पर विश्वास ही कौन करता।

'जब मेरा ज्वर उतर गया तो मैने देखा—'मै एक खाट पर लेटा हू। पर्दे के उस पार चटाई बिछी है जिस पर मेटियो सोता है। जब मुझे थाडी ताकत आई तो मेटियो मुझसे प्रश्न करने लगा।'

कप्तान—'ढाल और चम पत्र के बारे मे ?'

नायन—'हा! कि वह कहा है ? मै इसके विषय मे कुछ उत्तर न दे सकता था। उसको मालूम था कि 'सौदामिनी' बहुत दूर है। उसने मुझसे कहा कि वह दो-तीन मास के भीतर नही लौट सकती, और तब तक तुम्हे यही रहना होगा। उसने भागने के प्रयत्न के लिय मुझे मार डालने की धमकी दी। लेकिन मैने उनकी जरा भी पर्वाह न की।

'जब वह कही जाता तो दरवाने म ताला मार जाता था और मुझे वैसा मौका न मिलता था। परसो वह बडा घबडाया सा लौटा, उसके साथ लगटू भी था। दोनो मुझे वहा से ले चले।'

———

भी इसमे कप्तान की राय से सहमत थी कि वह अब भारत से निकल जाने का प्रयत्न करेगा। लेकिन मटियो साधारण धून न था, सारी खोज अन्त मे व्यर्थ सिद्ध हुई। जिस दिन से वह उलुवा वन से खिसका फिर कही उसका पता न लगा।

सेठ इब्राहीम को बराबर सूचना भेजी जाती थी। और लगटू की सजा के बाद कप्तान, चन्द्रनाथ, शिव और नायन सभी कराँची गये। कप्तान की कम्पनी के पास *सौदामिनी और शिव के सम्बन्ध मे कुछ काम था। अगली यात्रा के बाद* उनकी इच्छा थी कि 'सौदामिनी' से छुट्टी लें, क्योंकि नायन की उन्नीसवीं वर्षगाँठ का समय अब होगा। अमानत इतनी पवित्र थी कि उन्होने उचित न समझा कि उसे चन्द्रनाथ पर टाल दें। वह समझ रहे थे कि इस सारे समय मे शिव का नायन के साथ रहना बहुत लाभदायक होगा। इसलिये अभी आफिस मे उसे मुस्तकिल (स्थायी) न होने देने का भी प्रबन्ध करना था।

वस्तुत शिव का मन जितना विमान के ओडन-बगान मे लगा था, उतना जहाजी आफिस की क्लर्की मे नहीं। जब वह लोग कराँची मे थे तभी एक दिन चन्द्रनाथ दोनो लडको को लिये वायुयान के कारखाने मे गये। 'दर्शना' के तैयार होने मे अब थोडी कसर थी। चन्द्रनाथ ने कलकारो को जल्दी करने आदि के बारे मे कुछ न कहा। इसका कारण सिर्फ यही न था कि वह चाहते थे कि धीरे धीरे सब काम बहुत ठीक बनावें बल्कि यह भी था जो नायन के गुम होने की परेशानी से उनके हृदय पर पडा था। उसकी क्षीण छाया उनके हृदय पर अब भी मौजूद था।

नायन लौट आया। उसका मानसिक सन्ताप भी दूर हो गया। धीरे धीरे फिर वही दिलचस्पी नवीन हो चली। लडके मशीन को देख कर बडे खुश हुये। उन्होंने उसमे जरा भी दोष न देखा। चन्द्रनाथ अभी उसकी कुछ भी तारीफ न करते थे। वह उसके परीक्षा पर निर्भर समझते थे। तो भी रचना के लिये उन्होंने अपना सन्तोष प्रकट किया।

सेठ जी ने [illegible] का भोजन करा के लिये अपने घर पर निमन्त्रण दिया था। भोजन के बाद नायन और शिव को अकेले छोड कर तीनों आदमी दूसरे कमरे मे चले गये।

सेठ जी ने पूछा—"[illegible] साहब अब भी आपके काम की है कप्तान?"

कप्तान—"अभी दो सप्ताह की छुट्टी मे है, लेकिन सौभाग्य से [illegible] 'सौदामिनी' के लिए उसकी सेवायें प्राप्त हो गई है। वह सारी यात्रा मे भी [illegible] साथ रहेंगे।"

[illegible]—"सौदामिनी के [illegible] पर?"

कप्तान—'हाँ! चीफ इजीनियर के तौर पर।'

सेठ—'सौभाग्य से किसके—उसके या कम्पनी के?'

कप्तान—'कम्पनी और 'सौदामिनी' के सौभाग्य से। और महाशय इसहाक?—वह चीफ इजीनियर से भी कुछ और बढ कर निकले।'

सेठ—'आप उससे सतुष्ट है?'

कप्तान—'बिल्कुल।

सेठ—'इस चार वष के सहवास से आपको वह कैसा मालम हुआ?'

कप्तान एक क्षण के लिये कुछ साचने लगे फिर बडी दढता के साथ बोल उठे—'एक सुशिक्षित और सज्जन पुरुष, जिसने भाग्यक्रम से अपने गौरव को खो दिया था, और पीछे फिर प्रयत्न करके उसे प्राप्त किया हो, तथा उसे कायम रखने के याग्य हुआ हो।'

सेठ—'और यह गौरव फिर से प्राप्त हुआ किसकी कृपा से?'

कप्तान— अपनी कठिन साधना से और इसके बाद यदि किसी ने सहायता की, तो वह सैयद रहमान थे, जिन्होन सच्चे शुभचितक और मित्र का काम किया।

चन्द्र—'और तुम्हारा भी प्रताप।

कप्तान—सैयद साहब की अपेक्षा मैंने बहुत ही कम किया है।'

थोडी देर सोचने के बाद सेठ जी न गम्भीरता के साथ कहा—यह प्रश्न मैंने केवल कौतूहलाक्रान्त होकर ही नही किये हैं। महाशय भारद्वाज ने इसहाक का नाम मुझसे कहा था। म सुनने के साथ ही स्तम्भित हो गया, और उस समय मुझे कुछ और पूछने की इच्छा न हुई। मैं उसके लिये आपसे कुछ प्रार्थना करना चाहता हूँ कप्तान!'

कप्तान—'इसके लिय मैं अपने को बडा भाग्यशाली समझूगा, सेठ जी।'

सेठ—'इसहाक की छुट्टी के खतम होने से पहले आप एक बार अवश्य आइये, और साथ ही उसे भी लेते आइये। वह आने मे शायद अनाकानी करेगा, लेकिन आप उसे अवश्य लाइयेगा।' सेठ जी की यह प्रार्थना इतनी करुणाभरी थी कि दोनो श्रोता भी उससे प्रभावित हुए बिना न रहे।

कप्तान—'वह आपको पहचानते हैं?'

सेठ जी को अपने सँभालने म बहुत प्रयास करना पडा उनके नेत्र अश्रुपूर्ण थे, और गला भर आया था। उन्होंने कम्पित स्वर से कहा—वह मेरी बहिन का लडका है—एक मात्र बहिन का एक मात्र लडका। कई वर्ष बीत गये, तब से मैंने उसे नही देखा, मेरा चित्त उसके देखने के लिये अधीर हो रहा है।'

कप्तान—'तो आप उसे लिखते क्यों नहीं।'

सेठ—'इसके कई कारण हैं। उसकी मां मुझे बराबर पत्र लिखती रहती है, और कितनी ही बार देखा देखी भी होती है, लेकिन उसने कभी इसहाक का जिक्र मुझसे न किया। उसने भी नहीं बताया कि वह कहां है, क्या करता है। मैं इससे अनुमान करता हूँ कि यह इसहाक की सलाह ही से हुआ है। उसने शायद उससे कहा होगा कि तब तक मेरा जिक्र न करो, जब तक मैं ठीक न हो जाऊँ—पूर्व सम्मान न प्राप्त कर लूं। उसका नाम उस दिन अकस्मात प्रोफेसर भारद्वाज से बात करने में आ गया था। आप मेरी चिट्ठी से बढ़ कर सब बात उसे समझा सकते हैं, कप्तान।

कप्तान—'मैं जरूर उनसे कहूँगा, और पकड़ लाऊँगा।'

'यही मेरी प्रार्थना थी, और यदि, सेठ को इस समय अपने हृदय के आवेश को दबाने में बड़ी जद्दोजहद करनी पड़ी, उनका गला रुक-सा गया, आप इसमें सफल हुये, तो आप अपने चीफ इन्जीनियर को खो बैठेंगे।

कप्तान ने हँसते हुये कहा—मैं बड़ा खुश होऊँगा इस खोने से, क्योंकि इसका अर्थ उनके लिये अधिक का पाना होगा।

सेठ ने सोचते हुये कहा—'मैंने एक बात ठीक की है, इसहाक उसके लिए बहुत उपयुक्त सिद्ध होगा। और वह उसे पसंद भी करेगा। लेकिन अभी इसमें उसकी मुलाकात तक के लिये छोड़ देता हूँ। फिर लड़कों की ओर ख्याल कर, 'मैंने लड़कों पर बड़ा अन्याय किया, जो उनका ख्याल न किया। अब मुझे आप लोगों की सहायता से उनका मनोरंजन करना है, महाशयो।'

इसके तीन दिन बाद एक दिन तीसरे पहर कप्तान काश्यप और चीफ इंजीनियर इसहाक बैंक मनेजर के कमरे में प्रविष्ट हुये। सेठ इब्राहीम जो अपनी कुर्सी पर बैठे थे, एकाएक अपने भांजे को सामने देख कर एक क्षण के लिये जरा स्तब्ध-से हो गये। और फिर अपने दोनों हाथों को आगे फैलाये हुये उधर दौड़े।

'इसहाक!' वह चिल्ला उठे, और उनके स्वर से उनका हार्दिक आनन्द प्रतिध्वनित हो रहा था। उस स्वर और दृष्टि में सिर्फ आनन्द ही न था, बल्कि कुछ और भी था, जिसने भांजे के हृदय को हिला दिया, और उसके नेत्रों से आँसू टप टप गिरने लगे।

'मामा!' उसने बड़े कम्पित और करुण स्वर से उस समय कहा जब कि मामा ने उसे अपनी छाती से लगा लिया था।

कप्तान काश्यप चुपचाप वहाँ से हट आये। दोनों इतने आत्मविस्मृत हो गये थे कि उन्हें इसका कुछ भी पता न लगा। बैंक का बाहरी दर्वाजा बन्द था, और उसमें

ताला लगा हुआ, और खजाची और क्लर्क आज के रेकर्ड ठीक करने म लगे हुये थे। खजाची ने कप्तान को आते देखकर जिज्ञासा की दृष्टि से देखा।

कप्तान ने मुस्कराते तथा कमरे की ओर इशारा करते हुये कहा—'मैंने दोनों को अकेले छोड दिया, यह ठीक भी है।'

खजाची—'और आप उनकी प्रतीक्षा भी करेंगे कप्तान साहब ?'

कप्तान—'जरूर, यदि वह मुझे न भूल जायें।

खजाची—आप कुर्सी पर बैठ जाइये। यदि मैं गल्ती नहीं करता तो वह महाशय इसहाक थे न ?'

कप्तान—आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है।'

खजाची—'बडा परिवर्तन हो गया है। पहले से अधिक लम्बे, हृष्ट पुष्ट मालूम होते है। कई वर्षो से मैंने उन्हे न देखा था। फिर वह अपने हिसाब में लग गये।

करीब आध घंटे तक कप्तान चुपचाप वहा बैठे कागज पर कलमो की कुर-कुराहट को सुनते, और पन्नो के उलटने को देखते रहे, बगल के कमरे म बातचीत की अस्पष्ट धीमी धीमी आवाज भी आ रही थी। कप्तान का ख्याल होने लगा कि वह मुझे भूल तो नही गये। इसी समय दर्वाजे की किल्ली खटकी और सेठ इब्राहीम बहुत-बहुत क्षमा प्रार्थना करते बाहर निकल आये।

माफ कीजियेगा कप्तान साहब चिरकाल के बाद आज इसहाक को देखा, और बात म हम इतने तन्मय हो गये थे कि हमने आपका ख्याल न किया। आप कोई दूसरे नही हैं। आइये चले।' यह कह कर वह कप्तान का हाथ पकड कर भीतर ले गये।

कुर्सी पर बैठते हुए सेठ जी ने कहा—आखिर वही बात हुई न कप्तान साहब, आपने अपने इजीनियर को खो दिया।'

इसहाक—अभी अगली यात्रा तक नही, इसके लिये मैं कप्तान काश्यप को वचन दे चुका हूँ।'

कप्तान—और तब हम दोनो 'सौदामिनी' को एक साथ ही छोडेंगे।'

सेठ—'और मैं भी उसमे पहले बाध्य नही करता।'

इसहाक—आप ?'

कप्तान—'अगली यात्रा के बाद मुझे अपने कर्त्तव्य के नियत स्थल पर रहना होगा। उन्होने सेठ की ओर अभिज्ञानसूचक दृष्टि डाली, 'सब प्रबन्ध ठीक हो रहा है। पाँच बजे मुझे जहाजी आफिस मे कुछ काम है। उसके बाद मैं फिर आपसे मिल सकता हूँ, सेठ जी ?'

सेठ—'कोई हर्ज नही। आज रात को आपको मेरे साथ भोजन करना होगा —आप और इसहाक दोनो को।' घडी देख कर 'क्या यह अच्छा न होगा कि जब तक मैं आफिस का काम ठीक करता हूँ, तब तक आप दोनो ही जहाजी आफिस का काम भुगता कर घर पर आवे।

कप्तान—'कोई हर्ज नही, सिर्फ यही है कि आधी रात वाली डाक से मुझे घर अवश्य जाना है।'

जब दोनो आदमी जहाजी आफिस से बाहर निकले, तो उसी समय द्वार पर उनकी एक भीतर जाते हुये आदमी से मुलाकात हुई। उसने झट कप्तान से हाथ मिलाया और बडे आश्चर्य के साथ उनके साथी की ओर देखा। उसने बडे प्रफुल्लित मुख से कहा—'अपार आनन्द, जिसकी न उम्मीद थी कप्तान।'

कप्तान काश्यप—'और मुझे भी अत्यन्त प्रसन्नता हुई, कप्तान राम नन्दन सहाय तुम्हारे इस अकाल जलदोदय से। मैने सुना है कि अब तुमने 'कदम्ब' का चार्ज ले लिया है।

कप्तान रामनन्दन—हा !' बूटा 'कदम्ब और मै समझता हूँ, आप अब भी 'सौदामिनी' ही पर है। मैंने सुना है कि वह बम्बई मे है वहा से कही पूर्व का बयाना हुआ है।

जब वह इस प्रकार बात कर रहे थे, उस समय भी उनकी दृष्टि बराबर कप्तान काश्यप के साथी के मुख पर पड रही थी। वह ख्याल कर रहे थे—यह कौन लम्बा, शान्त भद्रवेषी पुरुष है। क्या वह हमारे बेडे के किसी जहाज का कप्तान तो नही है, जिसे कि मुझे अभी तक देखने का सयोग न हुआ था ? और तब जब कि इसहाक ने अपना मुह पूरी तौर पर उधर फेरा तो कप्तान रामनन्दन को असली बात मालूम हुई।

कप्तान रामनन्दन—धन्य, मैं गलती पर था।'

कप्तान काश्यप ने हँसते हुए कहा—यह मेरे चीफ इजीनियर महाशय इसहाक सामने है। रामनन्दन जी, तुमने इन्हे पहले देखा है।'

कप्तान रामनन्दन इजीनियर से हाथ मिलाते हुए बोले—ओहो ! मुझे स्मरण हो गया। आपके चीफ इजीनियर। मैं आपकी इस सफलता के लिये, महाशय इसहाक, बधाई देता हूँ।'

इसहाक ने गम्भीरता से कहा—'मैं इसके लिये आपका कृतज्ञ हू।

रामनन्दन—'और मैं आशा करता हूँ कि आप अपने वर्तमान पद पर कामयाब होगे।

म० इसहाक—'लेकिन मुझे अधिक दिन तक इस पद पर रहने की आशा नही है। अगली यात्रा की समाप्ति के साथ ही मुझे 'सौदामिनी' और कप्तान काश्यप से विदाई लेना होगी।'

रामनन्दन—'सच ? और एक बात के लिये मैं अत्यन्त लज्जित हूँ, महाशय इसहाक—जो मैंने उस माफ़ा के कारण आपको समझने मे बहुत भूल की थी। मुझे आशा है आप उसके लिये मुझे क्षमा करेंगे।'

म० इसहाक—'इसमे कोई क्षमा की बात नही है रामनन्दन बाबू, उस समय मैं उसी के योग्य था।'

रामनन्दन—'आपको माफ़ा फिर कभी मिला था ?'

इसहाक—'नही ! वह मेरी छाया से भडकता है !'

कप्तान काश्यप ने बडी उत्सुकतापूर्वक पूछा—'और तुमने कभी देखा, रामनन्दन बाबू ?'

रामनन्दन—'मिला तो नही, लेकिन यदि मिलेगा तो—

काश्यप—'यदि आपको मिल जाय तो तुरन्त पुलिस म उसकी खबर दे देना, याद रखना, उसका पूरा नाम है—मटियो माफ़ा। पुलिस को कहना कि यह बडा भयकर बदमाश है, भारतीय अधिकारी इसकी बहुत तलाश मे है तथा गिरफ्तार करने वाले को पाच हजार रुपया इनाम देने का इश्तिहार हुआ है, और साथ ही मुझे तार देना।'

यद्यपि यह बात कप्तान रामनन्दन सहाय को अनहोनी-सी जान पडती थी, तो भी उन्होने अभिवचन दे दिया और फिर अलग हुए।

'दर्शना'

भोजन कर लेने के बाद सेठ न अपने मन की बात कहनी आरभ की। सबसे पहले उन्होने कई प्रश्नो द्वारा यह जानने की कोशिश की कि इसहाक, नाथन के सम्बन्ध मे कहा तक जानते है। उन्हे मालूम हो गया कि यरूशिलम तक की यात्रा और जो कुछ मेटियो के कहने से उन्ह मालूम हुआ था, उसके अतिरिक्त उन्ह कुछ मालूम नही। यह भूत का अत्यन्त लज्जास्पद कृत्य था जिसके लिये इसहाक के हृदय मे बडा ही परिताप होता था।

सेठ—'परिताप होना आवश्यक है, इसहाक। और मैं नहीं चाहता कि तुम उसे भूल जाओ क्योंकि ऐसी अवस्था में तुम पूरी तौर से प्रतिशोध नहीं कर सकोगे। तुम्हें मालूम होना चाहिये इसहाक कि सिमियन बिन इज्या मेरे अत्यन्त प्रिय मित्र थे, जैसे कि कप्तान काश्यप हैं। और उनके पौत्र का मैं उतना ही प्रेम करता हूं, जितना कि तुम्हें।' और उनका गला रुक गया।

इसहाक स्तम्भित हो गये, थोड़ी देर तक उन्होंने सिर्फ सेठ और कप्तान के मुख की ओर देखा किया और फिर करुण स्वर से कहा—'क्या वृद्ध सिमियन अब इस संसार में नहीं हैं?'

सेठ—'तुमने जब आखिरी बार देखा, उसके कुछ ही सप्ताहों के बाद वह मर गये। इसका विशेष विवरण तुम्हें कप्तान काश्यप बतलावेंगे। मैं तो संक्षेप में बतला देना चाहता हूं, विस्तारपूर्वक कहने का इस समय अवसर नहीं है।'

इसहाक—आर नाथन?

सेठ—'कप्तान काश्यप की संरक्षकता में है।'

कप्तान—'और मेरा दूसरा पुत्र है।'

इसहाक—और क्या क्या है मामा?'

इस पर सेठ जी ने संक्षेप में सारा किस्सा कह सुनाया और फिर कहा—'महाशय भारद्वाज, कप्तान काश्यप के साले को तुम जानते हो न? यदि मैं भूल नहीं करता तो इसहाक किसी समय तुम और भारद्वाज दोनों यान्त्रिक आविष्कारों में बड़ी दिलचस्पी लेते थे।'

कप्तान—'सचमुच?'

इसहाक—हाँ! चन्द्र और मेरा रुझान एक सा ही था। उन्हें तो प्रोफेसरी करनी पड़ती थी लेकिन मामा की कृपा से मुझे बहुत सुभीता था, यद्यपि मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि आपकी सब कृपाओं को मैंने धूल में मिला दिया मामा।'

सेठ—'नहीं, ! अब भी बहुत समय है।'

इसहाक—'मैंने सिविल इंजीनियरिंग पास की थी, और आगे की सभी परिस्थिति मेरे अनुकूल थी।'

कप्तान—ओहो! अब मुझे मालूम हुआ कि क्यों इतनी जल्दी तुमने तरक्की कर ली। तुमने पहले ही बहुत-कुछ जान लिया था। तभी तो!'

इसहाक—यद्यपि नाविक इंजीनियर मैं न था, लेकिन पूर्व के ज्ञान ने मुझे बहुत सहायता दी।

सेठ—प्रोफेसर भारद्वाज ने अब विमान का काम हाथ में ले लिया है।'

इसहाक—'मुझे भी मेरे और चन्द्र के एक घनिष्ठ मित्र मधुसूदन खन्ना से

मालूम हुआ था कि भारद्वाज ने एक विमान स्तम्भक यन्त्र आविष्कृत किया है, जिससे विमान वायु मे वैसे ही खडा किया जा सकता है, जैसे पानी मे जहाज। क्या परीक्षा मे वह सचमुच ठीक उतरा ?'

कप्तान— बिल्कुल ठीक मैं समझता हूँ। अभी हाल ही मे उन्होने एक खास ढाचे का एक विमान बनवाया है। जिसमे वह आविष्कार खास इजन से लगा हुआ है, अलग से जोडा हुआ नही। चन्द्र ने उसका नाम दशना' रक्खा है। और वह और लडके जल्दी ही उसके तैयार हो जाने की आशा कर रहे हैं।

सेठ—'यहा, मेरी वह बात प्रकरणसगत हो गई जिसे मैं तुम्ह कहना चाहता था। म चाहता हूँ, कि इसहाक तुम चन्द्रनाथ से सम्मति लेकर उसके इस काम म सहायक हो जाओ। और जब आविष्कार सब तरह ठीक हो जाय परीक्षा म पक्का उतर जाये, ता उसे तैयार करो और मुझसे उसम आर्थिक सहायता देने के लिये कहो।'

इसहाक—'क्या, आपका मतलब यह तो नही है मामा, कि हम उसके तैयार करने के लिये कारखाना खालें और अपन तयार किये हुए विमान को बाजार मे रक्खे।'

सेठ— खाली स्तम्भक यत्र मात्र ही नही, बल्कि पूरा विमान।

इसहाक— आपने इसका जिक्र चन्द्रनाथ से किया था ?'

सेठ—'अभी तक नही। मैं पहले यह जानना चाहता था कि तुम्हारी क्या राय है। जब तुम अगली यात्रा म जाओ, तो मैं भारद्वाज से बात कर लूगा।'

इसहाक—'इसके लिये एक अनुकूल स्थान ढूटना होगा और विशाल कलघर स्थापित करना होगा। यह बहुत भारी काम है मामा, मैं इसमे सहसा कूदना नही चाहता। इसम एक बहुत भारी पूजी की आवश्यकता पडेगी, जितना कि अब तक आपने किसी को कर्ज न दिया होगा। इसके लिये मुझे और चन्द्र को सोचन विचारने का अवसर देना होगा।'

सेठ— तुम इस प्रस्ताव के पक्ष मे हो ?'

इसहाक— यदि भारद्वाज स्वीकार करें तो—

कप्तान— मैं समझता हूँ, वह जरूर स्वीकार करेंगे।'

सेठ—'और तुम्ह पसन्द है, इसहाक ?'

इसहाक—'हा! लेकिन जैसा मैंने कहा अभी थोडा समय देना चाहिये, इस पर विचार करने के लिये, क्योकि इसम बहुत अधिक धन और श्रम व्यय करना होगा।

सेठ न बहुत प्रसन्न होकर कहा—'जितना चाहो, उतना समय लो। जो निश्चय हो, उसे मुझे किसी बन्दर से लिख भेजना अथवा यात्रा को समाप्त करन के बाद ही मुझसे कहना।'

इसहाक—'हा! आपने प्रतिशोध की बात कही थी, मामा?'

सेठ—प्रतिशोध भी इस प्रस्ताव के स्वीकार ही से हो जायेगा। मैंने भारद्वाज से मिल कर काम करने म तुम्हारी और नाथन दानो की भलाई सोची ह।'

इसहाक—यदि ऐसा है ता विचार करने के लिये एक क्षण की भी आवश्यक्ता नही, मैं तैयार हूँ, हा! चन्द्रनाथ की सम्मति आवश्यक है।'

सेठ न प्रसन्नवदन हो कहा—'यदि तुम तैयार हो, तो मैं इसे निश्चितप्राय समझता हूँ।

कप्तान—'निश्चितप्राय क्या, बिल्कुल निश्चित समझिये, यदि इसका निश्चय चन्द्र पर अवलम्बित है।'

सेठ—अच्छा ता कप्तान साहब, आप अपनी यात्रा मे इसहाक को सारी कथा विस्तारपूर्वक सुना दीजियेगा। समय की कमी से मैंने बहुत सक्षेप मे कहा है। इन दो-तीन महीने म इसहाक तुम सब जान जाओगे और तब तक नाथन की उन्नीसवी जन्मतिथि भी आ जायगी।

तीन दिन बाद काश्यप भवन के बाहर वाले मैदान मे बहुत सी भीड लगी हुई थी। उन सबकी दृष्टि दक्षिणी आकाश की आर थी। कप्तान भी वहा मौजूद थे। 'सौन्मिनी' अभी बम्बई से रवाना न हुई थी, लेकिन आज स चौथे दिन जाने वाली थी। मज पर छोटे तिनपावे के सहारे एक दूरबीन रक्खी हुई थी। सीता देवी कुर्सी पर बैठी अपन पति के कथनानुसार उससे देख रही थीं। उनके पीछे गङ्गा मिश्रानी खडी थी। शिव और नाथन एक साधारण मैदानी दूरबीन पर कब्जा किय हुए थे और उनम से जब एक देखता था, ता दूसरा एक, दा, तीन। गिनता रहता था और तीस के पूरा होते ही समय!' बोल दता था, जिस पर दूरबीन उस मिल जाती थी।

मैदानी दूरबीन इस तरह बराबर बदली जा रही थी। समय' मुह से निकाला नही कि दूरबीन दी गई नही। स्थानीय थाने के सब-इन्सपेक्टर और हल्के क इन्सपेक्टर साहब भी वहाँ पहुँचे हुए थे। कितने ही और आदमी भी मैदान मे जमा थे, क्योंकि आस-पास चारो ओर प्रसिद्ध हो गया था—बडा भारी घर बन रहा है, जिसमे उडन खटोलना' रखा जायगा।

आज का दिन बहुत अच्छा था। नीले आकाश म ढाका के मलमल की तरह

के हल्के श्वेत मेघ फैले हुए थे यह उड़ने के लिये सर्वोत्तम दिन था, मौसम मे ऐसा मौका बहुत कम मिलता है। ऋतु विज्ञानी कप्तान न धीरे धीरे उसमे परिवतन होने देखा।'

नाथन चिल्ला उठा —'वह है।'

कप्तान ने पूछा —कहाँ?' और नाथन ने अँगुली उठा कर आकाश की उस दिशा म किया, दूरबीन अब भी उसकी आखा पर थी। कप्तान ने दूरबीन को ठीक लगा दिया।

शिव धीरे धीरे गिन रहा था—'सत्ताइस-अटठाइस उन्तीस-तीस और वह उत्तेजित हो बोल उठा, 'समय।'

नाथन ने तुरत दूरबीन शिव के हाथ मे देते हुए कहा—'अब तुम्हारी बारी है शिव! दख रह हो न, वह दक्षिण ओर बादलो मे ताना तन रहा है। वाह! अब ता म सुन रहा हूँ। क्या खूब।'

सीता देवी—मैं भी आवाज सुन रही हूँ, लेकिन मुझे इसमे दिखाई नही पडता। यह क्या? वह बहुत जल्दी जल्दी घूमता हागा। काश्यप जरा मरी सहायता करो।'

शिव ने बड़े आनन्द के साथ चिल्लाकर कहा—मैं दख रहा हूँ। नाथन गिनना भूल गया था, अब वह अपनी आखा ही से देख सकता था, उसका दूरबीन की जरूरत न थी। वही हालत कप्तान काश्यप की भी थी। इजन की घनघनाहट क्षण-क्षण बढ रही थी। दूरबीन तिगुना ऊँचा कर दिया गया था और सीता देवी अब उसक सहार विमान को स्पष्ट देख सकती थी।

दर्शकों की भीड म एक बार खलबली मच गइ, और फिर तालियों की गूज स दिशाए पूण हो गइ। शिव ने दखा नाथन गिनता नही है और समय आध मिनट स ऊपर हा गया होगा, उसने झट दूरबीन नाथन के हाथ म दे दी।

नाथन ने कहा—'अपने ही पास रक्खो, या—'

शिव—'या?'

नाथन—या दरोगा जी का या इन्स्पेक्टर साहब अथवा गगा माई को द दा। हम पहले ही देना चाहिये था, शिव यह एक तरह की खुदगर्जी है।

शिव—'भूल, खुदगर्जी नही, नाथ।'

दूरबीन गगा की हाथ मे गया, क्योंकि दरागा और इन्स्पेक्टर साहबा ने दूरबीन से आँखो ही को अच्छा समझा। शिव ने कितना ही बताया, लेकिन बूढ़ा ताता यही राम राम पढता है, अन्त मे गगा ने भी हार कर उसे मेज पर रख दिया।

उसने कहा—'मुझे कुछ नही मालूम होता है बाबू, इसमे तो धूप , कुहरा-सी दिखाई पडती है ।'

विमान की भनभनाहट अब और तीव्र थी । उसकी आकृति किसी पक्षी की अपेक्षा प्रकाड जुलाहे—फतिगे से बहुत मिलती जुलती थी । लोगा के ठीक सामने आकर वह चक्कर काट कर नीचे उतरने लगा और थोडी देर मे उस पर के दोनो सवारो—चन्द्रनाथ और एक कारखाने के यात्रिक—का शिर छोटे छोटे दो गेंदा की तरह दिखाई देने लगा ।

शिव और नाथन ने पहले ही अन्दाज लगा लिया कि वह कहा उतरगा, और वह दोनो उस स्थान पर दौड गय । जरा ही देर मे वडी सफाई से चन्द्रनाथ न दशना' को चील्ह के उतरने की तरह जमीन पर ला रक्खा ।

दूसरे क्षण प्रोफेसर ने कनटोप और ढक्कन चश्मा हटा दिया । शिव और नाथन पायदान पर चढ गये और उनके उन फीता को खालने लग, जिनसे वह अपनी जगह पर सुरक्षित रहने के लिए बँधे थे । इसके बाद फिर, उन्हाने यात्रिक की भी उसी तरह सेवा की । जब दोनो आदमी उतर कर नीचे आय, तो कप्तान सीता देवी, दरोगा जी और इन्स्पेक्टर साहेब उनके स्वागत के लिये आगे बढे । दर्शक मण्डली अब कुछ और नजदीक आकर चकित हो देख रही थी ।

प्रोफेसर भारद्वाज ने स्वागतकर्त्ताओ की ओर देखकर कहा—'बडा सुन्दर समय हम मिला ।'

शिव—'इजन कैसा काम देता है, मामा ?

चन्द्रनाथ—वहुत ही अच्छा मेरे बच्चे, जरा भी उसने हमे तक्लीफ न दी ।'

नाथन न पूछा—'और स्तम्भक यत्र ?'

चन्द्र—यदि म वायु को समुद्र कहूँ—जैसा कि वास्तव मे वह है भी, यद्यपि नीचे वाले समुद्र से इसका पानी (हवा) हल्का है—तो मैं कह सकता हूँ कि वह वसे ही स्तम्भित कर सका, जैसे समुद्र म जहाज को लगर । हम खराब मौसम से मुकाबिला न करना पडा और न उनके लिये जाखिमी चाल ही चलनी पडी । एक पूर्ण मधुमक्खी की तरह हम सीधे जमीन पर आ बैठे । इसलिये नाथ, यह उडान इसकी निर्दोषता की पूरी कसौटी है ।

सीता—'और भया अब तो तुम छत्ते म नहीं हो न ?'

चन्द्र—नही सीता हम दोना बहुत भूखे हैं । लेकिन अभी पहले हम विमान को विमानशाला म पहुँचाना है, फिर नहाना है तब जाकर माकुर माकुर । मैं समझता हूँ छत्ते मे मधु तैयार होगी ?'

सीता—'बहुत भैया, मधु का क्या दुख है, यात्रिक महाशय को लिये जल्दी आओ।'

जाडे के अगले तीनो मासो में मौसम ने बहुत कम उडने का अवसर दिया। सक्खर का अशात और चौवाई वायु मडल उडने के लिये कोई उत्तम स्थान न था लेकिन स्तम्भर यत्र की परीक्षा के लिये यह आदर्श स्थान था। क्योकि यदि वह इस अशात वातावरण में सफल हो सका तो उसे कही भी असफल होने का डर नही।

वह छ बार उडे और प्रति बार नाथ और शिव म से एक अवश्य उनके साथ था। चन्द्रनाथ सचालक रहते थे। उन्होने उडाके का प्रमाण पत्र पा लिया था इसलिये उनकी बहिन अब उन पर विश्वास कर सकती थी। मौसम जब शान्त था तो दो बार लडको ने मामा के बिना ही उडने की कोशिश की, लेकिन सीता इस पर राजी न हुई। तो भी उन्होने घटो चन्दा मामा के साथ आकाश म विचरते हुए चारो ओर के विचित्र दृश्यो को देखा, मौसम और हवा का ज्ञान प्राप्त किया और दिल की दृढता प्राप्त कर ली। इस प्रकार अब वह चन्दा मामा के स्थान पर स्वय उडाका होने के योग्य हो गये।

वह यत्र से खूब परिचित हो गये। उन्होने उसके एक एक पुर्जे को देख और समझ लिया। चन्द्रनाथ उनके सम्मुख अनेक प्रकार के प्रश्न उपस्थित करने लगे। यह प्रश्न पुर्जो के जोडने के विषय मे न थे बल्कि भिन्न भिन्न अवस्था मे उडाके के कर्त्तव्य के विषय म थे। उन्होने सिखाया कि उडाके को सकट के समय कितना स्थिर-मस्तिष्क रहने की आवश्यकता है। उडाके को पक्षी या मधुमक्खी के उडाने का अनुकरण करना चाहिये।

अक्तूबर मास के आरम्भ मे 'सौदामिनी' के जाने के बाद ही चन्द्रनाथ सेठ इब्राहीम का पत्र पाकर कराची गये।

सेठ जी ने कारखाने और भागीदारी का प्रस्ताव उनके सामने रक्खा। चन्द्रनाथ को इस पर आश्चर्य हुआ। कहा यह उनका काम था कि तरह तरह से समाहित करके किसी महाजन को रुपये के लिए तैयार करते और कहा सेठ इब्राहीम स्वय उसे कह रहे है। वह सेठ जी के प्रति बहुत कृतज्ञ हुए। उनका पूरा विश्वास था कि इसहाक के साथ काम बहुत ठीक तौर से निभेगा। उनके दिल म पहले कारखाने के स्थान और कला के विषय मे अच्छी तरह विचार करने का ख्याल आया और फिर यह सोच कर और अधिक प्रसन्नता हुई कि इसहाक दशना फैक्टरी म भागीदार और कार्यकर्त्ता होगा।

चन्द्र—'आपके प्रस्ताव से बढकर मेरे लिये कोई अच्छी बात नही हो सेठ जी! और रही अन्य योजनाए उनके विषय मे मैं सोच कर लिखूगा।

चन्द्रनाथ का पत्र सेठ इब्राहीम की इच्छा और आशा के बिल्कुल अनुकूल था और नवम्बर के आरम्भ ही मे उन्हे फिर कराची जाना पडा।'

सेठ जी—'मेरी चिट्ठी इसहाक को यूकोहामा मे मिली, उसने लिखा है कि इस मास के अन्त तक मैं आऊँगा। आपने जो उसे अपना भागीदार बनाना स्वीकार किया है, उसके लिये वह अत्यन्त कृतज्ञ और प्रसन्न हैं। यह उसके लिये बहुत है, प्रोफेसर महाशय जितना मैं कह सकता हू, उससे भी बहुत इसी से यह मेरे लिये भी बहुत है। और उनका गला भर आया।

चन्द्रनाथ—'नाथन को भी और हम सभी का, सेठ जी।'

सेठ—'हाँ! हम सभी के लिये। आपने कप्तान से सुना होगा?'

चन्द्र—'कुछ दिन पहले। आपकी सूचना को उन्होंने स्वीकृत कर लिया सेठ जी। इसी महीने की २५वी तारीख तक 'सौदामिनी' आ जावगी, उन्होने मेल्बोर्न से मुझे लिखा है। उसके आने के साथ ही प्रताप उससे छुट्टी लेने वाले है—यह सब प्रबन्ध कम्पनी से तै हो गया है।'

सेठ—'मैं समझता हूँ नाथन का जन्म दिवस चौथी दिसम्बर को पडता है।'

चन्द्र—'यहूदी नौरोज। मेटियो को इसका पता है कि नही?'

सेठ—'मैं समझता हूँ जरूर है। सिमियन बिन इब्रा का बहुत दिनो तक नौकरी करते रहने से उसे यहूदी सभी पर्व मास मालूम है। लेकिन मुझे उसकी पर्वाह नही। हम देख लेगे, जब नाथन अपने दादा की वसीयत का पूर्ण अधिकारी हो जायगा।'

चन्द्र—'तो नाथन के मामले के तै होते तक यह स्कीम मुल्तवी न रहेगी?'

सेठ—'नही। लेकिन पीछे आवश्यकता पडने पर हमे अपनी स्कीम को बढाने के लिये तैयार रहना चाहिये। और बीच मे नाथन का हित, उसकी मेटियो के हाथसे रक्षा और एक टुकडे ही का नही, सारी ढाल का उसके अधिकार मे आने का प्रयत्न हमारा प्रधान कर्त्तव्य होगा।

चन्द्र—'ढाल की नाभि—'

सेठ—'हा! उसी का तो मेटियो चाहता है। मुझसे उसके बारे मे कुछ न पूछिये, ठहरिये। आप भी चौथी दिसम्बर को मौजूद रहेगे, और कप्तान के अतिरिक्त मेरा भाजा और आपका भाजा भी।'

नाथन की उन्नीसवी जन्म-तिथि

नवम्बर की सत्ताईसवी तारीख को 'सौदामिनी' कराची पहुँची। रास्ते मे बगाल की खाडी मे उसे एक तूफान से सामना करना पडा गया था, इसलिए यह देर हुई।

बम्बई मे मुसाफिरो की चिटिठ्याँ जहाज पर लाई गइ। उनम एक कप्तान काश्यप के नाम भी थी, जिसमे मिश्री टिकट लगा था और स्वेज के डाकखान की मुहर थी। जब उसे खोलने का उन्ह समय मिला तो उन्हाने देखा कि कप्तान रामनन्दन सहाय का है। पत्र ६ अक्टूबर को लिखा गया था और इस प्रकार था—

श्रद्धेय कप्तान काश्यप महाशय, नमस्ते।

आपके कथन का मैंने बराबर ख्याल रखा था। अभी ही हम नहर से होकर आय हैं। इस्माईलिया मे हमे दो-तीन घटे के लिये रुक जाना पडा था, और छाटा मिश्री डाक जहाज वहाँ स होकर निकला। मेरे पास और काम न था, इसलिए मैं मैदानी दूरबीन लेकर उसकी ओर देखने लगा। मैंने देखा कि उस पर माफा कटघरे के सहारे झुककर एक क्रूराकृति अरब से गप कर रहा है। मैंन खूब ध्यान से देखा, इसलिय प्रमाद की गुन्जाइश नही। उसने आखे उठाकर कदम्ब की ओर देखा, और फिर से अरब से अँगुली दिखा कर इशारा किया। इस पर वह दोनो मुस्कराय। मुझे नहा विश्वास है कि उसने मुझे देखा होगा। मैं चक्र की आड मे खूब छिपकर खडा था। वह दोनो इस्माईलिया म उतरे। मैंने आपके पास तार इसलिये न दिया कि मुझे मालूम नही है, आप इस समय कहा हैं। इसीलिये मैं पत्र लिख रहा हूँ। हम तुरन्त ही चल पडे। और स्वेज मे पहुचन पर मै तुरत किनार पर गया और पुलिस के प्रधान अफसर को मैंन उसकी हुलिया बताई। मैंने यह भी बता दिया कि भारतीय पुलिस उसकी बडी खोज मे है और पकडने वाले को पाँच हजार रुपया 'नक्शीश' भी मिलेगी। वह मेरे कहने के अनुसार करेगा या नही इसका मुझे पता नही। महाशय इसहाक सासूर का मेरा बन्देमातरम कह।

अपका आज्ञाकारी—

रामनन्दन सहाय।

उन्होने एक बार उसे फिर दोहरा कर पढा और फिर उसे चापेत कर पाकेट मे रख लिया। पुलिस-अफसर के कुछ करने के विषय मे उन्ह भी पूरा सन्देह ही रहा। अरब शायद वही रहा हागा जा इसहाक और मेटिया के साथ यहशिलम गया था।

वह इस्माईलिया में बहुत दिन तक नहीं टिक सकते। बहुत कुछ सम्भव है कि वह काहिरा चले गये होंगे, क्योंकि वही ऐसा स्थान है जहाँ मेटियो-सा आदमी अपने आपको छिपा सकता है यदि पुलिस उन्हें पकड़ना भी चाहेगी तो भी मेटियो के चकमा से पार पाना बहुत कठिन है।

उन्होंने इसहाक से पत्र का जिक्र न किया। उस समय इसके लिये कोई जल्दी न थी। इसहाक अपनी अन्तिम तैयारी में लगे थे। इस प्रकार पत्र कुछ समय के लिए भूल ही गया। करांची पहुँच कर सारा सामान लिये दिये इसहाक तो अपने मामा के घर पर पहुँचे। और जब कप्तान ने अपने स्थानापन्न को जहाज का चार्ज दे दिया तो वह भी पहले सेठ जी के यहाँ गये और फिर अपने घर की ओर भागे।

इस सप्ताह मौसम बहुत अच्छा रहा और इसहाक 'दशना' को देखने के लिए सबखर बुलाये गये। साथ ही भारद्वाज के साथ सारी स्कीम पर भी पूरा विचार करना था। नाथन को यह न मालूम था कि यह वही भयानक हिन्दुस्तानी है। जो शराब के नशे में मेटियो और अरब के हाथों का खिलौना होकर उसका और सिमियन बिन इजा का पीछा करते हुए पोर्टसईद से यरूशिलम तक गया था। उसे सिर्फ इतना ही मालूम था कि यह सौदामिनी के भूतपूर्व चीफ इन्जीनियर हैं, सेठ इब्राहीम उनके मामा हैं दशना के भागीदार हैं और होनेवाली 'दशना फैक्टरी के भी भागीदार हैं। इसहाक की सूरत शक्ल में भी बहुत परिवर्तन हो गया था। उधर नाथन की पुरानी स्मृति भी बहुत कुछ क्षीण हो चली थी, इसलिये उसे कुछ न पता लगा, लेकिन एक समय ऐसा आवेगा जब उसे असली बात सूचित कर देने की आवश्यकता होगी।

कप्तान, प्रोफेसर और सीता देवी ने महाशय इसहाक का विशेष रूप से स्वागत किया। उन लोगों को इस बात का डर बना था कि नाथन को जब मालूम होगा तो वह कितना क्रुद्ध होगा, क्योंकि उन्हें खूब स्मरण था कि अपनी कथा कहते समय नाथन ने अन्य दानों की अपेक्षा खूनी आंखों वाले हिन्दुस्तानी ही से अधिक भय प्रकट किया था।

शिव की भी वही अवस्था थी जो नाथन की। उसने अभी तक इसहाक को न देखा था। बिना किसी सूचना के इसहाक को अरब और मेटियो से मिलाना बहुत कठिन था। उसके माता, पिता और मामा ने स्वयं असली बात की सूचना देना उचित न समझा। उन्होंने सोचा कि सब कुछ स्वाभाविक रीति से होना चाहिये।

लेकिन इसहाक ने सारी बात साफ कर देनी चाही। उन्होंने पहले ही कदम बढ़ाया। यद्यपि काम बड़े जोखिम का था, लेकिन देर तक छिपाये रखना उन्हें असह्य

मालूम हुआ। उन्होंने नाथन को स्पष्ट बतला देना चाहा। जरा सी बात का भी पता लगे बिना इसहाक से न रह सकता था। उन्होंने देखा कि नाथन बडे आश्चर्य से मेरी ओर देख रहा है, और सीता देवी चिन्तित हैं। कप्तान और प्रोफेसर भी मुलाकात को बडी सन्दिग्ध दृष्टि से देख रहे हैं। सिर्फ शिव ही ऐसा था जिसके चेहरे पर किसी प्रकार की शङ्का या सन्देह का चिह्न नहीं दिखाई पडता था।

नाथन की स्मृति बहुत क्षीण थी, लेकिन बिल्कुल नष्ट न हो गई थी। वह मन ही मन सोचने लगा, इस आदमी को मैंने कहीं देखा है, कहाँ और कब, यह वह निश्चय न कर सकता था। इसके लिए पहली बार के प्रयास में असफल होने के कारण उसने फिर कोशिश करनी छोड दी। उसने उन्हें घर के मित्र के तौर पर स्वीकार किया। सीता देवी के अब जी में जी आया। कप्तान और प्रोफेसर को भी इसके लिए कुछ भी असन्तोष न हुआ, कि वह पहचान न सका। वह जानते थे, तब के और अब के इसहाक में जमीन-आसमान का अन्तर है।

लेकिन इसहाक को इससे सन्तोष न हुआ। जैसे ही उन्हें अवसर मिला, उसी दिन सन्ध्या में वह नाथन को अलग ले गये।

'नाथ' उन्होंने बडे प्रेमपूर्ण और मधुर स्वर में कहा 'नाथ मेरा हृदय अत्यन्त व्यथित हो रहा है, इसलिये मैं एक अत्यन्त लज्जास्पद और मर्मभेदी अपराध तुमसे कहने जा रहा हूँ।

नाथन कुछ न समझ सका, और बडे आश्चर्य से बोल उठा— क्या, महाशय इसहाक ?

इसहाक—और साथ ही तुमसे उस अक्षम्य अपराध के लिये क्षमा चाहता हूँ। यद्यपि मैं उसके पाने के योग्य नहीं हूँ, मैंने उसका कोई प्रायश्चित नहीं किया है तो भी मैं तुम्हारी उदारता से कभी आशा रखने के लिए बाध्य हूँ। बोलो तुम मेरा उद्धार करोगे न ?' और इसहाक का स्वर कम्पित हो चला।

नाथन— आप क्या कह रहे हैं ? आपने मेरा कोई कसूर नहीं किया।'

इसहाक— तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो नाथ ?'

नाथन—मुझे जरा जरा याद आता है कि मैंने आपको कहाँ देखा है।'

इसहाक—हाँ ! देखा है जाफावाले जहाज में, और—'और वह आगे न बोल सके।

नाथ—ओह !' एकाएक जान पडा उसके हृदय पर कोई बडा आघात पहुँचा है।

इसहाक के बाद कितनी ही देर तक सन्नाटा छाया रहा।

इसहाक ने फिर बडे दीन स्वर से कहा—'क्या मुझे क्षमादान दोगे ?'

नाथन—'आप मेटियो के साथ थे।'

इसहाक—'हा ! और अरब के साथ और उसके लिये अत्यन्त लज्जित हूँ, करीब पाच वर्ष से। मैं अपनी सफाई नही देना चाहता नाथ ! लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि यद्यपि मैं उस समय पतित और शराब मे मदमस्त रहता था, लेकिन तो भी मैं तुम्हे और तुम्हारे दादा को हानि न पहुँचाता। मेटियो के क्रूर हृदय का उस समय मुझे कुछ पता न था था। मैं तुम्हारा मित्र बनना चाहता हूँ और यदि तुम आज्ञा दोगे, तो मैं अपने भूत कृत्यो का प्रतिशोध करना चाहता हूँ।'

नाथन—'तब से आपमे बहुत परिवर्तन हो गया है।

इसहाक—मुझे भी जान पटता है।'

नाथन—'बहुत भारी परिवर्तन—सचमुच। मुझे जब आपसे जरा भी भय *या घृणा नही मालूम होती, लेकिन उस समय की न पूछिये।' और उसने अपने हृदय* के भाव को प्रत्यक्ष करने के लिये दोनो हाथ आगे बढाये।

इसहाक और नाथन दोनो खुलकर गले मिले। इसहाक ने कहा—अब हम दोनो मित्र है ?

नाथन—सच्चे मित्र।'

इसहाक—'तो तुमने मुझे माफ कर दिया ?'

नाथन—यदि कोई माफ करने की बात थी।'

इसहाक का चेहरा आनन्द से खिल उठा और आनन्दाश्रु से आखें डबडबा आइ। उन्होने कहा—'धन्य भाग्य ! आज मैं मुह दिखाने योग्य हुआ।'

फिर जब दोनो लौट कर औरो से मिले, तो इसहाक का मुह चमक रहा था और नाथन भी स्मितमुख था। सीता देवी ने ताड लिया कि क्या बात हुई। कप्तान और प्रोफेसर ने समझ लिया कि दोनो के हृदय घुल मिल गये। किसी ने कुछ चर्चा न चलाई। जब सब काम ठीक हो गया तो कितने ही दिनो के बाद नाथन ने सब बात शिव से कही।

उस सप्ताह चार दिन 'दर्शना' उडा। इसहाक ने बहुत जल्दी अपने को एक योग्य वैमानिक सिद्ध किया। उतने ही दिनो मे उसका एक एक पुर्जा उन्हे याद हो गया। उन्होने चन्द्रनाथ के अविष्कार के प्रति अत्यन्त सन्तोष प्रकट किया। इसहाक के मृदु स्वभाव तथा यान्त्रिक चातुर्य और धैर्य को देख लडके और लटटू हो गये। जब सप्ताह समाप्त हो गया, और इसहाक के बिदा होने का समय आया तो उन्होने बडा अफसोस किया।

इसहाक ने कहा—'हम फिर जल्दी ही मिलेंगे।'

लडको ने एक सांस मे कहा—'कब ?'

इसहाक—'चौथी दिसम्बर को, नाथन की जन्म तिथि पर।'

इसहाक के जाने के थोडी देर पहले जबकि वहा कप्तान और प्रोफेसर ही उनके साथ थे, कप्तान ने कहा—'एक पत्र तुम्हे दिखाना था इसहाक, मैं बिल्कुल ही उसे भूल गया था। आज मुझे यह अपनी कोट की जेब मे मिला। जब 'सौदामिनी' बम्बई म आई, तभी बहुत से पत्रो के साथ यह भी मिला था।'

इसहाक ने पत्र को दो बार पढा और लौटाते वक्त कप्तान से कहा—यदि मै इस पहले देख सका होता।'

कप्तान—'क्यो ?'

इसहाक—मैं गया होता तो दोनो को पकड सकता था।'

कप्तान—ता भी कोई पर्वाह नही।

इसहाक—लेकिन मैं उनका अडडा जानता हू, अत मैं उस समय जाता तो अवश्य उन्हे पकडने म सफल होता। अरब की कोई गिनती नही है उसमे कोई बुद्धि नहा है, वह मेटियो के हाथ की सिफ कठपुतली है। लेकिन मेटियो को पकड कर जेल म भज दना हमारे लिय अत्यन्त उपयोगी होगा।

चन्द्रनाथ—'हाँ! ठीक!! हमे धैय रखना चाहिये।'

इसहाक—और आख खोल कर देखते भी रहना चाहिये। मेरे मामा ने ठीक कहा है कि जब तक मेटियो स्वतन्त्र है, तब तक खैरियत नही।'

सेठ जी ने नाथन की जन्म तिथि से एक सप्ताह पूव ही कप्तान को सूचना दी और ३ दिसम्बर के सायकाल को ही आ जाने को लिखा। चार को साढे दस बजे बक मे उपस्थित रहना था। दोनो लडको और प्रोफेसर के अतिरिक्त, यदि कष्ट नहो ता श्रीमती सीतादेवी को भी लेते आने को कहा था।

सीता जी ने, जबकि उनके पति पत्र पढ रहे थे, कहा—'कष्ट! मुझे वहा रहना आवश्यक है, है न, कप्तान ?'

कप्तान—'इसके लिये हममे से कोई भी तुमसे अधिक अधिकार नही रखता।'

सीता—'मुझे बडी प्रसन्नता है जो तुम ऐसा ख्याल करते हो। नाथ मेरा अत्यन्त प्यारा लडका उससे सम्बन्ध रखन वाली सभी बातें मुझे अपनी ओर आकृष्ट करती है। म तुमसे छिपाना नही चाहती कप्तान, यदि सेठ इब्राहीम ने मुझे निमन्त्रित न भी किया होता तो भी मैं गये बिना न रहती, चाहे पीछे वहा धक्का भी खाना होता।'

कप्तान—'वह ऐसा कर ही नही सकते थे सीता।'

सीता—मुझे भी अब यही उम्मीद है, और मैं उनकी बडी कृतज्ञ हू जो

उन्होंने मुझे भी इसमे सम्मिलित किया है। लेकिन उन्हे पहले ही से ज्ञात होना चाहिये था कि मैं बडी उत्सुक हू।'

कप्तान—'वह इसे जानते है सीता। तुम्हारे लिये विशेष करके लिखा है। हम लोगो से भी अधिक तुम्हे देख कर सेठ इब्राहीम खुश होगे। वह जानते हैं कि तुम्हारा नाथन पर कितना अधिक स्नेह है। तुमने तभी से उस पर अत्यन्त प्यार करना आरम्भ किया जब से कि नाथन हमारे घर का एक व्यक्ति हुआ।'

सीता—'व्यक्ति ही नही द्वितीय पुत्र।'

कप्तान—'हाँ! द्वितीय पुत्र।'

कप्तान का कहना बिल्कुल ठीक उतरा। सेठ ने सीता देवी ही का सबसे अधिक स्वागत किया। उन्होंने कहा—देवि, आपके कष्ट उठा कर यहाँ दर्शन देने से मुझे अपार आनन्द हुआ।' साढ़े दस बजने मे अभी दो मिनट की देर थी। उनके पहुचने के बाद ही इसहाक भी कमरे मे आये और अद्धे की घटी बजने के साथ ही दो वृद्ध पुरुष कमरे मे प्रविष्ट हुए। दोनो की दाढी श्वेत लम्बी और घनी थी। रग उनका बहुत ही गोरा और चेहरे पर झुर्रियाँ पडी थी। उनकी पोशाक मे बडा फर्क था, एक के शरीर पर लम्बा समूरी चोगा था, और दूसरे के शरीर पर लम्बा काला कोट। उनकी स्नेहपूर्ण दृष्टि एकत्रित व्यक्तियो पर इस तरह पड रही थी कि जान पडता था, वह किसी स्नेह पात्र की तलाश मे हैं। उनके भीतर आते ही इसहाक ने अपने मामा के सकेतानुसार उन्हे कालीन पर मसनद के सहारे बठाया।

सेठ इब्राहीम ने इस प्रकार कार्यवाही का आरम्भ किया—'यह दोनो श्रद्धेय महापुरुष मेरे मित्र सिमियन बिन इज्रा के साथ मिलकर पूरी ढाल के अधिकारी है, सिवाय उस नाभि के जो शताब्दियो से किसी दूसरे के अधिकार मे है।'

मैने पहले ही से इन दोनो महात्माओ के यहाँ पधारने का प्रबन्ध कर दिया, नही तो नाथन को इनके खोजने के लिये लिस्बन और मास्को की यात्रा करनी पडती। कछुए की हड्डी की कमानी वाले चश्मे के धारण करने वाले तथा दीर्घ-कोट धारी वृद्ध महानुभाव की ओर इशारा करके उन्होने कहा—'यह रूयलबिन जदक लिस्बन निवासी है, और यह जिदालिया बिन इस्राईल मास्को निवासी। इस वृद्धावस्था मे पोर्तुगाल और रूस ऐसे दूर देशो से बहुत कष्ट उठा कर यहाँ आना मेरी समझ मे नाथन के वहा इनके पास पहुचने के खतरे से बहुत कम था। नाथन को अब यह सिद्ध करना होगा कि यह सिमियन बिन इज्रा का पौत्र है और फिर यह ढाल का अपना अपना हिस्सा भी दे देंग, फिर नाभि का प्राप्त करना बाकी रहेगा। वह कहाँ है इसका पता तीनो टुकडो को मिला कर उनके पीछे की ओर की लिपि के पढने से मालूम होगा।'

'नाथन को लिस्बन और वहा से मास्को जाने मे छ मास से कम न लगता।

लेकिन समय के लगने से भी बढकर एक क्रूर और परम धूर्त शत्रु से सुरक्षित रहना सबसे बढ़कर बात थी। धूर्त मेटियो क्षण क्षण और कदम कदम पर उसके मार्ग मे बाधक और प्राणो का गाहक है। हम उनसे अपरिचित हैं, वह हमसे लेकिन नाथन के हित ने हम सब को एक सूत्र मे बद्ध करके आज यहाँ उपस्थित किया है। नाथन उनके लिये अपरिचित नही है, बल्कि उनकी जाति का एक व्यक्ति है। उन्होने एक बार उसे देखा था जब कि नाथन होर पर्वत के एक गुफा म उस रात सोया था, जिसमे कि ये सिमियन बिन इज्रा के साथ पैंद्रा के खजाने म मिले थे।

नाथन जो अब तक सभी बातो को बडे ध्यान स सुन रहा था, इस पर अपनी जगह से उठा और दोनो बुजुर्गों के पास जाकर बारी बारी उनके हाथो को चूमा। फिर उन्होंने भी उसको अपने पास करके उसके ललाट पर चुम्बन दिया।

सीता देवी की आखें उस वक्त डबडबा आइ। शिव का गला भी रुद्ध हो गया जिसके कारण एक बार उसे धीरे स खाँसना पडा। सभी आदमी इस दृश्य से प्रभावित हो गये थे।

मास्कोवासी जिदालिया न कहा—'तुम नाथन बिन एलीजर हो।

नाथन—'हा ! एलीजर मेरे पिता का नाम था !

इस पर लिस्बनवासी रुयल् न कहा—जैसा कि चमपत्र से मालूम होगा, जो हैरब के वश मे मताथिया, सिमियन और यूहना से होकर हस्मन् की परम्परा मे। लेकिन इसके लिये हमे पहले प्रमाण पत्र देखना होगा। हम मालूम है कि तुम्हारे दादा हमारे परम मित्र मर्हूम सिमियन बिन इज्रा ने ढाल के ततीयाश और प्रमाण पत्र को एक भद्र पुरुष के हाथ मे देकर तुम्हे भी उसकी सरक्षकता मे छोडा और उस महानुभाव ने सब चीजो को इसी बैंक मे जमा कर रक्खा है।

कप्तान काश्यप—'हाँ ! ऐसा ही।'

रुयल्—जिदालिया बिन इज्राईल और मै रूयल् बिन जदक दोनो ही अश्कनाजिमी और लेवी वशज अर्थात कर्मकाडी पुरोहित इस बात के लिये तैयार हैं कि यदि नाथन हस्मन् वशज प्रमाणित हो गया तो हम अपने अपने हिस्से वाला ढाल का भाग भी उसी को समर्पित कर देंगे। फिर तीनो भागो को एकत्रित करके शायद हम नाभि का भी पता मिल जाय, और इस प्रकार सम्पूर्ण ढाल नाथन के हाथ मे हो जाय। नाथन हस्मन् वश की एक मात्र सन्तान और ढाल का सच्चा अधिकारी है।'

सेठ—'आप बैंक की रसीद अपने साथ लाये है न, कप्तान साहब ?'

'यह है।' और कप्तान ने जेब से निकाल कर रसीद उनके हाथ मे ९

सेठ जी ने उनकी ओर देखा और फिर खजाची को बुला कर कहा कि वज्र कोठरी से उस पुलिन्दे को लाओ।

सब चुपचाप प्रतीक्षा करने लगे। वहा के वातावरण मे मानो विद्युत सचारित हो रही थी। चारो ओर पूरा सन्नाटा था, लेकिन सबके हृदयो की एक अनिवच नीय दशा थी।

अब खजाजी भी आ पहुचा। उसने चुपके से पुलिन्दे को सेठ के हाथ म रख दिया और बिना नजर उठा कर देखे ही वहाँ से चला गया।

पुलिन्दा बिल्कुल उसी अवस्था मे था, जिससे कि कप्तान ने उसे दिया था। वाल वाला कपडा वैसे ही सिला हुआ था। सुतली के जोडो पर दी हुई लाख की मुहरें वैसी ही थी। कप्तान के नाम और पता वाला कागज भी वैसे ही चिपका हुआ था। सेठ न उसे कप्तान के हाथ मे देकर कहा—'कप्तान, आप इसके खोलने के अधिकारी है।'

सब लोग उनकी ओर दखने लगे। उन्होने लेबिल को अलग कर दिया, मुहरो को ताड दिया और सुतली की गाठ को खोल कर उसे निकाल कर अलग रख दिया। फिर वानविस को हटा कर उन्हाने मुहर किये हुए चोगे और ढाल वाले थले को निकाला।

थैले मे हाथ डाल कर उन्हाने ऊँट वाले कपडे से ढके ढाल के टुकडे को वाहर निकाला। कपडा अलग गिरते ही, सुदर चित्रकारी से सुसज्जित रत्न-जटित सोने की ढाल का ततीयाश वाहर निकल आया। पद्मराग, हीरा और नीलम की चमक स एक बार सब की आखे चौंधिया गइ।

'आहो! शिव धीर से लेकिन एकाएक बोल उठा।

इसहाक स्तम्भित हो गया और नाथन न सिर्फ मुस्करा दिया। दोना वद्धो ने उस बडी गम्भीरतापूर्वक देखा। कप्तान का छाड कर सभी की आखें उस पर थी। उन्होने ढाल का फश पर रख दिया और फिर थले के भीतर हाथ डाला। टटोलने के बाद उन्हे वह चीज मिल गई, जिसे वह ढूढ रहे थे? उसे भी उन्होने वाहर रक्खा यह एक चिपटा गाला सा सीसे का टुकडा था।

सब का ध्यान उसके रखे जाते ही उधर आकृष्ट हो गया।

सेठ ने पूछा—यह क्या है?'

कप्तान—'गाली, जिसने सिमियन बिन इज्रा का प्राण ले लिया होता, यदि 'यह ढाल की ओर इशारा करके', 'सीने पर न हाती।' ढाल के चिपके हुए भाग पर हाथ रख कर यह इसी का निशान है।'

चर्मपत्र और ढाल

चिपटी गोली ने ढाल से भी बढ़कर उपस्थित व्यक्तियों के हृदय पर प्रभाव डाला। उसने उस खतरे का चित्र उनके सम्मुख अंकित कर दिया जिसमें होकर सिमियन बिन इज्रा को जाना पड़ा था। और नाथन को भी नाभि का हस्तगत करने के लिये जिसमें ही से गुजरना पड़ेगा, क्योंकि जिसने सिमियन पर गोली चलाई थी, वह अब भी उतना ही तत्पर, उतना ही सजग हो ढाल ही के फिराक में बैठा है। ढाल का चिपका तल और चिपटी गोली, दोनों स्पष्ट कह रहे थे कि नाथ को मेटियो के हाथ से बच कर निकलने के लिये सब की सहायता की अपेक्षा है।

लोगों की जिज्ञासा का ख्याल करके कप्तान काश्यप ने कहना आरम्भ किया—'मुझे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि मेटिया अब भी या—'

सेठ ने बात काट कर कहा—'हम उसके बारे में पीछे विचार करेंगे। क्षमा करें कप्तान, हमारा दूसरा काम अब चर्मपत्र से है। हमें क्रमश चलना चाहिये अब दोनों बुजुर्गों की माँग पूरी करनी चाहिये, क्योंकि तभी नाथन को नाभि सहित सम्पूर्ण ढाल मिल सकेगी। उन्हें अभी ही विश्वास हो चुका है, यह मुझे निश्चित मालूम होता है कि'—और उन्होंने दोनों वृद्धों की ओर देखा, जिन पर स्पष्ट स्वीकारिता के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे। 'नाथन उक्त भन्यवंश का उत्तराधिकारी है, और उसे अपने दादा की वसीयत पूरी करनी है।'

जिदालिया ने दोनों की ओर से कहा—'और तब हम अवशिष्ट दोनों टुकड़ा को भी दे देंगे, जो कि हमारे पास हैं।'

कप्तान काश्यप ने चोगे की मुहर तोड़ डाली, ऊपर का चमड़ा हटा दिया और फिर चर्मपत्र को दोनों वृद्धों के हाथों में दे दिया। वह उनमें से एक एक को इधर इधर देख कर अलग रखते जाते थे, क्योंकि वह उनके काम के न थे। और अन्त में उन्होंने एक अत्यन्त पुराना, पीला, अत्यन्त कोमल चमड़ा निकाला। उन्होंने उसे फैला दिया और फिर वह दक्षिणावर्त इब्रानी लिपि की पंक्तियों को पढ़ने और आपस में राय करने लगे। जितना ही वह आगे बढ़ते जाते थे, स्याही तेज और अक्षर स्पष्ट होते जाते थे।

स्यल की नाक पर एक जोड़ा मोटा कछुये की हड्डी की कमानी वाला चश्मा था और जिदालिया के हाथ में एक वृहत्प्रदर्शक शीशा था। दोनों ही चर्मपत्र के देखने में तल्लीन थे। सब लोग चुपचाप बैठे थे, किसी ने उनके ध्यान को विकीर्ण करने का कुछ प्रयत्न न किया। वह बहुत धीमे स्वर में इब्रानी भाषा में आपस में बात भी करते जाते थे। शिव बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा था कि उनकी अँगुली एक एक पंक्ति से

होती अंत पर पहुँची। जब पढ चुके तो, उन्होने एक ठंडी साँस ली। इससे सब के हृदय मे धैर्य हुआ।

रुयल् ने कहा—'हमे विश्वास हो गया।'

जिदालिया ने वहृत्प्रदशक को अलग रख कर कहा—'पूर्णतया।

चन्द्रनाथ ने बहुत नम्रता से कहा—'क्या मैं भी इसे देख सकता हू।'

दाना यहूदी वद्धो ने उनके मुख की ओर बडे आश्चय से देखा, उन्होने पत्र को दे दिया और अब यह उनकी बारी थी कि प्रोफेसर चन्द्र की ओर देखें। यद्यपि वह दोनो ही चन्द्रनाथ से अधिक लम्बे और वद्ध थे, लेकिन उनकी लम्बी श्वेत दाढी बतला रही थी कि वह उन्ही मे से हैं। उनके विस्तृत ललाट और कोमल दष्टि से उन्होने जान लिया कि यह कोई पंडित पुरुष है। प्रोफेसर को उसके देखने मे उतना समय नही लगा इसका कारण यह भी था कि उन्ह बारीकी से परीक्षा करना नही था। उन्होने देखा कि कैसे लिपि क्रमश पुरातन इब्रानी लिपि से बदलती बदलती आधुनिक लिपि तक पहुँच गई है।

प्रोफेसर ने चमपत्र पर हाथ रखकर कहा—'यदि यह सच्चा है, तो नाथन एक अत्यन्त प्रतिष्ठित और पुरातन वंश से सम्बन्ध रखता है।'

जिदालिया— यह बिलकुल सच्चा है।'

रूयल् ने अपनी स्वीकृति सिर्फ शिर हिला कर दी।

सेठ इब्राहीम—'और दूसरे पत्र ?'

रूयल — वह जरूरी नही हैं।'

सेठ— बिल्कुल नही ?'

रूयल —'नही! नाथन के लिये वह बहुमूल्य हैं, हमारे लिये उनकी जरूरत नही।'

रुयल्—'नाथन को उन्हे रखना चाहिये और वह अवकाश के समय पढेगा। अब हमे ढाल का जोडकर आगे देखना है।'

दोनो वद्धो ने अपने कपडो के नीचे से शिर के द्वारा वैसे ही दो चमडे के थैले निकाले। उनमे से उन्होने ऊँट के बालो के कपडे से ढँके ढाल के टुकडे बाहर किये। कपडे के हटाते ही फिर वही सोने की चमचमाहट, रत्नो की जगमगाहट, नक्काशियो सजावट, दशको के हृदयो को आश्चर्यान्वित करने लगी। एक ही क्षण मे सेठ इब्राहीम ने लेकर तीनो टुकडो को मिला दिया।

नाभि को छोड कर सम्पूर्ण ढाल वहाँ मौजूद थी। किनारे पर बहुत सुन्दर नक्शकारी थी, जिसमे कमल, पुष्प और लताओ का चित्र था। फिर तीन समकेन्द्रक

वृत्त एक के बाद एक, जो रत्नो के जडाव से बने थे और उनके भीतर विरुद्ध शिखरक त्रिकोणो से बना नीलम जटित पटकोण । रत्न सभी महाघ थे, वह दिन के प्रकाश मे चमक रहे थे । गोल ढाल मे पीत सुवर्ण दर्पण की भाति चमक रहा था । फटे हुए किनारे दिखाई दे रहे थे । ढाल के नीचे बिल्कुल उसके नाप की दरियाई घोडे की मोटी खाल थी । बीचोबीच एक गोल स्थान था, जिसे नाथन को अभी प्राप्त करना था ।

जिदालिया धीरे से बोले – 'इधर से हम पता नही लगेगा, नाभि का पता उस ओर से मिलेगा ।'

सेठ जी ने ढाल को उलट दिया और टुकडे अलग न हो जाय, इसके लिए नीचे कई किताबें रख दी । अब उसकी आकृति घडे की आधी पेंदी की सी थी । रूयल् ने अपना चश्मा ठीक किया और जिदालिया ने वृहत्प्रदर्शक शीशा उठा लिया । बीच वाले गोल छेद के पास चारो ओर उस भूरे चमडे पर हल्की लाल स्याही के कुछ चिह्न दिखाई पड रहे थे, यह अक्षर न थे । उनका अभिप्राय समझना असम्भव-सा मालूम होता था ।

दोनो वृद्ध कितनी ही दर तक बडे ध्यानपूर्वक देखते रहे । उनके चेहरे से जान पडने लगा कि उन्ह भी उनका मतलब ठीक नही लग रहा है ।

'कृपया जरा मुझे दीजिये ।' प्रोफेसर चन्द्रनाथ न बडी नम्रता के साथ जिदालिया की ओर वहत्प्रदर्शक के लिये हाथ बढाया । वृद्ध ने दे दिया, और सब लोग प्रोफेसर की ओर देखन लगे ।

वह शीशे को खिसकाते हुए उस आकृति को देखन लगे और अन्त मे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ के चिह्न बिल्कुल उड गये स मालूम होत थे और यही सब भटक रहे थे ।

शीशा लौटाते हुए उन्होने कहा—'म समझता हूँ, यह किसी इमारत का नक्शा-सा है, और यह अस्पष्ट रेखाएँ, किसी पहाड मे खुदी हुई कब्र को बतला रही है ।'

रूयल् ने बडी गम्भीरतापूर्वक कहा—'हा ! बिल्कुल ठीक, लेकिन जानना यह है कि उसका द्वार कहा है ?'

चन्द्र—ओह ! यहा उसके जानने की कुजी नही है ।'

रूयल्—'अवश्य होनी चाहिये । हम जानते हैं कि यह पवत मे खुदा हुआ एक मकबरा है । हम जानते हैं कि यह खजाना-पट्टा के नीचे छिपा हुआ है ।'

चन्द्रनाथ न आश्चय से कहा—'खजाना पेट्टा । खजाना-पेट्टा के नीचे ढका है !'

रूयल ने उनके आश्चयजनक शब्दो पर कुछ न ध्यान देते हुए कहा—'नाभि का रहस्य उसी प्रवेश-द्वार पर निभर है। हमारा यहा का आना निष्फल हो जायगा मेर मित्र जिदालिया बिन इश्राईल और मेरा इन ढाल के टुकडो का देना भी निष्फल चला जायगा, हमारे मित्र स्वर्गीय सिमियन बिन इश्रा की इच्छा नही पूण हो सकेगी, यदि मकबरे के प्रवेश द्वार का पता न लग सका। नाथन बिन इलीजर-दशना का एक मात्र उत्तराधिकारी नाभि स वचित रह जायेगा यदि उसका पता न लगा। नाभि इसी मकबरे मे है, लेकिन उसके भीतर कसे जाया जा सकता है? यह मिटी रेखाये यदि स्पष्ट होती तो काम बन जाता।'

चन्द्रनाथ मन मे तक वितक करते हुए बोल उठे—'कैसे छिपा है? और कहा?'

रूयल् ने कुछ आशावन्ति होकर पूछा—आप खजाना पेट्रा को जानते हैं?'

चन्द्रनाथ—'पूणतया उसका नक्शा भी।

रूयल—'वहा दो दालान है, जिनके द्वार बडे हाल म प्रवश करने से पहले वाली ड्योढी मे खुलते हैं। तीन सीढी चढन पर उत्तरी दालान म प्रवेश होता है, और थोडा चलन पर फिर तीन सीढी—कुल मिलाकर छै सीढी। दालान के दूसरे छोर पर पूव की ओर पत्थर म खुदी हुई दो समाधिया है, जो अब रिक्त है, लेकिन कभी उनमे दो शक्तिशाली पुरुषो के शव थे। वह उस—उसस भी बढकर शक्तिशाली—पुरुष के रक्षक थे, जो वही कही शान्तिपूवक सोया हुआ है। ढाल की नाभि उसी की सरक्षकता मे है। यह नक्शा उत्तरी दालान, उसकी छहा सीढिया और दोना समाधिया का है।'

चन्द्रनाथ ने बडी सरलतापूवक कहा— ठीक।'

रूयल्—'और वही कही पर दानो समाधियो के बाद या नीचे कोई दूसरी दालान है। जिसमे एक सगखारे की शवाधानी म वह महाबलशाली राजा ढाल की नाभि को छाती से लगाय सोया हुआ है।'

चन्द्रनाथ ने बडी जिज्ञासा और उत्सुकता क साथ कहा—समाधियो के बाद या समाधिया के नीचे?'

रूयल—'पहाडी मे, लेकिन वह कहाँ से खुलेगा, यह नक्शे ही स मालूम हो सकता है।

जिदालिया ने जो बराबर रूयल की बात स सहमत होने के लिये अपने शिर का हिलाते जा रहे थे—चन्द्रनाथ के मांगने पर फिर वृहत्प्रदशक उन्हे दे दिया। लेकिन उनका सब प्रयत्न निष्फल गया, और रहस्य न खुला।

शीशे को लौटाते हुए चन्द्रनाथ ने कहा—'मुझे एक उपाय सूझता है जो किसी

बदर हानिकर भी हो सकता है, और बिना नाथन और मेरे दोनो बुजुर्गों की सम्मति के मैं उसे काम मे नही ला सकता।'

मेरी सम्मति दी हुई समझिये। नाथन ने कहा, उसका विश्वास चन्दा मामा पर वैसा था ही।

जिन्नालिया—'क्या आप उसे बतावेंगे, प्रोफेसर महाशय ?'

चन्द्रनाथ धीरे धीरे कहने लगे—यद्यपि मैं इसे निश्चयपूर्वक नही कह सकता, लेकिन मुझे बहुत कुछ उम्मीद है, कि अम्ल के प्रयोग से वह स्पष्ट हो सकेगा, लेकिन साथ ही उससे मिट जाने का भी डर है। ऐसिड से ढाल का नुकसान न होगा और न चम ही का—हाँ, इसका रग कुछ बदल सकता है, सो भी उस थोडे से स्थान पर जहाँ उसे लगाया जायगा। लेकिन तो भी यह सदिग्ध है।'

इसके बाद चारो ओर पूर्ण नीरवता छा गई।

उसी समय पिस्तौल की आवाज की तरह अकस्मात् और उच्च स्वर से शिव बोल उठा—ठीक ! क्या मामा, नाथन और आप सब भी नही देख रहे हैं कि यह सारा नक्शा नकल किया जा सकता है ? हम दोनो इसको अच्छी तरह उतार सकते है। और फिर यदि उतने हिस्से की रेखा मिट भी गई तो कोई हर्ज नही हमारे पास नकल तो बनी रहेगी।'

चन्द्र—ठीक। शिव।'

दोनो वृद्धो ने भी इसे स्वीकार किया।

तब चन्द्रनाथ ने शिव से कहा—' तो तुम और नाथन औरो की देख रेख में तब तक इसको उतारो, जब तक मैं किसी पास की रासायनिक दूकान से अम्ल लाता हूँ।'

नकल तैयार हो गई। चन्द्रनाथ ने एक लकडी की तीली के सिरे पर लपटे हुए रुई के फाहे के एसिड को धीरे धीरे उस जगह पर लगाया, जहा रेखा दिखाई नही दे रही थी। गहरी भूरी खाल का रग बदल कर पीला हो गया और उस पर स्पष्ट लाल रेखायें उभड आइ। सब बडे ध्यान से देख रहे थे और रेखाओ के उठते ही सभी की आँखें चमक उठी। उनका रग सिन्दूर की तरह लाल था और चमडा हल्दी की तरह पीला।

'बस !' शिव अधीर होकर बोल उठा, क्योकि उसे डर मालूम होने लगा कि अधिक अम्ल के उपयोग से कही रेखाए जल न जायें।

और सचमुच अब उसकी जरूरत भी न थी। वहा दोनो समाधियो मे से प्रत्येक के ऊपर अन्तिम सिरे की ओर दो हाथो का चित्र था। वह नीचे की ओर

अँगुली का सकेत कर रहे थे। दोनो ही हाथो की सकेतक अँगुलियो का सिर एक स्थान पर मिलता था, जो कि दोनो समाधिया के बीच मे पडता था।

रूयल ने कहा—'हाँ! दालान नीचे है।'

जिदालिया—'और अँगुलिया का सिरा ठीक उसी स्थान पर है, जहाँ से नीचे जाने का माग है।'

कप्तान—और चट्टान वहाँ से खुल जायेगा ?'

जिदालिया—'हाँ! पूरा जोर लगा कर दबाने पर।

शिव ने वडे आनन्द से कहा—'तो, हमने पा लिया।

नाथन की इच्छानुसार ढाल के टुकडे फिर एक चमडे के थैले मे बन्द करके और चमपत्र को लपेट कर फिर सब को उसी पालवाल कपडे मे लपेट दिया गया, और तब उसे अस्थायी तौर पर बक की वज्र-कोठरी म रख दिया गया।

सेठ जी न कहा—'अब एक बजे का समय हो गया है, भोजन करने चलना होगा, लेकिन फिर तीन बजे क्या हम लोग एकत्रित हो सकते हैं ?'

सब हा करके खडे हो गये।

दूसरी बैठक मे रूयल ने बतलाया कि कैसे मेटिया ने दो बार मेरे हिस्से वाले ढाल-खड को हथियाना चाहा था। पहिली बार सिमियन के सम्मुख ही कोशिश की थी। उसकी विश्वाघातकता का पता पाकर उन्हाने उसे अपनी नौकरी से हटा दिया, लेकिन वह अपने साथ कई कागज चुरा ले गया था जिन्ह कि वह फिर न पा सके।

मेटियो सीधा लिस्बन गया। उसने रूयल् के पास जाकर कहा कि मुझे मेरे मालिक सिमियन बिन इज्रा ने यह चिट्ठी देकर भेजा है। चिटठी पर सिमियन का नकली हस्ताक्षर था। उसमे मेटियो के बारे मे लिखा था कि वह दशा परिवार का वशानुगत अत्यन्त विश्वासपात्र नौकर है। इसके द्वारा तुरन्त अपने हिस्से की ढाल भेज दीजिये। दोनो टुकडो को मिलाकर उसके पीछे की रेखाओ की कुछ गलतिया ठीक करनी है। फिर अन्त मे जाली दस्तखत थी।

जाल पक्का न बन सका था इसलिए रूयल् को सन्देह हो गया। हस्ताक्षर बहुत कुछ मिलता था। लेकिन पत्र के अनेक अधिक प्रशसा वाक्य और भाषा प्रकार सिमियन बिन इज्रा के लेखो के प्रतिकूल थे। उन्होने मेटियो से कहा कि जब तक मैं स्वय उनसे पत्र व्यवहार द्वारा न निश्चित कर लू तब तक मैं इस पत्र पर अमल नही कर सकता। उन्होने मेटियो के तब तक वहा रहने का इतजाम कर दिया।

रूयल् अपनी कथा को इस प्रकार कहते हुए बोले—इस पर मेटियो ने बडे विनयपूवक कहा कि मुझे अपने ही घर मे रहने की आज्ञा दीजिये। मैंने कहा कि

नहीं, दूसरे के घर में मैंने प्रबन्ध कर दिया है। वहाँ तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न होगा? इस पर उसने रहने से इन्कार कर दिया।

शिव—क्योंकि, मनोरथ सिद्ध होने की आशा जाती रही।

स्मल्—हाँ! बिल्कुल यही।

इसहाक ने पूछा—'और दूसरी कोशिश कब की?'

स्मल्—एक वर्ष हुआ। उसने मेरे नौकर को प्रलोभन देकर मिला लिया, रात को दोनों मेरे घर में घुस आये। नित्य की तरह ही ढाल को अपने सीने पर बाँधे मैं चुपचाप अपने शयनागार में सो रहा था। वह चुपके से मेरे कमरे में चले आये। भीतर घोर अंधकार था। उनमें से एक ने टटोलते हुए मुझे छू लिया। मैंने उसे पकड़ लिया उसी समय दूसरे ने छुरा निकाल कर मेरे ऊपर चलाया लेकिन वह उस आदमी के कन्धे पर लगा, जिसको मैंने पकड़ रखा था, और वह गिर कर कराहने लगा। इसी समय और नौकर दौड़ आये। उन्होंने चिराग जलाया, देखा गया तो वहाँ खून में सराबोर मेरा नौकर था और उसकी बगल में चाकू पड़ा हुआ था। दूसरे आदमी का वहाँ कुछ पता न था। वह व्यथा से विह्वल था और निश्चय हो रहा था कि जियेगा नहीं। उस समय उसने पश्चात्ताप किया। मुझसे क्षमा माँगी और स्वीकार किया कि दूसरा आदमी मेटियो था।'

शिव—फिर वह मर गया?'

स्मल्—'उस समय नहीं। वह अच्छा हो गया। इसी एक अपराध के अति-रिक्त वह अपने सारे जीवन में हमारा बड़ा विश्वासपात्र नौकर रहा था। इसीलिए मैंने उसे माफ कर दिया।'

जिदालिया—'और मास्को भेज दिया?'

स्मल्—'हाँ! मुझे उस पर विश्वास था। लिस्बन में तो वह असफल रहा, लेकिन मेरे नौकर ने बताया कि वह मास्को जायगा। लेकिन कौन लिस्बन से मास्को जाकर जिदालिया बिन इब्राहीम को सजग करे, और ऐसे मायावी से उनकी रक्षा करे? इसके लिए मैंने उसी नौकर पर विश्वास किया, और मेरा विश्वास अयुक्त न हुआ।

जिदालिया—अयुक्त नहीं हुआ, यही नहीं बल्कि वह अत्यन्त गुणी सिद्ध हुआ। शोक! कि मैं उस पवित्रात्मा के महान् ऋण का प्रतिशोध न कर सका। अकस्मात् और अँधेरे में संयोग से उसने मेरे मित्र का प्राण बचाया, लेकिन जान बूझकर मैं उसने मेरे प्राणों की रक्षा की।'

'कैसे!' नाथन ने बड़े आवेश के साथ पूछा, और सब लोग भी वृद्ध की अगली बात को सुनने के लिए उत्सुक थे।

जिदालिया—'मेरे ढाल देने से इन्कार करन पर जब मेटियो ने रिवाल्वर निकाल कर चलाया उसी समय जान बूझकर वह मेरे और उसके बीच मे आ गया।'

शिव—'और वह भाग गया ?'

जिदालिया—'रिवाल्वर की आवाज की खलबली मे वह न पकडा जा सका।'

नाथन—'और नौकर ?'

रूयल—'उसने इस प्रकार अपने पहले पाप का सराहनीय प्रायश्चित किया, और अपने आपको बलि देकर मेरे मित्र को प्राणदान दिया।'

नाथन का काम

रात के समय जब सब लोग फिर एकत्रित हुए ता चन्द्रनाथ ने उसी कथा को जारी रखते हुए कहा—'इन सब बाता से स्पष्ट मालूम पड रहा है कि मेटियो एक पूर्वानश्चित क्रम के अनुसार काम कर रहा ह। उसन पहले रूयल पर कोशिश की फिर जिदालिया पर और तब नाथा पर।'

सेठ—'और तीना जगह असफल रहा।

चन्द्रनाथ—'हा ! लेकिन इससे जान पडता है बटेविया से वह कहाँ-कहाँ होता गत वष पोर्तुगाल पहुँचा वहाँ से फिर रूस गया, वहाँ से फिर भारतवष।

सेठ—और भारत स कहाँ ?

कप्तान काश्यप—मेरे पास यह पत्र है, जिसे मैंने एक मास हुआ, पाया था। आज इसी की चचा मैं पूर्वाह्न के समय करने जा रहा था, कि मुझे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि मेटियो अब भी या कुछ समय पहले काहिरा मे रहा है।'

सेठ—'आह ! मैंने रूखे तौर से आपको यह कहने से राक दिया था कप्तान, लेकिन उससे मरी इच्छा यही थी कि क्रमश एक के बाद एक काम होना चाहिये, सब को घाऊँ माऊँ न कर देना चाहिये। मेटियो का पहले जिक्र आ जाने से हमारा ध्यान तत्कालीन काम से जरूर हट जाता। अब यह समय है मेटियो के सबध मे विचार करन का।'

कप्तान—क्या मैं पत्र को पढ दूँ ? यह स्वय अपने आशय को स्पष्ट कर देगा।'

मेरी पत्नी, प्रोफेसर और इसहाक इसे देख चुके हैं। यह है। पत्र खोलकर काश्यप ने पढ़ सुनाया। इसके बाद बिल्कुल नीरवता छा गई।

सीता जी की आँखें चमक उठी, और आनन्द के मारे मुख आरक्त हो गया। उन्होंने इसके लिये कृतज्ञता प्रकट की।

सेठ—'हम लोगो को अत्यन्त आनन्द होगा यदि दोनो श्रद्धेय मित्र रूयल् और जिदालिया भी यहाँ रह कर अपनी सम्मति से हमे फायदा पहुँचावें। मैं उनकी सेवा के लिये सवदा तैयार रहूँगा। यह अपना घर समझ कर यहाँ जब तक चाहे रह सकते हैं।

रूयल्—'लेकिन मुझे तुरन्त लिस्वन लौटना है।

जिदालिया—और मुझे मास्को।

रूयल—मेरा बोझ उतर गया।

जिदालिया—'और मेरा भी।'

सेठ—लेकिन आप दोनो महानुभावो को आगे के परिणाम को जानने का अधिकार है। इसलिये जैसा कुछ होगा, मैं उसको पत्र द्वारा या किसी और तरह से आप लोगो को सूचित करूँगा।'

वहाँ से विदा होने के समय चमपत्र नाथन ने ले लिये लेकिन ढाल को वहीं सुरक्षित समझ कर बक ही मे रहने दिया।

दोनो वृद्ध पुरुषो से—जो कि स्वजातीय, हितचिन्तक और उसके पितामह के परम मित्र थे—नाथन को अलग होना बहुत ही कष्टमय प्रतीत हुआ। और सब लोग भी इससे प्रभावित हुए बिना न रहे। दोनो पुरुष इतने अधिक वृद्ध थे कि वह फिर नाथन को देख सकेंगे, यह कम सम्भव मालूम हो रहा था। नाथन उनके लिए उस स्मृति का जीवन चिह्न है, जो उनके और स्वर्गीय सिमियन के बीच मे थी। वह उस वंश का एकमात्र उत्तराधिकारी बच रहा था, जो किसी समय अत्यन्त प्रतापशाली यहूदी जाति का शिरोभूषण था। फिर उन्होंने उसके ललाट पर चुम्बन दिया और शिर पर हाथ रखकर अश्रुपूर्ण नेत्र और विकम्पित स्वर से इस्राईल के ईश्वर के नाम से आशीर्वाद दिया।

इसहाक को यात्रारम्भ से पहले अपनी मा से मिलना और उससे अपने नये प्रोग्राम के बारे मे समझना आवश्यक था, क्योंकि जब से उन्होंने अवकाश लिया था तब से माता आशा करे बैठी थी कि अब बेटा आँखो से ओझल न होगा। इसीलिये निश्चित हुआ कि आज काश्यप मण्डली के साथ ही वह भी हैदराबाद जायें, और कल को लौट कर मिश्र की यात्रा करेंगे।

महीने के बाकी दिन काश्यप परिवार, प्रोफेसर और नाथन ने काश्यप भवन ही मे बिताये। चमपत्रो के पढने मे प्रोफेसर चन्द्रनाथ ने नाथन की बडी सहायता की। उनके बिना उनके कुछ अंश को वह न पढ सकता।

बैंक की जमा देखने से मालूम हुआ कि नाथन के दादा ने अपने पौत्र के लिये पूरी सम्पत्ति जमा कर रक्खी है। एक पत्र के पढने से यह भी मालूम हुआ, कि सेठ इब्राहीम नाथन के दादा के खजान्ची ही न थे, बल्कि नाथन के सरक्षक भी। उन्हे वह अधिकार दिया गया था कि अपने कर्त्तव्यपालन के लिये जो चाहे, सो खर्च कर सकते है। नाथन को आदेश दिया गया था कि आर्थिक विषयो पर वह बराबर उनकी सम्मति ले, और नाभि के प्राप्त करने के प्रयास मे भी उनकी सलाह ले। उसे भयङ्कर मायावी मेटियो से सजग रहने के लिये अच्छी प्रकार कहा गया था।

एक पत्र मे ढाल का सक्षिप्त इतिहास भी दिया था। ढाल पर के तीनो समकेन्द्रक वृत्त, विरुद्ध शिखरकत्रिकोण राजा दाऊद की बुद्धि के चमत्कार थे। पुरातन समय मे एक बार यह ढाल नाथन के वश मे रही। इस वश ने थोडे समय के लिये यहूदी गौरव का फिर पुनरुज्जीवित किया था। उसने पुरोहित राजाओ के नाम पर कितने ही दिनो तक यरूशिलम पर शासन किया था। यह लोग एक ही साथ पुरोहित और राजा दोनो थे। पहले ढाल का मध्य भाग साधारण ही था लेकिन इन्ही राजाओ ने उसे और कोई सुन्दर रूप दिया जिसे सिमियन बिन इज्रा के भाग्य म देखना न बदा था। यह नाथन के लिए था कि वह उस प्राप्त करके अपने पास रक्खे, क्योकि वह पुरोहित राजाओ के वश का एक मात्र उत्तराधिकारी था।

इस अवसर पर शिव ने, जो कि वहाँ मौजद था, नाथन के मुख की ओर एक नय भाव से प्रेरित होकर देखा।

शिव—वह कौन थ मामा ?'

चन्द्र—'तुम्हे हथौडा वाले यहूदी का नाम मालूम है, शिव ?'

शिव—'हाँ बाइबिल की पुस्तक पढते समय मैंने एक बार उसका नाम पढ़ा था। विजेता वीर की भाँति जिसका यश फला, वही न मामा ?'

चन्द्र—हाँ, वह सचमुच एक योद्धा था।'

शिव—'तो यह ढाल उसी की है ?'

चन्द्र—म नही कह सकता। मेरा विचार ऐसा नही है। वह पुरोहित राजा नहा था। वह एक पुरोहित-योद्धा था। उसका भाई सिमियन थस्सी—जिसे दाही भी कहत हैं—नाथन का पूर्व पुरुष था, और वही आदिम पुरोहित राजा था। उसका उत्तराधिकारी यूहन्ना हुआ। उसके पाँच पुत्र थ, जिनमे से दो का नाम मालूम नही है और उन्ही मे से एक की परम्परा मे नाथन है।'

शिव—'लेकिन ढाल—यह किसकी है ?'

शायद धमपत्र से मालूम हो और चन्द्रनाथ दस्तावेज़ो को देखने लगे।

लेकिन वहाँ इसके बारे मे कुछ न था। अनुमान से जान पडता था कि वह और भी पुरातन समय से चली आती है। सिमियन थस्सी या उसके उत्तराधिकारियो ने नाभि को उसमे और जोड दिया। यह उसकी नक्काशी से मालूम होता था, जो कि निस्सदेह उसे और भी प्राचीनकाल से सबद्ध करती थी।

ढाल के तीन टुकडे पाँच सौ वर्षों से सिमियन, रूयल और जिदालिया के वश मे चले आते थे। वशावली के आधार पर इन तीनो खानदानो म यह धारणा थी कि दशना ही इसके असली अधिकारी है।

कुल्हाडे से ढाल के तीन टुकडे किये गये थे। जब यह टूटी न थी तो समाधि के वीरो की छाती से बँधी हुई रखी थी। समाधि खजाना से भी अधिक प्राचीन है। डाकू अरबो ने एक समय कब्र को तोड डाला और फिर ढाल उनके हाथो से खरीद से या किसी तरह एक अरब सौदागर के हाथ मे आ गई। सिमियन रूयल और जिदालिया के पूवजो ने किसी तरह खबर पाकर उसे खरीदने की बातचीत की, जिस पर अरब ने अपने कुल्हाडे से तीन टुकडे करके बेच दिया।

पीछे यह नियम हुआ कि हर पचासवे वष तीनो खानदानो के प्रतिनिधि खजाना पेट्रा म एकत्रित हो। वहा गुप्तरीत्या वह सब भागो को मिला कर देखें। दसवी बार की मुलाकात के बाद जो भी दशना वश का कनिष्ठ उत्तराधिकारी हो उसके हाथ म उसकी उन्नीसवी जन्मतिथि को तीनो ही टुकडे सौंप देना चाहिये। फिर उसके ही ऊपर नाभि के प्राप्त करने का भार रहेगा।

दसवी मुलाकात से पूव ढाल के पीछे की ओर का नकशा भी न देखा जाना चाहिये, यह भी नियम था। वास्तव मे यह ढाल यहूदी जाति के गाढ के समय मे धैय धारण का ज्वलन्त चिह्न थी। पुरोहित राजाओ के समय जैसे उन्हाने अपने ही ऊपर विश्वास किया, वैसे ही उन्हे फिर भी करना चाहिये। दाऊद के चमत्कारिक चिह्न उनकी शक्ति के उदाहरण थे।

यह सब सिमियन बिन इज्रा के हाथ से लिखा हुआ था। इसकी स्याही तेज थी, जिसस जान पडता था कि शायद दसवी मुलाकात के बाद लिखा गया हो। वहाँ लिखा था कि ढाल मिलने के बाद जल्दी ही नाथन को नाभि के प्राप्त करने के लिये उठ खडा होना चाहिये। अरब उसके माग मे बाधक होगे। अरब कब्र खोद डालने, मन्दिर तोड डालने म बहुत मशहूर है अत नही कहा जा सकता कि कब उस कब्र को भी खोद डालें जिसम कि नाभि है। मेटियो उन अरबो से मिल कर इसमे बहुत बाधा डालेगा। वह ऐसा मायावी शत्रु है कि जिससे नाथन को अत्यन्त जागरूक रहना होगा। उसे ढाल का इतिहास मालूम है। उसने बहुत से चमपत्रो की प्रतिलिपि

भी कर ली है। वह क्रूर, धूर्त, लोभी और साहसी है। वह जैसे होगा, तैसे नायन को उसके अधिकार से वंचित करना चाहेगा। वह चाहेगा कि किसी तरह नाभि सहित सम्पूर्ण ढाल मेरे हाथ में आ जाय।

चमपत्र के लेख का ख्याल करके कप्तान ने कहा—'जल्दी ! क्या इसहाक से बिना कुछ सुने ही ?'

चन्द्र—'मैं तो ऐसा ही समझता हूँ, लेकिन इन सब बातों के साथ सेठ इब्राहीम को एक पत्र लिख कर पूछो कि क्या करना चाहिये।'

शिव—'आपने कहा था कि यह देरी कोई देरी नहीं है। यदि महाशय इसहाक मेटियो को पकड़ कर पुलिस के हाथ में दे सकें, तो यह बहुत ही अच्छी बात होगी। मेटियो मार्ग का सबसे बड़ा कंटक है।'

कप्तान—'और अरब भी।'

नायन—'विशेष कर मेटियो से सम्बन्ध रखने वाले।'

चन्द्र—'सेठ इब्राहीम को लिखो। शिव का कहना बिल्कुल ठीक है, मेटियो की गिरफ्तारी सबसे अधिक वाञ्छनीय है। अरबों की अपेक्षा उसी से मैं अधिक भय समझता हूँ। वह पत्र तुमने रक्खे हैं न प्रताप, जिन पर मेटियो की अँगुलियों का निशान है ?'

कप्तान—'हाँ ! मैंने उन्हें बड़े यत्न से रख रक्खा है।'

शिव—'कौन पत्र ?'

तब कप्तान ने 'सौदामिनी' पर की मेटियो की सभी कारवाई कह सुनाई। उन्हें इतना तो मालूम था कि बटेविया में मेटियो और इसहाक का साम्मुख्य हुआ था, लेकिन उन्हें यह न मालूम था, कि उसने कागज-पत्रों की भी उल्टा पल्टी की थी।

चन्द्रनाथ—'जब स्वेज की ओर हम चलें, तो उन पत्रों को न भूलना, उनकी वहाँ शायद हमें जरूरत पड़ेगी।'

नायन ने आश्चर्य के साथ कहा—'कब आप चल रहे हैं, मामा ?'

चन्द्रनाथ—'मैंने कहा—हम।'

शिव आँखें फाड़कर बोल उठा—'हम ? क्या आपका अभिप्राय हम सभी से है—अर्थात् नायन, तथा तुम और बाबू जी मामा ?'

चन्द्रनाथ—'हाँ ! यही नायन के नाभि प्राप्ति का मतलब पेड्रा पर चढ़ाई करना है और ऐसी चढ़ाई में हम सभी शक्तियों की आवश्यकता है। आग का-नैम करना होगा, मैं इस अभी नहीं कह सकता लेकिन हमें मिश्र होकर जाना पड़ेगा। इसहाक इस समय घर का काम कर रहे हैं। वह हमारा रास्ता साफ कर रहे हैं, और हम उनके काम में किसी प्रकार भी बाधक न होना चाहिये।'

कप्तान—'इसी से प्रश्न का उत्तर मिल जाता है, चन्द्र।'

चन्द्र—'लेकिन, तुम्हें सेठ इब्राहीम को लिखना होगा?'

कप्तान—हां! मैं तुरन्त लिखने जा रहा हूं।'

शिव—'चढाई की पूरी तैयारी करनी पडेगी, मामा?'

चन्द्र—'बिलकुल ठीक! और इसमे कुछ समय लगेगा। हमे जल्दी से काम न लेना होगा। सब बातो पर पहले ही से भली प्रकार विचार कर लेना होगा।'

सेठ इब्राहीम ने अपनी राय प्रोफेसर की राय के समान ही दी। उन्होंने अपने पत्र मे लिखा कि इसहाक की सूचना इसमे बाधक न होकर साधक होगी। आप लोगो को यात्रा आरम्भ करने से पूर्व यह जान लेना चाहिये कि मेटियो कहा है।

इस पर उन्होने प्रतीक्षा करनी शुरू की। इन सारे दिनो को उन्होने उडन के कार्य म लगाया। 'दर्शना' एक दर्जन बार बाहर चला गया, और अब की नायन और शिव को सचालन का भी भार दिया गया। चन्द्रनाथ उनके साथ पिछली सीट पर बैठते थे, और उनके चलाने का निरीक्षण करते थे। कप्तान काश्यप भी चन्द्रनाथ के साथ चढे, और उन्होने वायु समुद्र की यात्रा का भी अच्छा आनन्द उठाया। सीता देवी यद्यपि लडको को मशीन से अत्यन्त सम्बद्ध देखकर किसी प्रकार उनके उडने उडाने से सहमत भी हो गई थी, लेकिन जब कप्तान पहले पहल सवार हुए, तो वह बहुत घबडा उठी, और तब तक उनके हृदय को चैन न आया, जब तक कि उन्हे फिर सकुशल विमान से उतर कर जाते न देखा।

सीता ने असन्तोष प्रकट करते हुए कहा—'आप बहुत भारी है कप्तान।

कप्तान—'नही प्रिये, मैंने तो अपने आपको तूल सदृश हलका पाया। यह तो विष्णु की गरुड सवारी-सा मालूम होता था। यह एक तरह का जहाज है, जिसका समुद्र असीम दूर तक फैला हुआ है—ऐसा जहाज है, जो स्वेच्छापूर्वक उस निस्सीम समुद्र की दसो दिशाओ मे विचार सकता है। सीता तुम्हे मालूम नही, चन्द्रनाथ और दोनो लडको का इस पर असाधारण प्रभुत्व है, यह उनकी अँगुलियो पर नाचता है।

सीता—'देखना, कही उसकी मुहब्बत के जाल मे न फस जाना?'

कप्तान—मैं तो जल समुद्र और जलयान के प्रेमपाश से बद्ध हो चुका हूँ सीते, भला उससे मुक्त होकर कैसे इस नूतन प्रेम म फस सकता हूँ?'

महीने के अन्त मे इसहाक का तार मिला, वह सक्षिप्त था—'अकाबा तक देखा, पत्र जाता है।

सेठ इब्राहीम को भी एक प्रति मिली थी, और वह उनके लिए काफी थी, उन्होंने उसी समय करांची आने के लिए पत्र भेजा।

तार स्वेज स भेजा गया था । इसहाक ने स्वय अकाबा तक मेटियो का पीछा किया और फिर वह स्वेज लौट आय जहाँ से उन्होने तार और पत्र भेजा । अपनी अनुपस्थिति म अवश्य उन्होने किसी भी विश्वासपात्र व्यक्ति को उस पर नजर रखने के लिये छोडा होगा । शायद उन्होने अब तक उसे पुलिस के हवाले कर भी दिया हो, तो भी आश्चर्य नही । चाहे जो कुछ हो यह सफलता बहुत थोडे ही समय म हो गई । पत्र से सब बात खुलेगी । तब तक ६ जनवरी को सेठ जी ने अपने घर पर सबको बुला कर यात्रा की तयारी के विषय म सलाह करनी चाही ।

चढाई

हम अभी इसे नही कह सकत कि इसहाक क पत्र म क्या होगा । [illegible] भी यह निस्सन्देह है कि उन्होने उसका पता लगा लिया है और [illegible] पीछा भी किया । और यह हमारे लिय इतना काफी है कि [illegible] का कोई खाका खीच सकत है ।—सेठ इब्राहीम न कहा ।

चन्द्र— और पत्र के प्राप्त होन पर उसे भर सकते हैं [illegible]

सेठ—'हाँ । और आप क्या वहाँ जाने के लिए [illegible]'

चन्द्र— बिल्कुल तैयार ।'

सेठ—'मैं इसे सिद्धवत् समझ लेता हूँ कि [illegible] सनद्ध होंगे ।'

कप्तान ने बडे जोश के साथ [illegible] चाहता हूँ ।

सेठ—'नाथन का जाना ही होगा ।

शिव—'हम सभी जा रहे हैं ।

सेठ— बिल्कुल ठीक । [illegible] कुछ कम होता तो मैं भी आप [illegible] और उसके पचास अरबा का [illegible] की नौबत आये इसलिय [illegible] जाना चाहिये ।'

कप्तान—'मुझे [illegible]

सेठ— लेकिन [illegible]

कप्तान—'दशना ! आप विमान को कह रहे हैं ? मैंने उसका ख्याल न किया था।'

शिव—'लेकिन मैंने और नाथन ने इसका ख्याल किया था।

सेठ—यदि ऐसा, तो उसके आगे के बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?'

नाथन— उसे साथ ले जाना और जबलतूर की घाटियों मे कही उसके लिए एक शाला तैयार करना। हमे वही अड्डा बना कर तब वहाँ से काम करना होगा।'

शिव—'अत्यन्त गुप्त अड्डा।'

नाथन—'आस पास खूब देखभाल कर -'

शिव— कि स्थान कैसा है।'

नाथन—'और इसका निश्चय कर लेने पर कि माग साफ है, हम विमान द्वारा पेट्रा जा सकते हैं। हम दोनो की राय है कि हम रात को वायुयान का उपयोग करना चाहिये, दिन को नही और नाभि के लिये खोज भी हम रात ही मे करनी चाहिये।'

सेठ—'बहुत ही सुन्दर और युक्तियुक्त विचार है। स्थान ही की स्थिति काफी न होगी, वहा के लोगों का भी पता लेना होगा।'

शिव—'हाँ ! मेरा उनसे भी मतलब है।

सेठ—'हमे अभी तक नही मालूम हो सका, कि मेटियो का क्या हुआ। यदि इसहाक ने उसे अभी न गिरफ्तार करा पाया और वह निकल गया, तो पहले हम उसका पता लगाना होगा। आपने प्रोफेसर क्या 'दशना' के उपयोग पर विचार किया था ?'

चन्द्रनाथ—'हाँ ! यह ख्याल मेरे दिमाग मे उठा था, लेकिन मैं अधिक इस पर न विचार कर सकता था। यह लाभप्रद होगा।'

सेठ—'अत्यन्त ! मैं तो इसके लिये खास तौर से आपको सम्मति दूँगा। परिस्थिति के अनुसार चाहे इसमे कुछ परिवर्तन भी करना हो किन्तु 'दशना' को आप अपने साथ जरूर ले जाइयेगा, और जैसा कि नाथन ने कहा, जबलतूर की घाटियों मे कोई प्राकृतिक शाला ढूंढना।' लेकिन प्रश्न यह है कि क्या आप उसे पुर्जा पुर्जा अलग करके ले जा सकते है जिसमे कि कोई उस पर सन्देह न कर सके ?'

चन्द्र—'यह तो बिल्कुल आसान है, हम उसे कल के तौर पर पुर्जे पुर्जे को अलग अलग बक्सो मे रख कर ले जा सकते हैं और मिश्री चुंगी घर का कर भी चुका सकते हैं।

सेठ—और फिर उस प्राकृतिक शाला मे उसे फिर जोड़ कर तयार कर सकते हैं ?'

चन्द्र—'शिव और नाथन की सहायता से और यदि इसहाक मौजूद रहे तब तो और बहुत जल्दी उसे तैयार किया जा सकता है। उसके रहने से हमे बहुत ही आसानी होगी।'

सेठ—'तो प्रोफेसर महाशय मेरी यही सलाह है कि आप पुर्जे पुर्जे अलग करके उन्ह स्वेज के लिये पासल कर दें, और आप एकाकी वहा जाय।'

सब की इच्छा के अनुसार ही चन्द्रनाथ ने कहा—'अकेला क्या ?'

सेठ इब्राहीम—'मुझे एक प्रश्न पूछने दे। क्या मेटियो ने आपको कभी देखा है ?'

चन्द्र—मुझे उम्मीद नही, किन्तु शायद कभी देखा हो।

सेठ—'क्या आपने मेटियो को देखा है ?'

चन्द्र—नही !'

सेठ—इसी कारण मैं कहता हूँ, कि आप अकेले विमान के साथ जाइये। मेटियो न सम्भव है, अपने आदमियो को कप्तान, नाथन और शायद शिव का भी हुलिया बताया होगा। लेकिन आपके बारे म शायद वह कुछ न बतला सकता होगा। यह निश्चय है कि उसने स्वेज और पोटसईद तथा शायद इस्माईलिया मे भी अपने चर रक्खे होगे। लेकिन वह आपका ख्याल न रख सकेंगे, और इस प्रकार बिना सूचित किये आप स्वेज म उतर सकते है। इसलिये यह बहुत अच्छा होगा कि आप अकेले कराची स सीधे जहाज द्वारा स्वेज जाइये।'

चन्द्र—'और और तीनो ? जासूस उन्ह पहचान लेंगे।'

सेठ—'लेकिन ऐसा करने पर वह यह जान सकेंगे कि तुम्हारा उनसे कुछ सम्बध है। यह तो पहली बात हुई। अच्छा, जब तुम स्वेज मे उनसे मिलो तो फिर आगे क्या करना चाहिये, यह स्वय निश्चय कर लेना। इसहाक वहा तुमसे मिलेगा। सीनाई की पहाडियो म एक गुप्त अड्डा खोज कर ठीक करना अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक होगा। लेकिन यह और अन्य अपेक्षित बातें तुम लोग स्वय सोचना, मैं इन्हें तुम्हारे ऊपर ही छोडता हू। मैं स्वेज के आगे की बात कुछ भी नही जानता।'

चन्द्र—'लेकिन स्वेज तक तो सेठ तुमने बहुत ठीक सोचा है।'

कप्तान—'हमे इसहाक के पत्र की प्रतीक्षा करना आवश्यक है लेकिन मैं इसमे कोई कारण नही देखता कि क्यो न यात्रा की तयारी तब तक कर ली जाय।

सीता देवी, जो अब तक उनके पास चुपचाप बैठी हुई थी, की ओर देख कर कहा—'मैं समझता हू सीता हमे तीन चार दिन कराची मे अभी और ठहरना होगा।'

सीता—यात्रा की तैयारी के लिए ?'

कप्तान—'हाँ ! हमे ऐसी यात्रा के लिये बहुत सी चीजो की आवश्यकता होगी, और करांची छोडकर और जगह वह जल्दी आसानी से नही मिल सकती।'

सेठ—'और इससे देवी जी मुझे एक अच्छा मौका हाथ लग गया। मैं चाहता हू कि आप मेरी बहिन से मिले।'

सीता—मैं बहुत दिनो पहले उनसे खूब मिली हूँ सेठ जी। लेकिन उसे इतने वर्ष बीत चुके हैं कि उन्हें यदि स्मरण भी न हो तो कोई आश्चर्य नही।'

सेठ—'वह बातो का बहुत कम भूला करती है। मैं नही समझता कि वह आपको भूल गई होगी। लेकिन मुझे यह न मालूम था कि आपकी उससे मुलाकात है।'

सीता—विवाह से पूर्व सेठ जी ! आप उनसे सीता भारद्वाजो के विषय मे पूछियेगा तो।'

सेठ—मैं अवश्य पूछूगा और मेरी इच्छा है कि आप फिर अपने पूर्व परिचय को उज्जीवित करें। वह आजकल मेरे घर ही पर आई है। क्या आप आज सायकाल को उसके पास जायगी?'

सीता—बडी खशी से।'

दोनो स्त्रियाँ मिली और उन्होने अपना समय बहुत आनन्दपूर्वक बिताया। मर्द यात्रा की वस्तुओ के खरीदने मे लगे हुए थे। बीच ही एक दिन इसहाक की मा सक्खर भी सीता के साथ गई। दोनो ही का इस यात्रा से समान सम्बन्ध था इसहाक की माँ, उम्र मे सीता की माँ-सी लगती थी। उनका सारा जीवन शोकपूर्ण बीता था। यौवन ही मे पति का वियोग हो गया। इसहाक की पिछले दस वर्षों तक वही अवस्था थी। उसने नौकरी छोडी तो उन्ह आशा हुई थी कि शेष जीवन पुत्र के साथ आनन्दपूर्वक बीतेगा। लेकिन इसहाक तुरत ही एक दूसरे ही सकटपूर्ण कार्य मे लग पडा। सीता के मिलने से उन्हे उस कष्ट का भार बहुत-सा हल्का होता मालूम पडा।

करांची लौटने से पूर्व ही इसहाक का पत्र आ गया। तार की भाँति वह भी दो प्रतियो मे आया था और वहाँ उन्ह सेठ की प्रति ही को पढ़ा। इसमे लिखा था कि मैं पोर्टसईद मे पता लगाने के लिये दो-तीन दिन ठहर गया, जिसका फल भी हुआ। एक बात मैंने खासकर देखी, पाँच छ वर्ष पहले जिन आदमियो से मेरा खूब परिचय था, वह भी अब मुझे न पहचान सके, मेरी शक्ल-सूरत मे इतना परिवर्तन हो गया है। मेरे असली नाम ने और भी मेरे काम म मदद दी, क्योकि उन्ह तो मूसा मालूम है।

बहुत खोज और इनाम-बखशीश द्वारा मुझे मालूम हो गया कि कप्तान राम नन्दन सहाय का लिखना बिल्कुल ठीक था। पोर्टसईद से इस्माईलिया होन रेल

द्वारा मेटियो काहिरा गया। वह काहिरा मे कुछ दिन रहा और अहमद अब भी वही है फिर मैं वहा से पता लगाते हुए स्वेज आया। स्वेज मे फिर उसका सुराग न मिल सका कि वहा से वह कहाँ गया। मै स्वेज के प्रधान होटल मे ठहरता हूँ। यहा हिन्दुस्तानी कौसल और पुलिस के प्रधान अफसर भी बराबर आते और ठहरते हैं। मैंने एक भारतीय पर्यटक के तौर पर परिचय प्राप्त कर लिया।

आपस मे कितना गपशप होता था। मैंने घुमाते घुमाते बात का रास्ता ऐसे बदला कि मेटियो का जिक्र छिड सके और अन्त मे मुझे इसमे सफलता हुई।

एक दिन बदमाशो का जिक्र छिड पडा। इसी बीच म मैंने भगेडो की बात ला दी। पुलिस के प्रधान ने कहा कि हिन्दुस्तानी लोग बदमाशो को सजा दिलाने के लिए बडे उत्सुक है। मैने इसका उदाहरण मागा। इस पर उसने कहा कि कुछ महीने पहले एक हिन्दुस्तानी कप्तान स्वेज पर ठहरा और किनारे पर उतर कर मेरे पास आया। उसका यह सब करने का तात्पर्य क्या था?—सिर्फ यही कि एक ऐसा बदमाश मैंने आपके यहा देखा है, आप उसे देखते ही गिरफ्तार कर। यह कप्तान रामनन्दन की बात का दूसरा प्रमाण है।

कौसल ने पूछा कि क्या आपने इस पर कुछ कार्यवाई की। इस पर पुलिस अफसर ने कहा, नहीं। सिर्फ एक आदमी के ऐसा कह देने मात्र से ऐसा करना युक्ति-सगत न था। और काहिरा ऐसे बडे शहर म इस प्रकार की मोटी माटी हुलिया से आदमी का पता कैसे लगाया जा सकता है? ऐसा करना समय, शक्ति और बुद्धि का अपव्यय करना होता। इस प्रकार के जरा से पता के भरोसे काम करने से महाशय पदवृद्धि और साथ साथ वेतनवृद्धि नही हो सकती।

मैंने फिर कौतूहल प्रकट करते हुये पूछा—'आपने उस हुलिया स किसी आदमी का कभी कुछ पता भी पाया।' इस पर उसने बतलाया 'हाँ, करीब एक महीना होता है, स्वेज होकर एक वैसा ही आदमी गया है। वह देखने से माल्टा निवासी मालूम होता था। मैं उसे जानता हूँ।' मैंने उसे पहले भी पोर्टसईद म बहुत बार देखा है। वह यहा से अकाबा को गया, लेकिन इस तरह के कमजोर प्रमाण पर मैं उसे गिरफ्तार न कर सकता था।

इसके बाद का प्रवाह दूसरी ओर हो गया। दूसरे दिन मैंने अकाबा जाने और वहाँ से शीघ्र लौट आने के बारे मे पता लगाया। मुझे मालूम हुआ कि वहाँ स जाने के लिए किसी अरब को घोडो का सहारा लेना पडेगा, और वहाँ से लौटने का कोई निश्चय नही है। इन्ही खोजो म मुझे यह भी पता लगा कि मेटियो अब भी अकाबा मे ही है। इसीलिये मैंने पत्र और तार भेजा तथा आप लोगो के उत्तर की प्रतीक्षा मे हूँ।

यह पत्र का संक्षिप्त मजमून था ।

तुरन्त ही तार दिया गया—'आ रहा हूँ—भारद्वाज ।'

दस दिन बाद जब चन्द्रनाथ स्वेज मे उतरे तो वहा बडा हल्ला मच गया । यह उनकी लम्बी दाढी और छोटे कद के कारण उतना नही था, जितना कि उनके साथ के असबाब के कारण जो कि किनारे पर ढाकर लाया जा रहा था । इसहाक सासून को भी यह सब देखकर बडा आश्चय हुआ है । उन्होने पहले तो अन्य तीनो के बारे मे पूछा । जिसका उत्तर उन्हाने दे दिया । फिर उन्होने पूछा कि यह दुनिया भर का जजाल क्या है । जिसके उत्तर म उन्हाने बताया कि यह तुम्हारा 'दशना' है । जिस पर इसहाक ने पूछा पुर्जा पुर्जा अलग करके, और प्रोफेसर ने बताया हाँ और साथ ही बहुत से फाजिल पुर्जे और बहुत सा पट्रोल भी है । इसहाक ने थोडी देर साचने पर बडे आनन्द के साथ कहा—'खूब ।

अभी उनके तीनो साथी न आये थे इसी बीच मे उन दोना को अपने प्राग्राम पर विचार करने का पर्याप्त मौका मिला । उन्होने इसे बहुत जरूरी समझा कि कप्तान, नाथन और शिव इस होटल मे न ठहर कर किसी दूसरे होटल मे ठहरें । यह निश्चय था कि मेटियो के जासूस आस पास लगे हागे और देखते ही तीनो को पहचान लेंगे । इसलिय उनके स्वागत करने की अपक्षा किसी वक्त घमते घामते नया परिचय प्राप्त करना ही अच्छा हागा । इसीलिये इसहाक उनसे आगे ही से मिलने और सजग करने के लिये पोट इब्राहिम गये । वहा वह एक सप्ताह तक रहे और तब तक चन्द्रनाथ अपने ही ढग पर इधर काम कर रहे थे ।

चारो ओर किम्वद ती फैली हुई थी कि यह 'दाढीशाह' बडा भारी वैज्ञानिक और ज्योतिषी है । वह वहाँ आगामी चन्द्रग्रहण की परीक्षा के लिये आया है और वह सारा असबाब तरह-तरह के यत्र है, जिनमे ग्रहण के वक्त चन्द्रबिम्ब को देखेगा । चन्द्रनाथ को इस अफ्वाह का पता न था लेकिन इतना तो वह जानते थे कि यहाँ वाले मुझे और मेरे असबाब को कौतुकाक्रान्त हृदय से देख रहे हैं । उन्हे शायद इससे किसी आफत मे भी पड जाना पडता लकिन खैरियत थी कि वह उनके व्यक्तित्व को पवित्र समझते थे ।

जब इसहाक पोट-इब्राहीम से लौट कर आये तो उन्होने खबर दी कि वह आ रहे हैं, और उसी समय उन्होने अफवाह के बारे म भी कहा । जिस पर इसहाक के साथ सलाह लेने के बाद उसका खडन न करके प्रोफेसर ने ऐसा रुख बदला कि वह और भी पक्की हो गई ।

तीना आदमी एक दूसरे ही होटल मे उतरे । उन्हाने चन्द्रनाथ और इसहाक से भेंट भी न की । पीछे उन्हाने इस प्रकार मुलाकात और परिचय प्राप्त किया कि

गाया उन्होने इससे पहिले एक दूसरे को देखा भी न था। और मुसाफिर मे सयोगवश वह एक दूसरे से मिल पडे हैं। शिव ने जब अफवाह को सुना तो वह ठठाकर हँस, और बोल उठा—'वाह रे दाढीशाह।'

कप्तान ने इसहाक से मेटियो के बारे मे पूछा, जिस पर उन्होंने बतलाया—'मुझे जहा तक मालूम हुआ है, वह अब भी अबाबा ही म हैं, क्योकि वह अभी स्वेज नही लौटा।' उन्होने यह भी बतलाया—'यहा मुझे कोई ऐसा आदमी न मिल सका, जिस पर विश्वास करके जासूसी के काम पर नियुक्त किया जा सके।'

कप्तान काश्यप ने पूछा—'तो पुलिस-अफसर ने आगे कोई कार्यवाही न की ?'

इसहाक—'नही! और न आगे ही वैसी आशा है।'

कप्तान—मै अपने साथ लगटू के मुकदमे की गवाहियो आदि की नक्ल और पुलिस के उस विज्ञापन की एक प्रति—जिसम मेटियो की हुलिया और पकडने वाले को पाच हजार का इनाम छपा था—भी लाया हूँ। वह पत्र भी मेरे पास मौजूद है, जिन पर मटियो की अँगुलियो का निशान है। इसके बाद शिव और नाथन की गवाही और आवश्यक होने पर तुम्हारी और चन्द्र की भी दी जा सकती है। यदि मैं सारी बात उनके सम्मुख रक्खू, तो क्या तुम्हे विश्वास है इसहाक, तब भी पुलिस अफसर कुछ न ख्याल करेगा ?'

थोडा सोच कर इसहाक ने कहा—'बहुत करेगा। लेकिन उचित होगा, यदि आप कौसल द्वारा इस बात को उसके सम्मुख रक्खें।'

कप्तान—हमारे लिये यह बहुत अच्छा होगा यदि मेटियो धर दबाया जाय।

इसहाक—ठीक! इसके लिये अवश्य प्रयत्न होना चाहिये। मुझे इसमे सफलता नही हुई लेकिन मैं इतना जान सका कि वह कहा है। कौसल आपकी बात ध्यान देकर सुनेंगे और आप आसानी से पुलिस अफसर का ध्यान आकृष्ट कर सकेंगे। यह आप खुद करें, इससे आपके स्वेज आने का कारण भी यही मालूम होगा। मेरा और चन्द्र का जिक्र बीच मे न आने दीजियेगा। अब भी हम परस्पर अपरिचितप्राय रहने की आवश्यकता है। यदि हम लोग भी इसमे गवाही देने आये, तो मालूम हो जायगा कि हम सब एक दूसरे से सम्बद्ध हैं।

अड्डा

कप्तान के स्वेज आने के तीन दिन बाद उन्होंने आपस मे इस बात पर विचार किया कि अपना गुप्त अड्डा कहाँ रक्खा जाय, जहाँ से आगे का काम आसानी से किया जा सके। आखिर इस विषय मे लडको ही की राय पक्की रही और निश्चय हुआ कि सीनाई प्रायद्वीप की शून्य पार्वत्य उपत्यकाओ ही मे कहीं देखना चाहिये। कप्तान को समुद्र ही से अधिक वाकफियत थी। उन्होने कहा कि तुम्ही लोग प्रायद्वीप के पूर्वी भाग मे ऐसी जगह कही तजवीज करो, जहा पहाडियाँ समुद्र तट तक पहुँच गई है।

कप्तान—'अकाबा की खाडी बिल्कुल जनशून्य है। जहाज या अग्निबोट वहाँ बहुत कम जाते हैं। अकाबा के साथ सामुद्रिक वाणिज्य एक तरह से बिल्कुल है ही नही। अरब धो के सिवाय वह सारी खाडी ही परती—अर्थात पोतो के यातायात से वचित और अपरिचित है। यदि पूर्व की उपत्यकाओ मे हमे कोई उपयुक्त स्थान मिल जाय तो वहा हम ताक मे लगी आँखो से भी बच जायँगे।'

कप्तान की बात की पुष्टि करते हुये इसहाक ने कहा—'इसी वजह से मैं आसानी से अकाबा न जा सका, क्योकि जाने का किसी प्रकार प्रबन्ध हो जाने पर भी लौटने का कोई निश्चय न था। यात्री अधिकतर स्थलमार्ग—अर्थात कारवा का रास्ता ही ग्रहण करते है, सामुद्रिक मार्ग को नही।'

चन्द्रनाथ—'और मरुभूमि पार करते वक्त उन्हें जब्ल-कैथराईन के मठ से होकर जाना पडता है। हमे उससे बचकर रहना चाहिये। नाथन और शिव के कथनानुसार हमे एक प्राकृतिक विमानशाला और अड्डा ढूढना चाहिये और सो भी प्रायद्वीप के पूर्वीय भाग मे समुद्र से ज्यादा दूर नहीं। अब सामान ले जाने की बात है।'

इसहाक—'इसके दो उपाय है।'

नाथन—'कौन से ?'

इसहाक—'किसी शेख से मिल कर उसके द्वारा ऊँट, हम्माल आदि का बन्दोबस्त करके, एक काफिला तैयार कर 'का और रासमुहम्मद की परिक्रमा करते हुय वहा पहुँचें।'

कप्तान—'यह करना असम्भव है।'

शिव—'क्यो ?'

कप्तान—'क्योंकि इससे हम शेख के हाथ के बन्दी हो जायगे। फिर हमारा जान-माल उसके हाथ मे होगा।

नाथन—'और हम अपने अड्डे को गुप्त भी न रख सकेंगे।'

चन्द्रनाथ—'और निस्सन्देह शेख के सन्देह के भाजन होंगे।'

कप्तान काश्यप—'और यह बहुत बुरा होगा। वह या तो हमें छोड भागेंगे अथवा उससे बढ कर कुछ अनिष्ट करने पर उतारू हो जायँ तो भी आश्चय नही। वह अगर सारे बक्सो को तोड फोड कर देखने लगेंगे, तो भी कौन उन्हे रोकेगा ? हम एक ऐसे मुल्क मे जा रहे है, जहा शान्ति और व्यवस्था का नाम नही है।'

इसहाक—'मैं आपसे बिल्कुल सहमत हूँ, मैंने सिर्फ यात्रा के उपायों के तौर इसका जिक्र किया, जिनका कि इस देश मे प्रचार है। यह स्पष्ट है कि हम ऐसा नही कर सकते। इससे हमारा लक्ष्य ही जाता रहेगा। दूसरा उपाय यह है कि एक धो खरीद कर उस पर सामान लाद लिया जाय और फिर स्वय खेकर यहा से रवाना हुआ जाय। हम उसके द्वारा स्वेज की खाडी की दक्षिणी सीमा तक पहुँच सकते है। हम अपने गन्तव्य स्थान को छिपाये रख सकते है। चन्द्रनाथ के द्वारा यह अफवाह फैलने मे देर न लगेगी कि 'दाढीशाह' कही ऐसी जगह पर जा रहा है, जहा से ग्रहण अच्छी तरह से देखा जा सके।'

कप्तान—'हाँ! ठीक ढग है।'

चन्द्रनाथ—'अच्छा! जब यह निश्चित हो चुका तो आगे देख लिया जायेगा।'

यह निश्चित हुआ कि चन्द्रनाथ और इसहाक पोर्ट इब्राहीम जायँ, और वहाँ एक मजबूत धो का दाम काम करें। लेकिन पक्का करने से पहले विशेषज्ञ के रूप मे कप्तान काश्यप को ले जायँ, जो उसकी परीक्षा करेंगे।'

कप्तान—'अड्डा निश्चित कर लेने पर धो से हटा कर सामान को वहाँ पहुँचाने के लिये सिपावा और रास्ता की भी आवश्यकता होगी और यह सब कुछ धो के नाम पर खरीदा जा सकता है। पुर्जों के जोडने की सभी आवश्यक वस्तुयें तुम्हारे पास हैं न, चन्द्र!'

चन्द्र—'एक छोटी सी आलपीन तक।'

कप्तान—'और जब तक तुम लोग धो के लिये जाते हो, तब तक मैं कौशल से बातचीत करता हूँ। अभी ही उससे खब परिचय हो चका है। मैं उनके सामने सब सबूत रखता हू और जब वह मेरी पीठ पर रहगे, तो पुलिस-अफसर भी अवश्य मेरी बात सुनेगा और तदनुसार करेगा। स्वेज छोडने से पूर्व ही हमे यह निश्चय हो जाना चाहिये कि मेटियो की गिरफ्तारी की पूरी फिक्र की जा रही है। यदि रास्ते का कण्टक मेटियो किसी प्रकार हटाया जा सके, तो हम सुरक्षित, स्वतत्र और सफल हो सकते हैं।'

कौशल ने कप्तान की सम्पूर्ण बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुना। मेटियो के क्रूर कर्मों को सुन कर उनकी उत्सुकता और भी बढ़ गई। कप्तान ने बड़ी सावधानता-पूर्वक सिर्फ उतनी ही बातें कहीं, जिनके द्वारा मेटियो की गिरफ्तारी अनुचित नहीं कही जा सकती। उन्होंने बीच में चन्द्रनाथ और इसहाक का नाम तक न आने दिया। उनका सारा कथन कागज पत्रों और नाथन तथा शिव की साक्षियों पर निर्भर था। कौसल ने ताड़ लिया कि अभी इससे भी अधिक प्रमाण बाकी बचे हुये हैं, लेकिन उन्होंने उनके बारे में अधिक पूछ-ताछ न की। उन्हें यह पक्का यकीन हो गया कि कप्तान का पक्ष बहुत दृढ़ है।

उन्होंने कहा—'मैं आपके साथ पुलिस-अफसर के पास जाऊँगा या यदि आप पसन्द करें तो हम दोनों आपके होटल ही में आवें। यही बल्कि अच्छा होगा।'

कप्तान—क्यों ?'

कौशल—'जिसमें वह यह न समझे कि मैं उस पर दबाव डालता हूँ। शायद वह अस्वीकार भी कर दे यदि उसे मालूम या कि यह मामला पहले मेरे पास आया है। फिर मैं उस पर इसके लिये बल दे रहा हूँ। वह बड़ा भड़कीला आदमी है। हम उसे गपशप में लावेंगे। मैं आपकी ओर रहूँगा।'

जब कप्तान काश्यप लौट कर अपने होटल में आये, तो उन्होंने देखा कि नाथन और शिव अत्यन्त उत्सुक और घबराये हुये दिखाई पड़ रहे हैं। उनके चेहरा ही से मालूम हो रहा था कि वह कोई विशेष और साधारण बात कहना चाहते हैं। इसीलिये वह तुरन्त सीधे अपने प्राइवेट कमरे में गये।

शिव—'हमने उसे देखा है।'

पिता ने ही लड़कों ही के समान उत्तेजित होकर पूछा—'मेटियो को ? ठीक कहते हो ?'

शिव—'इतना ठीक और निस्सन्दिग्ध जितना कि यह सूर्य चमक रहा है।

कप्तान—'तुम दोनों ने देखा ?'

नाथन—'दोनों ने ?

कप्तान—'और उसने भी तुम्हें देखा ?'

शिव—'नहीं ! यदि यह काठ की झिलमिलिया पारदर्शक नहीं हैं। हम दोनों उन्हीं के पीछे होकर उनकी फाँकों में से बाहर की ओर देख रहे थे और एकाएक नाथन बोल उठा—'यह देखो मेटियो है !' मैंने पूछा—'कहा है ?' और तब इसने मुँह इशारा से बतलाया। वह शिर नीचे किये जा रहा था, जान पड़ता था किसी विचार में लीन है। मुझे पहले सन्देह हुआ कि यह वही है या कोई दूसरा आदमी।

लेकिन नाथन निश्चित था। फिर उसने मुह ऊपर को उठाया, जिससे मेरा सन्देह जाता रहा।'

नाथन के चेहरे की आकृति गम्भीर हो उठी थी। लडको को ऐसी अवस्था मे अकेले छोडना बडा खतरनाक था, क्योकि शायद मेटियो ने उन्ह देख लिया हो। सम्भवत वह जानता है कि वह और कप्तान तीनो स्वेज मे है। इसलिये जब मुलाकात का समय आया तो कप्तान अपने साथ लडको को भी लिवा ले गये।

कप्तान ने सब बात कह सुनाई, सबूत मे कागजो और शिव एव नाथन को भी पश किया। उसी समय उन्होने अपना मुह जगलो की ओर फेरा। वह खुला था। सूय अस्त हो चुका था, एक पीला-सा प्रकाश सामने की सडक पर पडा रहा था।

ओह ! यह आपका आदमी मौजूद है।' कप्तान, कौसल तथा अफसर के साथ बात करते-करते ही चिल्ला उठे।

'कहाँ ?' और पुलिस-अफसर उठ खडा हुआ।

'वह ?' और कप्तान ने मेटियो की ओर इशारा किया जो कि होटल के द्वार की ओर आ रहा था।

'सच ?' और कहने के साथ ही अफसर ने तुरन्त दिल मे निश्चय कर लिया।

वह जल्दी से चल पडा। जरा ही देर बाद उन्होने दरवाजे की सीढिया पर चीख सुनी। मेटियो भूमि पर हाथ पैर मार रहा था और उसके ऊपर चार-पाच दरवान लग कर दबाये हुए थे। जब वह सीढी के ऊपर झाक रहे थे, उसी समय एक रिवाल्वर दागने की आवाज आई। एक दरवान वही लुढक गया। उसन मेटियो को पकड लिया और धक्का मार कर नीचे गिरा दिया। पुलिस अफसर ने रिवाल्वर उठा ली। अब भी उसके मुह मे धुआ निकल रहा था।

इस गालमाल और रिवाल्वर की आवाज से एक छाटी-सी भीड वहा एकत्रित हा गई। उनमे से दो आदमी निकल सलाम करके अपने अफसर के पास आ खडे हुये। अफसर की आज्ञानुसार वह वहा से मेटियो को पकड कर ले गये।

आहत दरवान एक पास के कमरे मे लाया गया। गोली कधे से चली गई थी, जिससे उसकी जान बच रही। घाव खतरनाक न था। कप्तान काश्यप के मलहम ने बहुत जल्द उसे चगा करना शुरू किया।

धा को देखने के लिय जो उधर दो आदमी गये थे, उन्होने एक नाव तजवीज की। दाम के साथ ही इसहाक ने कहा कि पहले इसे किसी विशेषज्ञ द्वारा दिखाया जाय। कप्तान ने देख कर बतलाया धो ठीक है। धो बहुत सुन्दर और मजबूत थी। ऊपर तख्तो से पटी और सामान को वर्षा आदि से बचाये रखने का इन्तजाम था, यद्यपि आजकल कोई भय न था, उसके बीच मे एक बडा भारी मस्तूल था साथ ही

एक विस्तत पाल भी था एक अतिरिक्त पाल माँगे के पास रक्खा हुआ था, और एक फाजिल मस्तूल लम्बे नम्बे नाव पर रक्खा हुआ था यह सब इसलिये कि रास्ते मे कही कोई चीज टूट फूट जाय, तो काम का हज न हो। पतवार और डाड भी बहुत अच्छे थे, लेकिन बेचन वाला दाम असम्भव बतला रहा था। चन्द्रनाथ के दाम पर वह हँस पडा और कहा कि दोना को अपनी अपनी वात छोड कर बीच मे मिलना चाहिये और अन्त मे तीन चौथाई दाम तै पाया।

कुछ दिन बाद जब सब कुछ ठीक हो गया, तो कौंसिल और दूसरे आदमियो के सम्मुख ही प्रोफेसर ने कप्तान और उनके दोनो साथियो को दक्षिण की ओर साथ चलने के लिये निमन्त्रित किया। इसहाक भी साथ ही थे। यह भी अफवाह चारो ओर फैल गई कि महान वैज्ञानिक नजूमी 'दाढीशाह' ने एक बडा सा धो खरीदा है, और ग्रहण देखने के सभी यन्त्रो के साथ किसी उपयुक्त स्थान को जा रहा है, जैसे ही पहाडो पर ऊषा का प्रकाश पडा, उन्होने कूच कर दिया। उन्हे यह न मालूम हुआ कि दशको के झुड म मेटियो के जासूस भी खडे खडे सब कुछ देख रहे है। उन्ह वह आशा न थी कि मेटियो फिर बच कर निकल सकता है।

शिव और नाथन को अपने दिल का बहुत सा बोझा उतर गया सा मालूम हुआ। स्वज मे आकर ऐसी भीषण घटना को देख कर उन्ह बडा दरददुद पैदा हो गया। जैसे ही पाल खडा किया और उसमे प्रात कालीन हवा भरी, उन्ह भी अपने भीतर बडा परिवतन जान पडा। प्रोफेसर भारद्वाज फिर चन्दा मामा थे। स्वेज और पोर्ट इब्राहीम के मकान धीरे धीरे दूर होने लगे, इसके साथ ही साथ उनकी आकृति भी छोटी होने लगी। अन्त मे वह आखो से ओझल हो गये।

पाल को छाया मे चुपचाप लेट रहना! चेहरे पर ठडी और स्वच्छ सामुद्रिक हवा का लगना! 'का के बालुकामय तट का विस्तत मैदान! सीनाई प्रायद्वीप के समखारे की बिखरी हुई पहाडिया। रात दिन चलते गये। उन्ह बराबर जहाज और स्टीमर मिलते रहते थे, क्योकि यह वाणिज्य का प्रधान माग है। अन्त मे वह रास-मुहम्मद की नोक पर पहुँच गये और थोडी देर के बाद उसकी परिक्रमा करते हुए वह उत्तर के शान्त समुद्र मे चले। यहाँ कोई स्टीमर नही आता। अपने को छोड कर उन्होने कोई दूसरा पाल वहाँ न देखा। इस प्रकार वह तीन दिन इस समुद्र मे बढते गये, तब उन्ह पहाडिया के बीच मे एक पीत वण की उपत्यका दिखाई पडी, जो कि समुद्र तट तक बढती चली आई थी। इन पहाडियो के बीच से एक सूच्याकृति सर्वोच्च शिखर दिखाई पडता था।

उनको दिखाते हुए चन्द्रनाथ ने कहा—'यदि मैं भूल नही करता, तो उम्म-शयर उस प्रायद्वीप की सबसे ऊँची चोटी।'

बालू की ओर इशारा करते हुए कप्तान काश्यप बोले, और यदि मैं भी भूल नहीं करता, तो यही स्थान है, जहाँ हमे उतरना चाहिये। यह बिल्कुल एकान्त है। दोनों पहाडियो के बीच मे हम अपना खीमा खडा कर सकते हैं, और वहीं आधार ठीक करके 'दशना' को जोड कर तैयार किया जा सकता है।

अब घा को किनारे की ओर फेरा गया। थोडी देर मे वह लोग थाह जल मे पहुँच गये और फिर कुछ आगे बढ कर सब लोग उतर गये। घो को खीच कर किनारे के पास ले गये। सब सामान ढो-ढोकर किनारे पर ले जाया गया। घो जब बिल्कुल खाली हो गयी तो उसे ढकेल कर तट पर ले गये, और वहाँ खूटा गाड कर उसे बाँध दिया। उस रात उन लोगो ने वहीं तट ही पर विश्राम किये।

अगले दो-तीन दिन वह पहाडियो के फाँदने और उपत्यकाओं के ढूढने म लगे रह। 'दशना के लिए अब एक छायादार जगह और चौडी आधार भूमि—जिस पर थोडी दूर दौड कर वह उड सके—की आवश्यकता थी। चौथा दिन होने को आया, लेकिन अब भी उन्हें कोई उपयुक्त स्थान न मिला। अन्त मे वह लोग कुछ निराश हो चले, उसी दिन नाथन और शिव और भी आगे बढ कर पहाडियो पर चढ उतर रहे थे। इसी समय वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहा के चट्टान बहुत से गिर गये थे, और उन पर मिट्टी जम कर भूमि समथर हो गई थी। वर्षा का पानी पहाडी से उतर कर जो उस रास्ते बहा था, यद्यपि अब वहा एक बूद भर भी न था, लेकिन वह वहाँ पीली-पीली कुछ घास और छोटे छोटे पौधे छोड गया था। लडका ने ऊपर चढ कर आवाज दी और थोडी देर म सब लोग वहा पहुँच गय। उन्होने देखा कि स्थान 'दशना' के आधार और छाया दोनो के लिये अत्यन्त अनुकूल है।

अब सारा खीमा और असबाब वहाँ लाया गया। विमान वाले बक्सो को खोला और थोडा थोडा करके सभी पुर्जे तिरछी खडी चट्टान के नीचे रक्खे गये। पेट्रोल के पीपे भी उठा कर वहा लाये गये। यह बडी मेहनत का काम था, जिसमे कई दिन लगे और उन्होने इस सभी काम को बडे उत्साह और आनन्दपूर्वक किया। उन्होंने आधार भूमि से छोटे छोटे पत्थरो के ढेलों को चुनकर फेंक दिया। झाडियाँ भी काट डाली, जिसमे 'दशना' को दौडने मे बाधा न पहुँचे। उन्होंने भिन्न भिन्न भागो को जोड दिया। तारो को कस दिया, पख फैला दिये, वायु पखा को मुह पर लगा दिया। इजन को उसके स्थान पर जोड दिया। स्तम्भक को लगा दिया। और फिर एक एक पुर्जे की खूब देख भाल की। इस सब काम म एक सप्ताह लग गया और अन्त म 'दशना' एक प्रकाड बाज की तरह पर फैलाये हुए बैठा दिखाई पडा।

उस विस्तृत जनशून्य भूमि पर गम्भीर नीरवता छाई हुई थी। यह सिर्फ रात ही को न रहती थी जब कि आकाश मे चमकीले तारे नाचते दिखाई पडते थे बल्कि

दिन मे भी वह वैसी ही रहती थी। काम करते वक्त उनकी धीमी सी आवाज भी बहुत ऊँची मालूम होती थी, जिसमे कभी-कभी वह स्वय डर जाते थे।

शिव—'इजन यहाँ कितना भयङ्कर शोर मचायेगा। वह साधु यदि इसे सुने तो क्या हो ? वह अवश्य कांपने लगेंगे।'

इसहाक—'और समझेंगे कि शैतान फिर एक बार दुनिया की ओर आया है।'

चन्द्रनाथ—'हमे इससे बडा सावधान रहना चाहिये ? यह बडा अच्छा हुआ जो हमारा रास्ता उधर से नही है। हम खाडी पार कर अरबा के ऊपर से होकर जाना है। हमे बहुत ऊँचे से होकर उडना होगा। लेकिन चाह कितना ही ऊँचे से उडें, हम सिर्फ 'दशना' के आकार को छिपा सकते हैं, उसकी आवाज तो तब भी आयेगी और होर पवत वाले अरब उसे अवश्य सुन पायेंगे। यही हमे बस कठिन प्रश्न है।'

कप्तान—'लेकिन इसका कोई हल नही है। हमे हथियारबन्द रहना होगा। अन्त मे शायद लडना भी पडे।'

चन्द्रनाथ—'लेकिन तभी जब कि और सभी माग रुद्ध हो जाय। और दूसरी बात है, इस पहाडी और रेगिस्तान प्रदेश के अज्ञात वायु मण्डल पर अधिकार जमाया। इस प्रकार के प्रशान्त वायु-मण्डल देखने ही मे प्रशान्त मालूम होते हैं, इनमे कितने ही भयकर वायु के थैले बवडर होते हैं।'

नाथन ने विश्वासपूर्वक कहा—'लेकिन तुम्हारी स्तम्भ कल मामा वायु की सभी चालों को छका देगी। हम अवश्य विजयी होंगे।'

पेट्रा

शिव—'कब ग्रहण लगेगा, मामा ?'

चन्द्रनाथ—'नवें दिन ग्यारह बज कर सात मिनट पर। प्राय सर्वग्रास होगा।'

शिव—'क्या ग्रहण की रात्री ही को खजाना नही जा सकते ?'

चन्द्र—जा क्यो नही सकते। लेकिन यह सब वातावरण की अवस्था पर निर्भर है। हमे अब प्रोग्राम भी बनाना है ?'

कप्तान— 'तो चन्द्र तुमने प्रोग्राम भी बनाया है ?'

चन्द्र—'हा ! मैंने एक प्रोग्राम सोचा है लेकिन उसमे कमी-बशी करने का आपका पूरा अधिकार है।'

शिव ने बडी उत्सुकतापूर्वक कहा—'और साथ मुझे ले चलोगे, या नाथ को ?

चन्द्र—'नही ? मैं अकेला ही जाऊगा। मुझे इस स्थान के वायुतरगो का ज्ञान नही है। साथ ही मुझे पेट्रा का रास्ता, उस पर के विशेष चिह्न, और उतारने के लिये आधार भूमि का भी पता लगाना है।

शिव— लेकिन यह तो आपको पहले ही मालूम है मामा ?

चन्द्र— 'नक्शे मे इन सबका ज्ञान बहुत मोटा मोटी होता है। लेकिन यह तुम्हें स्मरण रखना चाहिये शिव, कि नाथन को छोड कर हम सभी के लिये यह देश नया है, हमे प्रमाद से खतरे मे न पडना चाहिये, क्योकि फिर हमे सुधार करने का मौका हाथ न लगेगा।'

शिव को इस भय का कोई कारण न मालूम हो सका, उसने पूछा—'क्यो मामा यहाँ तो वायु बन्द कमरे की तरह शात है।'

चन्द्र—'यहा नीचे मेरे बच्चे वहा मेघ रहित नील आकाश को दिखा कर नही। और नीचे भी सर्वदा ऐसा ही नही रहता। यह एक तूफान ही की महिमा है जिसने इन चट्टानो को बालू से ढक कर आधार के योग्य बना दिया है और दशना को शरण भी मिली है। तूफान की कृपा से ही हम यह जगह मिली है और उसी की अकृपा से यह छीनी भी जा सकती है।

नाथन—'होरेब यहा से दूर न होगा ?'

चन्द्र— बिल्कुल चन्द मीलो के फासिले पर, ठीक उत्तर।'

दूसरे दिन कप्तान काश्यप ने पूछा—'तुम्हारा प्रोग्राम क्या है चन्द्र ?,

इसके उत्तर मे उन्होने एक नक्शा निकाला और उसे फर्श पर फैला दिया। चारों ओर सभी जने बठ गये। 'हम इस समय जहाँ तक मुझे ख्याल है, इस जगह हैं और उन्होने एक स्थान पर पन्सिल से स्वस्तिक चिह्नित कर दिया। और दूसरे स्थल पर चिह्न करते हुये कहा—'और यहा पेट्रा है। ठीक यहा से उत्तर—उत्तर पूर्व। और यह फासिला सौ मील का होगा। मैं यहा से सीधा उडना नही चाहता, बल्कि इस रास्ते से होते हुए खाडी को इस स्थान पर पार करते, और उन्होने पेन्सिल से मार्ग चिह्न अंकित कर दिया इस प्रकार अकावा न पडेगा, और पेट्रा मे पूर्व की ओर से आना पडेगा। इस प्रकार पचास मील बढ जायेंगे। सब दूरी डेढ सौ मीलो की, और जाते जाते तीन सौ मील की होगी।'

कप्तान—'यह घूम घुमाहट क्यों, चन्द्र ?'

चन्द्र—'मैं अब उसे बतला रहा हूँ। मैंने पूरे तीन सौ मील की यात्रा वत लाई। यदि तरगें प्रतिकूल न हुइ तो सूर्यास्त स सूर्योदय तक के वारह ही घटे मैं लेता हूँ इतने म जाना आना और वहाँ उतर कर देखना सुनना भी हो जायगा।'

इसहाक—कहाँ ? पट्रा मे ?

चन्द्र—पट्रा से थोडा पूव की ओर की अधित्यका पर। इस नक्शे स देश की पूरी हालत मालूम नही हो सकती। यह होर पवत है। और पेट्रा इसके नीचे के खण्डहरा म है। इसके आगे की भूमि एक अधित्यका और समथर है। इस मैदान से पहाडी की ओर एक या डेढ मील की दूरी पर नाला या 'सीक' है। इस पर ही खजाना है। बीच बीच म और नाले भी इधर-उधर गये हैं, लेकिन 'सीक' के से नही। यही पहाडियाँ काट कर हजारो गुफाएँ बनाई गई हैं। लेकिन सभी प्रदेश जनशून्य हैं।

कप्तान—'लेकिन यह घूम घुमाहट क्या, चन्द्र!'

चन्द्र—दो या तीन कारणो से। पहला कारण तो मैं बतला ही चुका हूँ, अकावा स बचना क्योंकि वहाँ से जाने पर वह इजन की भर सुनेंगे। और शायद शक्ल भी देख ले। और दूसरे यह कि होर पवत के अरब या जो कोई भी दूसरे मेटियो से मिले होंगे वह अरबो के रास्ते ही से हमारी प्रतीक्षा करते होंगे।

कप्तान—'हाँ! रास्ते से, विमान से नही।'

चन्द्र—ठीक! पैदल अथवा शायद हम इतना मूख समझते हो कि हम अकावा मे ऊट और मार्गप्रदशक का प्रबन्ध करके आगे बढेंगे। स्मरण रक्खो कि मेटियो के जासूस अकाबा मे मौजूद हैं। वह हमारी खबर पाते ही होर पवत के अरबो को सूचना दे देंगे। हमे अकावा के जासूसो की आखो मे धूल झोकना है और ऐसा करना ह जिसमे होर वाले अरब भी ताकते रह जायें। वह अरबो के रास्ते से हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। उन्हे यह भी ख्याल होगा कि हम दक्षिण की ओर से उस ध्वस्त गुफाबस्ती मे प्रवेश करेंगे। उन्हें यह कभी न ख्याल होगा कि हम सीक से होकर प्रविष्ट होंगे। सेठ इब्राहीम के कथनानुसार हमारा सर्वोत्तम अस्त्र दशना है, जिससे वह बिल्कुल अपरिचित भी हैं और इस प्रकार हम अचानक वहा पहुँच जायेंगे। मैं चाहता हूँ कि पहले चक्कर के बाद प्रथम इसहाक को ले जाऊँ और उसे सीक मे छोड आऊँ। विमान को उसके किनारे ही छोड कर हम नीचे जायेंग और वहा गुफाओ मे एक अच्छा स्थान ढूढेंगे। इसहाक खूब हथियारबन्द और कितने ही दिनो के भोजन के साथ जायगा। इसहाक का रहना ठीक करके मैं वहाँ से लौट आऊँगा। किसी अकेले आदमी के लिये इसमे सन्देह नही कि पेट्रा बडी भयानक जगह है। अरबो का डर एक ओर जो कि दिन मे कभी-कभी यहा घूमा करते हैं, पडता और

दूसर वह जनशून्य मुर्दों का स्थान स्वय अत्यन्त वीभत्स जान पडता है । पेट्रा फौलाद के से बडे दिल के आदमी के लिए है ।'

इसहाक ने हँसते हुए कहा— मेरा दिल इरिडियम का है चन्द्र, तुम इसकी कुछ परवाह न करो ।

चन्द्र—'नही ! लेकिन अरब जानते हो कितने क्रूर होते है ?

इसहाक—'लेकिन वह भी देखेगे कि मैं कोई कोहँड बतिया नही हूँ ।

चन्द्र-- सो मैं जानता हूँ । दूसरी बार मैं प्रताप को ले जाऊँगा और इसहाक तुम उनसे सीक के द्वार पर मिलोगे । और तीसरी बार नाथन और शिव ।

कप्तान—'फिर विमान का क्या होगा ?

चन्द्र—'यहा तक उसका विभाग कर डालेगे जिसमे आसानी से सीक तक इसे पहुँचाया जा सके, और फिर तीन चार गुफाओ मे भिन्न भिन्न भागो का रख देंगे।

कप्तान— बहुत ही अच्छा प्रोग्राम है चन्द्र ! हम पाचो मिल कर इस काम को जल्द कर डालेंगे । लेकिन भोजन की भी वहा हम आवश्यकता होगी ?

चन्द्र— भोजन आग्नेय अस्त्र आदि सभी चीज पर्याप्त परिमाण मे साथ ले चलनी होगी ।'

सबने एक स्वर से चन्द्रनाथ के प्रस्ताव को स्वीकार किया ।

चन्द्रनाथ की प्रथम यात्रा सफल रही । उन्हे आने जाने और वहा ठहरने मे कुल मिला कर आठ घंटे लगे । अर्द्ध चन्द्र के प्रकाश से मार्ग के विशेष स्थानो को उन्होंने अच्छी तरह अङ्कित कर लिया । खाडी पार करने पर होर पर्वत की युग्म चोटिया खास संकेत थी । स्तम्भक का लाभ लौटते समय उन्हे मालूम हुआ जब कि उतरते समय बिना चक्कर काटे ही पक्षी की भाति दशना भूमि पर आ बैठा और बहुत थोडी ही दूर आगे की ओर दौडा ।

दूसरे दिन खूब अँधेरा हो जाने पर इसहाक और चन्द्रनाथ दोनो उडे । पूरे ग्यारह घंटो के बाद चन्द्रनाथ लौटे । कप्तान ने पूछा वह सुरक्षित तो है न ?

चन्द्रनाथ— हा ? उस समय तो था, जब मैंने उसे छोडा । जाते वक्त जितना समय लगा उससे बहुत जल्द मै लौटा हूँ । सीक मे आगे जाने और गुफाओ मे अनुकूल स्थान ढूढने मे हमे तीन घंटा लगा था । वह सारा स्थान जनशून्य और स्तब्ध था ।

अगली रात को कप्तान भी उडे और नाथन तथा शिव अकेले पीछे रह गये । उस रात्रि के समय इस प्राणिशून्य स्थान पर प्रतीक्षा करते उन्हे एक एक घंटा एक-एक दिन मालूम हो रहा था । वह साय-साय करके बात कहते थे । बार-बार अपने

घडियाँ निकाल कर देखते थे, कि जरूर उन्हे कोई बाधा हुई है। चन्द्रनाथ नौ घण्टे वाहर रहे और जब दोनो उन्हे खोलने के लिए दौड कर उनकी बैठकी पर गये, तो उनके मुख से पूरी थकावट प्रकट हो रही थी। नौ घटे जान पडते थे, नौ दिन बीत गये।

नाथन—'पिता जी, अच्छी तरह तो हैं ?'

चन्द्र—'हाँ।'

शिव—और इसहाक।

चन्द्र—वह भी। सामने ही इसहाक इन्तजार कर रहे थे, इसीलिए मुझे आगे जाने की जरूरत न पडी। सब खरियत है।'

शिव—आज अब हमारी बारी है ?

चन्द्र—आज नही कल रात को।

शिव और नाथन दोनो—कल रात को ?'

चन्द्र—'तुम लोग भी सारी रात जाग कर बिताये हो और मेरी भी वही दशा है, इसलिए दिन मे हम खूब सो लेना चाहिये, और अभी भी दो ढाई घन्टा वक्त है। हमे सभी चीजे यहीं छोड जानी पडेंगी, केवल आवश्यक सामान हाथ से ले चलना होगा। कल आधी रात को वह हम से मिलेंगे।

'दशना' अभी तक कभी तीन आदमी को न ले गया था। लेकिन चन्द्रनाथ को इस पर पूरा विश्वास था क्योंकि इसहाक का वजन इन दोनो के वजन के बराबर था। दोनो लडके पीछे की बैठकी पर कस दिये गये। 'दशना' कुछ आगे दौड कर धरती छोड आकाश की ओर उडा। कुछ चक्कर काटने के बाद वह बहुत ऊपर उठ गया। अधकार फैला हुआ था। तारे निकल आये थे और नवोदित चन्द्र की स्वर्णमयी किरणें तमाम पहाडियो, उपत्यकाओ और समुद्र को रंजित कर रही थी। जितना-जितना ऊपर उठते जा रहे थे, ठढक बढती जाती थी। अन्त मे वह इतने ऊपर पहुँच गये कि दिन मे भी वहा से 'दशना' न दिखलाई देता।

तिकोना महान प्रायद्वीप जान पडता था, विस्तृत समुद्र मे काई छाया है। उसकी ऊची पहाडियाँ भी छायामात्र दिखलाई पडती थीं। रासमुहम्मद पर मिलने वाली अकाबा और स्वेज की दोनो खाडिया जान पड रही थी, जैसे दो सडक हैं। उनके उस पार जहाँ-तहा आलपीन की नोक के बराबर रोशनी दिखाई पडती थी।

धरती का रूप बहुत सकुचित हो गया था। सर्दी असह्य हो पडी थी। निस्तब्ध आकाश मे तारे चमक रहे थे। हिमांशु इस समय सचमुच हिमांशु हो रहे थे। उस उन्नताश मे भूमि से बहुत ऊपर दशना को उडते घण्ट पर घटे बीत रहे थे। साढे

ग्यारह बजे का समय था, जब कि चन्द्रनाथ ने धीरे धीरे उसका उन्नतांश कम करना शुरू किया। जैसे जैसे नीचे हो रहे थे, सर्दी भी वैसे ही वैसे घटती जा रही थी। धीरे धीरे नीचे की छाया कुछ प्रशस्त हो चली। और अब दूर पूर्व दिशा में हार पर्वत की यमल चोटियां भी दिखाई पड़ने लगीं। चन्द्रनाथ ने सीधा उनकी ही तरफ मुंह किया। कावा काटते हुए 'दशना' सीक के प्रवेश मार्ग से कुछ ही दूर ऊपर उतरा। कप्तान काश्यप और इसहाक जो उनकी प्रतीक्षा में थे, आगे दौड़े और जल्दी से फीते खोल कर उन्हें बैठकी से बाहर निकाला। अब बारह बज कर पचीस मिनट हो गये थे। भोजन सामग्री आग्नेय अस्त्र आदि सभी चीजें विमान से उतारी गई। सब कुशल रहा। कोई दुर्घटना नहीं घटी।

उन्होंने जल्द जल्द विमान को खोल दिया, और अब बैठकी पहियों के सहित आसानी से नीचे ढकेल कर लाई जा सकती थी। चन्द्रमा के प्रकाश में विमान की बारनिश दर्पण की तरह चमक रही थी और दूर से भी आसानी से दृष्टि को आकृष्ट कर सकती थी। जैसे जैसे चन्द्रनाथ और इसहाक भिन्न भिन्न भागों को अलग अलग कर रहे थे वैसे ही वैसे कप्तान और दोनों लड़के नीचे छाया में पहुँचाते जा रहे थे। उन्होंने खूब मेहनत की और ढोआ-ढाई में उन्हें चार बार आना जाना पड़ा। बैठकी को ढकेलते हुए वह सीक में ले गये। सीक में अंधकार था, बीच में पत्थर और खड़ खड़ जगहें थीं। उस अंधकार में वह अपने बिजली के मशालों को काम में ला नहीं सकते थे क्योंकि उनका दूर तक दिखाई देना उनके हित में अनिष्टकर था। बड़ी मुश्किल से पसीने पसीने होते वह कितनी ही देर के बाद खजाना के पास पहुँचे।

और कोई भी उपयुक्त स्थान न देख कर निश्चय हुआ कि बैठकी को ढकेल कर बड़े हाल में रक्खा जाय। जिस समय वह उसे ढकेल कर छओं सीढ़ियों को पार कर हाल में उसे लिये जा रहे थे, उन्हें यह न मालूम था कि अंधकार से दो तेज आंखें उनकी सभी गति विधि को देख रही हैं।

ढाल की नाभि

वह उसे हाल में रख कर गुफा में लौटे, उन्हें यह न मालूम हुआ कि वह देख लिये गये हैं। बहुत परिश्रम करने तथा बहुत देर तक जगने के कारण वह लोग लेटते ही घोर निद्रा में डूब गये। जब उनकी नींद खुली तो सूर्य बहुत चढ़ आया था।

उनके हृदय मे सबसे भारी भय यही था कि होर पवत वाले अरब कही खबर न पा जायें, नही तो फिर अवस्था भयकर और निराशापूण हो जायगी। उन्ह बहुत सन्देह था कि यह लोग मेटिया से मिले होगे। ऐसे भी उनकी क्रूरता प्रसिद्ध थी उन्होने यद्यपि उनकी आँखो मे धूल झाक दिया और बिना जाने ही वह खजाना तक पहुँच गये लेकिन खतरा अब भी शिर से हटा न था।

जब सूय अस्त हो गया और नीलवसना रात्रि ने प्रवेश किया तो वह खजाना म गये। सबके हाथो मे बारह बारह कारतूसा से भरी रिवाल्वरें थी। उन्होंने अपनी जेबो मे भी कितने ही कारतूस रख छोडे थे। सबके हाथो म एक एक बिजली के मशाल थे। जिनमे नई बैटरिया लगी हुई था। चन्द्रनाथ ने कई भरी हुई अतिरिक्त बैटरिया भी अपनी जेब मे तैयार रक्खी थी। यह निश्चय हुआ था कि मशाल तब तक जलाये जायँ जब तक कि दालान के भीतर न पहुँच जायँ।

वह सायबान मे जाकर थोडी दर के लिये खडे हो गये। उनमे से किसी को भी न मालूम हुआ कि बडे हाल के कोने से कोई चीते की तरह चिपक कर उनकी आर बराबर कान और आख लगाये हुए है। उसका हृदय इस उत्कट इच्छा स भरा हुआ है कि उस निधि को छीन कर अपने हाथ मे करूँ।'

वह घूम कर सायबान से होत हुए उन सीढिया पर पहुँचे जो उत्तरी दालान के द्वार पर लगी हुई थी। भीतर अन्धकार ठास और काला सा मालूम होता था। चन्द्रनाथ न अपने मशाल की बटन दबाई और प्रकाश की धारा सी बह चली। अब वह लोग पूर्वी कोने की ओर चल। दोना समाधिया एक चट्टान मे बहुत पास ही पास थी। उनके नीचे एक भारी गुफा है, इसका उनम कोई भी ऐसा चिह्न न था।

कप्तान न ढाल पर के नकशे का भली भाँति समझ लिया था। वह जानते थे कि दोनो अँगुलिया दोना के छार पर मे बीचा-बीच की ओर इशारा करती है और वहा बराबर दबाने की आवश्यकता है। वह वही जमीन पर घुटनो के बल बठ कर बीच के थोडे स उभडे पत्थर को धक्का दन लगे। उन्होन पहले आहिस्ते स ढकेला फिर कुछ और जार से, अन्त म पूर जार से। उनके पैर पीछे को खिसकन लग लेकिन समाधियां तथा पत्थर जसे क तैसे ही रहे। वह पसीने पसीने हो रहे थे। अब धीर-धीर निराशा बढ रही थी।

कप्तान ने इसहाक का कहा कि पैरा को खूब जार से पकड रक्खो। अब उन्होने फिर जान ताड कर जोर लगाया। जरा ही देर म समाधियो वाला सारा चट्टान हिलने लगा जान पडा वह किसी कल पर रखा है। थोडी ही देर मे समाधियाँ ऊपर को उठ कर छत स जा लगी और नीचे गुफा-द्वार निकल आया।

चन्द्रनाथ न झट मशाल को नीचे उस विवर म किया वह चौकोर तथा चार-पाच हाथ गहरा था। लडको को कद कर नीचे पहुँचते देर न लगी। चन्द्रनाथ को छोड कर सभी नीचे पहुँच गये। कप्तान और इसहाक ने प्रोफेसर का पैर सभाल कर उन्हे धीरे स नीचे उतारा। गुप्तदशक अब दालान से द्वार की सीढियो पर इस तरह लेट गया था कि सिफ आखें सबसे ऊपर वाली सीढी के जरा ऊपर रह । अब वहा उसे देखने के लिये ऊपर उठी समाधि की खोलिया थी और एक जगह फश के नीचे से प्रकाश आ रहा था। दालान मे आगे बढने के लिये उसकी हिम्मत न हुई। वह अभी आगा-पीछा ही कर रहा था कि प्रकाश, जो विवर से ऊपर की ओर आ रहा था, बन्द हो गया और दालान मे फिर अँधेरा गुप हो गया।

शिव ने बगल से एक गली जाती हुई देखी। कप्तान आगे बडे और पीछे से एक कतार से दूसरे चारो आदमी भी चले । आगे बडते वढते वह एक सीढी के ऊपर पहुँचे। उससे उतर कर वह एक छोटी कोठरी म पहुँचे।

कप्तान ने नीचे उतर कर कोठरी के मध्य मे एक वहुत लम्बी सी सन्दूक देखी। उसी समय अन्य चारो न भी अपने मशालो को जला दिया और हजारो वष स अन्धकारपूण उस पाताल गुफा मे दिन का सा उजाला हो गया।

यह सन्दूक असल मे एक शवाधानी थी जो एक प्रकाड बिल्लौर चट्टान से गढ कर वनाई गई थी। ढक्कन के अचलो और सन्दूक के चारो ओर की भित्तिया पर बडे सुन्दर बेल-बूटे कटे हुए थे।

कप्तान ने नाथन को आगे वढने का इशारा किया, क्योकि वढने का सबसे पहले उसी का अधिकार था। वह आगे हुआ और पीछे से सब लोग।

ढक्कन के ऊपर ढाल का सा नकशा था—वही तीन समकेन्द्रक वत्त, जिनके भीतर विरुद्ध शिखरक त्रिकोणी का पटकाण और पटकोण के भीतर कोई नाम था। नाम पढा न जाता था।

कप्तान ने नाथन से पूछा—'क्या ढक्कन उठाया जाय ?'

नाथन ने शिर झुकाकर—'हा' कहा।

ढक्कन भारी था। कप्तान और शिव ने उसे एक तरफ से पकडा चन्द्रनाथ आर इसहाक ने दूसरी ओर से और पूरा जोर लगा कर उसे उठा कर दीवार के सहारे खडा कर दिया।

नाथन चकित हो गया। जरा ही देर मे उसका हृदय भर आया। कप्तान का चेहरा पीला हो गया। उन्हे अपनी आखो पर विश्वास न होता था। क्योकि वहाँ शवाधानी मे सोने वाला सिमियन बिन इज्रा या उसका प्रतिरूप कोई था जो

लम्बाई को छोड कर बिल्कुल उनके समान था। ऊपर डाला हुआ मलमल सफेद रग से बदल कर भूरा हो गया था। दाढी छाती पर पडी हुई थी और वही छाती पर ढाल की नाभि थी, जो सोने की तथा उन्नतोदर थी। बिजली के मशाल के प्रकाश म उस नाभि के ऊपर रत्ना द्वारा लिखा हुआ यह नाम जल उठा था।

नाथन के पास नाभि देखने के लिए आँखें न थी और वही अवस्था कप्तान की भी थी। दूसरे भी नाभि की अपेक्षा सोने वाले के शात चेहरे से ही अधिक प्रभावित हुए थे। नाथन ने झुक कर अपना ओष्ठ मृतपुरुष के ललाट पर रक्खा और एक ही क्षण म वह शव अलक्षित हा गया। सभी चकित हो गये। शवाधानी मे नाभि और थोडी सी राख के अतिरिक्त कुछ न बाकी रह गया। चुम्बन के धक्के से सारा वस्त्र और उस पर का रग गिर कर राख हो गया।

इसहाक को सबसे पहले होश हुआ। उन्हाने कहा—यह बिल्कुल सम्भव था।'

कप्तान—'तो नाथन, नाभि उठाओ।'

नाथन ने ढाल की नाभि को उठा कर कप्तान के हाथ मे दिया।

चन्द्रनाथ ने कहा—'अब हमे लौटना चाहिये। ढक्कन को आओ फिर रख दें, और फिर आगे बढे।'

ढक्कन फिर जहा का तहा रख दिया गया। कप्तान के मशाल को छोड कर और सभी बुझा दिये गये। सब सीढिया को पार कर गली मे चले। कप्तान आगे-आगे थे। अभी मुख विवर पर नही पहुचे थे कि उन्होने ऊपर से कुछ आवाज सुनी, कोई ऊपर दालान म चल रहा है। उन्हाने झट मशाल बुझा दिया, उनके पीछे पीछे जो दूसरे आ रहे थे, उन्होने भी अभिप्राय समझ लिया। सब लोग थोडी देर ठमक गये और उन्होने भी देखा कि ऊपर कोई बडी सावधानी से चल रहा है।

वह बहुत देर तक वहा ठहर नही सकते थे, क्योकि द्वार के ढक्कन के लग जाने का डर था। और यदि एक बार वह बन्द हो गया, तो फिर पाँचो को कोई भी रास्ता निकलने को न मिलेगा। जैसे ही कप्तान ने इस खतरे का ख्याल किया, उन्होने ठान लिया कि ऊपर जाकर खतरे मे पडना यहा के खतरे से अच्छा है।

प्रतापनारायण काश्यप ने अपनी जेब से एक सुतली का टुकडा निकाला। उसका एक छोर अपने हाथ मे रख कर उन्होने अपने पीछे के चारो आदमियो को भी उसे पकडा दिया। दूसरा छोर इसहाक के हाथ म था, जो सब से पीछे था। कप्तान रस्सी पकडे आगे बढे। सब उनसे पीछे पीछे चले और बहुत ही आहिस्ते आहिस्ते पजो के बल वह मुह पर जमा हुए।

उनमे से किसी ने भी अपना मुँह न खोला। रस्सी को पकडे हुए सब लोग

चुपचाप खडे थे। किसी भी खतरे के लिए वह तैयार थे। अधेरा बडा सख्त था, उसमे फाड फाड कर देखने के प्रयत्न से उनकी आखे दुखन लग पडी। इसहाक का हाथ पकड कर दीवार के साथ बैठने का इशारा किया, एक क्षण ही म वह उनके कधे पर चढे, और इसहाक खडे हुए, अब कप्तान ऊपर दालान मे थे। दूसरी, तीसरी, चौथी वार इसी तरह प्रोफेसर, नाथन और शिव भी ऊपर पहुँच गये। अब इसहाक ने कूद कर ऊपर के किनारे को पकडा और थोडी देर मे वह बाहर थ। कप्तान ने मशाल जलाने के लिये धीरे से कहा और झट अपना मशाल भी जला दिया।

एकाएक उस राशीकृत अधकार मे आग सी लग गई। उन्होने देखा कि बिल्कुल उनके पास ही एक अरब खडा हुआ है, जो देखने मे उनका ही साथी सा मालूम होता है।

इस प्रकार की तीक्ष्ण धार के मुह पर पडते ही वह स्तब्ध सा हो गया, उनकी भी आँखे चौंधिया गई थी और कुछ क्षण के लिये वह यह देखन म असमथ रहे कि दालान मे एक सातवा आदमी भी है जो उनसे अलग खडा उनकी ओर देख रहा है। धीरे धीरे उसकी आँखें जल उठी उसके ओठ चिपक कर बद हो गये। उसके लिलार पर बल आ गया। उसके हाथ छूटने और बद होने लगे। उसका सारा शरीर ऐंठ गया। यह सारी दशा चन्द सेकडो के अन्दर हो गई। वह बडे जोर से चिल्ला उठा। वह अभी मुश्किल से सिर्फ इतना ही पहचान चुके थे कि यह मेटियो है, और उसी समय बिजली की तरह कडक कर वह अरब पर झपटा। उसने अरब को उठा कर जमीन पर पटका लेकिन तुरन्त ही अरब उसके ऊपर आ गया। उसने अपने मजबूत हाथो मे मेटियो को उठा कर खडी समाधिवाली खोली पर दे पटका। यदि वह जरा नीचे पटकता, तो मेटियो लुढक कर नीचे चला जाता, लेकिन जरा सा ऊपर होने के कारण धक्का लगते ही चट्टान हिला। मेटियो, चटटान और बीच के पत्थर के बीच मे आ गया और उसने उसे पीस दिया।

सब लोग निश्चल पत्थर की तरह खडे-खडे देखते रहे, वहाँ कुछ करना उनके वश मे न था।

अरब ने अपनी जबान मे कहा—'इंशाल्लाह!

इसहाक ने कहा—'अहमद!'

अरब ने पीछे फिर मुस्कराहट के साथ कहा—तुम मुझे पहचानते हो। आप कौन हैं, ख्वाजा?'

इसहाक ने एक कदम बढकर प्रकाश सामने करके कहा—हम पहले दूसरे से बहुत मिले है।'

अरब ने बडे आश्चर्य से कहा—'ओहो ! मूसा ! !'

इसहाक—'हाँ ! लेकिन अब यह नही अहमद।'

'और यह कौन है ?' चन्द्रनाथ की ओर इशारा करके पूछा।

चन्द्रनाथ ने स्वय शुद्ध अरबी म कहा—'इसी आदमी का दास्त, जिसे तुम मूसा कहते हो।'

'इन तीना की तो मैं ताक मे था' अहमद ने कप्तान और तीना नवयुवको की ओर सकेत किया, 'लेकिन मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा न थी, मेटियो ने मुझस कहा था कि यह तीना आयेंगे लेकिन तुम तो पाँच हो, जिनमे से एक तो मूसा हैं, और दूसरे 'दाढ़ीशाह' हैं, यदि मैं गल्ती नही करता।'

इसहाक—'ठीक, अहमद मेरा दोस्त 'दाढ़ीशाह' ही है। लेकिन तुम यहाँ कैसे आये ?'

अहमद—'मेटियो ने मुझे भेजा।'

इसहाक—'पेट्रा से ?'

अहमद—'नही ! स्वेज से। मैं काहिरा मे था, जहाँ से उसने मुझे बुलाया, क्योकि खजाना ढूढने का समय आ पहुँचा था। मैं जब स्वेज आया तो मुझे मालूम हुआ कि मेटियो गिरफ्तार हो गया। वह जेल मे था और मैं उससे मिल न सकता था। लेकिन उसकी पहले की बात मुझे याद थी। मैं स्वेज से रेगिस्तान के रास्ते अकाबा पहुचा और जब तुम यहाँ पहुचे तो मैं खजाना मे मौजूद था।'

इसहाक—'आज ?'

अहमद—'और कल रात को भी जब कि भिनसहरे के समय आप लोग गाडी को ढकेल कर बडे दालान मे ले गये थे।'

इसहाक—'कहाँ ?'

अहमद—'बडी दालान के आखीर मे। जब आप लोग चले गये, मैंने हाथ से टटोल कर गाडी देखा। वह बडी विचित्र-सी मालूम पडी। मुझे यह न समझ मे आया कि आपने उमे खजाना मे क्यो रक्खा। मैं आपके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा।'

इसहाक—'क्यो अहमद ?'

अहमद—'उस धन पर कब्जा करने के लिये, जिसके बारे मे मेटियो हमसे कहा करता था—क्या आपको मालूम नही है ? मुझे बस उसी धन की आवश्यकता थी, मैं उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। मैंने देखा कि आप लोगो ने अपने

जादू से चट्टान को हटा दिया। और जब आप सब भीतर चले गये तो मैं धीरे-धीरे आगे बढा, लेकिन मैं नीचे न गया। इसी समय मेटियो आया।'

इसहाक— क्या उसके आने की आशा थी ?'

अहमद— नही ! वह तो कैदी था मैं कभी ऐसी उम्मीद न कर सकता था। जब तक सूय न चमरा—यही सूय जो आप लोगो के हाथो मे है—मैं उसे देख भी न सका था। उसने मुझे देखा कि मै आप लोगो के साथ खडा हूँ। उसने शायद मुझे आपका आदमी बन गया समझा और यह ख्याल आते ही वह पागल हो गया वह मेरे ऊपर झपटा। और उसने अपनी जान से हाथ धोया।'

इसहाक—'और धन, खजाना अहमद ?'

अहमद—'वह न मटियो का था न मेरा था।, मेरा और मटियो का उसके लिये आप से झगडने का हक न था। खुदा ने उसे आपकी किस्मत मे लिख दिया था। उसने यह भी लिख रक्खा था कि मेटियो नही मरगा। यह उसी लिखन के मुताबिक तीनो आदमियो के साथ आप और 'दाढीशाह' आये, मैं अहमद उस बारीताला की कलम के सामने अपना शिर झुकाता हूँ।'

इसहाक—'क्या और लोग भी हमारे यहाँ होने के विषय मे जानते है।'

अहमद—'और लोग ? होर पवत के अरब ? नही ! लेकिन अब वह जान जायगे। कल भी आप लोग वही छिपे रह, जहा आज छिपे थ, इसी प्रकार परसो भी और फिर अपनी गाडी लेकर चले जाइयेगा।'

इसहाक—'दो दिन म तो वह सब इकट्ठा होकर हमारे रास्ते ही को बन्द कर देंगे।'

अहमद—'एक दिन म वह ऐसा कर सकते है, बल्कि चन्द घण्टो ही मे कर सकते हैं। लेकिन अहमद इन दो दिना मे सब जगह हल्ला कर देगा, कि आपमे से एक 'दाढीशाह है। उन्ह पहले ही से यह मिल गई है। वह सुनते ही एकत्रित हो जायँगे, लेकिन बडे आदर और स्नह के साथ, कि कैसे 'दाढीशाह' ग्रहण और आकाश की बातें बतलाता है।'

'अवश्य !' चन्द्र नाथ ने बडी गम्भीरता के साथ कहा।

उपसहार

जव यह लोग अपने छिपने की जगह पर आये तो कप्तान ने पूछा— 'क्या तुम उस पर विश्वास कर सकते हो, चन्द्र ?

चन्द्र—'अवश्य ! ऐसा न करना भारी भूल होगी । जिसे हम भय समझ रहे है हो सकता है, वह उलट कर आनन्द का कारण हो जाय ।

इसहाक—बिल्कुल ठीक ! हम शायद अपने प्राणो के लिये एक भयानक गिरोह से लडना पडता लेकिन अब अहमद की सहायता से हम बहुत आराम से लौट सकते है ।

चन्द्र—और इसमे हानि भी नही बल्कि हम समय बचा भी सकेंगे ।'

शिव—क्या ।

चन्द्र—अब उस चक्कर की आवश्यकता न होगी, हम सीधे यहाँ से अपने अड्डे पर पहुँच सकते है और दिन म भी उड सकते है ।

इसहाक—और उडने का क्रम क्या ?

चन्द्र—हा ! पहले नाथन और शिव ग्रहण के समय फिर सूर्योदय के समय कप्तान और मध्याह्न को तुम ।

अब उनको यह विश्वास हो गया था कि अरब कष्ट न देंगें । इसलिये 'दशना के भिन्न भिन्न अग और अन्य सामान को वह खजाना ही मे उठा कर ले गये ।

तीसरे दिन प्रात ही से अरब आने शुरू हुए । पहले थोडे थोडे फिर उससे कुछ अधिक और दोपहर से तो झुण्ड के झुण्ड आने लगे । सभी 'दाढीशाह की करामात देखने के लिये बडे आदर भाव से आ रहे थे । वह सभी आकर खजाना के सामने जमा होने लगे । पहले रात को पाचो आदमी बडे आनन्द से सोये थे । लोगो का बाहर जमा देख कर अहमद हाल मे आया, और 'दादीशाह' को बाहर ले गया और फिर लोगो के सम्मुख उनकी भूरि भूरि प्रशसा की और चन्द्रनाथ ने भी एक अच्छा लक्चर अरबी मे दे डाला ।

उन्होने ग्रहण की एक सीधी सादी ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी व्याख्या की । उन्होने उन्ह ठीक समय बतलाया कि कब पृथ्वी की छाया चन्द्रबिम्ब को स्पर्श करेगी । कितनी देर तक ग्रहण रहेगा और कब मोक्ष होगा । उस वक्त चन्द्रमा कहा रहेगा, यह भी उन्होने अँगुली से इशारा करके बताया और यहा से वह दिखाई न दे सकता था, इसलिये कहा कि हमे सीक के ऊपर वाली अधित्यका पर रहना होगा और जिस समय

ग्रहण होगा, उसी समय मैं अपने दो मित्रो के साथ चन्द्रमा की ओर उड़ँगा। आप लोग उस समय अपनी आँखो यह देखेंगे। आप लोगो का यह भी देखना चाहिए जब सुबह के वक्त मैं लौटूगा। सारी श्रोतमडली न बडी शाति के साथ सुना।

जब बठकी बाहर निकाली गई ता सभी उसे सीक के ऊपर पहुचाने के लिये ला पडे। वह उसस हाथ लगा कर अपन आप को धन्य समझते थे। चन्द्रनाथ के कहा के मुताबिक अहमद ने कुछ आदमिया का चुन लिया और उन्हान सभी सामाना का उठा कर अधित्यका पर पहुँचा दिया।

दोना करामाता के देखने का समय जैस जैसे नजदीक आता जा रहा था, वैसे ही वैसे लोगा की बेकरारी भी और बढ रही थी।

कनटाप लगाने से पहले ही कप्तान ने चन्द्रनाथ के हाथ म कागज मे लपेटी कोई चीज देकर धीर मे कहा—ढाल की नाभि'। चन्द्रनाथ न उसे लेकर अपनी कोट के निचले जेब मे रख लिया और फिर कनटोप और अँखन्दका लगा कर बैठकी पर जा बैठा। यद्यपि उनकी हुलिया के परिवतन से दशका को आश्चय जरूर हुआ, लेकिन किसी ने कुछ न कहा। उन्हाने समझा कि अँखढक्का भी उसी जादू का अग है। नाथन और शिव पिछली बठकी पर कस दिये गये।

सब ठीक हो गया। रात्रि नीरव थी। चन्द्रमा आकाश म बहुत ऊपर उठ चुके थे। अरबा को जरा इधर उधर खिसका कर बीच म दशना' के दौडने के लिए थोडी जगह बना ली गई। इसहाक घडी हाथ मे लिये विमान के बगल म खडे देख रहे थ कि कब बडी सुई सैंतीसवी लकीर को छती है।

हा! ग्यारह बज कर सैंतीस।' इसहाक बोल उठे।

विमान आग दौडा और कुछ ही क्षणों मे धरती छोड कर आकाश की ओर उठा। ठीक उसी समय भूच्छाया न चन्द्रबिम्ब को स्पश किया। आश्चय से स्तम्भित हो अरब बाल उठे—'उफ! दशना ऊपर चढते चढते थोडी देर म आखा स ओझल हो गया। फिर सब लोग बैठ कर विमान और भूच्छाया के सम्बन्ध म बात करन लगे। जस जैसे अँधेरा बढता जाता था, उनकी आवाज भी धीमी पडती जाती थी। वह उपच्छाया को बडे कौतुकाक्रान्त हृदय से देख रहे थे, लेकिन जब चन्द्रमा बिल्कुल काला हो गया और चारा ओर पूरा अँधेरा छा गया ता अपनी अपनी चादरें ओढ सब चुपचाप पड रहे। सभी दाढीशाह के लौटन की बाट जोह रहे थे।

अभी कुछ अँधेरा ही था, तभी इसहाक ने 'दशना ...
कप्तान को सूचित किया और दोना आकाश की ओर देखने लगे।

मे विमान उनके शिर पर था । अरबा मे आवाज का सुनते ही खलबली मच गई। 'दशना' चक्कर काटते-काटते एक प्रकाड पक्षी की भाँति भूमि पर आ बैठा ।

दशको में से एक ने पूछा—'और दोनो नवयुवक ख्वाजा ? क्या चद्रमा के पीछे तो नही रख आये ?'

चद्रनाथ ने मुस्कराते हुए कहा—'नही ! मैंने जब्ल मूसा के आगे एक पहाड पर उन्हें छोड दिया ।'

'और चद्रमा ख्वाजा ?'

चद्र—'बहुत दूर महासमुद्र पर अब भी वह प्रकाश कर रहा है । आज रात को वह और भी अधिक प्रकाश के साथ उगेगा ।'

अरब अत्यन्त सन्तुष्ट हो गया । उसने बडी आदरभरी दृष्टि से 'दाढीशाह' की ओर देखा ।

सूर्योदय के समय कप्तान को लेकर 'दशना' उडा । चद्रनाथ ने बैठकी पर लात देते ही कहा—'इसहाक,मैं मध्याह्न तक यहाँ आ पहुँचूगा तुम अहमद स ठीक कर लो, कि वह स्वेज मे हमसे मिले ।'

इसहाक—'बहुत अच्छा'।

'दशना' भनभनाता उड चला, प्रात काल के प्रकाश म कितनी ही दूर तक लोगो ने देखा कि वह दक्षिण दिशा मे सीनाई के पवतो की ओर जा रहा है । ग्यारह बजे दोपहर को दशना फिर दिखाई दिया । पहले पहल इसहाक न उमे दखा उसके बाद एक ने और फिर दूसरो ने—सारा झुड आसमान की ओर नजर उठाकर देखते हुए पागलो सा मालूम होता था । विमान अरबा के ऊपर से उडता हुआ आया । वह बडे आश्चय से देखा किये । जब कि 'दशना होर पवत के ऊपर से होता हुआ उनके शिर पर आकर धीरे से भूमि पर पर फैलाये आ बठा ।

इसहाक तैयार थे, उन्होने एकत्रित अरबो से अलविदा कहा और वहाँ से अड्डे की ओर उडे । सूर्यास्त से बहुत पहले ही पाचो आदमी फिर एक जगह हो गये ।

उस एकान्त पहाडी स्थान पर उन्होंने नाभि को भली प्रकार देखा, वह गोल नीचे चमडे से ढकी और सिर्फ बीच के नाम को छोड कर सब सोने की थी ।

जब वह देख रहे थ, तो सूय की किरणें उसस लग कर जल सी रही थीं। सारा नाम हीरो से लिखा था जिनमे छोटे-बडे सभी प्रकार के थे, लेकिन वह सभी बडी शुद्ध जाति के थे ।

शिव ने पूछा—'यह क्या नाम है मामा ?'

चन्द्र—इसका उच्चारण तुम्हारे लिये बहुत कठिन मालूम होगा। '

शिव—'तो इसका मतलब।'

चन्द्र—'प्राण, एक एवाद्वितीय प्राण।'

× × ×

अहमद स्वज मे उनसे मिला और घो उसे दी गई।

ढाल के टुकडे को नाभि के साथ मिला कर एक चतुर कारीगर ने जोड दिया, उसकी अब की सुंदरता देखने ही से मालूम हो सकती है। वह अब भी सेठ इब्राहीम की वज्र-कोठरी मे बन्द उस दिन का इन्तजार कर रही है, जब कि नाथन यहूदी जाति के भूत गौरव की रक्षा के लिए उसे काम मे लायेगा।

———